आकर ग्रंथमाला—२०

बोधा ग्रंथावली

संपादक

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३१
११०० प्रतियाँ

मूल्य---१७-५०

मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

अपनी स्थापना के समय से नागरी लिपि एवं हिंदी साहित्य के उन्नयन एवं विकास के विभिन्न विधायक संकल्पों के साथ ही नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के युगनिर्माता मूर्धन्य साहित्यस्रष्टाओं की ग्रंथावलियों का प्रकाशन भी आरंभ किया। हिंदी के सुप्रसिद्ध गंभीर, शीर्षस्थ विद्वानों का सहयोग इस क्षेत्र में सभा को सतत मिलता रहा। फलतः तुलसीग्रंथावली, सूरसागर (दो भाग), भूषण ग्रंथावली, भारतेंदु ग्रंथावली, रत्नाकर (कवितावली), पृथ्वीराज रासो, बाँकीदास ग्रंथावली, व्रजनिधि ग्रंथावली और श्रीनिवास ग्रंथावली आदि का प्रकाशन सभा ने किया।

अपनी हीरक जयंती के अवसर पर सभा ने इस दिशा में केंद्रीय सरकार की सहायता से योजनाबद्ध रूप से नूतन प्रयत्न आकर ग्रंथमाला के रूप में आरंभ किया। इस ग्रंथमाला में अब तक भिखारीदास ग्रंथावली (दो भाग), मानराजविलास, गंगकबित्त, पद्माकर ग्रंथावली, मतिराम ग्रंथावली, मधुमालतीवार्ता, नागरीदास ग्रंथावली (दो खंड), दादूदयाल ग्रंथावली, रसलीन ग्रंथावली, कृपाराम ग्रंथावली, काव्यप्रभाकर, जसवंतसिंह ग्रंथावली, सोमनाथ ग्रंथावली (तीन खंडों में), ठाकुर ग्रंथावली एवं नरोत्तम ग्रंथावली का प्रकाशन सभा कर चुकी है। इधर धनाभाव के कारण यह कार्य कुछ शिथिल सा था, किंतु ग्रंथमाला का कार्य चलता रहा। अन्य प्रस्तावित ग्रंथों को शीघ्र ही प्रकाशित करने का हमारा संकल्प है। केंद्रीय सरकार के शिक्षा विभाग की आर्थिक सहायता से यह संकल्प मूर्त हो रहा है। इसके लिये सभा सरकार के प्रति कृतज्ञ है और हमें विश्वास है कि शीघ्र ही इस दिशा में सभा का स्वप्न पूर्णतः साकार होगा।

इस ग्रंथमाला के बीसवें पुष्प के रूप में बोधा ग्रंथावली का प्रकाशन हो रहा है। आशा है सुधी पाठक इसका रसास्वादन करते हुए हमें सर्वदा उत्साह प्रदान करेंगे। बोधा ने 'प्रेम की पीर' की जो मधुर व्यंजना अपनी रचनाओं में की है वह साहित्य की अनुपम निधि है।

तुलसीजयंती
(भाद्र कृष्ण ८ शुक्ल ७ सं० २०३१)

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

आकर ग्रंथमाला का परिचय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी हीरकजयंती के अवसर पर जिन भिन्न भिन्न साहित्यिक अनुष्ठानों का श्रीगणेश करना निश्चित किया था, उनमें से एक कार्य हिंदी के आकर ग्रंथों के सुसंपादित संस्करणों की पुस्तकमाला प्रकाशित करना था। जयंतियों अथवा बड़े बड़े आयोजनों पर एकमात्र उत्सव आदि न कर स्थायी महत्व के ऐसे रचनात्मक कार्य करना सभा की परंपरा रही है जिनसे भाषा और साहित्य की ठोस सेवा हो। इसी दृष्टि से सभा ने हीरक जयंती के पूर्व एक योजना बनाकर विभिन्न राज्य सरकारों और केंद्रीय सरकार के पास भेजी थी। इस योजना में सभा की वर्तमान विभिन्न प्रवृत्तियों को संपुष्ट करने के अतिरिक्त कतिपय नवीन कार्यों की रूपरेखा देकर आर्थिक संरक्षण के लिये सरकारों से आग्रह किया गया था। इनमें से केंद्रीय सरकार ने हिंदी शब्दसागर के संशोधन, परिवर्धन तथा आकर ग्रंथों की एक माला के प्रकाशन में विशेष रुचि दिखलाई और ५–३–५४ को सभा की हीरकजयंती का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेंद्र-प्रसाद ने घोषित किया—"मैं आपके निश्चयों का, विशेषकर इन दो (शब्द-सागरसंशोधन तथा आकर ग्रंथमाला) का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया संस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षों में बीस बीस हजार करके दिए जायँगे, देने का निश्चय हुआ है। इसी तरह से मौलिक प्राचीन ग्रंथों के प्रकाशन के लिये पचीस हजार रुपए की, पाँच पाँच हजार करके, सहायता दी जायगी। मैं आशा करता हूँ कि इस सहायता से आपका काम सुगम हो जायगा और आप काम में अग्रसर हो सकेंगे।"

केंद्रीय शिक्षामंत्रालय ने ११–५–५४ को एफ० ४–३–५२एच० ४ संख्यक एतत्संबंधी राजाज्ञा निकाली। राजाज्ञा की शर्तों के अनुसार इस माला के लिये संपादकमंडल का संघटन तथा इसमें प्रकाश्य एक सौ उत्तमोत्तम ग्रंथों का निर्धारण कर लिया गया है। संपादकमंडल तथा ग्रंथसूची की संपुष्टि भी केंद्रीय शिक्षा-मंत्रालय ने कर दी है। ज्यों ज्यों ग्रंथ तैयार होते चलेंगे, इस माला में प्रकाशित होते रहेंगे। हिंदी के प्राचीन साहित्य को इस प्रकार उच्च स्तर के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और इतर अध्येताओं के लिये सुलभ करके केंद्रीय सरकार ने जो स्तुत्य कार्य किया है, उसके लिये वह धन्यवादार्ह है।

———:o:———

आधार-प्रतियाँ और संकेत

इश्कनामा या विरही सुभानदंपतिविलास

भारत——भारत जीवन प्रेस, काशी, पं० नकछेद तिवारी संपादित।
खोज १——खोज विभाग, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, विवरणिका (१७-१९)
खोज २——खोज विभाग, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, विवरणिका (२०-२२)
विरह——विरहवारीश।
वही——पूर्वगामी संकेत।

विरहवारीश या माधवानलकामकंदलाचरित्र

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ की मुद्रित प्रति, श्री गणेशप्रसाद कुरेले संपादित
मुद्रणकाल जून सन् १८९४

अनुक्रम

संपादकीय

हिंदीसाहित्य के रीतिकाल के भीतर जब फुटकल खाते से लाकर शृंगार-काल की अभिधा देकर रीतिमुक्त कवियों को यथास्थान स्थित करने का मैंने प्रयास किया तभी जिन प्रमुख कवियों का उसके अंतर्गत मैंने उल्लेख किया उनकी ग्रंथावलियों के संपादन का भी संकल्प किया। तभी मैंने इन सबके ग्रंथों के एकत्र करने और संपादित करने में हाथ भी लगा दिया। वे प्रमुख कवि रसखानि, आलम, घनआनंद, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव थे। द्विजदेव की शृंगारलतिका का संपादन स्वर्गीय पं० जवाहरलाल जी चतुर्वेदी ने कर उसे राजसी ठाट-बाट से प्रकाशित करा दिया। इसलिए उस कार्य से मैं विरत हो गया। अपने संग्रह की दुर्लभ पुस्तक मैंने उन्हें दे भी दी थी, जिसका उन्होंने शृंगारलतिकासौरभ में उपयोग कर लिया। रसखानि, घनआनंद और ठाकुर की ग्रंथावलियाँ या रचनावली प्रकाशित हो चुकी हैं। केवल दो की संपादित ग्रंथावलियाँ अभी तक प्रकाश में नहीं आई हैं; आलम और बोधा की रचनाएँ। इनमें से बोधा-ग्रंथावली अब प्रकाशित हो रही है। आलम ग्रंथावली कब प्रकाशित होगी, कह नहीं सकता। वह भी संकलित पड़ी है और उसके संकलन के लिए स्वर्गीय पं० भवानीशंकर जी याज्ञिक ने वह सारी सामग्री भी मुझे कृपापूर्वक दे दी थी जो उन्होंने नागरीप्रचारिणी सभा को याज्ञिक-संग्रह समर्पित करते हुए नहीं दी थी। संप्रति प्रकाशक ऐसे ग्रंथों के मुद्रित करने कराने में किसी प्रकार की अभिरुचि नहीं रखते। व्यवसाय की दृष्टि से इनमें लाभ की यथेच्छ संभावना जो नहीं है। सरकार नाना प्रकार की ऐसी योजनाओं और शोध के लिए द्रव्य देती है जिनका संबंध हिंदी के प्राचीन कवियों के पाठसंशोधन से होता है। किंतु एक तो मुझे सरकार से द्रव्य लेने के लिए हाथ पसारने की कभी आकांक्षा नहीं हुई। एकबार स्वयम् केंद्रीय सरकार ने ही मेरे पास पद्माकर ग्रंथावली के पाठशोध की योजना माँगी थी और मैंने भेज दी थी। पर उसका क्या हुआ, ठीक ठीक पता नहीं चल पाया। सुनने में आया कि हिंदी के प्राचीन काव्य का जो क ख ग भी नहीं जानते ऐसे सरकार के किसी परामर्शदाता ने कहा कि 'पद्माकर पंचामृत' तो निकल ही चुका है। अस्तु। पद्माकर-ग्रंथावली सभा से प्रकाशित हो चुकी है और रामरसायन का संपादन पद्माकर के वंशज डा० भालचंद्र राव कर रहे हैं, सरकार से कुछ सहायता प्राप्त करके। यह प्रसन्नता की बात है।

दूसरे, सरकार से द्रव्य प्राप्त करने का करतब भी मुझे नहीं आता। एक विश्वविद्यालय से प्राचीन ग्रंथों के संपादन की विस्तृत योजना भेजी भी गई, सरकार ने स्वीकृति भी दे दी, पर विश्वविद्यालय का किरानीवर्ग अब इतना पुष्कल द्रव्य लेना चाहता है कि इन योजनाओं को वह कार्यान्वित ही नहीं होने देना चाहता। प्राचीनता और प्राचीन वाङमय को अब पुराणपंथ और अनद्यतन के पेटे में रखकर खिल्ली अधिक उड़ाई जाती है, उसके प्रति आदर-संमान का

दिखावा भी कम होता जा रहा है। ब्रजभाषा और अवधी के पुराने काव्यों और साहित्य का अब भगवान् ही रक्षक हो तो हो। रहगईं, हिंदी की संस्थाएँ, जिन्हें यह काम करना चाहिए। पर इनके संचालक भी इससे धीरे धीरे उदासीन होते जा रहे हैं। पाँचों सवारों में संमिलित होने के लिये बहुत से सज्जन दिख रहे हैं। किसी को अवकाश ही नहीं है कि वह यथार्थ सवार को पहचानने की सोचे, पहचानना तो बाद की बात है।

अतीत की स्थिति कुछ और ही थी। हिंदी की प्राचीन विशेषतया मध्यकालीन रचनाएँ भारत जीवन प्रेस, नवल किशोर प्रेस और वेंकटेश्वर प्रेस ने न जाने कितनी छाप डालीं। इन प्रिंटिंग प्रेसों के पूर्व पत्थर के छापों पर न जाने कितनी मध्यकालीन पोथियाँ छाप डाली गईं। ग्रंथावलियाँ छापने का चलन उस समय नहीं था। काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने आरंभ ही से ग्रंथों के साथ ग्रंथावलियाँ भी छापने का प्रयास किया। अन्य संस्थाओं ने भी कुछ ग्रंथावलियाँ निकालीं। पर जब सरकार की सहायता से सभा ने आकर ग्रंथमाला की स्थापना की और मुझे उसका संपादक बनाया तब तो ग्रंथावलियों के प्रकाशन का ताँता ही लग गया। हिंदी के प्रमुख कवियों की ग्रंथावलियों की पूरी एक माला की ही योजना प्रस्तुत हो गई और क्रमशः उसमें ग्रंथावलियाँ निकलने लगीं। बहुतों ने ग्रंथावलियों के संपादन का कार्यभार स्वीकार किया। पर हस्तलेखों का पढ़ना और पाठों पर विचार करना सरल कार्य नहीं है। कदाचित् साहित्य के क्षेत्र में इससे बढ़कर मगजमार और पित्तामार कार्य दूसरा नहीं है। इधर देश में सुविधाभोग की ओर प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। चेले-चपाटी भी अब 'धन्यवादहीन' कार्य करना पसंद नहीं करते। इसलिये बड़े बड़े उत्साहियों की हिम्मत पस्त हो गई। यदि ऐसा न होता तो बहुत सी ग्रंथावलियाँ आ गई होतीं। सरकार से वांछित द्रव्य भी यथासमय नहीं मिल पाया। फिर भी सबसे अधिक ग्रंथावलियाँ सभा से प्रकाशित हुईं। ग्रंथावलियों के संपादन भी वांछित पूर्ति न होते देखकर सभा के प्रधानमंत्री संसद् सदस्य पं० सुधाकर पांडेय ने भी कटिबद्धता दिखाई और कई ग्रंथावलियों का संपादन कर डाला। उनमें बड़ी शक्ति है। उतनी शक्ति मुझमें कभी नहीं रही। अब तो बहुत ही क्षीण हो गई है। वे ग्रंथावलियाँ संपादित करके देने के लिए बराबर प्रेरित करते रहे। इसप्रकार अब मेरे पास केवल एक बोधा-ग्रंथावली ही रह गई थी, जो उनके शीघ्र कार्य करके दे देने के आग्रह के परिणामस्वरूप यथासंभव जो भी कर सकता था करके प्रकाशन के लिये दे दी है।

बोधा-ग्रंथावली की सामग्री मैंने संवत् २००० वैक्रम के लगभग ही एकत्र कर ली थी। जब मुझे इसके संपादन का भार सौंपा गया तब मैंने खोज के विवरणों को भी देखा। वहाँ इश्कनामा के अतिरिक्त इन बोधा का और कोई ग्रंथ विवृत नहीं है। उन विवरणों में और तो कुछ नहीं मिला। अयोध्या के महात्मा श्री रामवल्लभाशरण जी के हस्तलेख में सबसे अंत में यह एक कबित्त वैराग्य विषय का दिया हुआ है—

माया ही बसंत रितु फैली खंड मंडल में
स्याम सेत लाल फूल कपट यहौ भरी।

केते हम देखे देखौ याही में मगन होत
जागत न केहूँ ऐसी दारुन लखी परी।
करन भनत बढयो लोभ के मतंग ही पै
मानत न सीख कहा जानिकै यहै घरी।
भागत रहत बिन काज ही ना पीर होत
ए रे मन भौंर तोहि प्रकृति कहा परी।६३।
—खोज (१७-१६)–३०

इसमें 'करन भनत' से स्पष्ट है कि यह किसी कर्ण कवि की रचना है। हस्तलेख अपूर्ण है। 'कर्ण' कवि की रचना इसमें क्यों कैसे आ गई, कुछ कहा नहीं जा सकता।

कई संग्रहों को भी देखा कि बोधा की प्रकीर्ण रचना मिल जाए। पर कोई महती उपलब्धि नहीं हुई। 'सुधासर' में 'बोधाराइ' के नाम से एक घनाक्षरी अवश्य मिली जो महाराज छत्रसाल की प्रशंसा में है—

ब्रह्म गुन बंध्यो एक नाम ही सों संध्यो कुल्ल
आलम की सोभा जंग जालिम कौं साल है।
रहै देखि छवि बल तिमिर को दबि सब
कहै बोधाराइ जाको जाचक निहाल है।
बल को बिहद जोतिवंत करि रबिकुल
हिंदुन की हद एक चंपति को लाल है।
जेते महिपाल तेते जानौ मनिमाल
तामें फेर घेर देखौ तौ सुमेर छत्रसाल है। १।२२८/१

यह रचना किसी ऐसे कवि की प्रतीत होती है जो महाराज छत्रसाल का समसामयिक है। ये तो उनके पनाती के दरबार में थे।

श्री वियोगीहरि जी द्वारा संकलित और मेरे द्वारा संपादित 'वीर विरुदावली' में एक कबित्त अमानसिंह की मृत्यु पर 'बोधा' छाप से मिलता है—

कौन अपराधी कामधेनु में कियो है घाव
कौन कलपद्रुमसमूह तोरि डारो है।
कौन मेट डारी जाय सोभा सरदारन की
कौन अपराधी पुन्य पुरवा उजारो है।
बोधा कवि कहै फोरो सुधा को तड़ाग कौन
रंभन को कौन त्यों असोकबन जारो है।
मारो तुम्हैं कौन ए हो बाँकुरे अमानसिंह
भिक्षुक गरीबन पै यों दुभिक्ष पारो है॥

आगे 'बोधा' के जीवनवृत्त के प्रसंग में स्पष्ट होगा कि अमानसिंह को हिंदूपत ने मरवा डाला था। बोधा ने अपने ग्रंथ में कहीं उनका उल्लेख नहीं किया है।

विरहवारीश में 'सिंह अमान समर्थ के' लिखा गया है इसलिये उक्त ग्रंथ लिखते समय वे जीवित थे। यह रचना इन्हीं 'बोधा' की प्रतीत होती है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि 'बोधा' अमानसिंह की मृत्यु तक अवश्य जीवित थे। उनकी ज्ञात रचना के अतिरिक्त भी कुछ हो सकती है, जो संप्रति अनुपलब्ध है।

बोधा की अब तक दो ही रचनाओं का पता चला है—इश्कनामा या विरही सुभानदंपतिविलास और विरहवारीश या माधवानल कामकंदलाचरित्र। इश्कनामा का प्रकाशन पं० नकछेद तिवारी ने भारत जीवन प्रेस से करा दिया था। उसमें आरंभ के आश्रयदाताविषयक चार दोहे नहीं हैं। खोज (२०-२१) में वे दोहे दिए हुए हैं। यह संस्करण उक्त विवरण में उद्धृत छंदों के समांतर छंदों को मिलाने से एकदम मिलता है। किसी कारण तिवारी जी को जो प्रति मिली उसमें उतना न रहा होगा यही मानना पड़ता है। तिवारी जी ने अपने ढंग से अच्छा संपादन किया है। पर प्रेस के प्रेतों के कारण कई शब्द कटकर कुछ इधर और कुछ उधर कहीं कहीं मिल ही गए हैं। 'सुईबेह ते द्वार सकीन' इसमें 'सुईबेह ते द्वारस कीन' मुद्रित है। इसलिये हिंदी के आधुनिक संग्रहों में उसका पाठ कुछ का कुछ हो गया है—'सुईबेह कै द्वार सकीन' तक हो गया है। ऐसी स्थिति में बड़ी सावधानी अपेक्षित थी उसके पाठों को ग्रहण करने में। कोई हस्तलेख प्राप्त नहीं हो सका। खोज-विवरणिकाओं में जिन ग्रंथस्वामियों के नाम दिए गए हैं उनसे कोई सहायता नहीं मिली। हस्तलेख को खोजकर निकाले कौन, किसको आज अवकाश है, इन पुराने सिक्कों या हीरों को निकालने के लिए धूल झाड़ने और धूलि धूसरित होने की। अस्तु। जो कुछ सामने था, खोजविवरणिकाओं में और उक्त मुद्रित प्रति में वही मूलधन समझिए। सभा में मुद्रण की जो व्यवस्था आकर-ग्रंथमाला की पूर्व प्रकाशित ग्रंथावलियों के लिए विशेष रूप से कराई गई थी उसकी योजना होते हुए भी त्वरा ने उसकी सर्वत्र नियोजना में बाधा ही दी, कहीं कहीं कुमुद्रण भी हो गया, शब्द अशुद्ध भी छप गया। अभिधान में उसका परिहार करने का प्रयास किया गया है।

'विरहवारीश' की दशा इश्कनामा से बदतर है, उसका संपादन तिवारी जी ने किया था, मुद्रण कुछ का कुछ हो जाना और कोई शब्द ठीक ठीक ध्यान में न आना, इतना तो सभी से हो जाता है, सावधानी रखते हुए भी। फारसी के अनुगमन पर यहाँ भी माना जाता है कि शीघ्रता करने में शैतान का हाथ होता है और देर आयद दुरुस्त आयद। पर भारत में 'शुभस्य शीघ्रम्' की मान्यता रही है। अच्छा कार्य शीघ्र कर डालना चाहिए। क्योंकि 'कालो हि दुरतिक्रम:' काल की गति को पार किया नहीं जा सकता और वह अज्ञातपूर्व होती है। जब पूरी सावधानी से काम करने पर भी हालत खस्ता है, प्रेस के माध्यम के कारण तब प्रेस के प्रेतों ने ही यदि किसी ग्रंथ का संपादन भी हाथ में ले लिया हो तो फिर क्या कहना है। 'विरहवारीश' का संपादन किसी ने किया ही न हो सो बात नहीं। संपादन के अनंतर मुद्रण के समय सारा कार्य मुद्रणाधीन था। संपादक कहाँ और मुद्रण कहाँ! यह पहली बार नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में मुद्रित हुआ उसके प्रथम पृष्ठ की प्रतिलिपि यहाँ शोध के प्रयोजन से ज्यों की त्यों उद्धृत कर दी जा रही है—

श्री गणेशाय नमः

बिरहवारीशमाधवानलकामकंदला

चरित्रभाषा ।।

—०—

(बोधाकविकृत)

प्रथमखण्ड पूर्वार्द्धभाग ।।

जिसमें

बोधा कबिने माधवानल वा कामकंदलाके पूर्व्व
जन्मका चरित्र वा माधवानल कामकंदला के
बिरह का वर्णन वा कामसैन और विक्रमादित्य
राजाकी लड़ाई वा फिर माधवानल
कामकंदला का समागम वर्णन
किया है ।।

जिसको

वैश्यकुलोत्पन्न कन्हैयालाल कुरेले के ज्येष्ठ पुत्र
गणेश प्रसादने सब काव्यानुरागियों के अव-
लोकनार्थ शुद्ध करके प्रकाशित किया ।।

प्रथम बार

—०—

लखनऊ
मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई
जून सन् १८६४

इससे यह पता नहीं लगता कि कुरेले महोदय लखनऊ के हैं या बाहर के, पर मुद्रित ग्रंथ के आरंभ में ही सूची के ऊपर एक 'इश्तिहार' दिया गया है उसे भी ज्यों का त्यों उद्धृत कर दिया जाता है जिससे शोध की दृष्टि से बहुत सी सूचनाएँ मिल जाएँगी--

संवत् १९५१ ता० २२-४-९४ ॥

इश्तिहार ।

प्रकट हो कि हमारे एक मित्र परमानन्द सुहाने के संग्रह किये हुये कई एक ग्रंथ छपकर तैयार हैं जिन महाशयों को देखने की अभिलाषा हो तो नीचे लिखे पते से पत्र भेजें कीमत ठीक ठीक ली जायगी वेल्यु पेबल करके पस्तक उनकी सेवा में भेजी जायगी ।

पुस्तकों के नाम ।

राजा दुष्यन्त वा शकुन्तला चरित्र भाषा ॥ पतिव्रता माहात्म्य वा कौशिक ब्राह्मण धर्मव्याध सम्बाद भाषा ॥ श्रीराधाकृष्ण हिंडोला ॥ प्रभाती भक्त-रत्नाकर ॥ होलिकादहन फागोत्सव ॥ पावसकवित्त रत्नाकर ॥ किस्सा नल दमयन्ती ॥ चन्दहास चरित्र चिन्तामणि ॥ परमानन्दकृत सर्वसार संग्रह प्रथम भाग--

श्रीराधाकृष्ण रासलीला प्रथम खंड पूर्वार्द्ध वा उत्तरार्द्ध भाग इसी छापेखाने में छपेगा ॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना ।

कन्हैयालाल गणेशप्रसाद कुरेले गुरहाई बाजार श्रीबलदाऊजी के मंदिर के सामने ।

। जिला जबलपुर ।

।सी, पी,।

मेरा तो यही विश्वास है कि पुस्तक मुद्रित होते समय कुरेले जी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ में नहीं थे। जबलपुर में ही थे। अन्यथा पुस्तक अपेक्षाकृत शुद्ध मुद्रित हो गई होती। इसका संपादन मनमाना प्रेस के प्रेतों ने किया है। कौन शब्द कहाँ से कट जाएगा कहा नहीं जा सकता। कौन सी पंक्ति छूट जाएगी, कौन सी पुनरुक्त हो जाएगी कल्पना नहीं की जा सकती। जैसे हस्तलेखों में 'लिखक' मूल या आधार प्रति की लिखावट न समझ कर उसी से मिलते जुलते आकार का दूसरा वर्ण लिख देते हैं और जो इस पर ध्यान नहीं देते वे हस्तलेखों की प्रतिलिपियों के सहारे कुछ नहीं कर पा सकते। पहले 'झ' ऐसा लिखा जाता था जैसे 'ड' इसलिए परवर्ती लिखकों ने 'झ' को 'ड' पढ़ा और लिख डाला है। ऐसा गड़बड़झाला न जाने कितने वर्णों के संबंध में है उसका विस्तृत विचार पाठालोचन की किसी सैद्धांतिक पुस्तक का विषय है, यहाँ उससे विरत हो रहा हूँ। समय पर वक्तव्य समाप्त कर देना है, भय है कि वक्तव्य ही न दे पाऊँ और पुस्तक प्रकाशित हो जाए।

इसी प्रकार छापेखानों में जो अक्षरों के खानों और उनकी व्यवस्था तथा अक्षरयोजकों की योग्यता, उनसे सामान्यतया होने वाली भूलों से जो परिचित न हो वह प्राचीन हस्तलेखों की प्रतिलिपि के आधार पर मुद्रित किसी ग्रंथ में साधारणतया हो जाने वाली भूलों, त्रुटियों से कोई सुसंगत कल्पना भूल के विषय में कर ही नहीं पा सकता। मैं दैवदुर्विपाक से मुद्रण के सभी विभागों और उसके कारनामों से बहुत निकट से परिचित हूँ इसलिये कह सकता हूँ कि इस मुद्रित प्रति का अवलंबन करके जैसा कुछ मैंने संपादन कर दिया है वह कदाचित् कोई अन्य व्यक्ति न कर पाता। मुद्रित प्रति से प्रतिलिपि मेरे एक शिष्य ने की, जो संवत् २००४ में ही मुझे मिल गई थी। उन्होंने शब्दों को यथावांछित पृथक् करके और छंदों को अलग अलग आधुनिक संस्करण में मुद्रित होने योग्य करते हुए प्रतिलिपि की थी। पर जब प्रस्तुत संस्करण छपना हुआ तब उसकी प्रति टंकित करा लेने में ही सुभीता समझकर उसे टंकित कराकर उक्त अनुलिपि से संशोधन-संपादन किया गया। छंद कुछ के कुछ दिए हुए हैं। कई ऐसे छंद हैं जो वर्तमान युग के मुद्रित हिंदी के पिंगल ग्रंथों में मिलते ही नहीं। छंद के स्वरूप की दृष्टि से जो रूप होना चाहिए वह मुद्रित न होकर कोई सहज ग्राह्य रूप ही मुद्रित हो गया है। इसप्रकार हस्तलेखों का आधार न मिलने के कारण सांप्रतिक वैज्ञानिक प्रक्रिया का पूरापूरा आश्रय इच्छा होते हुए भी सर्वत्र नहीं ले पाया। मुद्रित पुस्तक यदि ज्यों की त्यों छाप दी जाती तो उससे किसी का कोई लाभ न होता, हाँ, जिन्हें इसकी चिरप्रतीक्षा थी उनकी लालसा की, कुतूहल की शांति भर होकर रह जाती। सस्करण देखकर नैराश्य अधिक होता, संतोष बहुत कम। इसलिये निष्कपट भाव से मैं स्वीकार करता हूँ कि इसके संपादन में मैंने अपने गुरुजनों की पारंपरिक संपादन-प्रक्रिया का भी कहीं कहीं सहारा लिया है। इससे बात बनी है या बिगड़ी है इसका पता तभी चल सकता है जब कोई हस्तलिखित प्रति प्राप्त हो। मुद्रित प्रति से जैसा अधिक किया जा सकता था कर दिया है। फिर भी मैं यह नहीं कह सकता कि जो कुछ मैंने कर दिया है वह सर्वोपरि

ही है। शैतान कब कहाँ क्या कर-करा बैठेगा, कौन कह सकता है। खुदा की चाल भले ही किसी की समझ में आ जाए, पर शैतान अपनी ही चाल नहीं समझ पाता, दूसरे क्या समझ पाएँगे।

एकबार यह भी विचार आया कि बोधा, बुद्धिसेन, बोधराइ आदि नामों के सभी कवियों की रचनाओं का संग्रह इसमें कर दिया जाए, पर यह स्वयम् ही इतना बड़ा हो गया है कि इस समय कागज की महार्घता और अनुपलब्धि ने विचार जहाँ का तहाँ रहने दिया। 'विरहवारीश' के उत्तरार्द्ध की खोज के लिये जबलपुर में कुरेले जी के दिए पते पर और श्री परमानंद सुहाने के पुस्तकालय की छानबीन की भी सोची, पर कोई सफलता नहीं मिली। उत्तरार्ध कितना होगा यह भी कुछ नहीं कहा जा सकता। विवरण के अनुसार नौ खंडों में से सात पूर्वार्ध में संमिलित हैं। इसी अनुपात में यदि उत्तरार्ध हो तो उसकी आकृति छोटी ही होगी पर कहीं वे बड़े खंड हों और उनमें तरंगें अधिक हों तो आकार लगभग इतना भी हो सकता है। पूर्वार्ध में अट्ठारह सौ से भी अधिक छंद हैं। इसलिये आनुपातिक स्थिति से कम से कम ६०० छंदों की संभावना है और बड़ा आकार हो तो डेढ़ सहस्र के आसपास भी छंद हो सकते हैं। इसप्रकार यह तीन सहस्र के नीचे ऊपर चार सहस्र के लगभग छंदों का बृहत् ग्रंथ हो सकता है। यह सब अनुमान ही अनुमान है। शोध की दृष्टि से माधवानलकामकंदला की कथा पर जितने संस्कृत और प्राकृत-अपभ्रंश के ग्रंथ हैं सबसे मिलान करने से कुछ विशेष उपलब्धि हो सकती थी, पर उसके लिए संप्रति अवकाश ही कहाँ। शोधकर्ताओं द्वारा इसे भविष्य के लिये ही छोड़ रहा हूँ।

मैंने रीतिमुक्त कवियों के संबंध में यह स्थापना की थी कि फारसी काव्यग्रंथों और सूफीमत के प्रसार के कारण भारत में इस रीतिमुक्तता के जन्म का संबंध है। इसका बहुत कुछ स्पष्ट आभास विरहवारीश से मिलता है। सूफियों की मान्यता है कि इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) और इश्क हकीकी (अलौकिक प्रेम) की सीमाएँ जुड़ी हुई लौकिक प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचते ही साधक का आगे की अलौकिक प्रेम की सीमा में प्रवेश हो जाता है। इसको तरंगों में इश्ककारंजा, औवल, मुहब्बत, कज्जाल, सारखी, आतशी आदि नाम जो आरंभ में दिए गए हैं उनका संकेत इन्हीं के विविध सोपानों के लिए है, ये पारिभाषिक शब्द हैं जिनका विस्तार से विचार समीक्षा के क्षेत्र की चर्चा है। विरहवारीश में लौकिक प्रेम की अतिमा दिखाने के लिये कवि ने बारंबार रतिरंग का विशेष खुला वर्णन किया है। साहित्य की दृष्टि से बहिरंगरति का ऐसा वर्णन उपेक्षणीय होना चाहिए था, पर एक तो बोधा प्रकृति से घोर रसिक थे जैसा इश्कनामा की रचनाओं से ही स्पष्ट हो जाता है, दूसरे उक्त मान्यता भी इन्हें इसके लिये प्रेरित करती रही है। जानकारी का प्रदर्शन भी इनमें कम नहीं है। संगीत का, रागरागिनियों का, उनके परिवार का जैसा वर्णन इन्होंने किया है उससे स्पष्ट है कि ये रागरंग में विशेष लीन रहनेवाले रहे होंगे। जो विवरण इन्होंने दिए हैं वे संगीत के किसी ऐसे ग्रंथ के आधार पर प्रतीत होते हैं जो अब प्रचलन में नहीं है। संगीत के जो ग्रंथ मुद्रित हुए हैं अथवा बृहदाकार राग कल्पद्रुम में जो दिए गए विवरण हैं उनसे

पूरा पूरा मेल उनके उन लेखों का नहीं है। बारहमासा के प्रसंग में वैद्यक की जानकारी भी प्रदर्शित है। जिसके लिए मुझे आयुर्वेद की अपनी जानकारी पर्याप्त नहीं दिखी, फलतः अपने सुहृद् कृपालु वैद्य आयुर्वेदविभूषण पं० मदनमोहन भट्टाचार्य जी से सहायता की याचना करनी पड़ी।

इसमें अनेक कारणों से अभिधान की कुछ विस्तृत योजना करनी पड़ी। जैसा कुछ पाठ है उसका सुसंगत अर्थ ही न लगे तो ग्राहक-पाठक के प्रयोजन की सिद्धि ही क्या हो सकती है। बुंदेलखंड के प्रयोगों की पूरी जानकारी जैसी मेरे गुरुवर्य लाला भगवानदीन जी को बुंदेलखंड के निवास के कारण थी वैसी मुझमें नहीं है। दूसरे बहुत से प्रयोग समयसापेक्ष भी होते हैं। बोधा के समय क कई प्रयोग अब उठ चुके हैं। इसलिये हो सकता है कि अर्थ कहीं क्वचित् ठीक-सही न भी हो। पाठ संपादन करते करते मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि सुसंगत अर्थ को दृष्टिपथ में बिना रखे यह कार्य विशुद्ध वैज्ञानिक प्रणाली से हो नहीं सकता। जो परंपरा से पूर्णतया परिचित न हो जिसने पुराने ग्रंथों का यथावांछित आलोड़न न किया हो उसका इसमें हाथ डालना वैसा ही है जैसा बिच्छू का भी मंत्र न जानते हुए सर्प के बिल में हाथ डालनेवाले का होता या हो सकता है। एक ओर तो पुराने ग्रंथों का पठन-पाठन उठता जा रहा है और दूसरी ओर पुराने ग्रंथों के संपादन की लिप्सा बलवती होती जा रही है। अपने नाम पर ग्रंथ संपादित करके प्रकाशित करा देना दूसरी बात है और पाठालोचन या पाठसंपादन का परमार्थतया कार्य करना दूसरी बात। परिणाम यह हो रहा है कि साढ़े तीन वज्रों को ऐसे लोग हनूमान् की पूँछ पकड़कर खोजते हैं। सारा जीवन इसी में खपा देने पर भी जब मैं आश्वस्त नहीं हो पा रहा हूँ तब ये मित्र कैसे निबह जाते हैं, अचंभे की ही बात है।

इस अवसर पर कुछ थोड़ी सी अपनी सफाई देने की मुझे अपेक्षा प्रतीत होती है। मैंने जिन कवियों की ग्रंथावलियों का संपादन किया उनकी विस्तृत आलोचनाएँ क्यों नहीं लिखीं। मैं यही मानता हूँ कि किसी कवि की आलोचना लिखने के लिये उसके ग्रंथों का ठीक ठीक पाठ पहले अपेक्षित है। रीतिकाल या शृंगारकाल के प्रमुख कवियों के ग्रंथों का पाठशोध करके मैं चाहता था कि उनपर आलोचनाएँ लिखूँगा। सभा से भिखारीदास ग्रंथावली दो खंडों में प्रकाशित हो जाने पर मैंने तृतीय खंड के रूप में भिखारीदास की संपूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों पर समीक्षा ग्रंथ लिखने की सोची थी, इसका उल्लेख किया जा चुका है, घनआनंद की ग्रंथावली प्रकाशित हो जाने पर उसका आलोचन करने का भी संकल्प किया था, प्रतिश्रुत भी हो गया था। पर जीवन के संचालन का सूत्र जीव के हाथ में नहीं है। ग्रंथावलियों के संपादन में ही 'दो पन' बीत गए। जितनी संपादित करके रख छोड़ी हैं जीवनकाल में उनके प्रकाशित हो सकने की संभावना भी क्रमशः क्षीण होती जा रही है। आलम की चर्चा ऊपर कर ही चुका हूँ। ग्वाल, देव, चंद्रशेखर वाजपेयी, सेवक आदि की ग्रंथावलियाँ पड़ी धूल फाँक रही हैं। हमारे गुरुजनों ने हिंदी पुराने के पुराने काम को साहित्यसेवा की भावना से ही स्वीकार किया था। उनके साथ कार्य करने से मुझमें भी वह भावना थोड़ी बहुत आ

ही गई है। अँगरेजी में जिसे 'मिशन' कहते हैं उसके बिना हिंदी के पुराने काव्य-साहित्य का उद्धार नहीं हो सकता। इसका संबंध 'समाधि' से सारी बाह्य वृत्तियों को समेट कर भीतर केंद्रित करने की आवश्यकता है। व्यवसायात्मिका बुद्धि से यहाँ काम नहीं चल सकता। काम चले तो काम का न होगा। इन ग्रंथों का संग्रह करने में मुझे जितना निजी द्रव्य लगाना पड़ा है वह तक अभी इनकी रायल्टी से नहीं मिल पाया। रायल्टी अब कब कितने दिनों में मिलेगी इसका भी कोई ठिकाना नहीं है। फिर भी इस कार्य में रस आता है। इसीलिए इसमें लगा रहा और अब भी लगा हूँ। संतोष यही है कि कुछ युवक जो उँगलियों पर गिने जा सकते हैं ऐसे अवश्य दिखाई दे रहे हैं जो इसी भावना से काम करते हुए मुझे जान पड़ते हैं। जैसे डाक्टर किशोरीलाल गुप्त (प्राचार्य जमानिया हिंदू महाविद्यालय) एवम् डाक्टर किशोरीलाल प्राध्यापक रणजीत पंडित इंटर विद्यालय, नैनी, इलाहाबाद। संतोष इसीलिये है कि इसका संक्रमण आगे की पीढ़ी में हो गया है। यह प्रवाह चलता रहेगा, खंडित न हो सकेगा, ऐसा विश्वास हो गया है। अलमति-विस्तरेण।

इस कार्य में सहायता करनेवाले एक शिष्य का नाम ही स्मृतिपथ पर नहीं रह गया जिन्होंने विरहवारीश की मुद्रित प्रति से अश्लिष्ट पदावली में अनुलिपि की थी। डाक्तर बटेकृष्ण (रीडर, हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, गया) ने उस समय तरह तरह की सूचियाँ बनाकर और हिंदी के संग्रहग्रंथों का आलोड़न करके बोधा के छंदों को जुटाने का अथक श्रम किया, यद्यपि संग्रहों से कोई विशेष उपलब्धि नहीं हो पाई। संग्रह करने के कार्य में स्वर्गीय अर्जुनदास जी केडिया के स्वर्गीय पुत्र शिवकुमार केडिया ने भी श्रम किया था। बाहर वे जहाँ जहाँ गए वहाँ के पुस्तकालयों में प्राप्त संग्रहों को देखा-परखा। मेरे साथ उन्होंने बुंदेलखंड की यात्रा भी की थी। विश्वेश्वर मंदिर के महंत पं० रामशंकर त्रिपाठी और उनके परम सुहृद् कविराज पं० मदनमोहन जी भट्टाचार्य ने आयुर्वेदसंबंधी कुछ शब्दों और प्रयोगों को स्पष्ट करने में साहाय्य किया। नागरीप्रचारिणी सभा के साहित्यविभाग के वर्तमान कार्यकर्ता मेरे शिष्य पं० लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी' ने ग्रंथावली के छंदों की साधुता के विषय में स्वकीय पिंगलशास्त्र के वैदुष्य का योग दिया। ये सभी धन्यवाद, साधुवाद, आशीर्वाद के भाजन हैं। स्मृति में जिनके नाम नहीं आए या जिनका परंपरया कुछ भी इसके कार्य के निष्पादित करने में योग है सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ। अंत में बुद्धिसेन 'बोधा' के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी निम्नलिखित पंक्ति को एक शब्द की परिवृत्ति करके प्रस्तुत कर रहा हूँ—

'यह काव्य को पंथ करार है जू तरवार की धार पै धावनो है'

श्रावणी, २०३१ वैक्रम,
वाणी वितान भवन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी

विश्वनाथप्रसाद मिश्र

कवि का जीवनवृत्त

हिंदीसाहित्य के मध्यकाल में स्वच्छंद काव्यप्रवृत्ति वाले कवियों की अत्यंत विशिष्ट काव्यधारा प्रवाहित हो रही थी। पर उस धारा और उस प्रवृत्ति के कवियों पर इतिहासकारों ने बहुत कम ध्यान दिया। परिणाम यह हुआ कि भक्तिकाल के अनंतर जो काव्यकाल प्रवर्तित हुआ उसका उपयुक्त विभाजन करने का उन विद्वानों को कोई स्पष्ट मार्ग न दिखाई पड़ा। फलतः उस काव्यकाल का नाम कहीं 'अलंकृतकाल' और कहीं 'रीतिकाल' रखा गया। बाह्य वेशभूषा पर ही दृष्टि रखने से ऐसे नाम रखने पड़े और विभाग न हो सके। आंतर काव्यप्रवृत्ति पर ध्यान देते ही उसका उपयुक्त नाम कैसे 'शृंगारकाल' रखा जा सकता है और इससे विभाजन की कैसी सुव्यवस्था हो सकती है इसका विवेचन किया जा चुका है। इस काव्यधारा को लक्षित कर लेने पर इतिहास का इतना ही (विभाजन मात्र) लाभ नहीं है; और भी कई लाभ हैं। अनुसंधायकों को उस दृष्टि से देखने पर इस काव्यकाल के अध्ययन में सुविधा तथा सरलता दृष्टिगोचर होगी।

इस प्रवृत्ति को लक्षित कर लेने पर और इसका गंभीरतापूर्वक मनन करने से इस काल के एक ही या एक से नामवाले कवियों के अध्ययन में विशेष सहा-यता मिलती है। 'आलम' के संबंध में जो 'द्विधा' की 'द्विविधा' फैली हुई थी उसका कुछ परिचय दिया जा चुका है। 'ठाकुर' नाम के तीन या दो प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं में कैसा घालमेल हो गया है और उनकी प्रवृत्तियों के व्यक्तिगत या धारागत भेद का पुष्ट आधार न होने के कारण केवल प्रांतीय भाषाभेद के अवलंबन से पारस्परिक अंतर की कल्पना करने और रचनाओं के छाँटने का प्रयास करने पर किस प्रकार एक की रचना दूसरे के नाम पर चढ़ गई है यह कहा गया है। प्राचीन संग्रहग्रंथों में रीतिबद्ध परिपाटी का ही अनुगमन हुआ है और उक्त रीतिमुक्त कवियों की कृतियाँ भी रीतिबद्ध रचयिताओं की रचनाओं के साथ रख दी गई हैं; नायक-नायिकाभेद की स्थूल और बलात्कृत कल्पना द्वारा किसी भेद में अंतर्भुक्त हो गई हैं। उनकी रचनाओं के छाँटने में 'भाषा-प्रवीनता' की आवश्यकता थी अवश्य, परंतु एक बात पर ध्यान देने की अपेक्षा और थी। 'घनआनंद' की रचनाओं का 'घनआनंद-कबित्त' नाम से संग्रह करनेवाले श्रीब्रजनाथ ने इसका स्पष्ट संकेत किया है—

भाषाप्रबीन सुछंद सदा रहै सो 'घन' जी के कबित्त बखानै।

यह 'सुछंद' शब्द विशेष काम का है; क्योंकि 'जग की कबिताई' (रीतिबद्ध रचना) से इनकी रचना पृथक् कैंड़े की थी। उसके 'धोखे' में रहने से इनके समझने में धोखा हो सकता था। अतः 'प्रवीणों' को भी जो कहीं कहीं 'जकना' पड़ा तो यह तात्कालीन काव्यपरंपरा का ही दोष था। 'जग की कबिताई' के धोखे में रहने से 'बोधा' (रीतिमुक्त) के संबंध में भी गड़बड़ हुआ है।

'शिवसिंहसरोज' में एक तो 'बोधा कवि सं० १८०४' है और दूसरे 'बोध कवि बुंदेलखंडो, सं० १८५५'। कहा जा चुका है कि 'शिवसिंहसरोज' के 'सन्-संवत्' उत्पत्ति के नहीं, उपस्थिति के समय के हैं। 'मिश्रबंधुविनोद' में इन संवतों को जन्मकाल माना गया है। श्री मिश्रबंधु लिखते हैं—

ठाकुर शिवसिंह जी ने इनका जन्म-संवत् १८०४ लिखा है, जो अनुमान से ठीक जान पड़ता है। बोधा एक बड़े प्रशंसनीय और जगद्विख्यात कवि थे; अतः यदि ये संवत् १७७५ के पहले के होते तो कालिदास जी इनके छंद हजारा में अवश्य लिखते। इधर सूदन कवि ने संवत् १८१५ के लगभग 'सुजानचरित्र' बनाया, जिसमें उन्होंने १७५ कवियों के नाम लिखे हैं इस नामावली से प्रायः कोई भी तत्कालीन वर्तमान अथवा पुराना आदरणीय कवि छुट नहीं रहा है, परंतु इसमें बोधा का नाम नहीं है। इससे विदित होता है कि संवत् १८१५ तक ये महाशय प्रसिद्ध नहीं हुए थे। फिर पद्माकर आदि की भाँति बोधा का अर्वाचीन कवि होना भी प्रसिद्ध नहीं है, अतः शिवसिंह जी का संवत् प्रामाणिक जान पड़ता है। जान पड़ता है कि बोधा ने लगभग सं० १८३० से १८६० तक कविता की।

डुमरावँ (शाहाबाद) के पं० नकछेदी तिवारी ने 'भारतजीवन यंत्रालय' से बोधा का 'इश्कनामा' प्रकाशित कराया है। हिंदी में सबसे प्रथम इसी ग्रंथ में बोधा का कुछ वृत्त दिया गया है। जो कथानक उन्होंने बुंदेलखंडी कवियों से सुना उसका संग्रह भी भूमिका में कर दिया है। उनके वृत्तसंग्रह के अनुसार—

बोधा कवि जी (बुद्धसेन) सवरिया ब्राह्मण राजापुर—प्रयाग० के रहनेवाले थे किसी घनिष्ठ संबंध के कारण बाल्यावस्था ही में निज भवन को छोड़ बुंदेलखंड की राजधानी पन्ना में जा पहुँचे। गुणों से महाराजा साहब बहुत मानने लगे यहाँ तक की मारे प्यार के बुद्धसेन से बोधा कहने लगे तब इनका नाम बोधा प्रसिद्ध हुआ।

इनके अनंतर 'सुभान' नामक दरबार की 'यमनी वेश्या' से उनके प्रेम की प्रख्यात कथा देकर लिखा है कि दरबार से छह महीने के लिए देसनिकाले का दंड मिलने पर इन्होंने 'सुभान' के वियोगानल में अपना तनमन जलाते जंगल, पहाड़, दरिया और अनेक शहरों की खाक छानी और इश्कनामा तथा माधवानल का आशय लेकर 'विरहावरीश' नामक अद्वितीय पुस्तक बनाई।

नियमित समय व्यतीत होने पर आप दरबार पन्ना में हाजिर हुए। उस समय 'सुभान' भी उपस्थित थी, महाराज ने कुशलता पूछी, उन्होंने छूटते ही 'विरहवारीश' को तरंगित किया, फिर क्या पूछना था सबके सब गोता खाने लगे।...निदान कुछ देर बाद महाराज ने कहा कि 'बोधा जी बस कीजिए

०राजापुर को 'शिवसिंहसरोज' में गोस्वामी तुलसीदास के वृत्त में 'जिले प्रयाग' में बतलाया गया है। (सप्तम संस्करण, पृष्ठ ४२७) इसी से तिवारीजी ने कदाचित् ऐसा लिखा है : वह वस्तुतः बाँदे में है।

बहुत हुआ अब कुछ माँगिए' जब ऐसी बात कई बार महाराज ने कही और बोधा जी ने इस बात पर महाराज को दृढ़ देखा तो कहा कि 'सुभान अल्लाह'। शील-सागर परमप्रतिज्ञ महाराजा साहब बहादुर ने स्वीकार कर 'सुभान' को इनके साथ रहने की आज्ञा दे दी।

तिवारीजी ने 'सरोज' के संवत् पर यह मत प्रकट किया है—ठाकुर शिवसिंह सेंगर इंसपेक्टर पुलीस ने अपने ग्रंथ में अंदाजी सं० १८०४ लिखा और इनकी जीवनी तथा ग्रंथों के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है इससे इनके संवत् में मुझे बिलकुल शक है।

तिवारीजी को बोधा का 'इश्कनामा' ही मिला था, 'विरहवारीश' नहीं—संप्रति कवि-समाज में 'विरहवारीश' की बड़ी तलाश है अतएव पाठक मात्र से निवेदन है कि उक्त पुस्तक तथा इनके पूर्ण जीवनचरित्र को प्रकाश करने का उद्योग करैं। पर 'विनोद' में बोधा को फिरोजाबादी ही माना गया है। क्योंकि आगरा के पं० लक्ष्मीदत्त ने हमें लिख भेजा कि बोधा के लिखे एक पत्र में १८४५ सं० दिया हुआ है आपने सौजीराम और मौजीराम को बोधा के भाई बलदेव, मनसाराम और डालचंद को पुत्र, टीकाराम को पौत्र और गोपीलाल को प्रपौत्र लिखा है, जिनका अभी जीवित होना आप बतलाते हैं। आप कहते हैं कि बोधा कवि फिरोजाबाद, जिला आगरा के रहनेवाले थे।

आगे यह भी लिखा है—पं० सुशीलचंद्र चतुर्वेदी ने फिरोजाबादी बोधा कवि के विषय में एक नोट लिख भेजा है कि बोधा कवि बुंदेलखंडी से बोधा कवि फिरोजाबादी इतर समझ पड़ते हैं। फिरोजाबादी बोधा कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे, तथा इनकी कुछ पैतृक भूमि 'रहना' नामक ग्राम में, जो फिरोजाबाद के पास है, थी। इनकी कविता कुछ अप्राप्य सी हो रही है। इन्होंने 'बागविलास' नामक एक ग्रंथ रचा था। ये सन् १८३० अर्थात् संवत् १८८७ में वर्तमान थे। पर विनोद ने इसे नहीं माना—समय के विचार से तथा कविताशैली की दृष्टि से हमें यह दोनों एक ही कवि समझ पड़ते हैं।

नागरीप्रचारिणी सभा की 'खोज' में बोधा के नाम पर अब तक इतने ग्रंथ मिले हैं—(१) विरही-सुभान-दंपतिविलास (१७-२०), (२०-२१), (२) बागवर्णन (३२-२१ ए), (३) बारहमासी (३२-३१ बी), (४) फूलमाला (३२-३१ सी), (५) पक्षीमंजरी '(३२-३१ डी)।

इनमें पहला ग्रंथ वही है जिसे 'इश्कनामा' कहते हैं। यह बुंदेलखंडी बोधा की रचना है। संख्या दो से पाँच तक के सभी ग्रंथ फिरोजाबादी बोधा के हैं। 'खोज' के साहित्यान्वेषक के अनुसार ये बोधा उसायनी (फीरोजाबाद, आगरा) के रहनेवाले थे। 'पक्षीमंजरी' में ग्रंथ का रचनाकाल भी दिया हुआ है—

संबत सोरह सै सही जानौ तुम छत्तीस।
तेरस सुक्ल असाढ़ की बार कुंभ को ईस॥

इसके अनुसार सं० १६३६ की आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी, कुंभेश (शनि)

वार को पुस्तक लिखी गई। पर संवत् संदिग्ध जान पड़ता है; क्योंकि 'पक्षी-मंजरी' में एक दोहा यह भी है—

सुनौ सखी मानी नहीं ननदी बरजी सासु।
बौरी किनहू पाइयो चील्ह घोसुआ मासु॥

यह दोहा बिहारी के इस दोहे से मिला लीजिए—

बहकि न इहि बहिनापने जब तब बीर बिनासु।
बचै न बड़ी सबीलहू चील्ह घोंसुआ मासु॥

बिहारी संवत् १७१९ तक वर्तमान थे, ऐसा माना जाता है। इसलिए 'पक्षी-मंजरी' का निर्माण सं० १७१९ के अनंतर होना चाहिए। कहीं 'सोरह' के बदले 'सतरह' या 'ठारह' न हो! बिहारी ने 'पक्षीमंजरी' के दोहे की नकल पर अपना दोहा बनाया हो ऐसा मानना उचित नहीं प्रतीत होता।

'इंडियन एफिमरीज' से गणना करने पर सं० १६३६ की आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी सोमवार को पड़ती है, सं० १७३६ की वही तिथि शुक्रवार को और सं० १८३६ में शनिवार को। सर्वत्र उदया तिथि ली गई है। इस प्रकार सं० १८३६ की ही आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी शनिवार को पड़ती है। ये बोधा फीरोजा-बादी थे, इसका पता इस कवित्त से भी चलता है—

पाऊँ हौं गुपाल गुन गाऊँ हौं गोबिंदजू के ध्याऊँ सिवसंकर मनाऊँ गनपति को।
सारदा सहाई बुद्धि देई अधिकाई हर करिदे सवाई महामाई मोरी गति को।
श्रीफल चढ़ाऊँ धूपदीप धरि लाऊँ जल अगन निवास वाकदेव बोध सुत को।
परम पिरोजाबाद बाग महासिंहजू को लेऊँ मन पेड़ सो बनाइ देऊँ गति को॥

'बागविलास' का यह बाग फीरोजाबाद का बाग है और 'महासिंहजू' का बाग है। ये महासिंह कौन हैं। इतिहास में दो महासिंह मिलते हैं—एक तो प्रसिद्ध महाराजा मानसिंह के पुत्र और जयसिंह के पिता, जो जयपुर के थे। पर उनका 'पिरोजाबाद' से क्या संबंध था, पता नहीं। दूसरे महासिंह उस भदावर राज के थे जो आगरे की नौगाँव तहसील में पड़ता है। उनका विवरण यों मिलता है—उसके (बदनसिंह के) पुत्र महासिंह को हजारी, ६०० सवार का मन्सब, राजा की पदवी और घोड़ा मिला। २८वें वर्ष में यह काबुल गया। ३१वें वर्ष में इनका मन्सब हजारी, १००० सवार का हो गया। इसके अनंतर (जब औरंग-जेब विजयी हुआ और दाराशिकोह परास्त हुआ तब) यह पहिले ही वर्ष में आलमगीर की सेवा में पहुँचकर शुभकरण बुंदेले के साथ चंपत बुंदेले पर भेजा गया। १०वें वर्ष (सन् १६६७ ई०) में कामिल खाँ के साथ यूसुफजई अफगानों को दंड देने में वीरता दिखलाई। इसके उपलक्ष में ५०० सवार दो अस्पः सेहअस्पः कर दिए गए। २६वें वर्ष में यह मर गया।*

इस प्रकार इन महासिंह की मृत्यु संवत् १७४० वि० में हो गई। इनके

---

* **मआसिरुल उमरा, पृष्ठ १०७।**

पिता बदनसिंह ने बटेश्वर ग्राम में बटेश्वरनाथ का मंदिर संवत् १७०३ में निर्माण कराया था। उसी समय से इस ग्राम की अधिक उन्नति हुई और अनेक महल तथा मंदिर आदि बनते गए।[1] यही क्यों महल तथा बाग बनवाने की प्रवृत्ति इनके वंशजों में बराबर थी––(**महासिंह के पुत्र) उदयसिंह के बाद कल्याणसिंह हुए जिन्होंने बाग बसाया था। यहाँ इन्होंने एक महल और बाग भी बनवाया था।**[2] इसलिए संभव है, महासिंह ने फीरोजाबाद में बाग बनवाया हो। किसी महासिंह ने फीरोजाबाद में मंदिर भी बनवाए थे––**टू टेंपुल्स् डेडिकेटेड टु महादेव एंड श्यामसुंदर एरेक्टेड बाइ महासिंह ए ब्राह्मण हू गेव हिज नेम टु वन आव् दि महल्लाज।**[3]

'गजेटियर' ने महासिंह को ब्राह्मण लिखा है। बिजनौर की ओर कुछ तगा ब्राह्मण होते हैं जिनके नामों में सिंह लगता है। पर महासिंह ऐसे ही कोई ब्राह्मण थे, भूमिहार ब्राह्मण थे या सिक्खधर्म स्वीकार कर सिंह हो गए थे, इसका कोई पता 'गजेटियर' नहीं देता। भदावरवाले 'क्षत्रिय' हैं। इससे 'गजेटियर' वाले महासिंह और ये कदाचित् एक नहीं हैं। दूसरे छंद में इन्होंने एक दूसरे ही राजा का नाम लिया है––

श्रीफल बादाम तूत जामन जभोंरी आम खारक खजूर नीम नीबू तून काज है।
करना कनेर बेर सीस सरों गुलाचीन गूलर गुलाब ककरोंदा कैंथ साज है।
बेल बेला केतकी पलास पीपलौ नरंगी कुंदन कदंब सेब सेवती समाज है।
आवासिंह कहै बोध जाके सम लेखियत सुरननिवास हेतु बागो बनराज है॥

ये आवासिंह कौन हैं, इनका पता नहीं चला। ये भी फीरोजाबाद के ही होंगे। शिवाजी के एक सरदार का नाम आबाजी सोनदेव था, पर उन आबाजो का फीरोजाबाद से कोई संबंध मुझे ज्ञात नहीं। 'आवागढ़' से संबद्ध किसी नरेश का उल्लेख तो नहीं है? 'आवासिंह' का अर्थ हो 'आवा' के 'सिंह'! दैव जाने! पर यह तो निश्चित ही है कि ये बोधा फीरोजाबाद के थे। ऊपर उद्धृत कबित्तों में कवि का नाम 'बोध' आया है। यह भी ध्यान देने योग्य है। शिवसिंह सेंगर ने 'बोध' और 'बोधा' में अंतर किया है। यद्यपि उन्होंने 'बोध' को बुंदेलखंडी लिखा है तथापि उनका जो निम्नलिखित कबित्त अपने 'सरोज' में उद्धृत किया है उसका पता बुंदेलखंडी 'बोधा' की अब तक प्राप्त किसी रचना में नहीं चला। 'बोध' के नाम पर उद्धृत रचना किसी रीतिबद्ध रचयिता की रची प्रतीत होती है––

परम प्रसिद्ध की सुमृति सतबुद्धि की सदाई रिद्धि सिद्धि की घमस मचिबो करै।
पूरन पसार पसरत पुन्यवारे भारे गुनिन के बृंद बेदबानी बचिबो करै।
भनै बोध कबि छबि देखत छकित होत एकौ छन मन न जुदाई खचिबो करै।
देवतटिनी के तट अंगन तरंग संग रातो दिन मुकुति नटी सी नचिबो करै॥

---

१. वही, पृष्ठ १०६, टिप्पणी।
२. वही, पृष्ठ १०७, टिप्पणी।
३. आगरा गजेटियर, पृष्ठ २७४।

'खोज' में जितने ग्रंथ फीरोजाबादी के नाम पर मिले हैं उनमें से 'पक्षी-मंजरी' के अतिरिक्त विवरण-पत्रों में उद्धृत अंशों में कहीं कवि का नाम नहीं है। 'पक्षीमंजरी' के आदि में 'बोधा कृत लिख्यते' है, बीच में 'बोधा' नाम आया है और अंत में 'इति बोधसेनि कृत पंछीमंजरी समाप्तं' लिखा है। जितनी रचना मिली है उसमें राधाकृष्ण या गोपीकृष्ण की लीला का उल्लेख है। 'सरोज' में बोधा कवि के नाम पर जो कबित्त दिया गया है उसमें भी गोपीकृष्ण-बोधा का ही वर्णन है—

एकै लिये चौंरी कर छत्र लिये एकै हाथ एकै छाहँगीर एकै दावन सकेलतीं।
एकै लिये पानदान पीकदान सीसा सीसी एकै लै गुलाबन की सीसी सीस मेलतीं।
बोधा कबि कोऊ बीन बाँसुरी सितार लिये लाड़ली लड़ावैं फूलगेंदन की झेलतीं।
छोटे ब्रजराज छोटी रावटी रँगीन तामें छोटी छोटी छोहरी अहीरन की खेलतीं॥

'पक्षीमंजरी' में दोहे हैं इसलिए बोधा के स्थान पर 'बोध' नहीं हो सकता क्योंकि मात्रा और प्रवाह में कमी हो जाती है, पर कबित्तों में जहाँ 'बोध' है वहाँ 'बोधा' रहे तो भी कोई क्षति नहीं। इसलिए कहीं ऐसा तो नहीं है कि 'बोधा' के बदले 'बोध' लिपिप्रमाद से चल गया हो और कवि का नाम 'बोध' मान लिया गया हो, क्योंकि बुंदेलखंडी 'बोधा' ने सर्वत्र अपनी 'छाप' बोधा ही रखी है।

'सरोज' में 'बोध', 'बोधा' के अतिरिक्त एक 'बुद्धिसेन' कवि भी हैं। 'पक्षी-मंजरी' के अंत में फीरोजाबादी 'बोधा' के लिए 'बोधसेनि' नाम दिया गया है। इससे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि 'बोधा' नाम 'बोधसेन' 'बुद्धिसेन या बुद्धसेन' से ही बना है और 'छाप' के लिए रखा गया है। पर यह पता नहीं चलता कि 'पक्षीमंजरी' के 'बोधा' से बुद्धिसेन कवि का कोई संबंध है या नहीं। जो कबित्त 'सरोज' में दिया गया है वह किसी ब्रह्मभट्ट कवि का जान पड़ता है—

बारी औ खँगार नाऊ धीमर कुम्हार काछी खटिक दसौंधी ये हजूर को सुहात हैं।
कोल गोंड़ गूजर अहीर तेली नीच सबै पास के रहे से कहाँ ऊँचे भए जात हैं।
बुद्धिसेन राजन के निकट हमेस बसैं कूकर बिलार कहा गुन अधिकात हैं।
दूर ही गयंद बाँधे दूर गुनवान ठाढ़े गज औ गुनी के कहा मोल घटि जात हैं॥

राजा के निकट रहनेवाले गुणहीन पार्षदों से कविजी अप्रसन्न हो गए हैं। इस बात का पता नहीं चलता कि किस राजा से यह उक्ति कही गई है। बुंदेलखंडी 'बोधा' का नाम भी बुद्धिसेन था यह पहले बताया जा चुका है। उन्होंने अपने 'विरहवारीश' में 'बोधा' छाप के स्थान पर 'बुद्धिसेन' छाप का भी व्यवहार दो स्थलों पर किया है—

कंत सों न मंत और गेह सों न नेह कछू सुत सों न सुत रह्यौ ज्ञान को न गारचो है।
बेद सों न भेद लहै भाभी को भरोसो कौन दुख्ख को न दोष बुद्धिसेन यों बिचारचो है॥
काहू कह्यो अमृत कबित्त के निबेदन में कबिन बतायो प्रेमगान में लसतु है।
प्रेमगान अमृत बतायो है फनिंद ही के फनिप बतायो छपाकर में बसतु न।
छपाकर बतायो अमी साधुन की संगति में साधुन बतायो बेदरिचा दरसतु है।
बेदरिचा अमृत बतायो हमैं बुद्धिसेन तरुनी की तरल तरंगन बसतु है॥

यों यह तो निश्चित हो जाता है कि 'बोधा' नाम 'बुद्धिसेन' का ही संक्षिप्त रूप है और छाप में उसी का व्यवहार प्राचीन काल में इस नामवाले करते थे। पर यह ठीक ठीक पता नहीं चलता कि बुद्धिसेन कोई पृथक् कवि हैं या उपर्युक्त दोनों कवियों में से किसी एक की पूरे नाम की यह छाप नए कवि के अवतार का कारण हो गई है। इससे यह भी जान पड़ता है कि 'बुद्धिसेन' की संक्षिप्त छाप 'बोधा' ही होती थी 'बोध' नहीं। तो क्या 'बोध' नाम यों ही चल पड़ा। पर्याप्त सामग्री के अभाव में इस जिज्ञासा का समाधान नहीं हो पाता। पर बुंदेलखंडी कवि 'बोध' नहीं थे, 'बोधा' थे यह निश्चित है।

यह देखना चाहिए कि बुंदेलखंडी बोधा किस समय हुए थे। 'खोज' में "विरहीसुभान-दंपतिविलास' या 'इश्कनामा' की जो प्रति सन् १९१७ की त्रिवर्षी में मिली है उसका पहला ही दोहा है—

खेतसिंह नरनाह को हुकुम चित्त हित पाइ।
ग्रंथ इस्कनामा कियो बोधा सुकबि बनाइ॥

इससे स्पष्ट होता है कि ये खेतसिंह के दरबारी थे। 'विरहवारीश' में भी इन्हीं खेतसिंह की प्रशस्ति मिलती है। उसमें दरबार से देसनिकाले का दंड भी कथित है, कवि का पूरा नाम भी है और यह भी बतलाया गया है कि ग्रंथ के निर्माण का कारण क्या है--

बिछुरन परी महाजन कावा। तब बिरही यह ग्रंथ बनावा।
पंती छत्र बुँदेल को छेत्रसिंह भुवमान।
दिल माहिर जाहिर जगत दान जुद्ध सनमान॥
सिंह अमान समर्थ के भैया लहुरे आहिं।
बुद्धिसैन चिन चैनजुत सेवौं तिन्हैं सदाहिं॥
कछु मोतें खोटी भई छोटी यही बिचार।
उरमान्यौ मान्यौ मनै तज्यौ देख निरधार॥
इतराजी नरनाह की बिछुरि गयो महबूब।
'बिरहसिंधु' बिरही सुकबि गोता खायो खूब॥
बर्ष एक परखत फिरो हर्षवंत महराज।
लह्यो दान सनमान पै चित न चह्यो सुखसाज॥
यह चिंता चित मैं बढ़ी चित मोहित घट कीन।
भौन रौन मृगछौन सो तौन कहा परबीन॥

इससे ज्ञात होता है कि क्षेत्रसिंह (= खेतसिंह) पन्नानरेश महाराज छत्रसाल के पंती अर्थात् पनाती (प्रपौत्र) थे और अमानसिंह के छोटे भाई थे। इतिहास में वंशवृक्ष इस प्रकार है०—

बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, वर्ष १३, अंक २, पृष्ठ १३८।
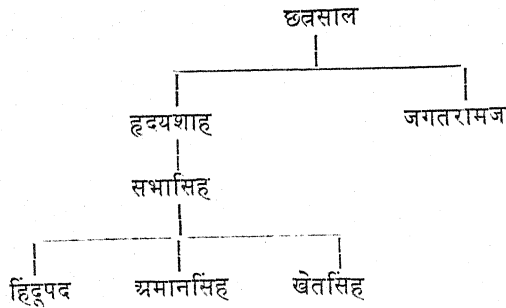
दूसरे यह भी पता चलता है कि कवि का नाम 'बुद्धिसैन' अर्थात् 'बुद्धिसेन' था। 'सैन' तो 'चैन' के अनुप्रास से हो गया है। तीसरे यह भी प्रकट होता है कि कुछ खोटी हो जाने से राजा अप्रसन्न थे, एक वर्ष तक उनकी सुमुखता की प्रतीक्षा करनी पड़ी। किसी अ वियोग के समय 'विरहसिंधु' ('विरहवारीश) बनाया। वियोग का कारण नरनाह की 'इतराजी' थी। 'अपडर' के कारण ये राजा के संमुख वर्ष भर नहीं गए। छह महीने के देस निकाले की किंवदंती निराधार नहीं है; हाँ, छह के स्थान पर 'बारह' होना चाहिए था।

यही नहीं, इसका भी पता चलता है कि अनेक दरबारों में टक्कर खा लेने के अनंतर खेतसिंह के दरबार में 'बोधा' गए थे—

बढ़ि दाता बड़ कुल सबै देखे नृपति अनेक।
त्याग पाय त्यागे तिन्हैं चित में चुभे न एक॥

कहाँ कहाँ चक्कर काटा था, उन स्थानों की भी सूची इस कबित्त में दे दी गई है—

देवगढ़ चाँदा गढ़ा मंडला उजैन रीवाँ साम्हर सिरोज अजमेर लौं निहारो जोइ।
पटना कुमाऊ पैंधि कुर्रा औ जहानाबाद साँकरी गली लौं बारे भूप देखि आयो सोइ।
बोधा कबि प्राग औ बनारस सुहागपुर खुरदा निहारि फिरि मुरक्यो उदास होइ।
बड़े बड़े दाता ते अड़े न चित्त माहिँ कहूँ ठाकुर प्रबीन खेतसिंह सो लखो न कोइ॥

खेतसिंह कौन थे, इसका भी पता बोधा ने ही दे दिया है—

बुंदेला बुंदेलखंड कासी-कुलमंडन।
गहरिवार पंचम नरेस अरिदल-बल-खंडन।
तासु बंस छत्ता समर्थ परनापत बुझिये।
तासु सुवन हिरदेस कुल्ल आलम जस सुझिये।
पुनि सभासिंह नरनाथ लखि बीर धीर हिरदेससुव।
तिहि पुत्र प्रबल कबि कल्पतरु खेतसिंह चिरजीव हुव॥

श्रीसभासिंह की मृत्यु सं० १८०९ में हुई। इनके तीन पुत्र थे—हिंदूपत, अमान-सिंह और खेतसिंह। अमानसिंह बड़े दानी थे। इनकी दानप्रशंसा में 'पराग' कवि ने लिखा है—

कलि में अमानसिंह कर्न अवतार जानो जाको जस छाजत छबीलो छपाकर सो ।

सभासिंह अमानसिंह को बहुत चाहते थे——उनकी सुशीलता और उनके विशिष्ट गुणों के कारण। प्रजा भी उनके दैवी गुणों से प्रसन्न थी। इसलिये हिंदूपत से छोटे होने पर भी राज्य के अधिकारी ये ही बनाए गए, पर संवत् १८१५ में राज्य के लोभ से 'हिंदूपत' ने इनको मरवा डाला और वह स्वयम् राजगद्दी पर बैठ गया। बोधा ने 'हिंदूपत' का नाम भी नहीं लिया। 'अमानसिंह' को 'समर्थ' अवश्य लिखा पर 'महाराज' नहीं लिखा। खेतसिंह को महाराज, नरेश आदि विशेषण बराबर दिए हैं। इस संबंध में चाहे जो भी अनुमान लगाया जाय। 'सरोज' में जो सं० १८०४ बोधा कवि का काव्यकाल दिया गया है वह ठीक बैठ जाता है, जन्मकाल वह नहीं है। यदि अमानसिंह का समय लें तो सं० १८०६ से १८१५ तक के आगे पीछे इस ग्रंथ का निर्माण होना चाहिए। बोधा के विवरण से सभासिंह की मृत्यु का अनुमान तो किया जा सकता है, पर अमानसिंह की मृत्यु का कोई संकेत नहीं मिलता। इससे सं० १८०६ के बाद की ही रचना यह होगी। इनके काव्यकाल को सं० १८३० से १८६० तक नहीं खींचा जा सकता।

'बोधा' को 'बाला' कैसे मिली इसका भी 'विरहवारीश' में उल्लेख है——

'जिकिर लगी महबूब सों फिर गुस्सा महाराज।
बिन प्यारी होवै सो क्यों मो मन को सुखसाज॥
सो सुनि गुनि निज चित्त में लिखि दिय बाला एक।
रहियें खेत नरेस के चरन सरन तजि टेक॥
तब हौं अपने चित्त में सकुचौं सोच बनाय।
मेरे ऐसी बस्तु कह काहि मिलौं लै जाय॥
बनत यहै बनिता कही वे राजा तुम दीन।
भाषा करि माधो कथा सो लै मिलौ प्रबीन॥
यों सुनि थिर हो हो कथी बिरही कथा रसाल।
सुनि रीझै खीझैं-तजें खेतसिंह छितिपाल॥

यह 'एक बाला' कौन थी। उसका नाम भी दिया है और गुण भी——

नवजौबन बनिता निपुन सुभ गुन सदन सुभान।
बूझत रस चसके बहुत प्रिय पै प्रीति-बिधान॥
अतन-कथन के कथन यों केलिकथन परबीन।
बिरहगिरह प्रेरित तहाँ बिरही-पति रसलीन॥
बाला बूझत बालमैं सुन बालम सज्ञान।
कहा प्रीति की रीति है कीजै कत उनमान॥

'विरहवारीश' या 'माधवानल-कामकंदला-चरित्र' विरही (बोधा) और सुभान के संवाद के रूप में ही बनता गया है——

सुन सुभान अब कथा सुहाई। कालिदास बहु रुचि सह गाई।
सिंहासन बत्तीसी माहीं। पुतरिन कही भोज नृप पाहीं।
पिंगल कहँ बैताल सुनाई। बोधा खेतसिंह सह गाई।

'माधवानल-कामकंदला' कथा की परंपरा भी बोधा ने यहाँ बता दी है। आलम की भाँति दोहे-चौपाई में ही यह ग्रंथ नहीं है, अनेक प्रकार के छंदों में यह बहुत बड़ा ग्रंथ है। इसमें नौ खंड हैं और प्रत्येक खंड में तीन या चार तरंगें हैं। खंडों का विवरण यों है—

प्रथम साप पुनि बाल द्वितिय आरन्य खंड गुनि।
पुनि कामावति देस बेस उज्जैन गवन भनि।
जुद्ध खंड पुनि गाह रुचिर सिंगार बखानो।
पुनि बहुधा बन देस नवम बर ज्ञान बखानो।
कहि प्रीति रीति गुन की सिपत नृप बिक्रम को सरस जस।
नौ खंड माधवा-कथा में नौ रस बिद्या चतुरदस॥

नौ खंड ये हैं—(१) शाप, (२) बाल, (३) आरण्य, (४) कामावती, (५) उज्जैन, (६) युद्ध, (७) शृंगार, (८) वनदेश, (९) ज्ञान।

'विरहीसुभान-दंपतिविलास' या 'इश्कनामा' के कई छंद 'विरहवारीश' में भी रखे हुए हैं। निर्माणकाल का समय किसी ग्रंथ से ज्ञात नहीं होता। 'इश्क-नामा' में प्रेममार्ग के निरूपण की प्रवृत्ति है। 'दंपतिविलास' से जान पड़ता है कि प्रिया की प्राप्ति के अनंतर ही प्रेम का यह निरूपण हुआ होगा। इससे अनुमान होता है कि 'इश्कनामा' 'विरहवारीश' के बाद ही संकलित किया गया। इसमें कुछ रचनाएँ तो 'विरहवारीश' से पूर्व की होंगी जो 'सुभान' के सौंदर्य और पूर्वराग से संबंध रखती हैं और कुछ प्रेममार्ग की कठिनाई का निरूपण करनेवाली बाद की कृतियाँ।

रीतिबद्ध रचनाकारों की सी शास्त्रबद्ध प्रवृत्ति पन्नावाले बुंदेलखंडी बोधा में नहीं है, इससे इन्हीं फीरोजाबादी बोधा से पृथक् करने में कोई कठिनाई नहीं रह जाती। दोनों की शैली एक सी कहीं नहीं है, जैसा अनुमान लगाया गया है। इस प्रकार यह निश्चित है कि एक बोधा रीतिबद्ध रचना करनेवाले थे, वे फीरोजा-बाद (आगरा) के थे और महासिंह के वंशज आबासिंह के आश्रित थे। दूसरे रीति-मुक्त रचनाकार थे, ये पन्ना (बुंदेलखंड) के थे और खेतसिंह के आश्रित थे।

विरहवारीश

रीतिबद्ध रचना करनेवालों ने मुक्तक से आगे अपना कर्तृत्व नहीं दिखाया, पर रीतिमुक्त स्वच्छंद कवियों ने प्रबंधरचना की प्रवृत्ति भी प्रदर्शित की, यद्यपि इनके प्रबंध प्रेम के ही प्रबंध थे। इन स्वच्छंद कवियों में सूफी भाव भारतीय भाव में अंतर्भुक्त हो गया था। संप्रति रीतिमुक्त बोधा कवि के उस इतिहासप्रसिद्ध 'विरहवारीश' का परिचय देना है जिसका हिंदीसाहित्य को अभी तक पता नहीं था। यह बहुत बड़ा प्रेमप्रबंध है और इसमें प्राकृतकाल से चली आती हुई 'माधवा-नल-कामकंदला' की कथा काव्यनिबद्ध है। इसका दूसरा नाम 'माधवानल-कामकंदला-चरित्र' भी है। हिंदी के कई स्वच्छंदमति कवियों ने यह कथा रची थी।

हिंदी में माधवानल-कामकंदला का चरित्र तीन कवियों द्वारा पद्यबद्ध प्राप्त

होता है। सबसे पहले सं० १६४० (९९१ हिजरी) में आलम ने 'माधवानल-कामकंदला' के नाम से दोहे-सोरठे और चौपाइयों में यह कथा छंदोबद्ध की। फिर हरिनारायण ने 'माधवानल की कथा' के नाम से सं० १८१२ में इसे काव्य-बद्ध किया। उन्होंने अपनी कथा 'आलम' वाली कथा सुनकर लिखी थी। आलम-कृत ग्रंथ में तीन ही छंद व्यवहृत हुए हैं। पर उन्होंने बीच में कबित्त, सवैया, छप्पय आदि हिंदी के अन्य बड़े छंदों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने स्वयम् लिखा है—

कथा माधवानलहि की आलम प्रथम उचार।
स्रवन सुनी फिरि कै गुनी करत भयौं बिस्तार॥ ३॥
प्रथम चौपही आलम कीनी। ताते कथा स्रवन सुनि लीनी।
कहूँ कहूँ बिच दोहा परै। तापै बहुरि सोरठा धरै॥ ८१॥
हरिनारायण सो सुनी करयो ताहि बिस्तार।
छप्पै छंद कबित्त मिलि कियो जाहि निरधार॥ ८२॥

आलम की 'माधवानल-कामकंदला' की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ मेरे देखने में आई हैं। एक तो काशिराज के 'सरस्वती-भंडार' में सुरक्षित है, दूसरी काशी नागरीप्रचारिणी सभा के 'आर्यभाषा पुस्तकालय' में, तीसरी आदि-अंत में त्रुटित बाबू राधाकृष्णदास के सुपुत्र बालकृष्णदास के पुस्तकालय में। पहले की दोनों प्रतियों में पाँच अर्द्धालियों के अनंतर एक दोहा और उसके बाद एक सोरठा है। प्रतियों का मिलान करने से थोड़े हेर-फेर के साथ तीनों मिल जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मूल प्रति में दोहे और सोरठे दोनों ही प्रयुक्त थे, पर बाद में कदाचित् छोटा करने के विचार से किसी ने सोरठों को या यथास्थान दोहों को हटा दिया है। सोरठों में प्रायः दोहों में कथित तथ्य पल्लवित या पुष्ट किया गया है। पहली दोनों प्रतियों में केवल कथाभाग ही मिलता है, वस्तुवर्णन, भावाभिव्यक्ति आदि के अंश भी पृथक् कर दिए गए हैं। शुद्ध घटनाचक्र ही छाँटकर रखा गया है। हरिनारायण के प्रमाण पर यह सिद्ध है कि मूल ग्रंथ में दोहे-सोरठे दोनों का संनिवेश था। इसलिये हिंदीसाहित्य के इतिहासों में जो यह उल्लेख हुआ है कि आलमकृत उपाख्यान कथा का पद्यबद्धरूप मात्र है ऐसी वस्तुस्थिति नहीं प्रतीत होती। यह तो नहीं कहा जा सकता कि आलम के ग्रंथ में वस्तुवर्णन का या भावुकतापूर्ण स्थलों के रमणीयता-विधायक अभिव्यंजन का पर्याप्त विस्तार है, पर यह निश्चित है कि उनका अभाव भी नहीं है।

यही प्रेमाख्यानक बोधा ने काव्यबद्ध किया है। कथा का जैसा विस्तार और नूतन कथाप्रसंगों का जैसा संविधान इनके प्रबंधकाव्य में है वैसा उन दोनों में नहीं। आलम और हरिनारायण दोनों की रचना में सूफियों द्वारा गृहीत दोहे-चौपाई की प्रेमाख्यानवर्णन की पद्धति ही स्वीकृत हुई है। हरिनारायणकृत ग्रंथ में छप्पय, सवैया और कबित्त का विनियोग पर्याप्त परिमाण में नहीं है। यत्र-तत्र रससिक्त बड़े छंद घटनाचक्र की इतिवृत्तात्मकता को रूखापन हटाने के लिये जोड़ दिए गए हैं। इनकी पोथी आकार में आलम की पोथी से छोटी है, यदि संक्षिप्तीकृत ग्रंथ को तुलना के लिये सामने न रखा जाय और उसके बृहत् एवम् विस्तृत रूप से मिलाया जाय तो पोथी लगभग आधी है। हरिनारायण का

प्रयास केवल इतिवृत्त को ही सुथरे रूप में प्रस्तुत करने का प्रतीत होता है। काव्य-गत रमणीयता का विचार उसमें न्यून ही है, पर उन्होंने कथा भारतीय सर्गबद्ध पद्धति से ही कही है। आलम की रचना में कथा तो आद्यंत सीधी ही चली है, पर सर्गों का विधान नहीं है। सूफियों के प्रेमाख्यानक-काव्यों में मसनवीशैली का अनुगमन होने से कथा की शृंखला आरंभ से इति तक जुड़ती चली जाती है, उसमें सर्गों का विधान करके कथा का विभाजन करने का चलन नहीं है। बीच बीच में कथाप्रसंगों का पार्थक्य सूचित करने के लिए शीर्षक बाँध दिए जाते हैं। पर उनके कारण अनुबंध में तिलमात्र भी भेद उपस्थित नहीं होता। शीर्षकों को पृथक् कर लेने पर भी कथाक्रम में कोई अंतर नहीं पड़ सकता। वस्तुतः दो प्रसंगों के बीच कोई व्यवधान मसनवी-शैली को सह्य नहीं है। भारतीय प्रबंधकाव्यों में सर्गों के बीच व्यवधान रहता है। सर्ग की समाप्ति पर जो कथाप्रसंग छूट जाता है, दूसरे सर्ग के आरंभ में उसे फिर से जोड़ते हैं। आलम की रचना मसनवी-शैली का अनुगमन करती है। उसमें कहीं प्रसंगों का पार्थक्य सूचित नहीं किया गया है। हाँ संक्षिप्त की हुई पोथियों में 'अध्याय' की योजना कदाचित् संक्षेप करने वाले ने अपनी ओर से कर ली है।

विरहवारीश की कथा इस प्रकार है—श्रीकृष्ण ने जब द्वारका को प्रस्थान किया तब उनके विरह में व्रज की गोपांगनाएँ अति व्यथित रहने लगीं। श्रीकृष्ण के वियोग में जब सबसे प्रथम वसंत का अवसर आया तब काम और रति ने व्रज में आकर अपनी माया का प्रसार किया और उद्दीपक साधनों द्वारा ये उनकी विरहव्यथा बढ़ाने लगे। बेचारी गोपिकाएँ तो इधर उधर वन में घूमती हुई श्रीकृष्ण की लीलाभूमि के दर्शन करके उनकी विरहाग्नि में तप रही थीं और ये दोनों अपने प्रभाव-विस्तार द्वारा उनका विषाद उद्दीप्त कर रहे थे। काम और रति के इस चरित्र से गोपवधूटियों का हृदय क्रोध से अभिभूत हो गया, उन्होंने अति क्षुब्ध होकर उन्हें शाप दिया कि तुम हमें जैसा विरह का कष्ट दे रहे हो वैसा ही कलियुग में तुम्हें भी मिले। इस अभिशाप से ये व्यग्र हो गए। इन्होंने क्षमा माँगी और पूछा कि यह विरह हमें कितने दिनों तक सहन करना होगा। उन्होंने कहा कि यह वियोगव्यथा तुम्हें बारह वर्ष पर्यंत भोगनी पड़ेगी। फलस्वरूप काम और रति को नरयोनि में जन्म ग्रहण करना पड़ा। काम 'माधवानल' हुआ और रति 'कामकंदला' हुई।

द्वापर के अंत में काशी में सुमंत कायस्थ निवास करता था। उसे लीलावती नाम की कन्या थी। वह बड़ी विदुषी थी। उसने अनेक ग्रंथों का निर्माण भी किया। काशी में एक बार कोई ब्राह्मण देवता शास्त्रार्थ करते और दिग्विजय का डंका पीटते पहुँचे। काशी में 'पंडित' की परख बहुत प्राचीन काल से होती आ रही है। उन्होंने काशी के उद्भट विद्वानों को शास्त्रार्थ में ललकारा और चार प्रहर में ही सबको परास्त कर दिया। सकल-विद्या-निष्णात लीलावती को जब इसका पता चला तब उसने प्रातःकाल उन विजेता पंडित से शास्त्रार्थ करने का संकल्प किया। दोनों में वाद-विवाद हुआ। अंत में लीलावती ने अपने विद्याबल से उन्हें पराजित कर दिया। इस पर नगरवासियों ने उनकी बड़ी खिल्ली उड़ाई।

उन्होंने विजित और लज्जित होकर लीलावती को अभिशाप दिया कि जा तेरे ग्रंथ जो पढ़े वह दरिद्र और रुग्ण हो जाय तथा तू वैधव्य का दुःख भोग। शाप के प्रभावस्वरूप लीलावती विधवा हो गई और तब उसने बारह वर्ष पर्यंत भगवान् शंकर की आराधना की और उन्हें प्रसन्न करके यह वरदान पाया कि तेरा पति स्वयम् कामदेव हो। दूसरे जन्म में पुष्पावती के राजा गोविंदचंद्र के राजपुरोहित रघुदत्त ब्राह्मण के घर वह जन्मी। पुरोहित का वासस्थल राजधानी से कुछ दूर था।

नगरी में ही विद्याप्रकाश नाम का कोई ब्राह्मण बड़ा पंडित और धर्मिष्ठ था, जिसके यहाँ पुत्र ने जन्म ग्रहण किया। राजा के निकट उसका मान तो पहले से ही था, पर पुत्रोत्पत्ति के अनंतर उसका भाग्यवश विशेष मान होने लगा। उसने पुत्र का नाम माधवानल (माधवानंद) रखा। जब माधव पाँच वर्ष का हुआ तभी से उसमें वीणा बजाने की विशेष अभिरुचि हो गई। धीरे धीरे वय के साथ वीणावादन की उसकी विशेषता भी बढ़ती गई। जब वह वयस्क हुआ तब वीणा लिए उसे बजाता घूमा करता था। एक दिन वह शिव के उद्यान में वीणा बजा रहा था। इसी समय लीलावती वहाँ दर्शन करने आई। वह माधव के रूप पर मोहित और वीणा की मोहक ध्वनि से मूर्च्छित हो गई। माधव भी उसकी रमणीयता में ऐसा लीन हुआ कि अचेतन हो गया। घर लौटा तो उसकी बेढंगी चालढाल से पिता ने समझ लिया कि लड़का बिगड़ गया। उसने इसे विष्णुदास पंडित को विद्याध्ययन के लिए सौंप दिया। संयोग की बात लीलावती भी उन्हीं की संस्था में पढ़ने आती थी। दोनों का विद्याव्यसन और प्रेमव्यापार साथ साथ बढ़ने लगा। विद्याध्ययन समाप्त करने के अनंतर लीलावती अपने घर चली गई। माधव उसके विरह में व्याकुल हो इधर उधर वीणा बजाता घूमने लगा। उसकी वीणा से ऐसी आकर्षक ध्वनि उत्पन्न होती थी कि जब वह वीणावादन में निरत होता तब उसे सुननेवाला अपना समस्त कार्यव्यापार स्थगित कर उसी के श्रवण में लीन हो जाता। वह घर में, नदी तट में, इधर उधर जहाँ और जिस समय उसकी इच्छा होती तान छेड़ देता। नगरी की रमणियाँ गृह का काम-काज छोड़ उसकी वीणा सुनने में मग्न हो जाया करतीं। गृहस्थों को इससे बड़ी चिंता हुई। उन्होंने राजा के यहाँ पुकार की कि यदि माधव इसी प्रकार समय-असमय या देश-अदेश का बिना विचार किए वीणा का राग अलापता रहेगा तो नगरी का बस नाश ही हुआ। यदि ऐसे व्यक्ति को नगरी से पृथक् न किया गया तो नगरवासी मरे। राजा ने माधव को बुलाकर कहा कि तुम ऐसा क्यों करते हो कोई जादू-टोना तो नहीं सीख रखा है। माधव ने कहा कि महाराज परीक्षा ले ली जाय। अंत में राजा ने माधव की परीक्षा ली। उसने अपने गुण का ऐसा प्रदर्शन किया कि सारी सभा स्तब्ध रह गई। राजा ने ऐसे अद्भुत गुणी को निर्वा-सित करना न्यायोचित नहीं समझा। वह प्रजा के विद्रोह से व्यग्र होकर रनिवास में चला गया। मंत्रियों ने आगे-पीछे का विचार करके स्वयम् राजा के नाम से पत्र लिखकर दूत के द्वारा माधव के पास भिजवा दिया। लीलावती को जब पता चला तब वह दौड़ी आई और उसने राजा की भर्त्सना करने का निश्चय किया। माधव के समझाने पर वह शांत हुई। माधव जब चलने लगा तब

लीलावती भी उसके साथ चली। प्रजा ने रोक न लिया होता तो वह भी उसी के साथ बनवासिनी हो जाती। स्नेह के प्रकट हो जाने से रघुदत्त विशेष चिंतित हुआ। पर लोगों के यह समझाने पर कि माधव की वीणा में ही दोष था, इस बेचारी का क्या दोष, उसके चित्त को शांति हुई।

दक्षिण देश में नर्मदा के तट पर अवस्थित प्रभावती नगरी थी। वहाँ का राजा रुक्मण था। उसके यहाँ एक अति रूपवती कन्या का जन्म हुआ। ज्योतिषियों ने उसके जन्म-लग्न पर विचार करके एक स्वर से घोषणा की कि यह कन्या संगीत में दक्ष होगी और वेश्यावृत्ति करेगी। राजा ने लोकभीति से उसे काष्ठ की मंजूषा में स्थित करके रातोरात नर्मदा की धारा में प्रवाहित कर दिया। मंजूषा बहती हुई वेश्याओं के हीरापुर नामक ग्राम के निकट घाट पर जा लगी। उस घाट पर प्रातःकाल वेश्याओं का नायक गूजर स्नान करने आया करता था। उस दिन उसे वह मंजूषा तट पर लगी दिखाई पड़ी। कुतूहलवश उसने मंजूषा को नदी से बाहर कर और खोलकर उसका रहस्य जानना चाहा। खोलने पर उसमें नवजात कन्या मिली, जिसे वह घर उठा ले गया और पाला-पोसा। जब यह कन्या पाँच वर्ष की हुई तब वह उसे संगीत की विधिपूर्वक शिक्षा देने लगा। उसकी ग्राहिका शक्ति को तीव्र और कंठ को मधुर जानकर उसे विशेष आह्लाद हुआ। ऐसे रत्न को उसने अपने पास न रखकर अपने देश के राजा को समर्पित करने का निश्चय किया। उसने वह कन्या कामवती पुरी के नरेश कामसेन को ले जाकर समर्पित की। उसकी गानविद्या और मधुरालाप से प्रसन्न होकर राजा ने गूजर नायक को द्रव्य देकर निहाल कर दिया। उसका नाम 'कामकंदला' पड़ा। राजा ने उसे राजप्रासाद से कुछ दूर नए महल में रख छोड़ा।

उधर माधव चलते चलते बाँधवगढ़ (रीवाँ) पहुँचा। लोगों ने उसके गुण के कारण उसकी बड़ी आवभगत की। एक दिन यह वट की छाया में बैठा विरह के गीत गा रहा था, जिसे प्रवीण नामधारी सुग्गे ने सुना और इसका प्रबोध किया। इस विलक्षण वियोगी का तमाशा देखने के लिए स्त्रियों की भीड़ लग जाती थी। कोई मेघ को संदेश देते इसे पागल समझती, कोई वीणा बजाते जादूगर। इसने बतलाया कि मैं विरही हूँ। चातुर्मास्य वहीं व्यतीत करके माधव आगे चला। शुक भी इसके साथ हो लिया। यह वहाँ से कामद पर्वत (कामतानाथ = चित्रकूट) पर पहुँचा। जनकतनया के स्नान से पुण्योदका पयस्विनी में इसने स्नान किया और मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा पतिपरायणा सीता के गुणगान में मग्न रहने लगा। वहाँ से आगे चलकर यह फिर मंदाकिनी के तट पर पहुँचा। सुग्गा इसके साथ साथ था। और आगे बढ़ने पर यमुना मिली। उसके तट पर स्त्रियों की बड़ी भीड़ थी। वहाँ के वनों में द्रुम-लताओं से यह अपना विरहनिवेदन करता फिरा। किसी ने इसे योगी समझा, किसी ने भोगी। एक वृद्धा ने बतलाया कि न यह भोगी है न योगी, यह तो वियोगी है। कुछ दिनों वहाँ रहकर यह कामवतीपुरी की ओर चला। उस नगरी में पहुँचने पर एक तमोली युवक की दुकान पर, जिसका नाम गुलजार था, इसने रुककर अपनी वीणा बजाई। उससे इसकी परम मित्रता हो गई।

एक दिन पता चला कि वहाँ के राजा कामसेन के दरबार मे नृत्यगीत होनेवाला है। भला संगीतप्रेमी और कलाविद् माधव इस अवसर पर कैसे रुक सकता था, यह भी संगीतसमाज देखने चला। पर द्वारपाल ने अजनबी को रोक दिया। यह बाहर से ही ध्यान लगाकर संगीत सुनने लगा। ध्यान देते ही इसे कुछ त्रुटि का आभास मिला। इसने द्वारपाल से कहा कि बिना प्रवीण लोगों के संगीतसमाज व्यर्थ ही है। सभा में सब मूर्ख ही जान पड़ते हैं। ताल मे पूर्व की ओर के एक मृदंगी के हाथ का अँगूठा नहीं है। वह मोम का अँगूठा लगाये हुए है, जिससे बोल ठीक नहीं निकलते, नर्तकी खीझ रही है। सभा को अंधी जानकर वह प्रत्यक्ष कुछ कह नहीं पाती। द्वारपाल ने समझा कि यह कोई कलावंत है। उसने जाकर राजा से सब वृत्तांत कह सुनाया। पता चलने पर बात ठीक निकली। राजा ने माधव को बुला भेजा और बड़ा आदर-सत्कार किया। इसके अद्भुत संगीतज्ञान पर रीझकर मोतियों की माला इसे पहना दी। माधव ध्यान देकर नृत्य देखने लगा। कामकंदला नाच रही थी। उसने इसे कलाविद् जानकर अपनी कला का प्रदर्शन विशेष रूप से किया। जिस समय वह नृत्य में मग्न थी उस समय माला के फूलों की सुरभि से खिँचकर एक भ्रमर कामकंदला के पास आया और उसके स्तन पर बैठकर काटने लगा। वेदना से वह विह्वल होने लगी, पर नृत्य अस्तव्यस्त या शिथिल न पड़े इसलिये उसने हाथ की भावभंगी रोककर भ्रमर को नहीं उड़ाया, प्रत्युत सारे शरीर की वायु को स्तन के पास एकत्र किया। स्तन पर वायु के आकर राशीभूत होने से रंध्रों से वेगपूर्वक निकलने का फल यह हुआ कि भ्रमर उड़ गया। सारी सभा ने यह चतुराई नहीं लख पाई, पर माधव ने इसे लख लिया। यह भरी सभा में उठा और राजा की दी हुई मोतियों की माला, नर्तकी की कला पर रीझकर इसने उसके गले में डाल दी। यह स्वयम् कामकंदला के साथ गाने और अपनी कला का प्रदर्शन करने लगा। फल यह हुआ कि दोनों के हृदय में एक दूसरे के प्रति प्रेम का अंकुर उग आया। सारी सभा इनके संगीत से मुग्ध हुई। पर राजा को यह बेअदबी खल गई। उसने रुष्ट होकर सभा भंग कर दी और माधव को तुरंत उस नगरी से बाहर चले जाने की आज्ञा दी। जब माधव जाने लगा तब कामकंदला ने अपनी कुविदा दासी से उसे चुपचाप अपने यहाँ बुलवा भेजा। दोनों का संगीत वहाँ छिड़ गया। कामकंदला बहुत चाहती थी कि माधव चुपचाप वहाँ पड़ा रहे, पर राजाज्ञा को अमान्य करना अनुचित मानकर माधव उससे विदा लेकर चल पड़ा। जाते समय वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। उसी मूर्च्छित दशा में उसे छोड़कर यह आँसू गिराता चला। गुलजार भी इसके देसनिकाले की बात सुनकर इसका पता लगाता, वहाँ तक पहुँचा और उसने कहा कि मैं भी आपके साथ ही चलूँगा। माधव ने बहुत समझाया, ऊँचा-नीचा सुझाया, तब कहीं वह रुका। जाते समय माधव कंदला को यह पत्र लिखा गया कि एक वर्ष तक मेरे लौटने की प्रतीक्षा करना।

माधव अपने मित्र सुग्गे को साथ ले चला। मित्र से इसने पश्चात्ताप करते हुए बतलाया कि देखो मेरा भाग्य कैसा है कि जिस नगर में जाता हूँ वहीं अपने वीणावादन के फलस्वरूप निर्वासन मेरे सामने आ खड़ा होता है। वीणा छोड़कर

मैं जी नहीं सकता और उसके वादन में लीन होता हूँ तो यह विपत्ति ! सुग्गे ने उसका विशेष रूप से प्रबोध किया और उज्जयिनी नगरी में विक्रमादित्य की शरण में जाने का परामर्श दिया ।

चलते चलते किसी प्रकार दोनों उज्जयिनी पहुँचे । वहाँ भूख से व्यथित होकर चिंतामणि नामक षड्दर्शनशास्त्री की शरण ली । उसने सुग्गे को कंदला के नाम अपनी विरहकथा पत्र में लिखकर दी और उसे कामवती के लिए बिदा किया और स्वयम् वटवृक्ष की छाया में रहने लगा । सुग्गा पाँच दिनों में कंदला का समाचार लेकर लौटा । माधव ने परामर्श करके शिवमंदिर के द्वार पर, जहाँ राजा विक्रमादित्य नित्य पूजन करने आता था, यह दोहा लिखा——

धन गुन बिद्या रूप के हेती लोग अनेक ।
जो गरीब पर हित करै सो नहिं लहियतु एक ।।

राजा ने दोहा पढ़ा और नीचे लिख दिया——

काज पराए सीस देत बिक्रम सुन्यो ।

इसके नीचे माधव ने निम्नलिखित 'गाथा' दूसरे दिन लिखी——

कूतकि अंग पुकारं जौन राम अवधेस कुमारं ।
बिछुरे दरद अपारं स हि जानाति माधवा बिरही ।।

राजा ने प्रतिज्ञापूर्वक इस दोहे में उत्तर दिया ——

गाज परै ता राज में सुख ताको जरि जाय ।
बिरही दुख टारे बिना अन्न-पान जौ खाय ।।

राजा ने वहाँ से लौटकर नगर में डाँड़ी पिटवाई कि मेरे नगर में कोई विरही आया है, यदि उसका पता कोई लगाएगा तो पुरस्कृत होगा । सभी खोजने-ढूँढ़ने में लग गए । अंत में एक वेश्या ने ही उसे ढूँढ़ निकाला । उसने विरहगान आरंभ किए, जिसे सुनकर माधव 'कंदला कंदला' पुकार उठा, मूर्छित हो गया । वेश्या ने समझ लिया कि यही वह विरही है । उसने राजा को सूचना दी कि शिव की वाटिका में वट की छाया में वह विरही है । राजा ने माधव के लिये रथ भेजा, जिस पर अधिष्ठित होकर यह राजा के संमुख उपस्थित हुआ । प्रणाम और आशीर्वाद के अनंतर राजा ने माधव के विरह का वृत्तांत पूछा । इसने सारी कथा संक्षेप में निवेदित कर दी । राजा ने माधव को आगा-पीछा ऊँचा-नीचा सुझाया—— ब्राह्मण कुलोद्भूत होकर वेश्या के प्रणय में प्राण देना शोभा नहीं । यदि तुम सुंदरी रमणी चाहते हो तो मेरे नगर में अनेक एक से एक बढ़कर रमणियाँ हैं । तुम जिसे चाहो अपनी प्रणयिनी बना लो । राजा ने अनेक रमणियाँ साज-बाज के साथ बुलाईं, पर माधव कामकंदला के अतिरिक्त दूसरी की ओर देखना भी पातक समझता था । इस प्रकार से हिला-डुलाकर देख लेने पर जब ब्राह्मण के प्रणय की दृढ़ता उसने समझ ली तब सेनापति को आहूत किया और कामवती पर आक्रमण करने के लिए सैन्यसंभार करने का आदेश दिया ।

विक्रम अपनी सेना लेकर कामवती पर चढ़ दौड़ा, पर आक्रमण के पूर्व उसने कामकंदला के प्रणय की भी परीक्षा ले लेना आवश्यक समझा। उसने नगर से एक कोस की दूरी पर मदनावती वाटिका में डेरा डाल दिया और स्वयम् गुपचुप वैद्य का वेश धारण कर नगरी में जा पहुँचा। कामकंदला के द्वार पर जाकर अपने अद्भुत वैद्य होने की बात दासी से कही। दासी ने कुतूहलवश इसे ले जाकर कामकंदला को दिखाया। नाड़ी आदि की परीक्षा कर विक्रम ने बतलाया कि इसे विरहरोग है। यह सुनते ही कंदला ने अपनी विरहगाथा वैद्य को कह सुनाई। उसने कहा कि हाँ, वीणा बजानेवाले उस माधव को मैंने भी देखा है, पर वह तो विरहाकुल होकर अंत में स्वर्ग सिधार गया। यह सुनते ही कंदला विरह की प्रचंड वेदना से व्याकुल होकर मर गई।

राजा कामकंदला के प्राणत्याग से उद्विग्न हो गया। उसने सोचा नाहक विरह में मूर्छित है, इसका शव इसी प्रकार रहने देना, मैं जड़ी-बूटी लेने जाता हूँ, वहाँ से मलिन मन डेरे को लौटा और आकर सारा वृत्तांत माधव को सुनाया। माधव कंदला की मृत्यु के समाचार से विह्वल हो गया और उसने भी प्राण त्याग दिए। यह देख राजा ने सिर धुन लिया। दो प्राणियों के वध के पाप से उसका चित्त व्याकुल हो उठा। उसने निश्चय किया कि मुझ जैसे पातकी का शरीर-धारण वृथा है। उसने आदेश दिया कि मेरे लिये नदी-किनारे चिता लगाई जाय, मैं जल मरूँगा। ज्यों ही राजा ने चितारोहण किया, और आग लगाई जाने लगी त्यों ही दर्शकों की भीड़ चीरता हुआ वैताल आ पहुँचा। उसने राजा से सारी कथा सुनी और कहा कि आपके शरीरत्याग की आवश्यकता नहीं, मैं अमृत लाकर दोनों को जिलाए देता हूँ। ऐसा कहकर वह पाताल गया और वहाँ से दो बूँद अमृत लाया। एक बूँद से माधव को जिलाया और दूसरी बूँद से कामकंदला को।

जब राजा विक्रम ने कामसेन के यहाँ वैताल को दूत बनाकर भेजा और कहलाया कि या तो कामकंदला को मुझे समर्पित करो या संग्राम के लिये प्रस्तुत हो जाओ। कामसेन ने कामकंदला को देना अपमानजनक समझा। उसने युद्ध करने का ही निश्चय किया। फलस्वरूप दोनों में घनघोर युद्ध हुआ। दोनों पक्ष के सहस्रों योद्धा मारे गए। युद्ध की समाप्ति का शीघ्र कोई लक्षण न देखकर यह निश्चय किया गया कि दोनों पक्ष से एक एक वीर द्वंद्वयुद्ध के लिए चुना जाय। जिस पक्ष का वीर मारा जाय या पराजित हो वह पक्ष अपने को विजित समझे। विक्रम के पक्ष से रणजोरसिंह पवाँर और कामसेन के पक्ष से मेढ़ामल्ल का चुनाव हुआ। विकट मल्लयुद्ध के अनंतर मेढ़ामल्ल जूझ गया। तव कामसेन स्वयम् विक्रम से नम्रतापूर्वक मिलने आया। उसने कहा कि यह क्षात्रधर्म के विपरीत होता यदि मैं आपके कहने पर तुरंत कामकंदला को अर्पित कर देता। वह विक्रम, माधव तथा अन्य पदाधिकारियों को आग्रहपूर्वक कामवती ले गया। आतिथ्य करने के अनंतर कामसेन ने माधव को कामकंदला भेंट कर दी। माधव से सुग्गा और तमोली गुलजार भी आ मिले।

उधर माधव के वियोग में लीलावती विकल रहा करती थी। कामकंदला के साथ रहते माधव ने लीलावती को स्वप्न में अत्यंत व्यथित देखा। प्रातःकाल

उसकी व्यथा की चिंता में वह उदास मन बैठा था, कामकंदला से बात भी नहीं करना चाहता था। पर उसके विशेष आग्रह पर माधव ने लीलावती की प्रेम-कहानी और स्वप्न की बात कह सुनाई। इस पर कामकंदला ने स्वयम् राजा विक्रमादित्य से जाकर सारी कथा कही और माधव को लीलावती दिलाने की प्रार्थना की। विक्रम ने उसकी प्रार्थना स्वीकृत की और पुष्पावती पर आक्रमण करने का आदेश दिया। पर राजा गोविंदचंद्र बड़ा नीतिविशारद था। उसने जब दूतों से यह समाचार सुना तब सम्राट् विक्रम की अगवानी के लिये वह स्वयम् चला आया। अंत में लीलावती के साथ बड़ी धूमधाम से माधव का विवाह संपन्न हुआ। लीलावती और कामकंदला एक साथ सुखपूर्वक, बिना किसी प्रकार की सापत्न्यजनित ईर्ष्या के, रहने लगीं।

'विरहवारीश' का जितना अंश प्राप्त है उसमें इतनी ही कथा है। किंतु कवि ने पुस्तक के आरंभ में कहा है कि इसमें नव खंड हैं—

प्रथम साप[१] कृत बाल[२] दुतिय आरन्य[३] खंड गनि।
पुनि कामावति[४] देस बेस, उज्जैन गवन[५] भनि।
युद्धखंड[६] पुनि गाह रुचिर सिंगार[७] बखानो।
पुनि बहुधा बनदेस[८] नवम बर ज्ञानहि[९] जानो।
कहि प्रीतिरीति गुन की सिपत नृप बिक्रम को सरस जस।
नौ खंड माधवा-कथा मैं नौरस बिद्या चतुर्दस॥

उपलब्ध भाग में शापखंड, बालखंड, अरण्यखंड, कामावतीखंड, उज्जयिनी-खंड, युद्धखंड और शृंगारखंड—ये सात ही हैं। शेष दो खंड—वनदेशखंड और ज्ञानखंड नहीं हैं। पहले से लेकर छठे खंड तक प्रत्येक में चार चार तरंग हैं। शृंगारखंड में सात तरंगें हैं। इस प्रकार प्राप्तांश में कुल इकतीस तरंगें हैं। यदि अनुपलब्धांश में कम से कम प्रखंड चार-पाँच तरंगों के हिसाब से आठ नौ ही तरंगें हों तो भी यह ग्रंथ चालीस तरंगों का बृहत् प्रबंधकाव्य है। अप्राप्त अंश में कथा क्या होगी, इसका केवल अनुमान किया जा सकता है। खंडों के नाम से जान पड़ता है कि कोई ऐसी घटना हुई है जिससे माधव और कामकंदला का वियोग हो गया है, जिसके लिए माधव को फिर वन वन घूमना पड़ा है। नवें खंड में ज्ञान की वार्ता है। कदाचित् वह प्रेमसिद्धांत और ज्ञान की आध्यात्मिक पीठिका है। यदि ऐसा ही हो तो कहा जा सकता है कि कवि ने इसे सूफीप्रेमकाव्यों से समन्वित करने का प्रयत्न किया है, जिनमें कथाएँ वियोगांत रखी जाती हैं और सारा कथांश अध्यवसित होता है। तरंगों की समाप्ति पर यत्र-तत्र प्रेम की विविध स्थितियों के द्योतक नाम भी रखे गए हैं।

—:०:—

विरही-सुभान-दंपति-विलास

(इश्कनामा)

अथ प्रथम खंड

(दोहा)

खेतसिंह नरनाह को हुकुम चित्त हित पाइ।
ग्रंथ **इस्कनामा** कियो **बोधा** सुकवि बनाइ ।१।
नाना मंत उपासना मत मत न्यारे ठौर।
इस्क ब्रह्म जानै नहीं आसिक मानत और ।२।
माटी औ पाखान कों काठ धातु कों ध्याइ।
पावै सिद्धि वजाइ जो इस्क एक ठहराइ ।३।
बोधा अपने जान की सबै बताए देतु।
पढ़ै गुनै समुझै सुनै जानि परैगो हेतु ।४।
जिन जान्यो ते मानिहैं मानै नहीं अजान।
कसकत ताही के हियें जा हिय बेध्यो बान ।५।
उपजै इस्क जु अंग तें रहत अंग के बीच।
हाड़ माँस गलिबो करै इस्क न जानत नीच ।६।

(अथ इस्कपंथ ऐसो जानबी)

(सवैया)

अति छीन मृनाल के तारहु तें तिहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुईबेह तें द्वार सकीन तहाँ परतीति को टाँड़ो लदावनो है।
कवि **बोधा** अनी घनी नेजहु तें चढ़ि तापै न चित्त डगावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल है जू तरवार की धार पै धावनो है ।७।

पाठांतर—[१ से ४] 'खोज २', 'भारत' में नहीं हैं। [५] जान्यो ते; जानो ते (खोज १); जाने तिन (खोज २, भारत)। बेधो; बेध्यो (वही)
इसके अनंतर केवल 'खोज १' में 'अथ इस्कपंथ ऐसो जानबी' है।

घर में नर में सर में तरु में गजराज में बाज में जानि परै।
सुक सारो मयूर कपोतन में मृग केहरि और जो चित्त अरै।
कबि **बोधा** बजाइकै प्रीति करै यह आतमज्ञान हिये में धरै।
हम रामदोहाई न झूठी कहैं यहि प्रीति सों मीत तरै पै तरै।८।
उपचार औ नीच विचारने ना उरअंतर वा छबि को घर है।
हमकों वह चाहै कि चाहै नहीं हम चाहियै वाहि बिथाहर है।
कबि **बोधा** कछू सक यामें नहीं भवसिंधु बजाइकै लै तरहै।
यह प्रीति की रीतिहि जानत सो परतीतिहि मानिकै जो करहै।९।
करि प्रेम वही की बटा करबी पतवारी प्रतीति कै लै झिलिहैं।
पुनि दूरि बिज्ञान अराबो अही जलजंतुन के मुख में ढिलिहैं।
कबि **बोधा** उसी दिलमाहिर की नउका भवसिंधु में लै पिलिहैं।
हम रामदोहाई न झूठी कहैं ब्रजराज सों बाँधि धुजा मिलिहैं।१०।
बरही करी प्रीति पयोधर सों पर लै ब्रजराज के माथे मढ़ै।
पुनि राग सों प्रीति कुरंग करी वह राग कुरंग के स्रिग कढ़ै।
कबि **बोधा** न कौल अनोखी करी यह प्रीति की रीति बिरंचि रढ़ै।
जब आसकी तेरी सई की करै तव काहे न संभु के सीस चढ़ै।११।

(बरवै)

प्रीति करै कमलनि कसि तनु मनु पीस।
तब कस चढ़ै न मितवा सिव के सीस।१२।

---

[७] मृनाल के; मृनालता (विरह)। तारहु; नारहु (खोज १)। तिहि; वेहि (खोज १); तेहि (खोज २, भारत)। पाँव; पाँउ (खोज १)। आवनो; आउने (खोज १); आवने (विरह)। सुई; सुइ (खोज १)। बेह; बेध (विरह)। द्वार सकीन; हार सखी है (वही)। लदावनो; लदाउने (खोज १); लदावने (विरह)। नेजहु; तेजहू (वही)। डगावनो; डगाउने (खोज १); डगावने (विरह); डरावनो (खोज २, भारत)। है जू; है री (खोज १); महा (खोज २, भारत)। धावनो; धाउने (खोज १); धावने (विरह)। [८] 'खोज १' में नहीं है।

(सवैया)

वह प्रीति की रीति कों जानत तो तबहीं तौ बच्यो गिरिढाहन तें ।
गजराज चिकारि कै प्रान तज्यो न जरयो सँग होलिकादाहन तें ।
कबि **बोधा** कछू न अनोखी यहै का बनै नहीं प्रीतिनिवाहन तें ।
प्रहलाद की ऐसी प्रतीति करै तब क्यों न कढ़ै प्रभु पाहन तें ।१३।
यह प्रेम को पंथ हलाहल है सु तौ बेद पुरानऊ गावत हैं ।
पुनि आँखिन देखौ सरोजन लै नर संभु के सीस चढ़ावत हैं ।
बरहीपर माथे चढ़ै हरि के फल जोग तें एते न पावत हैं ।
तुम्हैं नीकी लगै न लगै तौ भले हम जान अजान जनावत हैं ।१४।
सत जज्ञ करे ते सुरेस भए करे जोग ते जीव जियावत हैं ।
दिये दान के दौलति होति घनी तप के किये राज कों पावत हैं ।
कबि **बोधा** सु तौ हम चाहत ना परतीति कै प्रेम बढ़ावत हैं ।
तुम्हैं नीकी लगै न लगै तौ भले हम जान अजान जनावत हैं ।१५।

(सोरठा)

बिछुरें दरद न होत खर सूकर कूकरन कों ।
हंस मयूर कपोत सुघर नरन बिछुरन कठिन ।१६।

(दोहा)

लगनि वहै थल एक लगि दूजे ठौर बढ़ै न ।
कीच बीच जैसें गुरा खचिकै फिरि उचटै न ।१७।

(सवैया)

लोक की लाज औ सोच अलोक को वारियै प्रीति के ऊपर दोऊ ।
गावँ को गेह को देह को नातो सनेह में हातो करै पुनि सोऊ ।
बोधा सु नीतिनिबाह करै धर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ ।
लोक की भीति डेरात जौ मीत तौ प्रीति के पैंड़े परै जनि कोऊ ।१८।

सारो; मारी (खोज २) । [९] परतीतिहि; परतीतहि (भारत) [१०]
माहिर की; माहिर को (वही) । [१३] तो; थो (वही) ।

(दोहा)

नेहा सब कोऊ करै कहा करे में जात।
करिबो ओर निवाहिबो बड़ी कठिन यह बात।१९।

(सवैया)

तैं अब मेरी कही नहिं मानति राखति है उर जोम कछू री।
सो सबकी छुटि जाति भटू जब दूसरो मारि निकारत झूरी।
बोधा गुमान भरी तब लौं फिरिबो करौ जौ लौं लगी नहिं पूरी।
पूरी लगें लखु सूरन की चकचूर ह्वै जाति सबै मगरूरी।२०।

(बरवै)

जौ लौं लगी न पूरी बढ़ी न पीर।
तौ लौं तु ही कजाकी करि लै बीर।२१।

(सवैया)

कहिबे कौं व्यथा सुनिबे कौं हँसी को दया सुनिकै उर आनतु है।
अरु पीर घटै तजि धीर सखी दुख को नहीं का पै बखानतु है।
कवि **बोधा** कहे में सवाद कहा को हमारी कही पुनि मानतु है।
हमैं पूरी लगी कै अधूरी लगी यह जीव हमारोई जानतु है।२२।
तब नेह नफा दिल मोल कियो छबि आपनी लैकैं बयाने दई।
पुनि माल लै दाम चुकायो नहीं मुलाकात चिन्हारिऊ भूलि गई।
घटै कीमति **बोधा** जौ माल फिरै त्रजिकै बेवपार में टूट ठई।
उनकी पै बनै हम यों समुझैं मनु बेच्यो न जानी कि लूटि भई।२३।
काहू सों का कहियै अब है यह बात अनैसी कहे तें कहावत।
कोऊ कहा कहिहै सुनिहै कही काहू की कौनौ हमैं नहिं भावत।
बोधा कहे को परेखो कहा दुनिया सब माँस की जीभ चलावत।
जाहि जो जाके हितू ने दई वह छोड़े बनै नहिं ओढ़ने आवत।२४।

---

[२३] कियो; लियो (विरह)। कि; कै (वही)। [२४] कहियै; कहिबो (विरह)। है; ये (भारत)। कौनौ०; कौन मनै (विरह)। जो; कों (भारत)।

घाटन बाटन हाटन में मृगतृस्ना तरंगिनि लौं तरियै लै।
पै वह चाउ नहीं बिसरै भरमै भ्रम की भँवरी भरियै लै।
बोधा कहै ढिग कौन के या दुख की गरुवी डलिया धरियै लै।
जौ न मिलो दिलमाहिर एक अनेक मिलैं तौ कहा करियै लै।२५।

(बरवै)

बोधा सब जग ढूँढ़्यो फिरि फिरि धाइ।
जेहि मनहीं मन चाहत सो न लखाइ।२६।

(सवैया)

कूर मिले मगरूर मिले रनसूर मिले धरें सूरप्रभा कों।
ज्ञानी मिले औ गुमानी मिले सनमानी मिले छबिदार पताकों।
राजा मिले अरु रंक मिले कबि **बोधा** मिले निरसंक महा कों।
और अनेक मिले तौ कहा नर सो न मिल्यो मन चाहत जाकों।२७।

(बरवै)

सब जग देख्यो **बोधा** एक न दीख।
देह भिखारी दिल को दरसन भीख।२८।

(कबित्त)

हिलि मिलि जानै तासों हिलि मिलि लीजै आप
हित कों न जानै ताकों हितू न बिसाहियै।
होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै
लघु ह्वै चलै जो तासों लघुता निवाहियै।
बोधा कबि नीति को निबेरो याही भाँति करौ
आपकों सराहै ताकों आपहू सराहियै।
दाता कहा सूर कहा सुंदर सुजान कहा
आपकों न चाहै ताके बाप कों न चाहियै।२९।

इति प्रथम खंड

---

*[२९] तासों०; तासों मिलकै जनावै हेत (विरह)। ताकों; ऐसो (वही)। हित कों०; हिलि मिलि जानै (भारत)। ह्वै०; होय चलै (विरह)। याही; एही (भारत)। करौ; अहै (विरह)। सुजान; प्रबीन (वही)। ताके०; ताकों आपहू (वही)।

अथ द्वितीय खंड

(सवैया)

रितु पावस स्याम घटा उनई लखिकै मन धीर धिरातो नहीँ ।
पुनि दादुर मोर पपीहन की सुनिकै धुनि चित्त थिरातो नहीँ ।
जबतेँ बिछुरे कवि **बोधा** हितू तबतेँ उर दाह सिरातो नहीँ ।
हम कौन सोँ पीर कहैँ अपनी दिलदार तौ कोऊ दिखातो नहीँ ।३०।

एक सुभान के आनन पै कुरवान जहाँ लगि रूप जहाँ को ।
कैयो सतक्रतु की पदवी लुटियै लखिकै मुसकाहट ताको ।
सो कजरा गुजरान जहाँ कवि **बोधा** जहाँ उजरान तहाँ को ।
जान मिलै तौ जहान मिलै नहिं जान मिलै तौ जहान कहाँ को ।३१।

(छंद)

कुनहदार अनियारो आछो सुखी करै दिल खूबोँ सोँ ।
खिलवत खिन खिन खूबीवारो राखै इस्क हबूबोँ सोँ ।
मस्ताने प्रेम दिवाने जे तिन जाने मन मनसूबोँ सोँ ।
कबि **बोधा** अरज सुबुंद हिये उन माहिरबाँ महबूबोँ सोँ ।३२।

पहिचाने प्रेम रकाने जे बेपरद दरद दरियाव हिलै ।
मगरूर दिखाते आखिर या दिलसूर प्रेम को पंथ पिलै ।
तकि तबियेदार उदार वाहि अरु गनै न धक दै नैन झिलै ।
तब खूब इस्क **बोधा** आसिक जब महिरबान महबूब मिलै ।३३।

बतराते बुँदी बतासा हँसते बरफी रंचु रुखाई की ।
तकते सब सेव सुमुकता को गुल संकरिया चतुराई की ।
अब ऐठनि प्रीति दुकानदार लखि महबूबाँ हलवाई की ।
कबि **बोधा** अजब मजा पाया जिन लूटी हाट मिठाई की ।३४।

---

[३०] सिरातो; धिरातो (वही) ।
[३१] लखि; तकि (भारत) ।

(बरवै)

कूक न मारु कोइलिया करि करि तेह ।
लागि जात बिरहिनि के दुबरी देह ।३५।

(सवैया)

क्वैलिया तेरी कुठार सी बानि लगे पर कौन को धीरज रैहै ।
यातें मैं तोसों करौं बिनती कबि **बोधा** तु ही फिरिकै पछितैहै ।
स्वारथ औ परमारथ को गथ तेरे कछू सुनु हाथ न ऐहै ।
ठौर कुठौर बियोगिनि के कहूँ दूबरी देहन में लगि जैहै ।३६।

बैठि रसालन के बन में अधराति कहूँ रन सो ललकारति ।
नाहक बैर परी बिरहीन के कूक बियोग के लूकन जारति ।
बोधा अनेक कियो बिनती रतिकौ न कहूँ करुना उर धारति ।
बाल मरै मधुमास छकी यह क्वैलिया पापिनि पीसेई डारति ।३७।

लखि नीर बहै औ दवागि दहे जमराज गहे कबहूँ निबहैं ।
पुनि सेर लथेरे बिछू के डसे बहुतेरे बिथा पुनि और सहैं ।
कबि **बोधा** अनोखी किसा या लखौ दुइ टूक ह्वै फेरि न धीर गहैं ।
तिरछी तरवारि लौं हैं तिरछे दृग लागे जिन्हैं ते लगे न रहैं ।३८।

निसिबासर नींद औ भूख नहीं जबतें हिये में यह आनि बसी ।
मिलते न बनै जग की भय तें बरजी न रहै हिय की हुलसी ।
कबि **बोधा** सुनै हे सुभान हितू उरअंतर प्रेम की गाँस गसी ।
तिनकों कल कैसे परै निरदै जिनकों है कुसाँगरे आँख कसी ।३९।

बातनहीं समुझावैं सबै यह पीर हमारी न जानत कोई ।
का करै लैकै सिखावन कों जिय जाहि को आपने हाथ न होई ।
बोधा कदाचित जानै वहै वहिके जिय में जिन बेदन बोई ।
जातें मिटै यह पीर सरीर की है वह मूरि सजीवनि सोई ।४०।

---

[३९] कु साँगरे; कुजागर (बिरह) ।
[४०] जिनकों; जिनका (भारत) ।

दूरि है मूरि अपूरब सो ससि सूरजहू कबहूँक निहारी।
अंदरबेली नवेली अबै कहु कैसें मिलै बिन जोग दिवारी।
बोधा सुनै हे सुभान हितू करि कोटि उपाय थके उपचारी।
पीर हमारे दिलंदर की हम जानत हैं वह जाननहारी।४१।

कारी घटा दिसि दक्षिन देखि भयो सु चहै हियरा जरि कारो।
ताही घरी घहराइ वही गिरि गो भुव पै लगि प्रेमतमारो।
केतन आइ लगाइ थके कबि **बोधा** हकीमन को उपचारो।
पै न धरै वह धीर अली न मिलै वह पीर को जाननहारो।४२।

काहू सों का कहिबो सुनिबो कबि **बोधा** कहे में कहा गुन पावन।
जोई है सोई है नेकी बदी मुख सों निकसें उपहास बढ़ावन।
याही तें काहू जनैयै नहीं लहिकै दिल की न रहै फिरि आवन।
जीरन जामा की पीर हकीम जी जानत हैं मन की मनभावन।४३।

बोधा सुभान हितू सों कही या दिलंदर की को सही करि मानत।
ता मृगनैनी की चारु चितौनि चुभी चित में चित सो पहिचानत।
तोसों बियोग दई ने दयो तौ कहौ अब कैसें मैं धीरज आनत।
जानत हैं सबही समुझाइ पै भावती के गुन कों नहिं जानत।४४।

बोधा किसू सों कहा कहियै जो बिथा सुनि फेरि रहै अरगाइकै।
यातें भलो मुख मौन धरैं उपचार करैं कहूँ औसर पाइकै।
ऐसो न कोउ मिल्यो कबहूँ जो कहै हितू रंच दया उर लाइकै।
आवति है मुख लौं बढ़िकै पुनि पीर रहै या सरीर समाइकै।४५।

हम काहू के आवैं न काहू के जाइँ यों गाउँ हमारो है साखन को।
लगि जाइ कहूँ तौ हनाहक ही सहिबे परै या सु ज्यौं राखन को।
कबि **बोधा** भले घर बैठि रहौ न उपाउ करौ जग माखन को।
पुनि लागियै नाहक लाली रहै अखत्यार कछू इन आँखन को।४६।

---

[४१] बिन; बर (भारत)। [४३] पावन; पावत (भारत)। बढ़ाव; बढ़ावत (वही)। नहीं०; न बीर लहै हित की पै कहै नहिं दावन (विरह)। भावन; भावत (भारत)।

खरी सासु घरी न छमा करिहै निसिवासर त्रासनहीं मरबी ।
सदा भौहें चढ़ाएँ रहै ननदी यों जेठानी की तीखी सुनें जरबी ।
कवि **बोधा** न संग तिहारो चहैं यह नाहक नेहफँदा परबी ।
बड़ी आँखैं तिहारी लगैं ये लला लगि जैहैं कहूँ तौ कहा करबी ।४७।

घाटन बाटन हाटन में घर बाहिरहू सुनी एक जु बानी ।
भूली कहूँ कि भ्रमी हौ कहूँ तुम डोलती कैसी थकी थहरानी ।
है जो लगी या दिलंदर में कबि **बोधा** सु तौ न किसू पहिचानी ।
तेरे लिये सुनि बालम रे ये दरेरे कहैं सब लोग दिवानी ।४८।

देवदुआरे निहारि खड़ी मृगनैनी करै रबि की छबि छोटी ।
हाथ में मालतीमाल लियें चली भीतरैं ताहि गोसाइँ अँगोटी ।
पाइन तें सिख लौं लखिकै कवि **बोधा** मजा बरनी यक छोटी ।
भाल में रोरी की बेंदी लसी है ससी में लसी मनो बीरबहोटी ।४९।

छुटि जाइँगे चेत के नेत सबै जौ कहूँ मुरली अधरा धरिहै ।
मुसकाइकै बोलै तौ बाट परै नखहू सिख लौं विष सों भरिहै ।
कबि **बोधा** तिहारे सयान सबै सु तौ सूधेई हेरनि में हरिहै ।
तुम्हैं भावते जानि मने को करै वह जादूगरी बजिकै करिहै ।५०।

प्यारो हमारो प्रवासी भयो तबतें जरियै बिरहानलतापन ।
एते में पावस की या निसा हियरा हहरै सुनि केकीकलापन ।
चात्रिक एते करैं बिनती कबि **बोधा** छके अपनीयै अलापन ।
तू अपने पिय कों सुमिरै सुमिरैं हम तेरी जुबान की दापन ।५१।

प्रिय प्यारे की बानि पपीहै परी अधराति कुलाहल गावतु है ।
रजनेरी सुभान सों आयो पढ़ैं कहि दूसरो आँकु न आवतु है ।
कलकानि न **बोधा** हमारी लखै इन्हैं आपनोई सुख भावतु है ।
लखि पायो उसे सदा जानि पर्यो करि ताउ सो ती घन तावतु है ।५२।

नित गाउँ के नेह के देवता ध्याइ मनाइ भली बिधि पाउँ परौं ।
तिनसों धुनि या बिनती बिनवौं निरसंक ह्वै भावतो अंक भरौं ।

यह चाड़ न **बोधा** सरी कबहूँ यहि पीर तें बीर दिवानी फिरौं।
परवाह हमारी न जानै कछू मनु जाइ लग्यो कहु कैसें करौं।५३।
कोटिक देखि फिरौं छवि मैं पै न कोउ छवै सम वा छवि जूझै।
आँखिन देखी जो बानि तिन्हैं बिन आँखिन सों तौ जु वाहियै बूझै।
बोधा सुभान को आनन छोड़ि न आनन मो मन आन अरूझै।
जैसें भए लखि सावन के अँधरे नर को सु हरो हरो सूझै।५४।
फल चारि रहैं तिन आगे खरे भृकुटी परखैं चितचायन में।
जेहि ओर ढरैं डगरैं तिनको जिनको पठवैं तिन्हैं जाय नमें।
कवि **बोधा** सरोज रहैं निसिबासर फूले सुभान सुभायन में।
मन भृंग अहे भहरात कहा वसु रे वसु गोरी के पायन में।५५।
अनतैं नित काहू को होने न पाव समान के लोग अयोगिया रे।
दुख तेरो कहा सुनिहै दुखिया ह्वै रहे सब आपुहीं सोगिया रे।
करौं वारने तो पै बुधावरही पुरहूत ते पूरन भोगिया रे।
बसु रे बसु राधे के पायन में मन जोगिया प्रेम वियोगिया रे।५६।
लोक को त्याग कियो सबही प्रभुपायन में मन लागि रहा है।
नींद अहार करैं न कछू दम खैंचतु आनन मौन गहा है।
मौत कहूँ न कलेस कहूँ कबि **बोधा** सनेह हियें उमहा है।
ऊधो जू और सिखावने को सुनौ जोग में बीच रहो ब कहा है।५७।
सुखमूल गए दुखमूल लए पुनि पाप रु पुन्य छड़ाइ दई।
कबौं काम ना क्रोध औ लोभ गहें समुझें सम नेकी बदी की ठई।
कबि **बोधा** गही छबि साँवरे की उर में यह प्रेमकियारी बई।
तुम होउ सबै महरानी अबै हम तौ अब रामदिवानी भई।५८।

(बरवै)

कुचन बीच मनु उरझो रुकै न छोरि।
रधवा लैं चित अँटको सँकरी खोरि।५९।
जिहि गिरिबर कर धारिसि तारिसि गीध।
तेहि चरनन कवि **बोधा** मो मनु बीध।६०।

सहजैं कुबरिहि दीन्यो जो फल चारि।
सोई नाथ निबाही लगन हमारि।६१।

(सवैया)

ऊँचे अटा औ अटारी सबै बस याही बिना जनु आह धुँवा की।
बाग तमासो दवागि लगी सुरतैं भईं साल सबे बिछुवा की।
ए री सखी अब बूझियै कौन सों कोऊ न चाह कहै बँधुवा की।
का भयो राम सु कौन गली मिलें ताल के घाटन वाट कुँवा की।६२।

लखि बेनी जटा न विभूति मलै सिर गंग नहीं श्रमबुंद चुए।
ससि होइ न भाल त्रिपुंड लसै उर हार न ब्याल लखै भकुए।
बिन काजहि **बोधा** लदाई करै पहिचानै न बावरे अंध भए।
अरे जोगिनी प्रेमबियोगिनी हैं हम होहिँ न संभु मनोज मुए।६३।

मनमोहन ऐसो मिलावत है जौ फँदै तौ कुरंग फँदैती करै।
तब लौं छल जानो न जात कछू जब लौं अधमी वह मारि धरै।
कबि **बोधा** छुटे सुख स्वाद सबै बिन काज हनाहक जीव जरै।
बिष खाइ मरै कै गिरै गिरि तें दगादार तें यारी कभी न करै।६४।

निसिबासर घाटन बाटन में हवा हाटन देखि सिरावै हियो।
बतराते कहूँ बस राते कहूँ रँगराते मते मत और पियो।
अस जो न कहूँ सपने हौं लख्यो सु तौ प्रेम की बाजी में जीति लियो।
मजेदार सबै जग खेलिबो है कवि **बोधा** वजाइकै प्यार कियो।६५।

पहिचानै नहीं घर बाहर कों या हकीकत कोई दिनों की ठई।
अपने सुख आगें सरेसहु कों तिनुका सम यो उर आनै दई।
कबि **बोधा** तमासो अजूवा लख्यो कुलकानि गली सब भूलि गई।
ब्रजराज कों चाहिकै आखिर या बिनहीं मतए मतवारी भई।६६।

हिय आन के यों बिलमात नहीं जब लौं नहीं आन के जाय रहै।
मन में गुनि आवै कहे न वनै निसिवासर तौ उतपात रहै।
कबि **बोधा** न आन के जाइबे कों यह प्रेम को पंथ जवाहर है।
दिलमाहर ताकों मिलै बिछुरै या कि मातै सोई दिलमाहर है।६७।

दुख औ सुख पाप औ पुन्य दुऔ रस रोसु को रोवतु गावतु है।
गुन औगुन नेकी वदी हितू बैरि सुधा विष एक सो भावतु है।
कवि **बोधा** अनादर आदरऊ परतैं जिय तौ सुख पावतु है।
दिलदार पै जौ लौं न भेंट भई तव लौं तरिबो का कहावतु है।६८।

ऐसी अनाथ घरी बह कौन बजाइकै बाँसुरी मोहन ही हरौ।
ता दिन तें हौं जकी सी थकी चकचौंधी फिरौं नहिं धीरज हीधरौ।
बोधा न मीत सों प्रीत सखी करी लाज निगोड़िनि बंधन जी अरौ।
प्रेम तें नेम कहा निवहै अब तौ यह नेह निवाहिबो ही परौ।६९।

छाड़ि सखीन की सीख सबै कुलकानि निगोड़ी बहाइबे ही है।
ह्वै कै लटू लपटाइ हिये हरिहाथ तें बंसी छुटाइबे ही है।
बोधा जरैलिन के उपहास अँगेजिकै कुंजनि जाइबे ही है।
लाज सों काज कहा बनिहै ब्रजराज सों काज बनाइबे ही है।७०।

इति द्वितीय खड

अथ तृतीय खंड

(सवैया)

कबहूँ मिलिबो कबहूँ मिलिबो यह धीरज ही में धरैबो करै।
उर तें कढ़ि आवं गरे तें फिरै मन की मन ही में सिरैबो करै।
बोधा न चाड़ सरी कबहूँ नित ही हरवा सो हिरैबो करै।
सहते ही बनै कहते न बनै मनहीं मन पीर पिरैबो करै।७१।

दहियै बिरहानल दाहन सों निज पापन तापन कों सहियै।
चहियै सुख तौ सहियै दुख कों दृगबारि पयोनिधि में बहियै।
कवि **बोधा** इते पै हितू न मिलै मन की मन ही में पचै रहियै।
गहियै मुख मौन भई सो भई अपनी करि काहू सों का कहियै।७२।

बोधा सुभान हितू सों कही वे झिराव कै झारि तें फेरि झिरे ना।
फेरि न फूली नेवारी उतै उन बेलिन सों फिरिकै अभिरे ना।
फेरि न वैसी भई अखती कवहूँ वहि वाग में फेरि थिरे ना।
खोरिन खेलिबो संग सखीन के वे दिन भावती फेरि फिरे ना।७३।
जबतें ब्रजराज को रूप लख्यो तबतें उर और न आनतु है।
निसिबासर संग रहै उनके हमकों धौं कबै पहिचानतु है।
कबि **बोधा** भयो अलमस्त महा कहूँ काहू की सीख न मानतु है।
तुम ऐसेहिं योंहिं लटी करतीं मन मेरी कही नहिं ठानतु है।७४।
फुटका अरु फेनी जलेबी दई वरफीन को स्वादऊ जानत ना।
लडुआ मिसिरी अरु पेरा दए हवा हाटन की पहिचानत ना।
कबि **बोधा** कहै उनही लैं चलै सिख काहू की कौनहूँ ठानत ना।
बस मेरो कछू ना हुतो मन में बिन देखें तुम्हैं मनु मानत ना।७५।
मुख बोलै न हेरै हँसै न लसै न धँसै दरवाजे वसै पलहूँ।
रजा तेरी सुभान सुभान तु ही यों कहै न कहै कछू भीख चहूँ।
उर याके लगी सु न कोऊ लखै कहने कों नहीं सहने वरहूँ।
मन जोगिया प्रेम बियोग परें भँवरी दै फिरै न थिरै कवहूँ।७६।
तैं मत ऐसी धरै चित में जग तोंहि बिबेकी गनै वरहा सर।
लोक चतुर्दस को करता कर तेरे रहै उतपत्ति औ नासर।
बोधा सनेही बिना जे बिते दुखहू सुख तें वसु जाम न रासर।
लेखि हीं लेत अरे निरदै बिधि जीवन में तैं वियोग के वासर।७७।
मुख चारि भुजा पुनि चारि सुने हद बाँधत बेद पुरानन की।
तिनकी कछु रीझि कही न परै यहि रूप या कोकिलातानन की।

---

[७३] कही; कहै (विरह)। वे झिराव; झिरपाइ। तें; दे। वैसी; ऊसी (वही)। बाग; बाम (भारत)। भावती; भावदी (विरह)। [७४] ठानतु; मानतु (भारत)। [७५] ठानत; मानत (भारत)। [७८] रीझि; रीति (भारत)। हती; गई (वही)।

कवि **बोधा** सुजान बियोगी किये छबि खोई कलानिधि आनन की।
हम तौ तबहीं पहिचानी हती चतुराई सबै चतुरानन की।८७।

(दोहा)

प्रेम कोठरी कुलुफ लखि **बोधा** कठिन अपार।
रची जुलुफ महबूब की रुचिर कुंचि की तार।७९।

(बरवै)

मुकुति दीन फल असुरन छमि अपराध।
रे मनु भजु तिहि प्रभु कहँ तजि बकबाध।८०।

इति तृतीय खंड

अथ चतुर्थ खंड

ब्याउर के उर की परपीर कों बाँझसमाज में जानत को है।
पाहनपोत तरी सरिता कहियै विसवास तौ मानत को है।
पिंड में **बोधा** ब्रम्हंड लिख्यौ दृग देखें बिना पहिचानत को है।
जाके लगी दिल जानत ताहि को जान पराये की जानत को है।८१।

(बरवै)

लखै पराये चित को दुख सुख बीर।
अस अजमति नहिँ देखी काहू तीर।८२।

(सवैया)

त्याग कों जोग जहान कहै हम तौ तबहीं चुकीं त्यागि जहानैं।
मौतकलेस को लेस नहीं कबि **बोधा** गोपाल में चित्त समानैं।
खैंचती पौन को मौन गहें अरु नींद अहार नहीं उर आनैं।
ऊधो जू जोग की रीति कहौ हम जोग न दूजो बियोग तें जानैं।८३।

ह्याँ तौ न जीको भयो उधवा कबि **बोधा** लहे सो महा दुखदायक।
ह्याँ हनुमान नजीकी रहैं कर जोरे भ्रुवैं परखैं खलघायक।
ये ब्रजराज मिले हमकों जिनके न कहू करुना उर भायक।
जानियै राम गरीबनेवाज सिया धनि जाके पिया रघुनायक।८४।

नेह तज्यो घर सों बर सों बरहू बटपार के हाथ बिकाने ।
त्यागि तिन्हैं तिनुका करि कूबरी हाथ लै आधिक राति पराने ।
काहू सों को अनुकूल जहान में सो जस **बोधा** कहाँ न बखाने ।
ऊधोजू यामैं कछू सक ना हम आकिल ही तें खुदा पहिचाने ।८५।
हा हम सों बलि कौल करौ कहती हमैं नाहिनैं संक धका की ।
या घर तें कबहूँ न कढ़ो कवि **बोधा** धरो घर भीति तका की ।
खेलौ तौ खेलौ खुसी सों लजीजी न खजौ तौ छोड़ौ य रीति त्रका की ।
दो दो अनोखियै कैसें सधैं इतै आसिकी ये उतै कानि कका की ।८६।
बैर परी पुरबासिनी ये बसु जाम करैं घुघुरून घनाको ।
बीच परी टटिया तिन की झझकोरत जोर धरें जोवना को ।
बोधा बचे ना घरी पल में छुटि जाइगो छोर छुए तें फना को ।
रोसु कै काहू सों का कहियै हमें रोसु न और सों रोसु जना को ।८७।

(बरवैं)

अरति आइ बरिआईं खाति न चाउ ।
बरि बरि उठति परोसिनि करि बरिआउ ।८८।

(छंद)

महिरम जान मालहम बेचो नेह नफा ठहराई ।
सो आसिक को देन न भावै मजा न दिल की पाई ।
फिरै माल कीमति घटि जावै त्यागै कथा रहाई ।
कठिन पीर कहिबे की नाहीं सहिबे ही बनि आई ।८९।
कसक लगी जाके हिय में ताही हिय में कसकी री ।
सहर तमासा देखत सबही तिनकी होत हँसी री ।
प्रसुतपीर बंध्या का जानै झलकन पहिरी पीरी ।
दिल जानै कै दिलबर जानै दिल की दरद लगी री ।९०।

---

[८७] बसु; सबै (भारत) ।

(सवैया)

गहि पाइ तैं भीलनी हाथ करो तू तहाँ न गुसा उर आनतु है।
बनियैं घर बोधा बिकें गुर कौं तिन पै रिस काहे न ठानतु है।
हिय फाटत मेरी जो बात सुनें उनतें घटि का मैं बखानतु है।
हँसिकै तब ज्वाब दियो मुकुता वै अजान तैं जौहरी जानतु है।९१।
निसिवासर द्वार खरेई रहैं जब लौं अपनी बरबात लही।
पुनि टारेहु तें न टरैं कबहूँ बरहू रहिबो यह टेक गही।
कवि बोधा रतोकौ गिरें कबहूं तिनसों न कछू पहिचान रही।
समयौ परि कौन के को न गयो अरु आ यकै ऐसी न कौन कही।९२।
लखि चीकने पातन पेड़ बड़ो रहै फूलन सों छबि छाइ सबै।
तकि ऐसो सुबास सुवा बिलसो रहिबे की तहाँ सचु पाइ सबै।
कवि बोधा भुवान फंसो फल में पछिताइ बिदा यहि माँगी अबै।
सठ सेमर ने यह ज्वाब दयो हम सों तुम सों पहिचान कबै।९३।
चाम के दाम गुनीन के आम यों बिस्वा की प्रीति पलीत को मेवा।
सेनापती सरने में सती अरु भानुमती करै पाँख परेवा।
बोधा जुबान जथा सठ की लखौ फागु को बापु देवारी को देवा।
आखिरो चूमिकै कौन गयो करि धूम को धाम औ सूम की सेवा।९४।

(भ्रमरोक्ति)

तरु कुंद लखे मचकुंद बड़े कचनार कनेर अनारकली।
गुल बीसक गेंदे पचास लखे तिनहूँ न कहीं यक बात अली।
गुन गायकै बोधा रिझाय फिरौ पै न काहू की रीझिकै ग्रीव हली।
चलु री भँवरी चलियै यहि बाग दवाग लगै तौ दहैगी गली।९५।
सेवती जाती जुही कचनार अनार करील कनेर निहारी।
पाँडर मौरसिरी मचकुंद कदंब लौं बोधा लखी फुलवारी।
केतकी केवरो कुंद नेवारि सो देखि लता यह चाड़ निवारी।
मालती एक बिना भ्रमरी इतै कोऊ न जानत पीर हमारी।९६।

कै दिलमाहिर सों बिछुरो कै बिबाद गह्यो उर सील पिरानो।
कै कहुँ वाजी सों बीच परो सुतसोगु किधौं भटको भहरानो।
बोधा दसा अपनी कहु भृंग किधौं कछु गाँठि तें माल हिरानो।
रोवत संग लियें भ्रमरी तू भयो कहु कौन के सोच दिवानो।९७।

(बरवै)

लीने संग भ्रमरिये मरसि बियोग।
रोवत फिरत भँवरवा करिकै सोग।९८।

(सवैया)

फुलवारी बिषै फल फूलन में लखि लोनी लता तिन सों अटको।
बरसें रसकेलि न संक करी कबहूँ तहँ दूसरो ना खटको।
कबि **बोधा** तहाँ तरु चंपक को सु अचानक ही लखि कै लटको।
बिछुरी मुहि मालती प्रानप्रिया तिहि पीर फकीर भयो भटको।९९।
बिन स्वाद पुरानी लता सिगरी तिनहूँ में कछू गुन ज्ञान न तो।
लखि केतकी और नेवारी जुही मन मानै न सेवती बीच रतौ।
कवि **बोधा** न प्रापति आदर की दरकार करी करि एक मतो।
यहि आसरे या बगिया बिलम्यो वा चमेली नवेली सों नेह हतो।१००।
रतिकों ना नेवारी नेवारी व्यथा मन मारि नहीं मन क्यों मथियै।
कबि **बोधा** कही हँसि सेवती ने यहि प्रीत अनोखी में ना नथियै।
तिनहूँ तें न चाड़ सरी भ्रमरी तौ करील पै कौन कथा कथियै।
घटि चेत गयो सुनि केतकी को का गरीब बेसाहु करै हथियै।१०१।
किसा सेवती सोनजुही सों कही इन्हें देखें दया मन में न जगी।
पुनि पूछी न कोऊ बिधा इनकी पै न एकऊ वाके हिये में खगी।
सँग भौंरी लिये रँगहीन फिरै उर पूरी बियोग दवाग दगी।
कछू मालती के बिछुरे तब तें भ्रमरैं महिरैबे की बाय लगी।१०२।
भटभेर फिरौ सिगरी बसुधा सु बिसेखि लखौ सब एकरुखी।
जित बाल तितै खुसिहाल सबै जित बाल नहीं तित हाल दुखी।

तब तौ रति चाह न दूजी रहै कबि बोधा सोहात वही सुरुखी।
दुख ठौर सबै बिधि और रचै सुख ठौर अकेली सरोजमुखी।।१०३।
तुम और को आदर का करिहौ निज पातन सों हियरा न हिलौ।
पुनि नाहिन छाँह दिगंवर सो फल स्वादविहीन न जात गिलौ।
इत जानतो तोहि तौ आवतो ना हिय जानि इहाँ टुक एक भिलौ।
मति होते करील मथौं हीं पर्‌यो या चमेली नवेली के धोखें मिलौ।।१०४।
कही बेदनहूँ औ पुराननहूँ नरलोगनहूँ चलि बूझी जिसी।
जिन तौ हमैं सीख सिखाई यहै बनहूँ घर आपने सीख तिसी।
पुनि आप तें **बोधा** बिजारति सी निरधारी भलें मति कै फिरि सी।
मृगनैनी बिलासिनी तें कबहूँ सुख और सुने हम ठौर मिसी।।१०५।
चाँदनी सेज जराय जरी गदिया अरु गेड़ुआ देखि रिसाती।
राती हरी पियरी लगीं झालरी केसरवारी बिरी नहिं खाती।
बोधा इते सुख में न रमै उतै चाहि कै साँवरो रूप सिहाती।
यार के साथ पयार बिछाइ कै डेलन में परि खेलन जाती।।१०६।
प्रीति की पाती प्रतीति कुँड़ी दृढ़ताई के घोटन घोटि बनावै।
मैन मजेजन सों रगरै चितचाह को पानी घनो सरसावै।
बोधा कटाछन की मिरचैं दिल साफी सनेह कटोरे हलावै।
मो दिल होइ सुखी तवहीं जव रंग में भावती भंग पिआवै।।१०७।
काँपत गात सकात वतात हैं साँकरी खोरि निसा अँधियारी।
पातहू के खरके छरकै घरकैं उर लाय रहै सुकुमारी।
बीच में **बोधा** रमे रसरीति मनो जग जीति चुक्यो तिहि बारी।
यों दुरि केलि करें जग में नर धन्य वहै धनि है वह नारी।।१०८।

इति चतुर्थ खंड

---

[१०६] जराय; जरी की (विरह)। केसरिवारी; केसरधारी। चाहि कै; कारो को। डेलन; डीमन। परि; नित (वही)।

[१०८] काँपत; कंपत (विरह)। सकात०; बतात सकात। खोरि०; खोरिनवौ। बीच०; कीच के बीच। जग०; जुग जात। दुरि; जुग (वही)।

अथ पंचम खंड

पक्षिन कौं बिरछा हैं घने बिरछान कौं पक्षियौ हैं बड़े चाहक ।
मोरन कौं हैं पहार घने औ पहारन मोर रहैं मिलि बाहक ।
बोधा महीपन कौं मुकुता औ घने मुकतान के राइ बेसाहक ।
जौ धन है तौ गुनी बहुतै अरु जौ गुन है तौ अनेक हैं गाहक ।१०९।

बटपारन बैठि रसालन पै यह क्वैलिया जाइ खरैं ररिहै ।
बन फूलिहैं पुंज पलासन के तिनकौं लखि धीरज को धरिहै ।
कबि **बोधा** मनोज के ओजन सों बिरही तन तूल भयो जरिहै ।
घर कंत नहीं बिन तंत भटू अब की धौं बसंत कहा करिहै ।११०।

है न मुसक्किल एक रती नरसिंह के सीस पै साँग उवाहिबो ।
दैबे कौं कोटिक दान अनेक महेस लौं जोग हिये अवगाहिबो ।
बोधा मुसक्किल सोऊ नहीं जौ सती ह्वै सँभारै सिखीन को दाहिबो ।
एकहि ठौर अनेक मुसक्किल यारी कै प्यारी सों प्रीति निवाहिबो ।१११।

(दोहा)

सहल बाहिबो सिंह सिर **बोधा** कबि किरवान ।
प्रीति रीति निरबाहिबो महिरम मुसकिल जान ।११२।

(सवैया)

द्वार में प्यारो खरो कब को लखती हियरा सों लगाइ न लीजै ।
तू तौ सयानी अनोखी करी अब फेरि कै ऐसी न चित्त धरीजै ।
बोधा सोहाग औ सोभा सबै उड़ि जैबे के पंथ पै पाँउ न दीजै ।
मानि लै मेरी कही तैं लली अहे नाह के नेह मथाह न कीजै।११३ ।

इति श्रीविरहीसुभानंदपतिविलासः पंचमः खंडः समाप्तः ।

---

[१०९] बिरछान०; औ घने बिरछान कौं पक्षी हैं (विरह)। राइ; होहिं (भारत)। [११०] पै; में (भारत)। यह०; दुखदायक कोयली रे (विरह)। पुंज; फूल। घर०; कछु तंत नहीं बिनु कंत (वही)। [१११] कोटिक; कोटि लौं (विरह)। हिये; खरें।
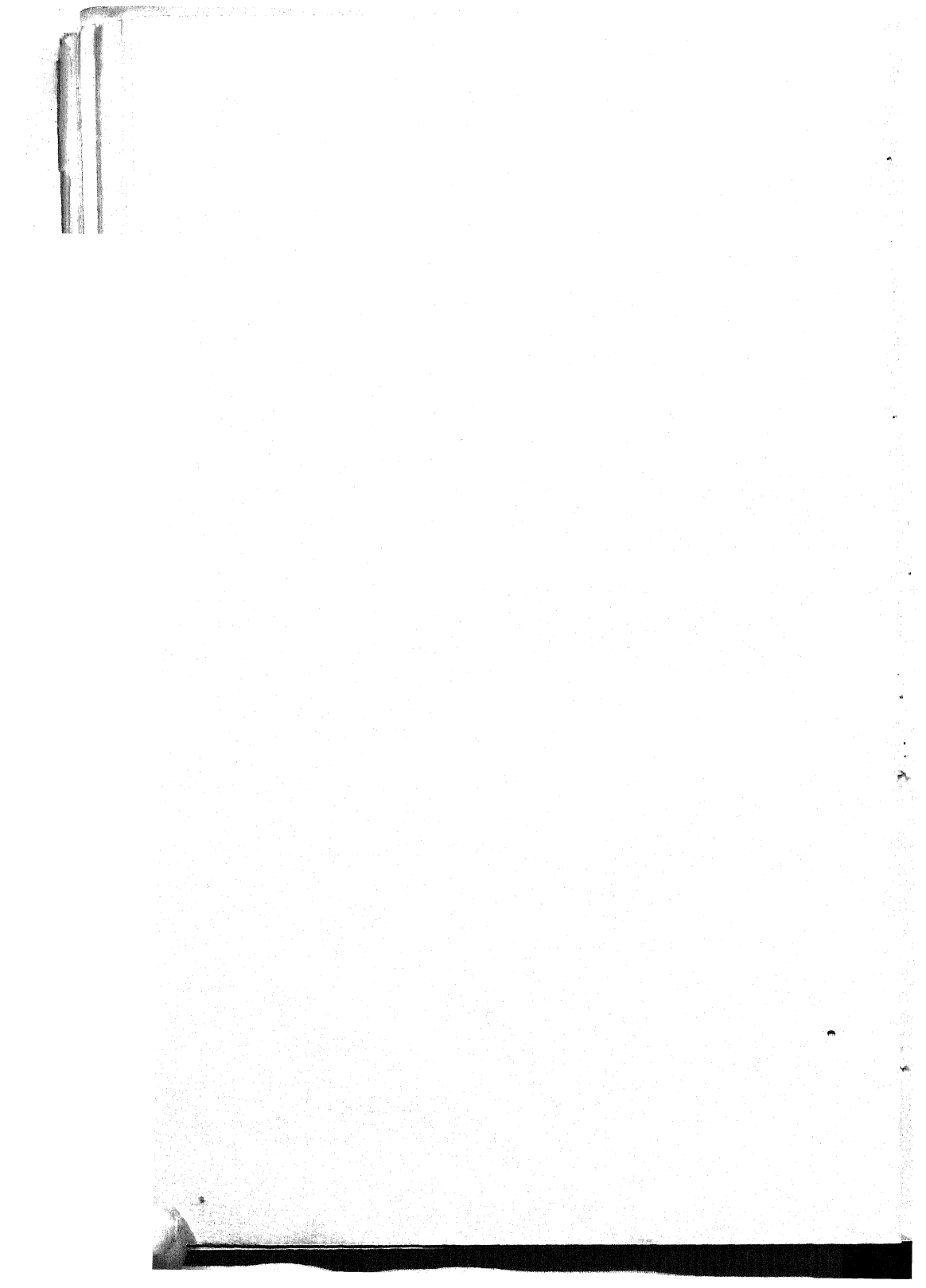
माधवानल-कामकंदला चरित्र

विरहवारीश

पूर्वार्द्ध भाग

प्रथम खंड

(प्रथम तरंग)

(दोहा)

द्विरदबदन मंगलसदन बिघ्नहरन सिरताज ।
कृपाकरन औ बुधिकरन नमो नमो गनराज ।१।

(छप्पय)

तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि ।
मोरमुकुट की लटक चटक बरनत अटकत कबि ।
पीतांबर फहरात मधुर मुसकात कपोलन ।
रच्यौ रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बोलन ।
रति कोटि काम अभिराम अति दुष्टनिकंदन गिरिधरन ।
आनंदकंद ब्रजचंद प्रभु (सु) जय जय जय असरनसरन ।२।

(सोरठा)

गिरिजारमन कृपाल बिघ्नहरन दूषनदरन ।
मो पर होहु दयाल होइ ग्रंथ भाषा सरल ।३।
रुजनासक रबिदेव तिमिरहरन संसयसमन ।
नमो चरन तव देव होइ ग्रंथ पूरन सुभग ।४।

(दोहा)

जिहि भूधर कर पर धरो सह्यो सबै जंजाल ।
तिहि चरनन पर सीस धरि बरनत कथा रसाल ।५।

(छप्पय)

प्रथम साप कृत बाल द्वितिय ग्रारंड खंड गनि ।
पुनि कामावत देस बेस उज्जैन गवन भनि ।
जुद्ध खंड पुनि गाह रुचिर सिंगार वखानो ।
पुनि वहुधा वन देस नउम वर ज्ञानहि जानो ।
कहि प्रीति रीति गुन की सिरत नृप विक्रम को सरस जस ।
नौ खंड **माधवाकथा** में नौ रस विद्या चतुर्दस ।६।

(चौपाई)

सो सुनि सुख विन दोष न कोई । यह गुनकथन कवित्त न होई ।
मतवारो विरही नर जैसो । उनमादी वालक पुनि तैसो ।७।
सिथिल सब्द ये सवही भाखत । ग्रर्थ ग्रनर्थ ग्रर्थ नहिँ राखत ।
सुनि सज्जन निस्चय सुख पावै । मूरख हँसि मूर्खता जनावै ।८।

(दोहा)

जिन चोखौ चाखौ नहीँ ते किन पावै चौज ।
बोधा चाहे सो बकै मतवारे की मौज ।९।

(चोपाई)

पूरी लगी डगी फिर नाहीँ । सुरतलेस महबूवा माहीँ ।
बिछुरन परी महा जनकावा । तव विरही यह ग्रंथ वनावा ।१०।

(दोहा)

पंती छत्र बुँदेल को छत्रसिंह भुव मान ।
दिलमाहिर जाहिर जगत दान जुद्ध सनमान ।११।
सिंह ग्रमान समर्थ के भैया लहुरे ग्राहिँ ।
बुद्धिसेन चित चैनजुत सैवौँ तिन्है सदाहिँ ।१२।
कछु मो तेँ खोटी भई छोटी यही बिचार ।
डर मान्यो मान्यो मनै तजे देस निरधार ।१३।
इतराजी नरनाह की बिछुरि गयो महबूब ।
बिरहसिंधु बिरही सुकबि गोता खायो खूब ।१४।

वर्ष एक परखत फिरो हर्षवंत महराज ।
लह्यो दान सनमान पै चित न चह्यो सुखसाज ।१५।
यह चिंता चित में वढ़ी चित मोहित घट कीन ।
भौन रौन मृगछौन सो तौन कहा परबीन ।१६।
वढ़ि दाता बड़ कुल सबै देखे नृपति अनेक ।
त्याग पाय त्यागे तिन्हैं चित में चुभै न एक ।१७।

(कबित्त)

देवगढ़ चाँदा गढ़ा मंडला उज्जैन रीवाँ
साम्हर सिरोज अजमेर लौं निहारो जोइ ।
पटना कुमाऊँ पेषि कुर्रा औ जहानाबाद
साँकरी गली लौं वारे भूप देखि आयो सोइ ।
बोधा कवि प्राग औ बनारस सुहागपुर
खुरदा निहारि फिरि मुरक्यौ उदास होइ ।
बड़े वड़े दाता ते अड़े न चित्त माँहि कहूँ
ठाकुर प्राचीन खेतसिंह सो लखो न कोइ ।१८।

(दोहा)

जिकिर लगी वहबूब सों फिरि गुस्सा महराज ।
विन प्यारी होवै सु क्यों मो मन को सुखसाज ।१९।
यों सुनि गुनि निज चित्त में, लिखि दिय वाला एक ।
रहिये खेत नरेस के चरन सरन तजि टेक ।२०।
तब हौं अपने चित्त में सकुचौं सोच वनाय ।
मेरे ऐसी वस्तु कह काहि मिलौं ले जाय ।२१।
बनत यही बनिता कही वे राजा तुम दीन ।
भाषा करि माधोकथा सो लै मिलौ प्रबीन ।२२।
यों सुनि थिर ह्वै ह्वै कथी बिरहीकथा रसाल ।
सुनि रीझै खीजै तजै खेतसिंह क्षितिपाल ।२३।

(छप्पय)

बुंदेला बुंदेलखंड कासीकुल मंडन ।
गहिरवार पंचम नरेस अरिदल वल खंडन ।
तासु बंस छत्ता समर्थ परनापत बुझियै ।
तासु सुवन हिरदेस कुल्ल आलम जस सुझियै ।
पुनि सभासिह नरनाथ लखि बीर धीर हिरदेस सुव ।
तिहि पुत्र प्रवल कविकल्पतरु खेतसिंह चिरजीव हुव ।२४।

(दोहा)

नवजौवन वनिता निपुन सुभ गुन सदन सुभान ।
बूझति रस चसके बहुत प्रिय पै प्रीतिविधान ।२५।
अतनकथन के कथन यों केलिकथन परबीन ।
बिरह गिरह प्रेरित तहाँ बिरही पति रसलीन ।२६।
वाला बूझत बालमै सुनि वालम सज्ञान ।
कहा प्रीति की रीति है कीजै कत उनमान ।२७।

(**बिरही बचन**)

अरे यार यारी कठिन करत कठिन नर कोय ।
हार जीत दुख सुख जथा खेल जुवा को होय ।२८।

(सवैया)

है न मुसक्किल एक रती नरसिंह के सीस पै साँग उवाहिबो ।
दैबे कौं कोटि लौं दान अनेक महेस लौं जोग खरे अवगाहिबो ।
बोधा मुसक्किल सोऊ नहीं जौ सती ह्वै सम्हारै सिखीन कों दाहिबो ।
एकहि ठौर अनेक मुसक्किल यारी कै प्यारी सौं प्रीति निबाहिबो ।२९।
अति छीन मृनाल के तारहु ते तिहि ऊपर पाँव दै आवने है ।
सुइबेह ते द्वार सकीन तहाँ परतीत को टाड़ो लदावने है ।
कबि **बोधा** अनी घनी नेजहु ते चढ़ि तापै न चित्त डगावने है ।
यह प्रेम को पंथ कराल है जू तरवार की धार पै धावने है ।३०।

(चौपाई)

जौ नरदेह देहि हे स्वामी। तौ सनेह जिन देय बिरानी।
जौ सनेह करनीबस देही। तौ जिन बिछुरै मीत सनेही।३१।
जौ कदापि बिछुरै मनभावन। तौ जिय जाय चलो तेहि दावन।
छाती फटि द्वै टूक न होई। तौ किमि जानव बिछुरो कोई।३२।

(कुंडलिया)

जासों नातो नेह को सो जिन बिछुरे राम।
तासों बिछुरन परत ही परत राम सों काम।
परत राम सों काम करम संसारी छूटै।
छूटै ना वह प्रीति देह छूटै जौ टूटै।
कह **बोधा** कवि कठिन पीर यह कहियै कासों।
सो जिन बिछुरै राम नेहनातो है जासों।३३।

(दोहा)

सहल वाहिबो सिंहसिर **बोधा** कवि किरदान।
प्रीतिरीति निरवाहिबो महिरम मुसकिल जान।३४।
प्रान जाहिँ तजि देह देह जाय पुनि खेह ह्वै।
तौ लों निवहै नेह पवनै मिलि पिय कों मिलै।३५।
ऐसी कहियै प्रीति प्रनपन पाले पीव सों।
जीव देह की रीति एक बृथा ही एक विन।३६।

(वारावान्य)

(सोरठा)

प्रीति परम कहि कौन निज पति उपपति गनिक की।
ये विरही कहि तौन जौन होय सवते सरस।३७।

(दोहा)

होय मजाजी में जहाँ इस्क हकीकी खूब।
सो साँचो ब्रजराज है जो मेरा महबूब।३८।
आँख कान बुधि ज्ञान की प्रीति चार विधि जानि।
चार भाँति जिनके जथा विरही कहै वखानि।३९।

प्रथम पतंग कुरंग पुनि माधवनल की प्रीति ।
चौथे यारी ज्ञानमय भृंगकीट की रीति ।४०।
चार प्रकार तियान की रीझ कहत कवि लोग ।
धन गुन रूप सरीर लघु कै पुनि दीरघ जोग ।४१।
रूपवंत वस रूप के विभौ विभौ वस जान ।
गुन के वस गुनवंत तिय डील डील उनमान ।४२।
अजव गजव मन की लगन अनमिल हूँ लगि जाय ।
जैसी सूरज कमल सों ससि चकोर के भाय ।४३।
दीपक और पतंग की आँख लगे की प्रीति ।
चुंवक जड़ लोहौ कठिन सम स्वभाव यह रीति ।४४।
प्रीति अनेकन में अधिक एक रीति यह होय ।
ज्यों कुरंग सुनि रंग कों तत्क्षन डारत खोय ।४५।

(चौपाई)

भाँति अनेक प्रीति जग माहीं । सवहि सरस कोऊ घटि नाहीं ।
जाको मन विरुझो है जामें । सुखी होत सोई लखि तामें ।४६।
याते सुनि यारी दिलदायक । कीजै प्रीति निवहिबे लायक ।
प्रीति करै पुनि और निवाहै । सो आसिक सव जगत सराहै ।४७।

(दोहा)

जौ वैसी जोड़ी मिलै प्रीति करौ सव कोय ।
कामकंदला सी त्रिया नर माधो सो होय ।४८।

(सवैया)

राम सो नाम को स्याम सो सुंदर राधे सी वाम महेस सो जोगी ।
को बकता सम सेष प्रताप प्रभाकर यों पुरहूत सो भोगी ।
बोधा बड़ाई बड़ो विधि सो रजनीपति सो जग आन न रोगी ।
देख्यो सुन्यो न कहूँ कबहूँ भयो माधवानल्ल सो और वियोगी ।४९।

(सुभान उवाच)

(दोहा)

अरे पिया मो जीय की संक निवारौ येह ।
को माधो को कंदला कैसे जुर्यौ सनेह ।५०।

(बिरही वाच्य)

रतिपति कों रति के सहित गोपिन दई सराप ।
तिहि सजीव जग आय कै पायौ बिरहसँताप ।५१।
मदन भयो द्विज माधवा कामकंदला जोय ।
वारौं तिनके इस्क पर जोगी भोगी दोय ।५२।

(सुभान वाच्य)

का गुनाह रतिनाह सों नाह भयो उदिवेक ।
सो कहिये लहि काम जो पायो सजा अनेक ।५३।

(बिरही वाच्य)

(चौपाई)

सुनि सुभान यारा दिलदायक । माधोकथा न कथिबे लायक ।
दुर्घट बिरह पार को पावै । बूड़त उछलत तनु गलि जावै ।५४।
बिछुरन होय मीत सों सोई । ऐसी कथा न कहियै कोई ।
मोहिँ तोहि बिछुरन परि जैहे । कथनी कौन काम यह ऐहै ।५५।

(सुभान वाच्य)

अहे मीत ऐसी नहिँ भाखो । कथि कै कथा न खंडित राखौ !
जीवन मरन उचित वे दोऊ । प्रेमकथन चूकौ मति कोऊ ।५६।

(बोहा)

जानत परवल हाथ वह विना मौत की नेत ।
तदपि सनेही राग कों पीठ कुरंग न देत ।५७।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरही-
सुभानसंवादे शापखंडे मंगलाचरणः प्रथमस्तरंगः ।१।

(द्वितीय तरंग)

इस्क कारंजा नाम । अथ अगलाव खंड

(बिरही बचन)

(चौपाई)

सुनि सुभान अब कथा सुहाई । कालिदास वहु रुचि सह गाई ।
सिंहासन वत्तीसी माहीं । पुतरिन कही भोज नृप पाहीं ।१।
पिंगल कहँ बैताल सुनाई । **बोधा** खेतसिंह सह गाई ।
रुचिर कथा सुनि हे दिलमाहिर । इस्क हकीकी है जग जाहिर ।२।

(दोहा)

सुनि सुभान बृषभान की सुता हेत ब्रजराज ।
धर्यो देह वसुदेव के गेह नेह तिहि काज ।।३।।
गोकुल वसि घर महरि के कीन्हेंनि असुरनिपात ।
गावत बेद पुरान सो कथा लोक विख्यात ।४।

(चौपैया)

ब्रज में वसि ब्रजराज नंदघर कुंजन धेनु चराई ।
वसिकर रूप अवसिकर हरि को लखि निज दृग न अघाई ।
अगनित हनत असुर दिन प्रति हरि वन उपवननि विहारैं ।
भीर अहीरन के सुत संगी वहु रंगी वपु धारैं ।५।
लसति देखि घनस्याम रूप कों घनस्यामा तन नीकी ।
नीलकंठ की कंठनीलता सोऊ लखियति फीकी ।
बरहीपक्ष सदा माथे पर ताको मुकुट विराजै ।
माथ पाग सिर पेंच हरित गति मंद ललित मन राजै ।६।
जगमगात छवि जटित जवाहिर पन्नन जेव जनाई ।
भाल तिलक सोभा लखि भा लहि केसरगंध सुहाई ।
भृकुटी भवैं धनुष मदगंजन रंजन निकट लसी है ।
बेंदी ललित सरद ससि में जनु बूड़न जाइ वसी है ।७।

कारे अनियारे बड़वारे रतनारे दृग धारे।
अलि खंजन मृग मीन कमलदल पानिप जलसुत वारे।
मुकुर कपोल नासिका सुक ते है कछु अधिक सुहाई।
अधर सधर बिंबाफल वारे बिहँसनि ताहि लजाई।८।

दाड़िमबीज लजत लखि रदछबि पंचानन रव भारी।
डाढ़ी लसत सुढार लाल की जैसी गोल सुपारी।
सालिकरामसिला पुनि कहिये हिरनगर्भ अति नीकी।
चिबुकबिंदु उपमा तौ लखियत ज्यों बेंदी रोरी की।९।

फन सम अयन पूँछ सम जुलफैं मनि मुक्तन बिच राजै।
चूमत ब्याल सरद ससि कों जनु उभै अमीरस काजै।
बिहँसत परत हरत मन सबके कुवाँ कपोलन माहीं।
मनौ कलिंदी तीर नीर में भ्रमरी जुग परि जाहीं।१०।

कंबुकंठ सम कंठ बिराजत निरखि परेवा हरखैं।
सुंडादंड बाहु गिरिधर के भूमिभार जे करखैं।
प्रफुलित अरुन कमल सम कर लखि नख नखतावलि जैसी।
जलसुत गजरा राजत तिनमें उपमा मिलत न ऐसी।११।

उर सम सिला उदर कटि केहरि नाभि बिउर सम गाई।
दृग खंजन रोमावलि ब्याली निकसि सुधित ह्वै आई।
डोलत लखि मुक्ता नासा में गरुड़ पक्ष के धोखे।
उर कपाट की संधि रही जनु फुफु मारत डर ओखे।१२।

मुक्तामाल हिये पर सोहै उपमा एक लसी है।
जनु पावस घनस्याम मध्य ह्वै वगपंगत निकसी है।
गुंजामाल लाल लालन के उर पै रुरकत ताकी।
जनु उफनाति हिये मोहन के रति बृषभानसुता की।१३।

पीतांबर उर स्याम स्याम के उपमा एक न मानी।
जनु पावस घनस्याम मध्य यह बिज्जुघटा घहरानी।

फूलन हार फूल के तोरा अरु वहार सरसावै ।
छापैं अंग अंग चंदन की लखि त्रैताप बुझावै ।१४।
कछनी कछे सुरंग किंकनी कर में झुनझुन वाजै ।
जनु वसंत किंसुक फूलन पर भ्रमर समूहन राजै ।
गुरु नितंव उँगरी गतकारी पिँडुरी गुल्फ सुढारू ।
सोहत हयगल साँवल में जनु जलज साँकरै मारू ।१५।
चरनराज कै सरनसहायक तारनतरन बखाने ।
उपमा कौन कीजिये तिनकी तीनि लोक जस जाने ।
पावन लसत पाँवड़ी प्रभु के कर में लकुट रगीनी ।
लटकत चलत त्रिभंगी मूरति करी मैनछवि छीनी ।१६।
आकर्षन कर मुरली वनितन जव जेहि कुंज वजावैं ।
ब्याही अनव्याही निसंक ह्वै निकरि गेह तजि धावैं ।
तजैं लाज गृहकाज राज कों फिरैं रूप अनुरागी ।
यहै खीज गुरजन वा पुरजन आकरने सब त्यागी ।१७।
ग्यारह वर्ष अधिक दिन वावन प्रकट खेल प्रभु कीनो ।
फिर अखंड बृंदावन अजहूँ रहत रासरस भीनो ।
भजनानंद द्वारका छाये गोपिन विरह वढ़ायो ।
गुप्तखेल में खेल और यौं ललिता प्रकट दिखायो ।१८।

(चौपाई)

द्विदस वर्ष हरिजुत ब्रजनारी । हरि गिरिधर के संग बिहारी ।
रहसि दिखाय न हँसि पुनि सोही । गयो त्यागि द्वारावति को ही ।१९।

(पद्धरी)

निज प्रेमपंथ बनितनि चढ़ाय । ब्रजराज गयो विरहा वढ़ाय ।
तिन एक एक कारन अनेक । तन करैं धरैं सुर स्याम टेक ।२०।
निसि जाम काम दूजो न कोय । लखि गेह गेह अति रुदित जोय ।
को सकै काहि समुझाय वाल । ब्रजबाल परीं सब प्रेमजाल ।२१।

(त्रोटक)

ब्रजगाँवन दीन समाज जहाँ। बनिता लखि मीनसमूह तहाँ।
तहँ घीवर ह्वै ब्रजराज गयो। मुरलीस्वर पूरन जार छयो।२२।
चलि के छलि के सब खैंचि लई। मकरध्वज गाहक हाथ दई।
अँसुवान प्रदाह पखारि धरीं। बिरहागिनि सों परिपक्व करीं।२३।
गृहभाजन में सब सोर करैं। सुख ईंधन लावत जोर करैं।
करुना करतीं दम को भरतीं। अतिधीरन बीरन ज्यौं करतीं।२४।

(दोहा)

धौं अनेक थल एक ही हरिगुन कथा प्रबीन।
मुरली बिरहदवागि सों करि उरझी सुरझी न।२५।

(त्रोटक)

सुरझी फिर ना उरझी जब ते। हरिहीं अनुरागि रहीं तिय ते।
बिलखैं सगरी न लखैं पिय कौं। कलपैं तलफैं न लखैं जिय कौं।२६।
हरि हो हरि हो हरि हो रटतीं। दम ऊरध लै दम सी भरतीं।
निसिबासर वै करुना करतीं। मुरछा लहि हा कहि भू परतीं।२७।
कबहूँ वन कुंजन में बिहरैं। लखि केलि सहेट बिलाप करैं।
कबहूँ गज झुंडन देखि हँसैं। हरि जू बिन क्यों बन माहिं बसैं।२८।

(दोहा)

सुनहु भोज ब्रजराज की सखी तीन बिधि जान।
प्रथम सात्वकी राजसी फिर तामसी बखान।२९।

(सात्वकीन सखिन के बचन)

(दंडक)

कंत सों न मंत और गेह सों न नेह कछू
सुत सों न सूत रह्यो ज्ञान को न गार्‌यो है।
पान सों न प्रीति लोकरीति की प्रतीति नाहीं
पानी न पनाह कछू सुख में न सार्‌यो है।
... ...
... ... ।

बेद सों न भेद लहै भाभी को भरोसो कौन
दुख्ख को न दोष **बुद्धिसेन** यों विचार्यो है ।३०।

(राजसीन सखिन के बचन)

जिन पै सयानी वारी लाज गृह काज त्रास,
सास को न मान्यो और कोऊ का वखोड़िहैं ।
जिन पै हुलास औ बिलास पति वार वारे,
थकीं ब्रजबासिनैं चरित्र केते जोड़िहैं ।
बोधा कवि तिनहूँ जो ऐसी रीति कीन्ही तौ का
हमहूँ उन सी ह्वैहैं और प्रीति तोड़िहैं ।
नेकी बदी ओड़िहैं बिपत्ति वरु गोड़िहैं जौ
कान्ह हमें छोड़िहैं तौ हम तो न छोड़िहैं ।३१।

(दोहा)

सुनी निबाहत जगत में बाँह गहे की लाज ।
सकुच न कीन्हीं अंक भरि हमें तजत ब्रजराज ।३२।

(तामसीन के बचन)

(सवैया)

हम तौ तुम्हें चाहि कै या जग को उपहास सह्यो अरु काम सहा ।
पुनि पाप औ पुन्य विचार्यौ नहीं परलोक हू लोक कों चित्त चहा ।
इतने पै तजौ तौ तिहारो बनै कबि **बोधा** हमें कहने कौं रहा ।
जिन प्रेम मुकावले पीठ दई नर ते जग बीच जिये तौ कहा ।३३।

(सामान्यता सखिन के बचन)

(चौपाई)

श्री ब्रजराज रासर चि भामिनि । अमित विलास दिखाए कामिनि ।
कै वह सरदनिसा सुख कीन्हों । कै अब नाथ अमित दुख दीन्हों ।३४।

(सोरठा)

हिय ते बिछुरे नाह हिम ऋतु इमि आगम जगत ।
उलटी एक पनाह सीत दिवस दाहैं करत ।३५।

(चौपाई)

अव यों विरह न बूड़त कोई। कै पषान यह तनु नहिँ होई।
गए न निकसि प्रान दुखदायक। जव देखे विछुरत ब्रजनायक।३६।
गए न नैन फूटि मतवारे। इन विछुरत ब्रजराज निहारे।
भस्म न भई देह यह तवहीँ। चल्यो त्यागि ब्रजनायक जबहीँ।३७।
भुजन चापि हरि हिय सोँ लायो। कठिन जानि विधि कुलिस वनायो।
अव यो चंद उगत केहि कारन। निसि औ दिवस नए जिमिभारन।३८।
बृंदावन के द्रुम लहि वारे। हरि विछुरत विधि क्यों न सिधारे।
गयो न सूखि कलिंदी वारी। जिहि जल केलि कीन्ह गिरिधारी।३९।
कै वह सुख कै यह दुख भारी। करचो कहा हमकोँ गिरिधारी।
निलज प्रान अव निकसत नाहीँ। मिलहिँ जाय हरि गिरिधरकाहीँ।४०।

(अथ ... बचन)

(चौपाई)

लिखि करि ऐसो प्रेम नवीनो। कौन विचार विरह लिखि दीनो।
याते विधि की भूल अनैसी। जौ पै करत निहायत ऐसी।४१।

(अथ सखी बचन)

(दोहा)

ऐ स्वामी मन सोच यह आवत अग्र वसंत।
पिय विदेस हिय विरहजुत कहि जीबै को तंत।४२।

(सवैया)

बटपारन बैठि रसालन पै दुखदायक कोयली रे ररिहै।
बन फूलिहैँ फूल पलासन के तिनकोँ लखि धीरज को धरिहै।
कवि **बोधा** मनोज के ओजन सोँ विरहीतन तूल भयो जरिहै।
कछु तंत नहीँ बिनु कंत भटू अवकी धौँ वसंत कहा करिहै।४३।

(त्रोटक)

जग मेँ अव आय वसंत वस्यो। तव कंद्रप मूरतिवंत लस्यो।
नव पल्लव पात नए हुलहैँ। मदनद्रुम बीच धुजा सु लहैँ।४४।

नव फूलन पुंज पलासन के। नित साजत बेस हुतासन के।
नव कंजकली जल में लसिहैं। बिरहीजन के मन कौं कसिहैं।४५।
पिक चातक सोर खरे करिहैं। बिरहीजन प्रानन ते हरिहैं।
कुसमाकर फूल निषंग भरे। अमलान सु धीरन मौर धरे।४६।

(पद्धटिका)

जग माहिँ आय साज्यो वसंत। जब प्रलयकाल संसार अंत।
जिन धामनहीं भा उनहिँ साज। तिनकों विसेष दुख भव समाज।४७।
सुनि कठिन कोकिलाकूक बीर। अस कौन प्रवल जो धरै धीर।
लखिकै रसाल को मौरु बाल। अस को न भयो बिरही विहाल।४८।

(सवैया)

मुख चारि भुजा पुनि चारि सुने हद बाँधत बेद पुरानन की।
तिनकी कछु रीभ कही न परै इहि रूप या कोकिलातानन की।
कवि **बोधा** सुजान बियोगी किये छवि खोई कलानिधि आनन की।
हम तौ तवहीं पहिचानी हती चतुराई सबै चतुरानन की।४९।

(दोहा)

यह वसंत ऋतु वारिनिधि विरह बढ़त लखि बीर।
ब्रजनायक बोहित विना किमि करि लागहिँ तीर।५०।

(चौपाई)

प्रफुलित कंज फुले जल माहीं। मनहुँ पुत्र वाड़व के आहीं।
देखत दहत वियोगी लोचन। विन सहाय ब्रजपति दुखमोचन।५१।
दसहूँ दिसि पलासछवि छाई। मनहुँ सकल वन लाइ लगाई।
दहत कूक कोकिल की गाढ़ी। जनु रनु मारू गावत ढाढ़ी।५२।
नौतम पात अरुन लखि कैसे। ललित पताका रन में जैसे।
उडत भृंग भौंरत बन माहीं। बरखत मनहुँ पंचसर आहीं।५३।
पवनचक्र चहुँ दिसि ते धावत। मनु मतंग गज कहुँ ते आवत।
पवनबबूरा बजत कठोरा। क्षिति पै नृप बसंत को तोरा।५४।

जब अवस्य बीतत है जैसी । तब सहाय साजत विधि तैसी ।
हर चित सुखद चंद्रिका जोई । ज्वाल हाल यहि अवसर सोई ।५५।
सीतल मंद सुगंध बयारी । तिरविध तीन तापसम नारी ।५६।

(दोहा)

विरह गिरह चौकित चकित चली बियोगिन बाम ।
जेहि बनितन पूरब कहूँ ताहि मिलो घनस्याम ।५७।

इति श्रीविरहवारीश माधवानल कामकंदला चरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे शापखंड द्वितीयस्तरंगः ।२।

(तृतीय तरंग)

अथ अगलाव खंड

इस्क वर विक्रम नाम

(चौपाई)

सुन वररुचि सोइ प्रेमकहानी । विरह विकल बनिता अकुलानी ।
चलि संकेतभूमि त्रिय आई । ढूँढ़ो बहुत न मिलो कन्हाई ।१।

(संयोगता)

वटछाँह पाय पायो न नाह । तिय हिये होत मनमथ्थदाह ।
कर बीन लीन परबीन साज । गुनकथन कीन्ह तहँ कीन्ह राज ।२।

(सवैया)

तव नेह नफा दिल मोल लियो छबि आपनी लैकै बयाने दई ।
पुनि माल लै दाम चुकायो नहीं मुलकात चिन्हारिऊ भूलि गई ।
घटैकीमत **बोधा** जो माल फिरै बजिकै बेवपार में टूट ठई ।
उनकी पै बनै हम यों समझैं मन बेचो न जानी कै लूट भई ।३।

(दोहा)

ब्याहु ब्याहु **बोधा** सुकवि करी निहायत खूब ।
बरद बंदि दी आसिका बेदरदी महबूब ।४।

(विष्नुपद)

इहि जग को न प्रीति करि रोयो।
कीन्ही प्रीति पतंग दीप सों तुरत आपनो खोयो।
सुनत कुरंग तान बधिकन के बान हियो दै ओड़े।
सुरन मध्य सुरराजदेह ते भग पाछो नहिँ छोड़े।
भई पषान बाम गौतम की ससि सकलंक निहारो।
मृग के मोह भरत नृप मृग ह्वै चरयो सघन बिच चारो।
सोई ब्रजवनितन पर बीती कहते कछू न आयो।
बोधा लगि उहि प्रेमपंथ में को न गयो डहकायो।५।

(चौपाई)

सुन सुभान इहि बिधि तिय गायो। धनुप बान धरि मनमथ आयो।
बाउरि बाम बिरहमति मोई। जानत मनमथ कै वह जोई।६।
अँसुवा बहै ढाड़ भरि आवै। जब अखरौटी बीन बजावै।
ताहि देखि दै ताल तहाईं। मनमथ बहुधा बाल खिजाईं।७।

(सोरठा)

उच्चाटन सर लाय मोहन सोषन उनमदन।
मनमथ अति हरषाय मारन सर पंचम लग्यो।८।

(चौपाई)

नव अबस्त बिरहीतन जबहीं। अतन सतन बरनत केवि तबहीं।
दरसन आय मदन तब दीन्हा। अति ही आय उदीपन कीन्हा।९।

(हरिगीतिका)

यह चरित लखि रतिनाथ को प्रज्वलित तन बनिता भई।
अति कोप सातुक लोप कै यह घोर साप तिन्हैं दई।
लखि विरहवस जस मोहिँ खिझवत जुलन ब्याकुल काल में।
तिमि होउगे दंपति वियोगी कठिन तिहि कलिकाल में।१०।
कर बीन लै अति दीन ह्वै बन बन फिरौ बिरहा नचे।
पुनि द्वार द्वार पुकार करिहू भेष जोगी को रचे।
पुनि साप औ त्रैताप जुत रतिनाथ हाथ दुवौ मलै।
मतिभंग भो घटि रंग गो बिन काज ब्याधि बिढ़ै चले।११।

(दोहा)

कबहूँ नीके भले में ओटपाय करिये न।
सुनि लोहित उपदेस में वानर ह्वै मरिये न।१२।

(सोरठा)

साप पाय पछिताय पुनि तासों विनती करी।
तीछन विरह बलाय सहबी हम केते दिवस।१३।

(चौपाई)

निमिष कठिन जब बिछुरत भोगी। कितक दिवस हम रहब बियोगी।
स्वामिनि क्षमि अपराध बखानो। मेरे कृत की गुसा न आनो।१४।

(सोरठा)

जो पिय सों संजोग सुखनिबंध बैरिन विषै।
देय बिरंचि बियोग कोटि राज किहि काज तिहि।१५।
मनमथ के सुनि बैन कह्यो विरहिनी बाल ने।
अरे धीर धरि मैन, तोहि बिरह ब्यापै सरल।१६।
जन्म आदि ते होय विरहबीज तेरे हिये।
द्विजतन पावै सोय बरस दोइ दस लौं रहै।१७।
बिछुरि जाय सोइ बाम बिनसौ बहु तकि तकि बिरह।
कठिन बिदेसहि बाम चार मास बन वन फिरौ।१८।
दुसह विरह संताप बांधवगिरि बरषै बसहु।
पुनि यह आप प्रताप मृगनयनी त्रिय तो मिले।१९।
तेरह दिवस सँजोग भोग करहु तुम तासु घर।
ता पर होय बियोग बरष दोइ दस मास जग।२०।
यों कह अपने गेह गई बियोगिनि बाल तब।
मनमथ दरद सनेह आयौ निज अस्थान कों।२१।

(अथ लीलावती जन्म)

(सोरठा)

द्वापर जुग के अंत पुरी बनारस के विषै।
कायथ नाम सुमंत तासु सुता लीलावती।२२।

बालदसा में बाल पढ्यो ब्याकरन भाष्य तब।
निज कृत ग्रंथ रसाल चरचा हित नूतन रच्यो।२३।

(चौपैया)

विद्या दसचारी (बड़े विचारी) पढ़ी कुमारी चौसठ कला बखाने।
बुधवंतन मंडे कुपथन खंडे सब विद्याधर जाने।
पंडित उपदेसी सहज सुबेसी एक एक दिन आयो।
षट आगम जानै बेद बखानै सब विद्याधर जायो।२४।
चटसारी आयो विप्र सुहायो सबही आदर कीन्हो।
आसन औ वासन भोजन खासन सुरसरिताजल दीन्हो।
भोजन करि पाँड़े चरचा चाँड़े तुरतहि रारि बढ़ाई।
भटक्यो दिसि चारहु चार चवारहु पंडित मिल्यो न भाई।२५।
सुनिकै इत आयो सुजस सुहायो धन्य धरा बर कासी।
(पंडित) जीते लाखन भाषत भाषन नर सिव नारि सिवा सी।
सबही जुरि आए मोद बढ़ाए चरचा जुरिकै कीजै।
हारैहू जीतै प्रभुता जीतै कौन एक लिखि लीजै।२६।
जो तुम सब हारो होत सबारो पायन मेरे लागो।
सब गरब झारिकै सिर फिकारिकै जाँघ तरे ह्वै भागो।
तुम जीतो आछे आगे पाछे खड़े गलिन महुँ हूजो।
हौं ओर छोर लौं निकसि चोर लौं जंबुसुजस दे दीजो।२७।

(दोहा)

चार पहर चरचा करी करि करार परवान।
कासीपुरवासी सबै भए न तासु समान।२८।

(चौपाई)

चार पहर जामिनी बिहाई। भोर खबर लीलावति पाई।
ताको जीत सक्यो नहिँ कोई। अचरज यहै नग्र में होई।२९।

(दोहा)

भोर सोर सुनि सहर मे लीलावति मति जोर।
आय जुहारी बिप्र कों पुरवासिनहीँ मोर।३०।

(सोरठा)

उपदेसी द्विज बात ता कुमार तासों कही ।
बचन एक विख्यात तासु अर्थ कोउ लहत नहिँ ।३१।

(दोहा)

कन्या ने जननी जनी सुत उपजायो तात ।
वनिता ने भर्ता जनो लोक बेद विख्यात ।३२।

(लीलावती जानी)

(सोरठा)

ऐसे वचन अनेक लीलावति जानी सबै ।
बिप्र न जान्यो एक जो लीलावति ने कह्यो ।३३।

(चौपाई)

पगन हीन दस दिसिहूँ धावै । विना जीभ के बेद पढ़ावै ।
मुखबिहीन जो अन्नहि खाय । जात न जानी को धौं आय ।३४।
सबहिन की नारिन सों रहै । कुच मरदै अरु माता कहै ।
बेद कलाम पढ़त है दोऊ । वा बिन तुरक न हिंदू होऊ ।३५।

(बिप्र न जान्यो)

(भुजंगप्रयात)

रह्यो चाहतें ता तनै ओर ऐसी । फँसो बैन चाहै अहेरीहि जैसी ।
रह्यो कै फँसो खाँड यो है फुमानी । तरी है तिन्हैं संत कैधौं भवानी ।३६।

हँसे ताल दै दै सबै नग्रवासी ।
अहे विप्र जीती किधौं नाहिँ कासी ।
हती चौदहों लोक में दृष्टि जाकी ।
भई बुद्धि यों छिप्र ही भ्रष्ट ताकी ।३७।

(दोहा)

जंघ जोर मड़वा तरे भाँवर सात भ्रमाइ ।
अपकीरति कन्या दई द्विज कौं ब्याहु बनाइ ।३८।

(पद्धटिका)

उपहास भए पर जरचो विप्र। तिहि साप दीन्ह वनिताहि छिप्र।
जस हन्यो मोर अभिमान वाल। तस हौं दीनो यह साप हाल।३९।
जे रचे ग्रंथ तुम अति प्रबीन। ते होयँ सबै दारिद्रलीन।
जो पढ़ै पुरुष तो वढ़ै रोग। वनिताहि होय वालमवियोग।४०।
इहि सवव वरचो वनिताहि दुख्ख। विप्रहि विरोध को लयो सुख्ख।
हारहू जीत करिये न टेक। द्विजकोह मिटे भूपति अनेक।४१।

(चौपाई)

साप सबै वनिता पर बीती। चरन सरन संकर को चीती।
बिधवा वाल सबै सुख त्यागिन। नवजौवन प्रबीन बैरागिन।४२।
निसिदिन करै संभु की सेवा। निगमागम जानत सव भेवा।
पूजी द्वादस वर्ष बिसेखी। तासु भक्ति गौरीवर देखी।४३।

(हरिगीतिका)

तव उमगि बृषभध्वज कही वनिताहि को तप देखिकै।
तुव सिद्ध भा तप बृद्धि कों भा काम माँगु बिसेखि कै।
वह बिमुख भोगिनि तिय बियोगिनि पुरुष की इच्छा नही।
भव छोर लाज मरोर के भय छोड़ि यह अरजै कही।४४।
सुन नाथ दीनानाथ जग जनु होत तुव पद ध्यायकै।
जिन दीन मानु दयो न तिनहीं देत बिरह बुलायकै।
हौं पति अपति ते विमुख सुख ते दुख अनेक सदा लहचो।
मम सघन वन जौवन बिसूरत फलित ना कवहूँ भयो।४५।
मोहिं दीजिये रतिनाथ सो पति नाथ गिरिजानाथ ये।
कहि संभु होय समस्त पूरव जन्म पिय सों साथ ये।
द्विजसाप घोर घटै नहीं जिहि घरी लौं घट प्रान है।
पुनि होय प्रापति पीय की रतिनाथ तो रतिवान है।४६।

(दोहा)

बर पायो पायँन परी परम प्रीति करि नारि।
पुनि आई निज गेह कों लीलावति तिहि बारि।४७।

(चौपाई)

संधि पाय लीलावति नारी । भई आय ब्राह्मन घरवारी ।
पुहुपावती पुरी अति सुंदर । तिहि सुवास मन चहत पुरंदर ।४८।
गोबिँदचंद भूप तिहि जानौ । बेदवंत मतिवंत बखानौ ।
रघूदत्त प्रोहित तिन केरा । खेदवंत कुलवंतन बेरा ।४९।
सीलवंत तिनके घर नारी । तिहि घर बास लीन्ह सुकुमारी ।
जन्मद्योस साइति अस जानी । पुराचीन कबि जौन बखानी ।५०।

(दोहा)

मारग सित तिथि त्रैदसी निसि भरनी पद पाय ।
जन्म लीन्ह लीलावती रघूदत्त घर आय ।५१।

(अथ रतिजन्म कारन)

(चौपाई)

निज अस्थान मदन रति नारी । करहिँ सापबस चिंता भारी ।
कलिजुग प्रथम चरन जग माहीँ । अब तक भूप पापरत नाहीँ ।५२।
पुनि निराट कलिजुग जब आवै । तब को पीर कौन की पावै ।
नरदेही इहि अवसर लीजै । सापभोग को जोग न कीजै ।५३।

(दोहा)

विप्र होन मनमथ कह्यो नृपतनया रति हौन ।
मिलन साप के हाथ है सोच कीजिये कौन ।५४।
दक्षिन दिसि परभावती नगरी रेवातीर ।
रुक्मराय भूपति तहाँ चक्रपानि मतिधीर ।५५।
धन को गुन को रूप को दक्षिन कहिअत धाम ।
होत जमाने आयकै कल्पलता सी बाम ।५६।
रति निज मति उनमानिकै गवन तुला बिनु कीन्ह ।
रुक्मराय निज घरनिउर आय बसेरो लीन्ह ।५७।
कृष्न पक्ष पर मास पुष मृगसिर निसा विसेस ।
जन्म कंदला बाल को रुक्मराय के देस ।५८।

ताकी लग्न विचारिकै कह्यो ज्योतिषी एह ।
महाराज यह कन्यका उपपति करहि सनेह ।५६।

(पद्धटिका)

अति सँगीत पर करहि प्रीत । कर बीन साज गावै अभीत ।
मिलि नटिन घटिन भटकै अनेक । लहि नटा वटा झेलन सु बेक ।६०।
परपुरुष प्रगट राखै रिझाय । सब छैलबृत्त जानै उपाय ।
नरनाथ सुने इमि विप्रबैन । अति भो उदास मति मों न चैन ।६१।
यह सुता कटहरबीच नाय । नरवदाधार दीन्ही बहाय ।
द्वै पहर गहर तिहि भयो और । इक नग्र अग्रतट लग्यो ठौर ।६२।

(दोहा)

रेवातट उत्तर दिसा हीरापुर सो नाम ।
ग्राम विषै गनिका बसै नवजौवन गुनग्राम ।६३।
प्रमथ नाम गूजर तहाँ गनिकन को गुरुदेव ।
सो प्रभात रेवापुरी करै संभु की सेव ।६४।
तट निहारिकै कटहरा निकट गयो सो आय ।
लघु रव सुनि गुनिकै दया कन्या लई उठाय ।६५।
जात गूजरी ऊजरी प्रभुदा ताको नाउ ।
तिहि पाली हिय हेत करि सु ता सुता के भाउ ।६६।

(चौपाई)

बर्ष पाँच भै कन्या जवहीं । लग्यो पढ़ावन नायक तवहीं ।
सुर गति ताल साज बजवावै । राग रागिनी भेद पढ़ावै ।६७।
तिवरी तांडव नाच नचावै । एकौ घरी क्षमा नहि पावै ।६८।

(दोहा)

मजलिस लखि रीझो नृपति दीन्हो दान अपूर ।
निज करि राखी कंदला कछु महलन ते दूर ।६९।
गुन स्वरूप ताकी क्रिया करबी त दिन प्रकास ।
जब माधवनल आयहै कामसेन के पास ।७०।

इति श्रीविरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे शापखंडे तृतीयस्तरंगः ॥३॥

औवल इस्क नाम । अथ अगिलाव खंड

(चतुर्थ तरंग)

(दोहा)

जै जै जै ब्रजराज श्रीस्याम सच्चिदानंद ।
जै माता बृषभानजा अभयकरन जगबंद ।१।

(सोरठा)

गढ़ा राज वर लेख गोँड़ सोमबंसी नृपति ।
महाराज वै एक उन सम नहीँ अनेक नृप ।२।

(हरिगीतिका)

पहुपावती जु पुरी बसै महराज गोबिँदचंद की ।
रचना बनी सुविचित्र जहँ जनु पुरी है सुर इंद्र की ।
बन बाग कोटि तड़ाग नृपसम महल सवही के वने ।
गुन रूप दान प्रमान को क्षितिपाल से नरवर गिने ।३।

(पद्धटिका)

पहुपावती नगरी विसाल । गोबिदचंद लहि भूमिपाल ।
बैठै सु पाट जब राजकाज । तब लसहि मनहुँ सुरपतिसमाज ।४।
समरथ्थ हथ्थ जब गहत खग्ग । संकित अंतक थरहरत जग्ग ।
झंपित पतंग बढ़ि रैनिरंग । जब कोपि चढ़त भूपति तुरंग ।५।
बिद्याप्रवीन बिद्याप्रकास । सो रहहिँ सदा अवनीसपास ।
अति सीलवंत गुन ज्ञान खानि । तिहि पुत्र माधवा विप्र जानि ।६।

(दोहा)

कृष्न पक्ष दसमी मघा मारग मास बखानि ।
बिष्नुदास निज घरनिउर माधवजन्म सु जानि ।७।

(चौपाई)

सुन सुभान यारा दिलदायक । अब यह बिरह न कथिबे लायक ।
तजत सरीर क्षीन तिहि होई । मन विराग वाधत है सोई ।८।
तोहिँ मोहिँ अंतर परि जैहै । कथनी कौन काम यह ऐहै ।
अहो मीत ऐसी जिन भाखौ । कथिकै कथा न खंडित राखौ ।९।
जो यहि बिरह छूटि तन जैहै । कथानिसानी जग मैं रैहै ।
याते मन संका नहि कीजै । पूरन प्रेमपंथ जग दीजै ।१०।

(बिरही वचन)

(संयुता)

जब ते जन्म द्विज के गेह । रतिपति लयो साप सनेह ।
तब ते बिप्र घर आनंद । अतिहित करत गोबिँदचंद ११।
ज्यों ज्यों बुड़त मनमथ आव ; त्यों त्यों रूप गुन भरि पाव ।
बोलन हँसन चलन चितौन । तासों मोह बाँधे कौन ।१२।
सुभ सुभ करी वरषै चारि । हर्षै तात मात निहारि ।
सुनि सुनि नादबेद वखान । माधव देन लाग्यो कान ।१३।
पंचम वर्ष जानि बिहात । तब ब्रतबंध कीन्हो तात ।
कछु दिन विप्र अपने गेह । पढ़िबे कों कियो अति नेह ।१४।

(पद्धरि)

उठि प्रात करै मज्जन बिचार । पुनि पाठबेद प्रभुध्यान धार ।
तब तातसाथ नृपपास जात । महराज ताहि देखे सिहात ।१५।
अति रुचिर द्विज माधव प्रबीन । कछु दिवस गए कर बीन लीन ।
पुनि लखन लग्यो दिसि चार धाय । बैठै यकंत कछु मजा पाय ।१६।
इक दिवस संभु बाटिका माँह । देखियो विप्र तेहि बालिकाँह ।
तिय सखिन साथ छबि की निकेत । लहलही बैस ललिता सुचेत ।१७।
अति चतुर संभु के पास आय । कीन्हों प्रनाम सरनै सु धाय ।
तिहि बेगि माधवानल्ल बीर । सिवधाम लखी तियईन भीर ।१८।

जनु ससिसमूह मंदिर उदोत। सिवधाम सुभग जगमगत जोत।
नवबैस सबै सोहैं कुमारि। भयो मस्त माधवानल निहारि।१६।
धरि कंध बीन करकमल लीन। चलि भाव तिया के हाथ दीन।
पुनि बीन साज माधव अड़ंग। सिवसरन ध्याय गायो षड़ंग।२०।
जद्यपि कुमारिका कामहीन। तद्यपि वियोग कीन्ही अधीन।
ते रहीं माधवा में समाय। छविनिधि अथाह में गोत खाय।२१।
घर बार पिया मो ध्यान आदि। तिय छकित भईं जग जानु वादि।
इत रह्यो माधवा चकित होय। बिषहर वियोग कै मैर मोय।२२।
सुमुखी सु आय तिय पाय धारि। कहि खवरदार होवै कुमारि।
चलि भौन बेगि लागी अवार। तुव जननि चित्त बाढ़ी विकार।२३।
तिय सुनत सखी के निठुर बैन। लखि रही मीत तनु जलद नैन।
पुनि कह्यो विप्र सह जोरि पानि। नित देव दर्स यहि ठौर आनि।२४।
पुनि परी संभुचरनन अधीन। वर देहु येह मोहिं जानि दीन।
गौरी समस्तु बोली सुवानि। तिय गमन कीन्ह यह सत्य मानि।२५।
तिहि दृगन अग्र ते ओट होत। द्विज विरहसिंधु में लयो गोत।
भुइँ परचो पटकि बीना सुपागि। दृग लगालगैं सरविरह लागि।२६।
धरहरत साँस हिय फटत जोर। दृग चले बारि सिवचरन तोर।
पुनि पोंछि आँसु डगरचो प्रबीन। सिर पाग धारि कर बीन लीन।२७।
निस्चल सुनैन विरही सुरंग। लटपटी पाग ग्रीवा उतंग।
मन मलिन चकित आयो निकेत। लखि परत लह्यो सब हीनहेत।२८।
विगरचो विसेष सुत को सुभाय। विद्याप्रकास यह हेत पाय।
इक विस्नुदास पंडित प्रबीन। तिहि हाथ माधवा सौंपि दीन।२६।
यह पढ़ै गुनै परबीन होय। सुनि विस्नुदास द्विज करहु सोय।
सिसु पढ़हिं और तिनके अवास। तिहि पुत्र दीन विद्याविकास।३०।

(दोहा)

विधिहि भाव लीलावली माधव एकहि साथ।
विस्नुदास घर वर्ष दिन संथा लीन्हों साथ।३१।

सो पंडित मंडित पढ़ै विद्या दस औ चारि।
पुराचीन मत ग्रंथ लखि विधिवत कहि निरधारि।३२।

(छप्पय)

ब्रह्मज्ञान रसआदि नाद पुनि बेद वखानत।
बैद्यक गनित विसेष ब्याकरन जल तरि जानत।
धनुषधरन पुनि कहत नित्य संगीत नचावत।
कृषी निपुनता वनिज अस्वधावन चढ़ि धावत।
रतिकेलि आदि **बोधा** सुकवि सभाचातुरी इल्म लहि।
इमि पुराचीन मत ग्रंथ लखि ये विद्या दसचार कहि।३३।

(दोहा)

इन मध्ये चौंसठि कला वरनत कविजन और।
ते माधव लीलावली नजर करी तिहि ठौर।३४।

(सोरठा)

सुन सुभान यह रीति दिल भरि दिल महरम कहत।
दीद दीद पर प्रीति माधव लीलावति जथा।३५।
वढ़त एक ही साथ दिन पर दिन अधिकात हित।
लीलावति रतिनाथ द्वै तन मन एकइ भए।३६।
दयो माधवाहाथ दोहा लिखि लीलावती।
बरौं चिता के साथ कै माधौ द्विज कों वरौं।३७।
माधवविषय सनेह निवहै तो निवहै सही।
धरे रहै नरदेह ना तौ का संसार में।३८।
येही बोल करार करि राखे दोऊ ओर ते।
वहु वालक चटसार जाहिर और न काहु भव।३९।

(प्लवंगम)

चित्त सुचित चितचाह दयो प्रिय प्रान ते।
केलि खेल वतरात न जाहि वखानते।
आसिक औ महबूब दुऔ दुइ ओर ते।
प्रेमकथा कहि दिवस बितावत भोर ते।४०।

यों द्विज माधवचित्त बसो हित मित्र को।
चित्त न आवत एक सिखावत कित्तको।
त्यों हिय बाल प्रबीन हितू कहँ चाहती।
त्याग कियो गृहकाज सनेह निवाहती।४१।
वाग तड़ाग इकंत सुमंत्र बनावहीं।
सज्जि बीन सित्तार झलै लगु गावहीं।
काममई सब वाम आम्हनै काम सों।
माधवनल तजि धाम रह्चो लगि वाम सों।४२।

(अथ लीलावती स्वरूप कथन)

(दोहा)

अंकुर जोवन बाल सो सती रूप के गेह।
है माधो द्विज सों लगो जाको प्रेम सनेह।४३।

(मोदक)

है द्विजराजमुखी सुमुखी अति। पीन कुचाहँ गरू गज की गति।
है हरिनाक्षिय बाल प्रबीनिय। त्यों द्युति दामिनि की करि छीनिय।४४।
पन्नग मेचक सी वर बेनिय। कुंदन लौं झलकै सुखदेनिय।
है नवली अति प्रीति भरी त्रिय। तीक्षन भौंह कटाक्ष कर्‌यो विय।४५।
खेलत सीउलता मग डोलहि। कंचुकि आप कसै अरु खोलहि।
हार उतारि हिये पहिरै पुनि। पाँव धरै लहि त्यों नउरा धुनि।४६।
हारसिँगार सिँगारहि सुंदर। क्यों न वसै तिय छैलदिलंदर।
यों कटि मोरत छाँह निहारत। ओढ़नि वारहि वार सम्हारत।४७।
केसरआर दिए सुकुमारिय। मैनमयी झलकै नवनारिय।
तेवर यों झलकाय चलै जब। छैल हियो करखै निरखै तब।४८।
घूम घुमारिय घाँघरिया सजि। वाड़क ओढ़नि ओढ़ चलै लजि।
फूल भरी गजरा पहिरै उर। माधव त्यों सुमिरत्त हरीहर।४९।

(दोहा)

फुलवारी कै रति लखी सरद सुकल पख रात।
रही वही चुभि चित्त में सो छवि कही न जात।५०।

(अथ माधवाछवि कथन)

(संधारका)

सिर जर्द पाग विलसत सुबेस। रहि जुल्फ जुल्फ घुँघरारि केस।
उर सुमनहार तुर्रा जटीन। कुमकुम त्रिपुंड्र भृकुटी पटीन।५१।

(द्रुबिला)

कटि पीत पट तुम देख। कछनी सुरंग विसेख।
गल बीच मुक्तामाल। पग पाउड़ी लहि लाल।५२।

(पधरिया)

जगत तड़ित गजरा जु हाथ। चंपक बरन तन रतिनाथ।
कुंडल लसत नवल सरूप। छवि कों देखि रीझत भूप।५३।
कर में लसत लकुट सुरंग। झलकत प्रेम हिये उतंग।
अरुन कटाक्ष भरे सनेह। कर में बीन अतिछवि देह।५४।

(चौपाई)

बेसक इस्क विप्र उर माहीं। पढ़िबो गुनिबो सूझत नाहीं।
बीना लिये नगर में डोलै। दिलअंदर की वात न खोलै।५५।

(दोहा)

धन को गुन को रूप को विद्या को अभिमान।
माधवनल कों जगत में सूझत नर नहिं आन।५६।

(सोरठा)

सबको सकत रिझाय जो रीझतु जेहि गुन विवस।
माधवनल कों पाय दिलमाहिर मोहत सबै।५७।
मूरख अतिहि रिसाय माधवनल से गुनी पर।
ढिग आवत उठि जाय फिर पीछू गिल्ला करे।५८।
माधव जिहि अस्थान लीलावति भेंटै तहाँ।
पुरवासिन उनमान कछुक प्रीति लक्षित भई।५९।

तब माधव लगि कान प्यारी सों या रीति कहि।
जाते होय गलान सो निदान कीजै नहीं।६०।

(छप्पदा)

धनु धरु वहि थल गूढ़ जहाँ दूजो नहिँ खुझिये।
सत्रुबधन को मंत्र अंत काहू नहिँ बुझिये।
विद्या अरु निज वित्त प्रकट कीजै कारज लगि।
दान मंत्र अभिमान काम कामा सँग त्रिय पगि।
पुनि प्रीतिरीति **बोधा** सुकबि प्रगट करत जे मंदमति।
कीजै इकंत ये मंत्र सब भए प्रगट उपजति बिपति।६१।

(सोरठा)

माधवबचन सभीत सुनि बिलखी लीलावती।
तेरे बिछुरे मीत मोकों अब मरिबो उचित।६२।
मैं तोकों दृढ़ जान मन सो अंतरधन दियो।
अंतर कियो निदान गोपिन को गिरिधर जथा।६३।

(सवैया)

लोक की लाज औ सोच प्रलोक को वारियै प्रीति के ऊपर दोऊ।
गावँ को गेह को देह को नातो सनेह पै हातो करै पुनि सोऊ।
बोधा सो प्रीतिनिबाह करै धर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ।
लोक की भीत डेरात जौ मीत तौ प्रीति के पैंड़े पड़ो जिन कोऊ।६४।

(दोहा)

बनत निबाहें जगत में बोल केलि की लाज।
बोल गएँ सुनियै सुजन जियत रहौ केहि काज।६५।

(सोरठा)

लीलावति के बैन सुनि माधौ चुप ह्वै रह्यो।
उगिलत बात बनै न साँप छछूँदर की कथा।६६।
पुनि प्यारी तन चाहि बिलखत दै ऊतर दियो।
तू ही सकत निबाहि कै निबाह करतारकर।६७।

बिछुरो कहिहै कौन द्वै चित जब एकत्र हैं।
जाहिर जग में हौन आसिक की बेवाकिफी ।६८।

(दंडक)

चौखँडा हवेली जहाँ पौन कौ न गौन ऐसे
ठौर मनभावती सों हेत कै निवाहिये ।
चाहिये मिलाप बिसराइये न एकौ बेर
मिलिबे कों कोटि कोटि बातें अवगाहिये ।
बोधा कबि आपने उपाय में न कमी कीजै
दूसतऊ लोगन की दूस पै न चाहिये ।
समै पाय बनि जाय कीजै सो उपाय आली
दूसरो न जानै तौन इस्क कों सराहिये ।६९।

(सोरठा)

हौं आवत उपहास लोभ न आवत जीव को ।
हाड़ चाम अरु माँस वारौं तेरी प्रीति पर ।७०।
घाट बाट सुनु मित्त मिलिबो नित चितचाह कर ।
प्रीति निरंतर बित्त जतन जाम राखें रहत ।७१।

(दोहा)

सुनहु नृपति लीलावती गई आपने गेह ।
ताके बिछुरे बिप्रउर बाढ़चो बिरहसनेह । ७२ ।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे शापखंडे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

(पंचम तरंग)

अथ अगलाव खंड

(मोतीदाम)

गई अपने घर कों वह बाम । भई तबहीं अति कोपित काम ।
बढ़चो बिरहा न रहचो चित चैन । ढरचौ हित माहिँ बढ़चो बिष बैन ।१।
रही पट ओढ़ि अटा पर सोइ । नहीं दुख दीरघ जानत कोइ ।
सखी सुमुखी तिय की परबीन । दसा लखि चित्त असंभव कीन ।२।

कछू तिय के जिय खेद न आजु। भयो जुरिकै यह कीन्ह अकाजु।
नहीं तिय के मुख पै यह लोच। करै सुमुखी अपने चित सोच।३।
जगी इतने खन में वह बाल। करी अकरी मनमंथ बिहाल।
भए दृग रोचनरंग बिसेखि। कँपी सुमुखी तिय को मुख देखि।४।
परी पियरी सियरी मन माह। रही जकि सी थकि सी कहि काह।
नहीं मुख बोलत डोलत बीर। कछू तन की मन की कहु पीर।५।
गही जड़ता नहिँ बोलत बैन। भई कह बेदनवंत कहै न।
कहूँ उभकी झिझकी डर मानि। लगी कहुँ डीठ कि मूठ बखानि।६।
कहौ कित वारि दयो चितचैन। चले ढरिकै भरिकै जुग नैन।
छुटी जड़ता भइ चेतन बाल। कह्यो सुमुखी सुनि मो हियहाल।७।

(दोहा)

इस्क नसा बेसक पिये कहै सखी सों बैन।
मेरे तेरे चित्त को तनकउ अंतर है न।८।
बैन कहत तद्यपि बनै अनकहिबे की बात।
हँसिकै दीन्हो काठ में पाँव आपने हाथ।९।
सो में तोसों कहत हौं परै न दूजे कान।
कान कान जाहिर भए कान कान ह्वै जान।१०।

(चौपाई)

निस्चय पाय बाल तब बोली। पीर आपने दिल की खोली।
कहै बाल सुमुखी सुनि प्यारी। मेरे उर बेदन यह भारी।११।

(दोहा)

सुमुखी कहै सखी सुनि मो ते घटी न होय।
तेरे मन की चाह पर तन मन डारौं खोय।१२।

(चौपाई)

बीन लिये गावत जु बजावत। माधवनल सो बिप्र कहावत।
आय बीर चित चोरनवारो। लगै मोहिँ प्रानन तें प्यारो।१३।

जौ तैं नाहिँ मिलावत प्यारी । तौ मैं जियत नहीँ इहि बारी ।
सुमुखी कहै सुनो हो बाला । है तेरो निजु तात कराला ।१४।
सुने कदाचि होय तौ वैसी । छिपत नहीँ यह वात अनैसी ।

(लीलावती बचन)

होनहार जो अजहूँ होही । खंगधार किमि काटहु मोही ।१५।
मरि किन जाउँ प्रीति नहिँ छोड़ौँ । नेकी बदी सीस पर ओड़ौँ ।
बरु किमि लिखी भाल की मेटौँ । देहु छोड़ि माधवनल भेटौँ ।१६।

(दोहा)

ज्यौं चकोर ससि सौं पगो दुख सुख लह्यो दुरै न ।
दृग फूटे जिह्वा जरी इस्कपंथ छूटै न ।१७।

(छप्पय)

कह चकोर सुख लहत मीत कीन्हो रजनीपति ।
कह कमलन कहँ देत भान सह हेत कीन्ह अति ।
घुन कहँ कहा मिठास लकुट भूरी टकटोरत ।
दीपक संग पतंग आय नाहक सिर फोरत ।
नहिँ तजत दुसह जद्यपि प्रगट **बोधा** कवि पूरी पगन ।
है लगी जाहि जानत वही अजब एक मन की लगन ।१८।

(चौपाई)

अब तौ आनि बनी सब येही । जीव जाय कै मिलै सनेही ।
जौ लौँ नहीँ माधवा देखौँ । तौ लौँ जग ऊजर करि लेखौँ ।१९।

(सोरठा)

प्रेमपंथ दृढ़ जानि लीलावति के बचन सुनि ।
ताके हित की बानि तब बोली सुमुखी सखी ।२०।
अब जनि होहु उदास धीरज धरि लीलावती ।
पूजौँ तेरी आस भूलि न करहुँ प्रकास जग ।२१।

(अथ माधवबिरहकथन)

(दोहा)

सुनि सुभान लीलावती गई आपने गेह।
ता बिछुरत उर माधवा बाढ़ो बिरह अछेह।२२।

(छप्पय)

प्रथम लाख **अभिलाख** वहुरि **गुनकथन** गुनन गनि।
पुनि **सुमिरन उद्वेग** प्रगट **उनमाद** तहाँ मनि।
चिंता ब्यापै चित्त **ब्याधि** पुनि ब्याधि बढ़ावै।
जड़ि **जड़ता** को अंग असंग **प्रलाप** सुभावै।
कबि कहहिँ दसा दस मारसर **बातगमन** बरनन कहाँ।
बिरहि जिअत दिन बर्ष दस बिरह जि दिन कोपत महाँ।२३।

(माधोबचन दसावस्था)

(सुमुखी)

जब ते तजौ बनिता पास। तब ते चित्त बिप्र उदास।
बिधि पै चलत न कोइ उपाव। है जिहि हन्यौ बिरहा घाव।२४।
कल नहिँ परत निसिहू भोर। बेसक इस्क को भयो जोर।
कर गहि बीन यह चित चाह। कैसे लहै चित्त मजाह।२५।
यह रुचि भई उर में आय। अब यहु नगर देखिय जाय।
जाके बीच मेरो मित्र। ताके बसत निसि दिन चित्त।२६।
यों **अभिलाष** बीत्यो जान। अब **गुनकथन** कहत बखान।
तरस्सत नैन ये मेरे। बिना दीदार पिय केरे।२७।
हितू के नैन हैं जैसे। नहीं बरबाम में तैसे।
सुमिरन की कही यह रीति। हिय घट की कठिन की प्रीति।२८।
धोती स्वेत छूटे बार। औ पुनि आड़ लसत लिलार।
अंजन अधर नैन तमोल। दिलबर ज्यों कहो मृदु बोल।२९।
चोली कसतउ कसत बार। सो छबि बसी चित्त मँझार।
है **उद्बेग** की यह रीति। पानी पान सों नहिँ प्रीति।३०।

गली हेरत दिवाने की । गई सुध भूल खाने की ।
इसी मजकूर है **उनमाद** । जो कीजे सही न सँवाद ।३१।
बिछुरन तेरी अनेरी यार । दिल को भयो दरद अपार ।
बूझौ **ब्याधि** को यह अंग । पीरा हरा फीका रंग ।३२।
तेरे दरस बिन यह बाल । मेरा भया ऐसा हाल ।
कधी दिलदार जो आवै । अजव रँग सुरँग सरसावै ।३३।
चिंता तेरीयै साई । कभी तू हेत मो ताई ।
तरनी निकट चित मिल बाम । हिल मिल किये बहुत विश्राम ।३४।
तौ लौं तरस ताही ला । इसा किम राखिये जी ला ।
जड़ हो रहे **जड़ता** सोय । जैसा चित्र पक्षी होय ।३५।
यारन यों कह्यो **परलाप** । बेअबकूफ हिय कछु दाप ।
हँसी नहीं बरनत कोय । निरस **निधन** जानव सोय ।३६।

(अथ प्रलाप के उदाहरन)

(चौपाई)

कछु पूरो प्रापत द्विज चीती । वहै प्रलाप अवस्था बीती ।
कहै वहै जोई मन आवै । जाको मजा न कोऊ पावै ।३७।
घटै दरद मेरे हिय जातें । कहु बे मीत मीत की बातें ।
इस्कपंथ नहिँ चीन्हत क्योंही । बरगद भए बड़े तुम यों ही ।३८।
बस्तु वहै जो औरै दीजै । बोवै काटै देर न कीजै ।
सुनहु बृषभ तालिब दी बातैं । खोयो जन्म बिनौला खातैं ।३९।
बूझत ये दिवाल तुम बोलो । कारन उर अंतर को खोलो ।
इस्कहकीकी है फुरमाया । बिना मजाज़ी किसी न पाया ।४०।
हजरत नबी कही थी आगे । सौ कुर्रा काजी कों लागे ।
बोलै कागा कर्कस बानी । तू क्या इस्कमजाजी जानी ।४१।
बिछुरे का दिल मन में आवै । अरे नीम तू क्यों न बतावै ।
क्यों पीपल तू थलहल डोलै । इमली क्यों न बाउली बोलै ।४२।

हरगज दरगज विलबिल बेला। खूब खेल मस्ताना खेला।
हजरत नबी कहर फरमाया। कानी को काना बर आया।४३।
क्या रसाल तुम पत्र उगायो। हक्कमुकाम धनी को गायो।
अहे लाडले कूप रूपबर। एक बेर क्यों न कह हरीहर।४४।
यह सुनि बूझैं लोग लुगाई। घर भूले कै कहुँ रिस आई।
खबर भएँ माधो समझाया। सो भूला जिनने यों गाया।४५।
साहन में ह्वै ऊरध रेखा। यों हौं अजव तमासा देखा।
यों ही गस्त नगर को देही। पै नहिं लख में परत सनेही।४६।

(दोहा)

उर बिरहाजुर सों ज्वलित पुर लखि भए उदास।
तब तकि चल्यो तड़ाग ढिग संकर मठ सुरवास।४७।

(चौपाई)

नमस्कार संकर सों कीन्हा। पुनि द्विज माधो बीना लीन्हा।
बहु विधि संकर को गुन गायो। पीछे दिल को दर्द सुनायो।४८।
ये स्वामी संकर जग नायक। मेरी पीर सुनो तुम भायक।
बिछुरी प्रिया वल्लभा मोहीं। सो दुख नाथ सुनावौं तोहीं।४९।

(तोटक)

गजगामिनि कामिनि बाम बरं। सुखदायक मो हिय पीर हरं।
सुकुमारिय प्यारिय नेह भरी। हरिनाक्षिय कोकिल नाद करी।५०।
गवढ़ी नवढ़ी द्विजराजमुखी। परबीन प्रिया बनिता सुमुखी।
कटि केहरि नेहभरी रवनी। गज मत्त मतंग जथा गवनी।५१।
लखि पीन कुचा मन मोद लहै। कुचसंध सकीन न संतुक है।
अति जीरन जोर भयो पचिकै। न कढ़्यो मन मत्त तहाँ खचिकै।५२।
लट छोर जँजीरन डार दियो। छुटबै पुन वेसक जोर कियो।
नवजोबन सो वन माँझ रहै। अब भूल पर्‌यो दुख कौन कहै।५३।
चित चाहत पै मिलते न बनै। खल अंतर कंद्रप कूर हनै।
बिसर्‌यो घर औ सुख स्वाद सबै। इमि माधव संकर सों विनवै।५४।

(दोहा)

वाग तड़ाग महेसमठि लख्यो मजा के काज।
पै न होय यारी विना विरही को सुखसाज ।५५।

(चौपाई)

सुनि सुभान यह इस्कमजाजी । जो दृढ़ एक हक्क दिल राजी ।
पढ़े पढ़ावे समुझै कोई । मिलै हक्क खादिम को सोई ।५६।
उनमुन उनमुन उनमुन मेला । इस्कहकीकी झेलमझेला ।
लखिकै ध्यान बनी को आवै । पूरन प्रेम निसानी पावै ।५७।
बेद किताब यहू मत बूझै । तीन लोक ऊपर तिहि सूझै ।
नाहक कबित रचै जो कोई । हरगिज गलत पढ़ै जो कोई ।५८।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे बालखंडे पंचमस्तरंगः ।५।

(षष्ठ तरंग)

अथ अगिलाव खंड

(सोरठा)

जब मिलिबो नहिँ होत हित लगायकै दृगन मेँ ।
तब आसिक की जोत जारत नेह बमीठ को ।१।
पिय प्यारी अरु पीय दूती को देखत जियै ।
ज्योँ रोगी को जीय रहत समानो बैद्य मेँ ।२।

(दोहा)

लीलावति छकि तकि कहै सुमुखी सोँ जियदाप ।
मेरो माधव मीत को तेरे हाथ मिलाप ।३।

(सोरठा)

आन मिलावै मोहिँ जो तू माधव मीत कोँ ।
और देहुँ का तोहिँ मेरो सिर तुव बैठका ।४।

है न कछू पहिचान निज जिय की खोलैं नहीं ।
... ... ।५।
कछू निसानी देहु तू अपने जिय की निसा ।
सो माधो लखि लेहु मो सों होय अभीत तब ।६।

(चौपाई)

चिट्ठी लिखन लगी सुकुमारी । थिर चित नहिं बिरहा की जारी ।
अहो मीत माधवनल मेरे । वाफिक तो कहँ विरहदफेरे ।७।
इस्कनसा तू मो कहँ दीन्हा । अजब कैफ मेरे हिय कीन्हा ।
निसिदिन चंग चढ़यो चित मेरो। रहत निहारत मारग तेरो ।८।
सुख दै इस्क बिसाहा खोटा । चोटै जीव देन का टोटा ।
इस्क करै तो ऐसी चाही । एकै ख्याल परै दिन जाही ।९।

(दोहा)

कहिबो सबको सहल है कहा कहे में जात ।
कहिबो ओर निबाहिबो बड़ी कठिन ये बात ।१०।

(सवैया)

वा दिन की वह बानसँधा सनधान पै **बोधा** महा बिष सी भई ।
बातें कहीं बगध्यान सबै पर मीन सो बावरी बुद्धि फिँदै लई ।
हौं तौ दिवानी भई सो भई उनसों न करी जडता बजिकै दई ।
यारी नहीं पै कुयारी करी, दगा रे दगादार दगा सी दई ।११।
काहू सों का कहिबो अब है यह बात अनैसी कहे ते कहावत ।
कोऊ कहा कहिहै सुनिहै कहीं काहू की कौन मनै नहिँ भावत ।
बोधा कहे को परखो कहा दुनिया सब माँस की जीभ चलावत ।
जाहि जो जाके हितू ने दई वह छोड़े बनै नहिँ ओढ़ने आवत ।१२।
कबहूँ मिलिहौ कबहूँ मिलिहौ यह धीरज जी में धराबो करै ।
उर ते कढ़ि आवै गरे ते फिरै मन की मन ही में सिराबो करै ।
कवि **बोधा** न चाड़ि सरै कबहूँ नितहूँ हरवा सो हिराबो करै ।
सहते ही बनै कहते न बनै तन में यह पीर पिराबो करै ।१३।

(सोरठा)

चिंता मेरे चित्त माधव तेरे दरस की।
फुलवारी तक मित्त बनै ता मो हित आउने।१४।

(दोहा)

वधि कुरंग कों वहिलिया लावत सीस चढ़ाय।
मेरी सुधि लीन्ही न तू हिये नैनसर लाय।१५।

(सुमुखी)

पाती पाय सुमुखी वाम। आई माधवा के धाम।
पाती बाँचि माधव लीन्ह। हिय में हँसै दूती चीन्ह।१६।
कैसै रहत सो कह हाल। लीलावती प्यारी बाल।
सुमुखी कहै सुनु मम नाथ। जव सों छुटो तेरो साथ।१७।
निसिदिन माधवा की टेक। कारन करत रहत अनेक।
त्यागे बसन पानी पान। नैनन नीर नदिन समान।१८।
ग्रीषम तपन तेरी प्रीत। बिछुरन जान या वस रीत।
नैना भए बादल स्याम। वरखत रहत आठौ जाम।१९।
पठयो मोहिँ तेरे पास। दरसन की करै वह आस।
यों सुनि माधवा दुख पाय। नैनन रहे आँसू छाय।२०।

(सोरठा)

दोष दीजिये काहि दीनबंधु आधीन सब।
सो अब मेटि न जाहि पैयत जो दैयत पहिल।२१।

(दंडक)

सुन हे सुभान मेरो दरद अपार ह्योस
भोजन न भावै रैन रंचक न सोवत।
तेरीयै तलब तालाबेली तन मेरे चैन
भाव दिलहर इन आँखिन सों जोवत।
बोधा कवि चीकने चबाई वैर खाँड़
उठै मन में उठाइ सो तौ मन ही में गोवत।

निर्दई दई पै मेरो कौन बस प्यारी तू तौ
अंदर में मेरो दिल अंदर में रोवत ।२२।
बस ना किसी के सो तो हाथ दीन मान के है
और सों कहै का सहै जो है आपनी करी ।
लगालगी होत तीन लोक में न सूझो और
ठौरहू कुठौर की न संक रंचक धरी ।
बोधा कबि अब इस भाँति सुख नाहिँ ऐसे
बिछुर गए की पीर उमँगि हिये भरी ।
कीजै का उपाय काहि दीजै दोष प्यारी अरी
लग्न इन आँखिन की आखिरी गरे परी ।२३।

(सवैया)

दहियै बिरहानल दावन सों निज पापग तापन कौं सहियै ।
चहिये सुख तो सहिये दुख कों दृगबारि पयोनिधि में बहियै ।
कबि **बोधा** इतै पै हितू ना मिले मन की मन ही में पचै रहियै ।
गहियै मुख मौन भई सो भई अपनी करी काहू सों का कहियै।२४।

(दोहा)

अब तू मोकों लेय मिलि भय तजिकै निरसंक ।
द्वै दुख नाहक कों सहैं कर बिन लगै कलंक ।२५।
को जानै पुनि है कहा होनहार की बात ।
पलक तफावत के परे बीत कल्प से जात ।२६।

(सोरठा)

पाती लिखी बनाय सो सुमुखी के हाथ दिय ।
प्यारी पै चलि जाय बिरहबिथा कहियो सबै ।२७।

(चौपाई)

तुम माहिँ खबर मित्र की दीन्ही । बूड़त विरह बाँह गहि लीन्ही ।
अब मैं नजर करौं का तेरी । हाजिर चितवत गरदन मेरी ।२८।
जल की बाढ़ि पियूष पिवायो । मृतक जीव फिर घट में आयो ।
नइया आय बिरहनिधि केरी । बूड़त राखि लीन यहि बेरी ।२९।

(सुमुखी बचन)

(चौपाई)

चल द्विज वहाँ तालतट देखी। हौं उपाय इक करत बिसेखी।
हर हर सब्द तास तट होई। तब तुम जानहु टेरत कोई।३०।
लीलावति सों भेंट कराऊँ। तेरे मन की तपन बुझाऊँ।
चलि सुमुखी निज डेरे आई। लीलावति कों कथा सुनाई।३१।

(सोरठा)

चिट्ठी माधव केरि लीलावति निज कर लई।
हिये लाय सत बेरि कछु उदास हर्षत कछुक।३२।

(चौपाई)

सुमुखी कहै सुनो किन प्यारी। चलि विसेष चलिये फुलवारी।
चलिकै बाल बाग में आई। ताकी सुधि काहू नहिं पाई।३३।

(त्रोटक)

द्विज को लखि तीर तड़ाग तहाँ। मन मोद भयो बनितान महाँ।
सुमुखी हर नाम तहाँ सुमिरयो। तब माधव ने कर बीन धरयो।३४।
चलि बाग में आश्रमभाग गयो। उर लाइ दुहून दुहून लयो।
सुख के आँसू उमड़े न रहैं। मुख ते भरि लाज न बात कहैं।३५।
थल एक दुवौ तहँ बैठि गए। सुमुखी तिय के कर पान दए।
भय लाजन बाल न बोल सके। चित की चितबाहर ह्वै झलकै।३६।

(सोरठा)

तिय के हिय की पाय माधो सों सुमुखी कही।
भई जामनी आय बसिये चलि भामिनि भवन।३७।
यों सुनि भयो हुलास माधोनल चाह्यो चलन।
कहूँ धरो नहिं त्रास ब्यभिचारिन की रीति यह।३८।

(दोहा)

ज्वारी ब्यभिचारी मदी माँसअहारी कोय।
इनके सोच सँकोच नहिं दया कसक नहिं होय।३९।

(सोरठा)

काया कों बूझेह कोऊ ब्यभिचारी नर न।
सूझ न जिनको येह स्वरग नरक जरिबो जथा ।४०।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान-संवादे बालखंडे षष्ठस्तरंगः ।६।

मुहब्बत नाम इस्क अथ अलिगाव खंड

(सप्तम तरंग)

(दोहा)

बिरहतंतु को अंत कर भजु राधे घनस्याम।
लीलावति के धाम कों माधो चल्यो सकाम ।१।
बैठि एक ही सेज मैं लगे दोऊ बतरान।
त्यों सुमुखी रुचिकै दिये तिय के कर में पान ।२।
ब्यभिचारिन कों केलि में झेल न रंचक होय।
लाज तजैं उर उर भजैं हरबरात हैं दोय ।३।
याते कुछ बरने न कछु आभूषन सृंगार।
ब्यभिचारिन की केलि में केवल कहत विकार ।४।

(बिलावल)

पहिराय बसन सुरंग। तिमि लसत केसर अंग।
सृंगार भूष नवेलि। अँग अंग साज सुबेलि ।५।
त्रिबिधा सुगंध समेत। छबि फूलमाला देत।
चाँदनी सेत बनाय। पुनि सेजबंध तनाय ।६।
बीरा परस्पर खात। रस अंग अंग बतात।
छाती छुई जब नाथ। तब बाल पकर्यो हाथ ।७।

(दोहा)

जथा नरंगी रेसमी तिहि समान कुच दोइ।
पूरब पुन्यन ते पुरुष ग्रहन करत हैं कोइ ।८।

(सोरठा)

सुमुखी झरप लगाय आँख माधवा कों दई।
चली आप मिस पाय झपटि बाँह बाला धरी।९।

(सवैया)

जानिकै रीति नवोढ़न की छलिकै गही माधवा बाल सकेली।
सो हिलखी बिलखी तबहीं जबहीं सुमुखी धरि बाँह ढकेली।
बोधा छुड़ायो खरै पहुँचा तब हाय कह्यो वह बाल नवेली।
ये री अरी ये सखी सुनि ये इहि धाम में मोहिं न छोड़ अकेली।१०।

(त्रोटक)

तिय चाहत बाँह छुड़ाय भजौं। पिय चाहत है कबहूँ न तजौं।
कसिकै सँसिकै रिस चित्त धरै। ननकार बिकारन और करै।११।
जबहीं पिय बाँह प्रिनाथ गहै। तबहीं तिय बासन छोड़ कहै।
पग के छुवतै अकुलात खरी। मुख से निकसै सखि हाय मरी।१२।
कर छूटत बाल उठाय चलै। तब माधव पीन उरोज मलै।
पुरलोगन को डर बाल हिये। बिगरै सुर रंचक सोर किये।१३।
पिय सों बिनवै जिन बाँह गहौ। तजि और सबै हठ सोय रहौ।
हँसिये खिलिये कहिये बतियाँ। रतिनाथ न हाथ धरौ छतियाँ।१४।
मदनज्वर माधव बूड़ि रह्यो। भय कों तजिकै निहसंक गह्यो।
अति कोपित कंथ भयो जबहीं। थहरान लगी बनिता तबहीं।१५।
पटु चापि रही कसि जंघ दुवौ। पिय सों बिनवै जिन अंक छुवौ।
बल कै कर सों कुच चापि रही। पिय तो घँघराहि कि फूँद गही।१६।
झकझोरत छोड़त जोर किये। लपटी भय लाजन बाल हिये।
कर में थिर पारद जौ रखिये। नवढ़ा तिय को रस त्यों चखिये।१७।
घुँघुरूरव घायल सो बिहरै। जनि श्रोनित स्वेदप्रवाह ढरै।
कुच सूर भल रन माह लरैं। दोउ जंघ सुजानहु ते न टरैं।१८।
बिथुरे मुतिया इमि सोभ धरैं। त्रिदसा जनु फूलन बृष्टि करैं।
अति त्रास भयो तिय के हिय में। तब माधव जानि गयो जिय में।१९।

(दोहा)

रति में रतिपति सो करत कारन बेपरवान ।
पै मुर नाहीं की कहन माधव सकत जवान ।२०।

(सवैया)

केलि करी सिगरी रजनी पह फाटत दोनों उठे अकुलातु हैं ।
कै कहुँ नींद उनीं दै खुले जग की भय ते नहिं धीर धरातु हैं ।
बोधा रहे चकचौंध दुवौ उठि जैबे कों दोनों हिये सकुचातु हैं ।
ऐसे थके छवि के रस में लपटाय गरे सों दुवौ गिरि जातु हैं ।२१।

(दोहा)

केलि करी सिगरी निसा निसा न मानी चित्त ।
साहस कै माधो चल्यो मोहि बिदा दै मित्त ।२२।

(चौपाई)

सिगरी रैन केलि तिन कीन्हीं । भोर टेर तमचुर ने दीन्हीं ।
चाहत उठो उठो नहिं जाई । रहै दुवौ हिय सों लपटाई ।२३।
हिय सों छूटि सकत हिय नाहीं । गरे लगे दोनों गिरि जाहीं ।
भोर भए जग की भय होई । बिछुरन क्यों सकि ये दुख सोई ।२४।

(सोरठा)

अहो प्रिया सुन प्रान मोहिं जान घर को कहौ ।
भए दिवस गुजरान अइहौं इत रजनी समय ।२५।
लीलावति की बाँह आय सखी सुमुखी गही ।
अपने घर की चाह डगर चल्यौ द्विज माधवा ।२६।
रोचन रंग सुरंग अनुरागे जागे नयन ।
छबि छकि भए मतंग बलकत से झूमत चलत ।२७।
सरिता के तट आय झलझलान अनुरागजुत ।
नौढ़ा को रस पाय मगरूरी दिल पै चढ़ी ।२८।
माधो करि अस्नान दई अंजुली भानु कों ।
पूजा बिधिपरवान सो कीन्हीं सरितानिकट ।२९।

(बिरही उवाच)

(चौपाई)

सुनि सुभान यारा दिलदायक। अब यह कथा न कथिबे लायक।

(सुभान उवाच)

अहो मीत ऐसी जिन भाखौ। कथिकै कथा न आधी राखौ।३०।

(बिरहबचन कथाप्रसंग)

(दोहा)

सुमिरि सुमिरि गुन मित्र के दह्यो बिरह के दाप।
माधोनल कर बीन लै पंचम करचो अलाप।३१।
जथा मकरसंक्रांति कों जात्री चलत प्रयाग।
त्यों नारी सब नगर की चलीं बिप्रअनुराग।३२।

(भुजंगप्रयात)

सुनो बिप्र को ज्ञान कुल्कान छंडी। नरी नग्र की राग अन्राग मंडी।
हतीं जो जहाँ रूप जैसैं जहाँ ते। चलीं दौरि सो लाज त्यागे तहाँ ते।३३।
चलीं माधवापास कों बाल जातीं। हसैं ताल दै दै न काहू सकातीं।
छुटे बार बाँधे न लज्जा सँभारें। चहूँओर ते माधवा कों निहारें।३४।
जकी सी थकी सी चकी चित्त डोलैं। रजा चित्तकी तो मजा कौन खोलैं।
कह्योजात नाहीं अचंभो सो भारी।न जान्यो कियो माधवा हालकारी।३५।

(दोहा)

घर घर कूहर सी भई कूह रही पुर छाय।
ऊहर सब कूहर भई बनितन लगी बलाय।३६।

(चौपाई)

अचरज यहै नगर में गुन्यो। जो नहिँ काहू देख्यो सुन्यो।
सोवत बाल माधवै टेरै। जागे ते सरितातट हेरै।३७।
बेमजकूर डगर में ठाढ़ी। हँसतीं कहा कौन सुखवाढ़ी।
एकहि आपुन सोवत राती। बिरह सुराहि नारि सब माती।३८।

रोवैं हँसैं चहूँ दिसि धावैं । एकै खड़ी गलिन में गावैं ।
एकै बूझैं सबही येही । तुम कहुँ देखो बिप्र सनेही ।३९।

(सोरठा)

उनमादी सब बाम लाज तजे ब्याकुल फिरैं ।
भूलो सुत पति धाम किय माधव जादूगरी ।४०।

(झूलना)

दृग एक अंजन आँजिकै एकै चलीं अकुलाय ।
एकै महाबर देत विसरयो दयो एकइ पाय ।
एकै अन्हात उमाह बाढ़ी चलीं बसन चुचात ।
एकै लिये कर में बिरी तेहू बनै नहिं खात ।४१।
एकै लिये कर में कसौनी सो कसी नहिँ जाय ।
उढ़नी लपेटे सीस सों अरु कंचुकी लिपटाय ।
सिसु तौ पुकारै द्वार में भरतार खोरन माहिँ ।
द्विजनंद की पइरिंदगी सरमिंदगी नहिँ खाहिँ ।४२।

(चौपाई)

टूटत हार वार नहिँ बाँधैं । उघरो सीस कँदेला काँधैं ।
एकै कर में लिये मथानी । एक न छोड़े माटी सानी ।४३।
एकै लोई कर में लीने । एकन के कर गोबर भीने ।
एकै नदी तीर जो नारी । बसन त्यागि उठि चलीं उघारी।४४।
जल सिर धरे गेह को जाती । जल ढरकाय चलीं उनमाती ।
एकै लड़िकै क्षीर पियावत । चलीं निपट वह रोवत आवत ।४५।

(दोहा)

तन मन बूड़े बिरह में मूर्छित ह्वै गिरि जायँ ।
सरिता के तट कामिनी विन जल गोता खायँ ।४६।

(त्रोटक)

सरितातट बाल बिहाल फिरैं । अपने पट सों फँदि फैलि गिरैं ।
दुख औ सुख जानि कछू न परयो । बनितानि कहा हिय हेतु धरयो।४७।

जा जहाँ सा तहाँ चकचौंधि रह्यो । अचरज्ज कछू नहिं जात कह्यो ।
सबकों लखतीं सब मौन गह्यो । यहि बेदन भेद कछू न कह्यो ।४८।

(दोहा)

करनाटी माधो भयो बीना के सुर धारि ।
डोला कैसी पुतरियाँ नचीं नगर की नारि ।४९।

(सोरठा)

माधोनल कों चाहि तनछाया बनिता भईं ।
मौन गहें डरपाहिं माधो घर को पथ लियो ।५०।

(सुमुखी)

जिहि दिसि चलै माधो मित्त । तित तित चलैं ब्याकुल चित्त ।
रंचक चेत नहिँ चित माँह । नारी भईं द्विज की छाँह ।५१।
जेही ओर माधो जाय । तेही ओर बहै वलाय ।
बाढ़ी चित्त में यह संक । अब माहिं बृथा लगत कलंक ।५२।
कवहूँ सुनै ऐसी राय । बिछुरन मित्त सों पड़ि जाय ।
माधोचित्त यह भय मान । छुटि गो गृह लख्यो नहिँ आन ।५३।
बनिता लगीं अपने पंथ । चीन्हें पुत्र सोदर कंथ ।
बाढ़ो सहर में यह सोर । माधो है सही चितचोर ।५४।
जादू है कछू यह कीन्ह । वनिता भईं सब आधीन ।
अब हम नगर छोड़ें क्षिप्र । कै कढ़ि जाय माधो विप्र ।५५।

(दोहा)

लखि अद्भुत कृत विप्र को पुरजन रिस उर आनि ।
दरवाजे महाराज के गए फिरादैं ठानि ।५६।
द्विज की यह बारी भई पिछली कथा बिचारि ।
पड़वा की विनती गए घुड़वा आए हारि ।५७।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे बालखंडे प्रजाफिरादी नाम सप्तमस्तरंगः ।७।

(अष्टम तरंग)

इस्क कज्जाल नाम

(दोहा)

यहि अष्टमे तरंग में सुनि सुभान यह स्वाद।
माधोनल अरु प्रजा सों नृप सों होय बिबाद।१।

(चौपाई)

और सुनत राजा उठि धायो। पुरबासिन सों यों फरमायो।
दिल की कहौ दरद नहिँ गोवौ। को अस चाहत सहर बिगोवौ।२।

(झूलना)

कर जोरिकै बनिया उठे बलिराम ताको नाम।
तेली तमोली संग लै कीन्हे अनेक प्रनाम।
तजि लाज कों महराज सों उच्चरो सब दुखसाज।
सुनि नाथ दुख की गाथ जासों होत सहर बिराज।३।
परबीन बीन लिये फिरै द्विज माधवा तिहि नाम।
सुनि तान ताकी कानि तजि उठि दौरतीं सब बाम।
हम तौ न जानैं है सही जादू कछू वहि पास।
तनछाँह सी डोलैं त्रिया नहिँ डरैं प्रीतिप्रकास।४।
हम रहैं नाहीं नगर में अब बृद्ध बालक जानि।
कहि को सकै बिन काज को निसि ह्वै सकी कलिकानि।
दृग देखबी को कहै नहिँ सुनि सुनी कानन बात।
है कियो जैसो माधवा इहि नगर में उतपात।५।
नित बिप्र बीन बजावही नित बिकल होतीं बाल।
भय लाज पुत्र भतार तजि गृहकाज फिरहिँ बिहाल।
बिटिया बहू बनिता बिमोहीं छोड़िकै सब त्रास।
धौं प्रेत लागो माधवा छुटि चेत गो अनयास।६।
आड़ी रहैं नहिँ गेह में छाँड़ी सु लाज बनाय।
ठाढ़ी सी बिप्र सनेह सों उठि दौरतीं अकुलाय।

दै दै कपाटन बेड़िये कै कै सो जतन अनेक।
मुख मारि गारि उचारिकै कर जोरि जाहिँ सटेक।७।
तरुनी सबै मदमत्त सी मदिरा पिये द्विजगान।
गिनतीँहि नाहिँ महावतै नहिँ अंकुसै कुलकान।
बेरी न राखैँ लाज की उठि वंदने सुखसाज।
कुल को किला वो तोड़िकै भजि जायँ यों करि काज।८।

(सोरठा)

सुनि साहिब यह पीर बलीराम बानिक कही।
धरे बनत नहिँ धीर बनत हमैँ त्यागे सहर।९।
सुनि बनिकन के बैन महाराज उत्तर दियो।
कह्यो छान करि लैन हौँ जु बुलावत विप्र कोँ।१०।
कछू असहसा काज करे फेरि पछिताय सो।
ज्योँ नृप हनि करि बाज पछितानो उर सूल धरि।११।
नकुल हन्यो द्विज एक बनिकन दै द्विजनंदनै।
स्वामित करत अनेक स्वान सिपाही ने हन्यो।१२।
सिह पिंगलक साहि संजीवक बृषभै हन्यो।
भयो दरद पुन ताहि सो सुन हितउपदेस मेँ।१३।

(चौपाई)

द्विज कोँ बोलि भूप पठवायो। माधो राजसभा मेँ आयो।
सोहै पाग जरकसी तुर्रा। जुल्फ बाबरिन को लखि जुर्रा।१४।
केसर खौर भाल मेँ दीन्हेँ। पगन पाँवड़ी लकुटी लीन्हेँ।
जलज कंठुका मुक्ता कानन। सरदचंद सम सोहत आनन।१५।
मुख तमोल अधरन अरुनाई। बिहसत दसन तड़ित छवि छाई।
जलसुत गजरा दोइ कर माहीँ। फूलन के झेला बहु आहीँ।१६।

(दोहा)

हाटक सो तनु विप्र को लसत त्रिगुन उजियार।
जनु सुमेर के अंग ते धँसी सुरसरीधार।१७।

स्वेत धोति पटुका जरद कर में लीन्हें बीन।
मनोमोहनी मंत्र ने नरतनु धरयो प्रबीन।१८।

(चौपाई)

हुती गुसा सबके हिय माहीं। काहु लख्यो आवत तेहि नाहीं।
दै असीस तंडुल द्विज दीन्हें। सो नरईस सीस धरि लीन्हें।१९।
करि सनमान पास बैठायो। बीरा दे बृत्तांत सुनायो।
प्रजा लोग इहि भाँति बखानत। माधोनल कछु जादू जानत।२०।
बीन बजाय बाम बस कीनी। अनुरागीं फिरतीं रसभीनी।
तेरे तन लज्जा तजि हेरैं। हँसि अठिलाय नाम लै टेरैं।२१।
माधो माधो सोवत कहतीं। स्वप्नहुँ बाल बिकल जो रहतीं।
तन की छाँह भई सँग डोलैं। है का सो ना दिल की खोलैं।२२।
मूर्छा खाय गिरैं पुनि धावैं। असन बसन तजि तो हित आवैं।
कैयो सहस नगर की नारी। तेरे संग फिरैं सुकुमारी।२३।

(दोहा)

सत्यहि कहौ जवान सों जो है करयो उपाय।
कौन मंत्र मोहीं नरीं दीजै अबै बताय।२४।

(माधव बचन)

महाराज गोबिंद सुन हौं गुनही सौ बार।
या बूझौ बनितानि सों मोहीं कहा बिचार।२५।
हँस्यो न बोल्यो जोरि दृग दीन्हों नहीं जवाब।
बूझौ धौं बनितान सों मो ढिग लयो सबाब।२६।

राजा बचन

किहि कारन हेरो हँसो जगप्रकास के हेत।
बसीकरन पढ़ि बैन में चित वित जी हरि लेत।२७।
है प्रबीन बीना लिये मीनाकृति तुव नैन।
मौन गहें करबो करत गूँगा की सी सैन।२८।

(माधव बचन)

मेरे चित नारीन की चाह न एकौ अंग ।
दियैं दोष को देत है उड़ि उड़ि परत पतंग ।२९।
अपने दिल की खुसी कों हौं गावत लै बीन ।
सिला गिरै जौ सरग ते तौ का करै प्रबीन ।३०।

(प्रजा बचन)

धूर्त नरन की रीति यह वहुत वजावत गाल ।
विन जादू कवहूँ नहीं होवै ऐसो हाल ।३१।

(माधव बचन)

किहि कारन वै राग कौं उठि दौरैं अतुराय ।
राखो कैद नरीन कों भय दिखाय समुझाय ।३२।
मोकों तुम साँचो करो पिछले को परमान ।
धोबिन सों जीते नहीं मलत खरी के कान ।३३।
पाटी निरबक सार की कहत गढ़ी किहि हेत ।
बालक सों फारवाय कै दोष वढ़इयै देत ।३४।
मोहूँ कों आवत हँसी सुनि सुनि इनके बैन ।
जे हैं वस्तु बजार में कहत बनिक सों लेन ।३५।
बलि जैयै जिनके भिया जिनके गुन ये आयँ ।
काम करावैं हार में बिष बनियाँ पर खायँ ।३६।

(राजोवाच)

माधोनल करि का सकत जो नहिं आवैं बाम ।
परखइया कों खोर का घर को खोटो दाम ।३७।

(प्रजाबचन)

महाराज नीकी कही यह बिबेक की बात ।
द्विज को गाँव बसाइये हम सब निकरे जात ।३८।
बनिता सब खोटी करी द्विज कों करो अदोष ।
कहा चलत है प्रजा को महाराज पर रोष ।३९।

जादूबस केहरि करी बाँधे आवत ब्याल ।
जागत मुवौ मसानहूँ लखि जादू को ख्याल ।४०।

(मंत्री उवाच)

महाराज को राज की चाह होय सौ बार ।
तौ पुरबासी राखिये द्विज कों देहु निकार ।४१।

(माधवोवाच)

कस्तूरी मृगनाभि में कीन्हीं विधि न बिचार ।
करतें रसना चुगुल की लेते बधिक निकार ।४२।
चलि आयो युग चार ते बौनन ते संचार ।
राजन के दरवार में चुगलन को इतवार ।४३।

(राजा बचन)

माधो को अरु प्रजा को कित को कीजै सोध ।
मंत्रिन सों राजा कही होय न नीतिविरोध ।४४।

(मंत्रीं बचन)

सुन माधव द्विज सत्य कहु अपने जिय को जौन ।
उमहैं त्रिय तुव राग सुनि यह धौं कारन कौन ।४५।

(माधव बचन)

बसत जिन्हों के चित्त में राधाकृस्न मुरार ।
तिनकों नर नारी कहा मोहत हैं कर्तार ।४६।

(प्रजा बचन)

(चौपाई)

ब्यभिचारी ज्वारी मतवारो । सुकबि जगाती दूत बिचारो ।
उत्तर इन्हैं बहुत करि आवै । आग लाइ पानी कों धावै ।४७।
हारैं तौ चित बित हरि लेहीं । उलटो दोष तासु को देहीं ।
नँगर सबै जिनको जस गावै । तिनपै कहा न ऊतर आवै ।४८।

(दोहा)

माधवनल के प्रजा के सुनि मंत्रिन के बैन ।
चाह्यो गोबिँदचंद नृप परचौ ताको लैन ।४९।

कही अखाड़े नृपति के षोड़स सुमुखी नारि।
चारि पद्‌मिनी चित्रिनी हस्ति संखिनी चारि।५०।

(पद्‌मनीं जथा)

(कबित्त)

कारे सटकारे बड़वारे केस जाके दोनों
भृकुटि पिनाक देह कुंदन सी गाई है।
कौलदल लोचन बिसाल मुख चंद्रमा सो
अधर प्रवाल बानी पिक सी सुहाई है।
बोधा कवि सुंदर उरोज नारँगी से सोहैं
नख अरु हथेरी सुवास अति छाई है।
गवन मराल सुकुमार राखै सुद्ध तन
धन्य ताके भाग्य जाने ऐसी बाल पाई है।५१।

(अपरं च)

(छप्पय)

दीरघ केस कटाक्ष उरोज जँघा नितंब भनि।
लोचन रसना अधर लाल नख करत खार गनि।
सूक्षम तन अँगुली सुढार बानी हाटक हिय।
नासा उन्नत सकल सुभ्र वस्तर चित चाहिय।
सुकुमारि चारु चाहत सुमन देह सुगंध मरालगति।
लज्जा मान मनोज समय पद्मिनी लहै मति।५२।

(अथ चित्रिणीं)

चंचल चित परबीन सलज गोरी गुमान अति।
भारी भौंह कटाक्ष भाल घुँघरार केस मति।
केकीरव कृस अंग उरज जंघा नितंब बढ़ि।
सुरतहीन ग्रीवा कपोत साजत भूषन मढ़ि।
चित चाह नाहिं पीरे बसन मदनसहित सुकुमारि गनि।
लघु गंध देह छुंछुम कछू मनि कंठा चित्रिनी भनि।५३।

(अथ संखिनी)

गोरे तन ऊँची कठोर बानी आतुर गति।
नासा दृग सम केस देह दुरगंध कूरमति।
कुच नितंब अति पीन बसन भूषन अति चाहत।
जान न मौन सुजान प्रेम पालत नख बाहत।
अति चाहत सुरत निसंकगति जेहि सँजोग यह गुन बसहि।
बरि जाय बाम संखिनी सो जो ललाट बिधिना लिखहि।५४।

(अथ हस्तिनी)

नासा उन्नत भाल केस रूखे दीरघ तन।
कोता गरदन नैन भूरि भोजन चाहत घन।
सम कुच जंघ नितंब बाहँ लंबोदर जानहु।
गोरे तन बहु लोम मान अति कठिन बखानहु।
गति गयंद आतुर मदन कूर सुरति बिपरीत रति।
बल बृद्धि बुद्धि दुरगंध तनु अति ही रँग करिनी करति।५५।

(दोहा)

सो मैं ता दिन बरनिहौं कोक काम को धाम।
जब माधोनल आयहै फिर पुहुपावति ग्राम।५६।

(अथ नायक लक्षन)

(दोहा)

सस कुरंग कहिये बृषभ बहुरि तुरंगक जानि।
चारि भाँति बाला जथा नायक चारि बखानि।५७।

(सवैया)

बिद्या विनोद पढ़ै बहुधा लखि बैस किसोर बिराजत सोई।
है बिरही कर बीन लिये मकरध्वज तासु समान न होई।
बोधा विराजत राजसभा द्विज नादउ बेद बखानत दोई।
ढूँढ़ि फिरौ सिगरी वसुधा नल माधवा सो नहिँ नायक कोई।५८।

(दोहा)

रहैं अखाड़े नृपति के षोड़स बाला जेह।
अंतरपट लगवायकै नृप बुलवाई तेह।५६।
इत आयसु द्विज को दियो माधव तज्यो बिषाद।
कर बीना संजुत सरस मोहिं सुनावो नाद।६०।

(चौपाई)

यों सुनि माधव बीना लीन्हो। फिर अलाप पंचम को कीन्हो।
सुनतैं बाल सबै अकुलानी। सिथिल देह मुख कढ़त न बानी।६१।
बिंदु खलित तन मन अनुरागीं। माधवओर निहारन लागीं।
बाला एक रूपमंजरी। ताने एक चातुरी करी।६२।
अपने कर की उँगली लीन्ही। सो लै कै दसनन बिच दीन्ही।
बड़ी पीर ताके तन बाढ़ी। सो ना बाल बिरह अवगाढ़ी।६३।

(दोहा)

अकबकाय राजा रह्यो मुख ते कढ़त न बैन।
जो ना काननहूँ सुनी सो देखी निज नैन।६४।
प्रजा जाय माधो रहै दूजे द्विजअपमान।
मंत्रिन सों राजा कह्यो करिये कौन प्रमान।६५।

(मंत्री बचन)

(चौपाई)

उजरत सहर बिप्र के राखे। का प्रभाव बहु बार के भाखे।
एक राखि सबहीं तजि दीजै। कैसे यह प्रमान हम कीजै।६६।

(दोहा)

गुसा जानि महराज के मन में माधव बिप्र।
मालकौसतुभ गायकै ताहि रिझायो क्षिप्र।६७।

(चौपाई)

तब पुनि साहिब यही बिचारी। किहि अवगुन माधवै निकारी।
एक बिप्र गुनमय पुनि सोई। याके गए अजस जग होई।६८।

प्रजा गए उजरत रजधानी। दुवौ भाँति यह बात नसानी।
सुनि यों हाल माधवा बोल्यो। दरद आपने दिल को खोल्यो।६६।

(माधव बचन)

(दोहा)

कहा सिंह गजराज की बलि न देवता लेत।
पै अति दुर्बल देखिकै अजयासुत की देत।७०।
अरु पुनि सब जग कहत है को मरदे मजबूत।
हटपटाय के लगत हैं ओछे पिंडै भूत।७१।
तीन जने इक सूत हो बुकरे लाए माख।
सो सुन हितउपदेस में मुलतानी को साख।७२।
नारो आन न हौं लखी करि नारी तजि यार।
मोहिं कों नाहक धरत हैं भागे पीठ पहार।७३।

(राजा बचन)

(दोहा)

प्रजात्याग की क्या चली सुत दारा तजि देहुँ।
हौं का गुनी निकारिकै अजस दुनी में लेहुँ।७४।

(बिरही बचन)

(दोहा)

सुन सुभान नर करत हैं जद्यपि दुरि अपराध।
तदपि प्रकट दुख देत बिधि छिप्रत नाहिँ पल आध।७५।
कीन्हे सबकी देह में बिधि दोनों दृग दूत।
ये प्रतक्ष लक्षित करत नेह नसा को सूत।७६।

(सवैया)

कीजै इकंत हा तंत मतो मद प्रेम छिपाइबे कों सब नेत हैं।
आँखि मढ़ौ उरअंतर ह्वै तऊ ना बचिहैं चलिकै सुधि लेत हैं।
बोधा बिरंचि बिचारि रहे सबके जिय की जे न जी के सचेत हैं।
देह में नेहनसा न करै दृग दूत दसा सब सों कहि देत हैं।७७।

(दोहा)

गुप्त पाप जग में प्रगट या सुभाय ह्वै जाय।
जैसे नसा सरीर को नैनन झलकै आय।७८।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरही-सुभानसंवादे बालखंडे अष्टमस्तरंगः । ८ ।

(नवम तरंग)

इस्क सारखी नाम । अथ आरन्य खंड

(सुमुखी)

लीलावती यह सुधि पाइ। माधव कों निकारत राइ।
जगभय छोड़िकै कुलकान। नृप पै चली अति हि रिसान।१।
कर गहि माधवा को लीन्ह। इहि बिधि सोर तिहि ठाँ कीन्ह।
को समरथ्थ लखि इहि वार। दैहै माधवाहि निकार।२।

(नाराच)

गहे सुबाँह विप्र की सकोप बाल यों कहै।
बताव मीत मोहिं तोहि काढ़ि देन को कहै।
साप देउँ तासु कों सु नास हाल ही करौं।
उतारि सीस देह ते हजूर राइ के धरौं।३।

(सोरठा)

अद्भुत लखि महराज मौन गहे भौनै गयो।
सचिव सबै सिरताज तिन द्विज कों दीन्ही बिदा।४।

(चौपाई)

राजा ज्वाब कछू नहिं दीन्हों। तब सब मंत्रिन यों मत कीन्हों।
पाती नृप के नावँ बनाई। सो माधव कों दै पठवाई।५।
बीरा तीन पान के कीन्हें। सो लै दूत माधवै दीन्हें।
चिठी माधवा बाँची जबही। ऊभी स्वास लई द्विज तबही।६।

(दोहा)

आन राय गोविंद की सुनी माधवा बिप्र ।
देस हमारो छोड़िकै जात रहौ तुम क्षिप्र ।७।

(छप्पय)

बनिता को बस कहा पुरुष अपलोक लगावै ।
सेवक को बस कहा गुसा साहिब फुरमावै ।
बालक को बस कहा जननि जो बिष दै मारै ।
दये को दान न देय भिखू को जतन बिचारै ।
प्रजा निकारै राइ तो कहु को सहाय ताकी करै ।
यह जान माधवा धीर धरि का चिंता चित करि मरै ।८।

(सवैया)

पक्षिन कों बिरछा हैं घने औ घने बिरछान कों पक्षी हैं चाहक ।
मोरन कों हैं पहार घने औ पहारन मोर रहैं मिलि बाहक ।
बोधा महीपन कों मुकता औ घने मुकतान कों राइ बिसाहक ।
जौ धन है तौ गुनी बहुतै अरु जौ गुन है तौ अनेक हैं गाहक ।९।

(दोहा)

जिहि पब्बै कर पै धरी करि की करी गुहारि ।
कहा कष्ट मो दीन को हरी न सोइ मुरारि ।१०।
पर लगाय पब्बै उड़ै पस्चिम ऊगै भान ।
जो बिधि लिखी ललाट में सो बिधि होय न आन ।११।
दै असीस महराज कों ऊभी लई उसास ।
त्यागि पुरी पहुपावती माधव चल्यो उदास ।१२।

(छप्पय)

जिहि सरबर जल अमल पान कीन्हो दिनप्रति अति ।
जिहि सरबर कों परसि करो परसन्न देहगति ।

जिहि सरबर रसरंग संग सहवासन कीन्हो।
जिहि सरबर भव काज सरस मुक्ताफल दीन्हो।
कवि **बोधा** सो सरवर सदा पूरन निधिजुत इत रहेउ।
माधव मराल इमि राज कों दै असीस मारग गहेउ।१३।

(चौपाई)

सुन सुभान यारा दिलदायक। अब यह कथा न कथिबे लायक।

(सखी बचन)

अहो मीत ऐसी जनि भाखौ। कथिके कथा न आधी राखौ।१४।

(कथाप्रसंग)

डगर चल्यो माधो द्विज जवहीं। गही बाँह लीलावति तवहीं।
ताकों पुरवासिन धरि लीन्हों। माधव विप्र पयानो कीन्हों।१५।

(सुमुखी)

वाला गई अपने गेह। लक्षित भयो ताको नेह।
ताके तात यह सुनि वात। लाग्यो करन अति उतपात।१६।
ताकों नग्रवासी आय। लागे सीख देन वनाय।
याकों बृथा दीजतु दोस। सिगरे नग्र द्विज को सोस।१७।
वनितन की कहानी कौन। मोहे पुरुष अचरज तौन।
काहू दोप ना यहि धारि। भूली मंत्र के वस नारि।१८।

(दोहा)

धन को नास न गायबो घर को लटो चरित्र।
घटै मान दरवार में प्रगट न कीजै मित्र।१९।

(पद्धरिया)

यह बचन प्रजा को मान तत्त। तव मौन गह्यो द्विज रघूदत्त।
तिय भवन जाय सखि कोंबुलाय। गहि कंठ कियो रोदन बनाय।२०।

(चौपाई)

रोवत बाल बिरहमद माती। ताके रोवत बिहरत छाती।
अब कहु सखी करौं मैं कैसी। भई दसा माधो की ऐसी।२१।

गिरि ते गिरौं मरौं बिष खाई। तनु तजि मिलौं माधवै जाई।
मरौं मिटै दुख मेरो प्यारी। कैसहु प्रान कढ़ैं इहि बारी।२२।

(दोहा)

कहै तिया लीलावती सुन सुमुखी सखि बात।
कहाँ जायगो माधवा तैं देख्यो सखि जात।२३।
एक सँदेसो मीत को पहुँचावै तू मोर।
आज भवन मेरे बसै गवन करै उठि भोर।२४।

(सोरठा)

माधवनल के पास तुरत गई सुमुखी सखी।
कीन्ही कथा प्रकास जो लीलावति ने कही।२५।

(माधव बचन)

सीस ईस कों देउँ चढ़ि धौरागिरि ते गिरौं।
ढूँढ़ि मित्र कों लेउँ मुवा जियौं पिय कों सुमिरि।२६।
फिरि आऊँ इहि धाम द्वादस मास बिताइकै।
कह्यो मोर परिनाम हितू भावदी बाल सों।२७।

(दोहा)

गजरा लीलावती ने कर ते दियो उतारि।
सो दै माधव मीत कों चली घरै वह नारि।२८।
जो माधवनल ने कही अपनी कथा कराल।
सो लीलावति बाल पै सबै बखानो हाल।२९।

(मोतीदाम)

गिरी तिय लै अति दीरघ स्वास। भयो सुखस्वादन को सब नास।
पुकारत माधव माधव जोर। करो मकरध्वज के अति जोर।३०।
सखी सुमुखो तिय की परबीन। भली बिधि ताहि सिखावन दीन।
अहे सुन बाल धरै किन धीर। बिथा सहि चेतन राख सरीर।३१।

(सोरठा)

पीउमिलन की आस जौ लौं घट में प्रान हैं।
प्रान गए फिरि नास होत देह अरु नेह को।३२।

(चौपाई)

जेठ मास नौमी तिथि जानो। क्रुस्न पक्ष द्विज कीन पयानो।
पहुपावती पुरी तजि माधो। चलो जपत कामा वर साधो।३३।

(सोरठा)

वाला एक हजार सहस साथ जाके चलैं।
भाभी के अनुसार सो माधव वन तजि फिरैं।३४।

(चौपांई)

आफत परी जान पर जेती। तजी न मगरूरी दिल सेती।
पल पल ध्यान मित्र को आवत। कहैं वहै जोई कहि आवत।३५।
खग मृगादि लतिका लखि डोलत। कहि या दोस्त हरीहर बोलत।
द्रुम द्रुम तर बिलसत द्विज आवै। गाथा पढ़ि करि हिय सों लावै।३६।

(गाथा)

इति विरंचि मतिमंद ना जानत नीत नोनं।
भावदा विछुरैदं सिरसि मे लिख्यते सो किं।३७।

(चौपाई)

बीन बजाय मृगन कों मोहत। तिनके नैन घरी लौं जोहत।
देखि सेखि कारे बड़वारे। अनियारे रतनारे प्यारे।३८।
हेरन पै न मित्र की पावै। सधे कुरंग रंग सरसावै।
सुक सों कहै नाक तू लैनी। पै न भावतो जोर कहै नी।३९।
क्यों गुलाब छबि छावै एती। भावद्दी गुलतारैं जेती।
मने करत कलरव दुखदानी। जिन बोलै भावद्दी बानी।४०।

(दोहा)

फूलतु वाकु निदाघ में वन ते गुजरे चैत।
फौजदार के फिरत ज्यों थाने रहत थनैत।४१।

(चौपाई)

जो वन सदा रह्यो सुखदायक। सो वन भयो लाइबे लायक।
पूरब दिसा चल्यो द्विज माधो। कछु दिन गुजरे आयो बाँधो।४२।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे नवमस्तरंगः आरण्यखंडः।९।

(दशम तरंग)

इस्क आतसी नाम तरंग प्रसंग

(दोहा)

सुन सुभान ग्रीषम तपन तिय तजि चलत बिदेस।
खड्गपत्र सों सौगुनो जाहिर यहै कलेस।१।
बटछाया तट ताल को संकर सुभ मठ पाय।
माधव बाँधोगढ़ रह्यो चार मास कों छाय।२।

(चौपाई)

रचि कबित्त सिव को गुन गावै। संक मानि नहिँ बीन बजावै।
या बीना के गुन त्रिपुरारी। छूटो नगर देस घर नारी।३।
सर्बसत्याग इसी पर कीन्हा। पर ना तजी जात यह बीना।
संकर सों बिनती यह कीन्हीं। यह बीना मोहिँ आफत दीन्हीं।४।

(दोहा)

गुनमय बैस किसोर लखि बिरही रूपनिधान।
बाँधोगढ़वासिन कियो माधो को सनमान।५।
जिहि गुन मुवो मसानहूँ चलत धरा पर धाय।
तिहि गुन जियत न जंत्र ही कीजै कौन उपाय।६।

(चौपाई)

सुवा प्रबीन एक गुनमंडित। तिहि समान जग आन न पंडित।
अवतारी अनन्य मति जाकी। तिहि गुन माधो की मति छाकी।७।

(दोहा)

सुवा कही माधवा सों जो नाटंका एक।
सो कवि बरनी जुदी करि जामें कथा अनेक।८।

(पद्धरिका)

बटछाँह बिप्र ऊपर प्रबीन। गुनकथन गूढ़ रस नौम लीन।
झलक्यो सो आय आखंड मेह। थरहरयो बिप्र लखि छानि देह।९।

जीबो न मित्र अस जानि जाय । करिये बियोग को का उपाय ।
दुख कोटि कोटि तिल के समान । बिन मीत बिछोहा बज्र जान ।१०।
इक स्यामघटा दक्षिन निहारि । गिरि गयो बिप्र उर सूल धारि ।
अति बिसद सजल अति घोर कीन । अति बरहि धरा पर बज्र पीन ।११।

(चौपाई)

भयबस प्रीति माधवा मानी । तासों अपनी बिथा बखानी ।
हो पयोद बिरहिनि दुखदायक । मेरो दरद सुनो तुम नायक ।१२।
पुहुपावती पुरी मम प्यारी । नवजौबन बाला सुकुमारी ।
हरिनाक्षी गजगामिनि गोरी । ससिबदनी सुंदर मतिभोरी ।१३।
नगनजटित अभरन सब साजत । दीपमाल सी बाल बिराजत ।
दरदमई सब बात बखानै । सो प्रबीन रस के पथ जानै ।१४।
तासों कहो सँदेसा मोरा । बाँधोगढ़ ऊपर पति तोरा ।
तन मन क्षेम चित मत मानौ । माधवनल सम नाम बखानौ ।१५।
कहियो मेरी बाला सेती । तेरी फिकर माधवा येती ।
निसि दिन तेरे गुन कों गावत । दरस परस हित ज्यो ललचावत ।१६।
यह सँदेस प्रिय लौं पहुँचावौ । मेरे दिल का दरद मिटावौ ।
जौ तुम कहौ दास नहिं तेरे । ये ही गुन उपकारिन केरे ।१७।
जौ तुम कहौ मनुज हम नाहीं । सो प्रभु इच्छारूपी माहीं ।
जौ तुम कहौ बचन नहिँ मोहीं । तौ गरजन यह कैसे होहीं ।१८।
जौ तुम कहौ नगर नहिँ जानौं । सो पुहुपावती नाम बखानौं ।
जौ तुम कहौ आप किन जैये । सो नृप की भय जान न पैये ।१९।
जौ तुम कहो गुसा नृप काहीं । सो इक चूक भई मो पाहीं ।
मेरी तान नगर सब मोह्यो । यह अचरज पुरबासिन जोह्यो ।२०।
बिन बिबाह मोहीं प्रिय मोहीं । सत्य कहत नहिँ गोवत तोहीं ।
यहि कारन नृप मोहिँ निकारो । सुन बिरतंत पयोद हमारो ।२१।

(दोहा)

इहि प्रकार द्विज माधवा करचो मेघ सों बाद ।
पुनि उदास हो बीन गहि गायो सारँग नाद ।२२।

जथा राधिकाध्यान ते दुख दारिद्र परात।
त्यों सारँग के सुर सुने घटा न देख्यो जात।२३।

(मोतीदाम)

घनो उरझो दुख माधव केर। कह्यो परबीन सुवा सों टेर।
करै वह कोकिल मो कलहीन। छटा छहराय लई सब छीन।२४।
खरै बरही करही कल सोर। घरै तहँ चातक पंजर तोर।
इते दुख पै न तजे तन प्रान। भयो चिरजीव रह्यो दिनमान।२५।

(दंडक)

ज्ञान ध्यान सुजस सयान थिर नाहीं प्रीति
रीति थिर नाहीं कैसे धीर धरियतु है।
राज थिर नाहीं लोकलाज थिर नाहीं
यो समाज थिर नाहीं सोकसाज परियतु है।
बोधा कवि बरषा प्रकासी पराधीन पर
बीती पै बिरह की जुवाल जरियतु है।
करमगुनाही कलिकाल में मनुष्य होके
ताही पै जीबे को जतन करियतु है।२६।

(दोहा)

सुन सुभान नरदेह धरि कलि में सुखी न कोय।
नृप रोगी परजा निधन गुनी बियोगी होय।२७।

(चौपाई)

इहि बिधि मास असाढ़ बितायो। चलि सुभान तब सावन आयो।
संजोगी बिरही नर जोगी। इहि सावन सब होत बियोगी।२८।

(मोतीदाम)

लग्यो तरु तावन सावन मास। प्रजारति कैम कुसुंभिय बास।
चले बदरा मढ़ि गर्जत नील। मनो मदनद्दल साजत पील।२९।
बढ़ी सरिता नवजौबन रूप। निहारत यारहि ते तन तूप।
करै बरही पिक चातक सोर। चलै त्रिबिधा लखि पौन झकोर।३०।

सदा सुखदायक जे लखि बीर। भए इहि सावन दावनगीर।
कँपै मनबधू लखै न उपाय। मनो बिरहीतन सोनित आय।३१।
हनै सर पंच गहे कर काम। करचो बिरही मोहिँ स्रावन राम।
नहीं दिल इस्कहि देखत कोइ। कहौं अपनो दुख का सन रोइ।३२।
हती इक कामिनि तीरतड़ाग। सुन्यो तिहि माधव को अनुराग।
कहै वह बाल अहे द्विजदेव। कछू कहि हौं अपनो निज भेव।३३।
भयो जिहि कारन छिन्न सरीर। कहौ अपने तन की यह पीर।
करौं पल में तुव बेदन दूर। बतावहुँ हाल सजीवन मूर।३४।
दियो तिहि माधव उत्तर बेस। नहीं वह औषध है यहि देस।
लगी चित की हित की यहि जानि। कहैं सब रोगहि जोग बखानि।३५।

(सवैया)

दूर है मूर अपूरब सो ससि सूरजहूँ कबहूँक निहारी।
अंदर बेली नवेली अबै कहि कैसे मिलै बिन जोग दिबारी।
बोधा सुनो हे सुभान हितू करि कोटि उपाय थके उपचारी।
पीर हमारे दिलंदर की हम जानत हैं वह जाननहारी।३६।

(सोरठा)

फिर बोली वह बाल है कैसो तेरो हितू।
सहियत बिरह कराल जाके हेत न चेत जिय।३७।

(दंडक)

पगनि परो री प्रान काहू सों पगे जो चूर
होत मगरूरी मगरूरियै जगी रहै।
हेरनि हँसनि बतरैबे को कौन स्वाद
उन्माद तें और पीर तन में पगी रहै।
बोधा कबि जो है मेरे हितू कों सुहाती जीव
ताही में खगो रहै सोई जी में खगी रहै।
कैसी करौं कहाँ जाउँ कासों कहौं दई कहूँ
मन तौ लगै ना चित मन में लगी रहै।३८।

दिलवर होय तासों दिल की बखानै पीर
हीनदिल कैसे दिलदरद की जानिहै।
जिनके लगी ना सो का पीर जानै घायल की
घायल की पीर कों तो घाय ही प्रमानिहै।
बोधा कबि बिछुरी जौ मालती नवेली तौ है
औरऊ कली न तौन दरद बितानिहै।
भूले जिन भरम गमावै चंचरीक कैसे
अपत करील तेरो दरद बखानिहै।३९।

(दोहा)

त्यों विचारि माधो दयो ता बनिता कों ज्वाब।
आसिक इस्क नपाक कों बरनत नहीं सबाव।४०।
यों सुनि सब बनिता गईं अपने अपने गेह।
कह्यो बिप्र के चित्त में अबिचल एक सनेह।४१।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे आरण्यखंडे बांधवगढ़े अस्तींति दशमस्तरंगः।१०।

(एकादश तरंग)

कहर ख्याला नाम। अथ प्रसंग

(चौपाई)

वनितम अपनो मारग लीन्हों। माधव फिर ऋतुबर्नन कीन्हों।
सुनौ प्रबीन मित्र मनभावन। दाहक अति बिरहिन कों सावन।१।
कुँसुभी चीर वाम का साजै। इंद्रबधू के बेष बिराजै।
करैं गान मंगल अति नीके। सुखदायक निज पति के जी के।२।
भुंडन भुंडन आगे आवैं। मो बिरही को मन ललचावै।
पै ना चुभै चित्त में कोई। खूबी देखि दून दुख होई।३।

(दंडक)

चुनरी चुनावदार पहिरे मृगाक्षी बनी
ठनी झुंड झुंडन तड़ागतीर आवहीं ।
केसर से अंग अंगराग करैं केसर की
नीबी कसि नीके म्हारी जान ललचावहीं ।
बोधा कवि जौ पै नहीं चैन चित्त आपने में
तौ ये सबै झूठे झूठे ख्याल कों बनावहीं ।
ताउदो वियोग मनभाउदो न देखो यातें
सावनदी खबौहीं तौ हमकों न भावहीं ।४।

(दोहा)

इहि प्रकार गुनकथन करि बीत्यो स्रावन मास ।
पुनि भादों की घटा लखि माधो भयो उदास ।५।

(चौपाई)

मघा मेघमुगदर सम लागति । छरहू बर दवागि नर दागति ।
मंत्रिहीन नृप की रजधानी । त्यों भादों की रात बखानी ।६।

(छप्पय)

पंथ थकित दिसि बिदिसि रहत अंधेर रैन दिन ।
पापपंक सब ठौर नहीं ससि सूर लखित खिन ।
नहियाँ दिनसंजोग कोक बूड़त बियोगनिधि ।
जल थल सबै मलीन जात जलजात गलितसिधि ।
जु भयो बिसेषि लखि राज में देस तज्यो को कल न तब ।
रिझवार भूप भादों भवन सदा दुरावत बात अब ।७।

(चौपाई)

चातक एक अधम अभिमानी । करषत जीव पीव करि बानी ।
ररत मयूर धरत जक नाहीं । को बरजै बर बैरिन काहीं ।८।
गरजत सिंह घटा घन घोरत । पवन प्रचंड मूल तरु तोरत ।
झिल्लीगन झनकार अनैसी । हिय में उठत हूल जनु ऐसी ।९।

कहु प्रबीन बिधि पै कह कीजै। पिय बिछुरें बरषा जिमि जीजै।
बरषा की बिधि खबर न कीन्हीं। लगि दृग नेह बिछुर लिख दीन्हीं।१०।

(दंडक)

भाल में लिखत कों भुलाने मेरी बेर कहूँ
माखन के बीच फटकार चहियतु है।
सो ना चूक तेरी **बोधा** भावतो मिलो ना फिर
बिछुरन जानि याते खुसी रहियतु हैं।
जाके बड़े नैनन समाने मेरे नैन तासों
बीच पारि दीन्हों कैसे धीर गहियतु है।
भई नाहिँ रंच तोहि करुना कसाई तूँ तौ
ऐसो निरदई तासों दई कहियतु है।११।

(सोरठा)

भादों की यह रैन होती बड़ी बिहार की।
ढिग होती मृगनैन बरषा होती मैनमय।१२।

(दोहा)

तौ लौं तो जीबो भलो कहा साँझ कह भोर।
जौ लौं प्यारी बगल में कर में उरज कठोर।१३।

(सोरठा)

बीत्यो भादों मास बरषा ऋतु माँदी भई।
कीन्हों जगत सुबास सरस बिबेकी भूप जिमि।१४।

(छप्पय)

जल थल अमल अकास कमल प्रफुलित सुबासमय।
रबिप्रकास तमनास पंथ पंथनि सुहासमय।
प्रथम कागदै बारि फेरि जलजाक्षर आई।
सरसमाज भुवलोग पिंड लहि ये न अघाई।
छायो बिबेक संसार सब चक्रवाक मोदित रहत।
समरथ्थ सरद नर नारि सब सोभ बिबस मो हिय दहत।१५।

(सोरठा)

पचत न बढ़ि तिल आध भोजन नित्त करार तें।
पल में करत असाध पित्त कोतवाली करत ।१६।
मेघ बढ़ै असमान मढ़ै आय दसहूँ दिसा।
घोरत फोरत कान तिन्हें फोरि मारत नृपति ।१७।
सीतल मंद सुगंध त्रिबिध बयार बहारजुत।
हौं न लहत आनंद पीनकुचासंजोग बिन ।१८।

(दंडक)

सुन हे प्रबीन पीर कौन पै जनैयै जौ पै
देखत ना निकट सलोनी नोनी धन कों।
ध्यान के धरत ही धड़ाको ऐसो लागो बिना
प्यारी के सँजोग समझाऊँ कैसे मन कों।
बोधा कबि भवन में कैसे हूँ रह्यो न जाय
बिरहदवागि ते न जायो जाय बन कों।
सरदनिसा में चंद निसिचर ऐसो ताकी
चाँदनी चुरैल सो चबाए लेत तन कों ।१६।

(चौपाई)

अस्विन सुदि दसमी तिथि जबहीं। बाँधो तजो माधवा तबहीं।
नगर लोग सबही पछिताने। बड़ी दोस्ती हमसों माने ।२०।
पै ना चलत खबर वह दीन्हीं। जड़मति उपदेसी की चीन्हीं।
सबरो नगर सराहत वोही। वह निस्चय बालक निरमोही ।२१।

(दोहा)

एकै त्रिय ऐसी कहैं है वह साँचो गीत।
अबला कौने बस करी जोगी काके मीत ।२२।
चलत माधवा बिप्र के सुवा चल्यो अकुलाय।
तो बिन द्विज या बट पै मो पै रहो न जाय ।२३।

(चौपाई)

चल्यो जात यों माधो जोगी । बाँधो तजि फिर भयो बियोगी ।
मन में चल्यो बिसूरत येही । रहै मोर सब नगर सनेही ।२४।

(सवैया)

आवती ती हिरनाक्षी इतै वा झकोर के आँखैं हितै भरि देत ती ।
चौंधा लगावत चंदमुखी गजगामिन सो मगरूरी समेत ती ।
बोधा बियोग करै सबको पिकबैनी कठोर हिये न सचेत ती ।
जानती पीर गरीबन की अहे पीन कुचान हियो हरि लेत ती ।२५।

(सोरठा)

निपट लालची नैन जब देखैं खूबी कछू ।
ता बिछुरै चाहैं न ये नारिन के बस कछू ।२६।
निमिष साथ जित होय पीनकुचा बनितान सों ।
लखै ठौर पुनि सोय करक करेजे में उठे ।२७।

(मोटका)

बाँधौ तजि माधव बिप्र चल्यो । जाको हिय मैन मतंग मल्यो ।
पायो गत अस्विन मास जहीं । आयो द्विज कामद सैल तहीं ।२८।

(चौपाई)

दीपमालिका दर्सन कीन्हा । दीपदान कामद कहँ दीन्हा ।
पयस्विनी मज्जन करि माधो । सीतापतिढिग आयो साधो ।२६।
करि दंडवत बीन कर लीन्हों । जस बरनन रघुवर को कीन्हों ।
जस कछु बालमीक मुनि गावा । सो माधो सब प्रभुहि सुनावा ।३०।

(सोरठा)

रघुबर को जस गाय फेर बिथा अपनी कही ।
सुनि प्रभु दीनसहाय मो कहँ बिधि बेदन दई ।३१।

(चौपैया)

बेदन बड़ मोहीं बिधिवर द्रोही दीन्हीं दया न आनी ।
सुबरनतनवारी नारि निवारी बिछुरी प्रिया निमानी ।

तेरे ढिग आयो दरसन पायो दिल को दरद सुनायो ।
तुम बिरहबियोगी रघुबर जोगी याते सरन मनायो ।३२।

(दडंक)

ब्याउर की पीर कैसे बाँझ पहिचानै कैसे
ज्ञानिन की बात कोऊ कामी नर मानिहै ।
कैसे कोऊ ज्ञानी कामकथन प्रमान करै
गुर को सवाद कैसे बाउरो बखानिहै ।
कैसे मृगनैनी भावै पुरुष नपुंसक कों
कबि को कवित्त कैसे सठ पहिचानिहै ।
जानै कहा कोऊ जापै बीत्यो न बियोग **बोधा**
बिरही की पीर क्वौ बिरही पहिचानिहै ।३३।

(दोहा)

जिन्हैं न बिछुरे भाउते लगे न मनमथतीर ।
सो का जानै बापुरो बिरहीजन की पीर ।३४।

(सोरठा)

प्रभु को है अस प्रेम भयो माधवा बिप्र कों ।
तोहिं होइ अब छेम आठ सिद्धि नव निद्धि नित ।३५।

(चौपाई)

परदक्षिना दै सीस नवावा । पुनि द्विज चलि मंदाकिनि आवा ।
बिलमो तहाँ एक परखारा । पुनि माधो उठि पंथ पधारा ।३६।
बिरहि तपै कहुँ कल नहिं पावै । सुख की चाह फेर उठि धावै ।
अग्र एक आरन्य सुहाई । देखी बिटपन की समुदाई ।३७।

(दोहा)

फूले फले हरे लखे उपबन बिपिन समाज ।
उनमादी माधो भयो सुमिरि अग्र ऋतुराज ।३८।

इति श्री बिरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान-संवादे शापखंडे एकादशः तरंगः ।११।

(द्वादश तरंग)

इस्क सहेली नाम । अथ प्रसंग

(चौपाई)

सुक सों कह्यौ बिप्र अकुलाई । मोहिं भावदी की सुधि आई ।
कैसे कहाँ होयगी प्यारी । नवज़ौबन बाला सुकुमारी ।१।
खेलत कहूँ सखिन के माहीं । मेरी याद करै कै नाहीं ।
ऐसी छबि कब देखन पाऊँ । किहि उपाय पुहुपावति जाऊँ ।२।
बिरह रूप बिपरीतन बाढ़ी । हिये मनो ताई कै काढ़ी ।
कामकथन सब जानत सोई । बड़ी रीझ की बिरहिन होई ।३।
है प्रबीन लीलावति जैसी । मजेदार बनिता को ऐसी ।
यों गुनकथन माधवा गायो । बिरह बूड़ि बिरही फिर आयो ।४।

(पद्धरिका)

इक नग्र उग्र रबिसुतातीर ।
तहँ लखी बिप्र बनितान भीर ।
लखि बिकट ठौर गो निकट आइ ।
अति बिकल चित्त नहिं कल पराइ ।५।
जहँ इस्क बाग लखि अति प्रबीन ।
तहँ क्षिप्र बिप्र परबेस कीन ।
निज दरद कह्यो सब द्रुमन पाहिं ।
मृग मीन आदि जो मिलत जाहिं ।६।

(दोहा)

कानन कूप तड़ाग तरु खग मृग मानव मीन ।
अस को जिहि द्विज माधवा प्रिय की सुधि बूझी न ।७।
कहत द्रुमन सों तुम न हो सुमनसहित छबिदार ।
कदी यार मेरो लख्यो तो छबि अजब बहार ।८।

(चौपाई)

बिटपन अपनो दरद सुनावै। जब चलि छाँह किसी की आवै।
नाम आपने प्रिय को लेही। यों पुनि ताहि उरहनो देही।९।
हो हिरनाक्षी प्रिया हमारी। ससिवत बदन तज्यो सुकुमारी।
मृगसावक लौं तुव ये लोचन। कहाँ रही दुरि हे दुखमोचन।१०।

(सवैया)

बल्लभा बाल प्रिया बनिता मनभावदी बाम हितू गजगैनी।
चंद्रमुखी रवनी हे नितंबिनी पीनकुचा सुजनी पिकबैनी।
बोधा बखानत माधवा यों तरुनी घरनी गबड़ी सुखदैनी।
कामिनी कामदा प्यारी तिया अये लीलावती है कि तू मृगनैनी।११।

(सोरठा)

मोहीं देइ निसार तोहिं न बूझी भावदी।
कै चूक्यो करतार मोहिं तोहिं अंतर कियो।१२।
यह चरित्र लखि बाल चकित भईं तरुनी निकट।
है का इसको हाल कोऊ बूझौ पथिक सों।१३।
कर में लीन्हें बीन जोगी भोगी भूपसुत।
तब इक प्रौढ़ प्रबीन दीन्ह ज्वाब सबहीन कहँ।१४।

(दंडक)

झुकत सो झाँकत सो झुकि झहराय ऐसो
देह दुबराइबो न दोष ते डगतु है।
भारी भरे नैन रतनारे तारे अनिमिष
दीरघ उसास लै लै पगन खगतु है।
बोधा कवि माधवा कों देखिकै बिचारैं बाल
चित्र सो चरित्र सो सुजान पै ठगतु है।
काम सो लसतु निज बाम बिछुरी है याते
जोगी है न भोगी न बियोगी सो लगतु है।१५।

(सोरठा)

अल्पबुद्धि सुरभंग जदपि बिप्र चटपटी उर।
ये बिरहिन के अंग दृग न चलत बिभ्रम बचन।१६।
ताको परचो लैन आपस में बनितन कह्यो।
कहे बिप्र सन बैन कितै जात को हौ कहौ।१७।
उर उपजी कछु बाय किधौं भंग रंगै पियत।
लागी किधौं बलाय बृथा बाद सो का करत।१८।

(माधववचन)

(रेखता)

नसा कध्धी न खाते हैं। अये हम इस्क माते हैं।
गये थे बाग के ताईं। उतै वे छोकरीं आईं।१९।
उन्हीं जादू कछू कीन्हा। हमर दिल कैद कर लीन्हा।
अचानक भया भटभेरा। उन्होंने चस्म टुक फेरा।२०।
कलेजा छेद कर ज्यादा। भया मन मारु में माँदा।
इस्क दिलदार सों लागा। हमन दिलदर्द अनुरागा।२१।
खड़ी फुलवारिया खेले। जम्हीरी हाथ सों झेले।
मजा बागीच का देखे। कुसम बल्लीन की लेखे।२२।
कली चुन गूँथती चोटी। नवोढ़ा नायका छोटी।
कधी फल नारँगी तोरे। फुहारे सैकरों खोले।२३।
कधी रव बेल सों लपटै। कधी गलबाँहियाँ झटकै।
कधी गावे हँसे डोले। कधी तुतरायके बोले।२४।
झरोखा ओर को चलदी। पवन के दोष दे दुलदी।
कधी अलसाय तन तोरे। अँगूली हाथ की फोरे।२५।
कधी बँद चोलिया कसदी। कधी दिल खोलके हँसदी।
कधी नीबी कसे खोले। कधी झुक झूमती डोले।२६।
मुनेया तूतिया बरही। मगन कल केल को करही।
बिहंगम लाल सुक सारो। करे चंडूल झनकारो।२७।

तिन्हों के गहन को धावे । परंदे गहे क्यों पावे ।
कुरूँ कहि उन्हीं को टेरे । न आए गुसा हो हेरे ।२८।
सखी से कहे गह ल्यावो । जिसी अब कूब सो पावो ।
कबों बर बानरा झूलै । तिन्हों को देख भ्रम भूले ।२९।
हिँडोरा पास चल जाती । खड़ी झूले न डर खाती ।
नरम कटि दून हो जावे । हमारा जान दुख पावे ।३०।
बताते फूल से झरते । कुलाहल मधुपगन करते ।
कहीं लख चोपरा हरखे । कहीं सुजनीन को परखे ।३१।
हमारे निकट चल आई । हमन इक अमृतधुनि गाई ।
दिवानी और दीवानी । सखिन के बीच मुसक्यानी ।३२।
कह्यो नित आइयो साँईं । इसी मत्रकान के ताईं ।
तिहारा दीद हम पावें । दिलंदर दर्द बिसरावें ।३३।
उन्हों का रूप नीमाना । भयो दिल देख दीवाना ।
कछू ना चाहना येती । हमारी चाह उन सेती ।३४।
कहूँ रहिदा दिलंदर में । .... ।३५।

(दोहा)

रचनाजुत द्विज के बचन सुने इस्क की सैन ।
रहीं ऐननैनी सबै जड़ता धरि भरि नैन ।३६।

(सवैया)

बोधा किसू सों कहा कहिये जो बिथा सुनि फेर रहै अरगाइकै ।
याते भलो मुख मौनै धरै कै करौ उपचार हिये थिर धाइकै ।
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूँ जो कहै हितू रंच दया उर लाइकै ।
आवत है मुख लौं बढ़िकै पुनि पीर रहै हिय में ही समाइकै ।३७।

(चौपाई)

कर गहि बीन बिप्र मग लीन्हा । गवन देस कामावति कीन्हा ।
कछु दिन मारग माहिँ बितायो । क्षेम क्षेम कामावति आयो ।३८।

(दंडक)

चारो भाग बाग औ तड़ाग लखि नीके फेर
बसती निहारी जैसी मूरत सुचैन की ।
उन्नत हवेली पै खड़ी ह्वै अलबेली लसै
रति सी नवेली क्यों समान होहि मैनकी ।
बोधा कबि धन गुन रूप की कहा लौं कहौं
दान औ पुरान गुजरान द्यौस रैन की ।
बिसरयो बियोग भयो माधवा मगन देखि
काम कैसी कुटी पुरी राजा कामसैन की ।३९।

(दोहा)

अष्ट सिद्धि नव निद्धि जुत घर घर करै निवास ।
माधो मन मोदित भयो सोहत पाय सुबास ।४०।

(झूलना)

लखि चौक द्वादस नग्र में दिसि तीन अग्र बजार ।
उत्तर अवास नरेस के लखि कनक कलस हजार ।
रँग्यो निहारत माधवा सुखसिंधु लहर सुबेग ।
जित रतन दस औ चार पूरन धाम धाम अनेग ।४१।

(दोहा)

तित हित कै क्षितिपति सज्यो नितप्रति सहित सुचैन ।
मैनऐन ते नैन लखि चौक चाँदनी ऐन ।४२।

(चौपाई)

मनिन सुगंध बिसाहत सोई । चाहत बहुत जवाहिर कोई ।
हाटक रजत तुलत इक ओरा । एकै मुलवत हाथी घोरा ।४३।
एकै बसन पटंबर खोलैं । ग्राहक भाँति भाँति के डोलैं ।
यह छबि देखि बिप्र सुख पावा । चलि तब मध्य चौक में आवा ।४४।
एकै कहैं बिप्र इत आवौ । चाहौ सो हमसों फरमावौ ।
एकै अरज करैं नर नारी । बिलमौ साधु दुकान हमारी ।४५।

(दोहा)

छबिदायक लायक लख्यो बय किसोर मति जोर।
बर दुकान बरईसुवन बीरा रचत करोर।४६।
तासु पास सुखबास लहि माधो बैठो जाय।
करि प्रनाम सनमान करि बरई लाग्यो पाय।४७।

(गाथा)

महिर दीदारकारं। सह राखत निज सनेही जो नरा।
आसिक इस्क अपारं। कि जानत हीनं रस मानबर।४८।

(चौपाई)

वयस किसोर माधवा जैसो। लड़का हतो तमोली तैसो।
कहि गुलजार नाम तिहि केरो। माधव कह्यो मित्र यह मेरो।४९।
बाग तड़ाग हवा करि जाहीं। पल भरि कोऊ बिछुरत नाहीं।
लड़का वहुत नगर के आवैं। सवहिन ये दोनों भरमावैं।५०।
नर नारी पुरवासी जोई। माधो लखि सुख पावै सोई।
जती भेष पंडित अति लौना। नगरनरन कों भयो खिलौना।५१।
आवत जब देखे नर पावैं। आदर करि सवही बिरमावैं।
नीकी बस्तु किसी के होई। नजर करै माधो कों सोई।५२।

(दोहा)

धन बिनु पावत मान अति गुनमय पुरुष प्रबीन।
जैसे बाम सुलोचना राजत भूषनहीन।५३।

(सवैया)

नेह तजै घर की घरनी घर छोड़त मात पिताहू न छिछ्छा।
पुत्रवधू तनुजा अनुजा सुख पावहिं जो कछु होय फलिछ्छा।६६।
सेवक ते न समीप रहैं कवि **बोधा** घटै अँखियान सों निक्षा।
दोऊ परै सुखदायक होत हैं देस में, मीत बिदेस में भिक्षा।५४।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे आरण्यखंडे द्वादशस्तरंगः।१२।

(त्रयोदश तरंग)

अथ कामावती खंड

(दोहा)

मजलिस होत नरेस के द्विज सुनि पाई बात।
कठिन बड़ी जन ऊपरी तहाँ न ग्रावत जात।१।
दरद भरे द्वारे खड़े चिंता कीन्हीं चित्त।
कहि लहिये यो रंग क्यों ना वह रस ना मित्त।२।

(दंडक)

चोर को सनेही को है राड़ को सँघाती कहूँ
निर्गुनी को दायक सरोगी को बरा रसी।
निर्धन को ब्योहुरो सपक्षी ब्यभिचारिन को
ग्रौगुन को गाहक बिडंब उपचार सी।
बोधा कबि ग्रपनी ग्रनैसी को सहैया को है
पापी को सरीक परपीर को निवारसी।
गरजी को गरजी निवाज को गरीबन को
ज्वारी को जमान्दार भिखारी को सिपारसी।३।

(दोहा)

पढ़ि कबित्त बिनती करी द्वारपौरिया पाहिँ।
कहौ कृपा करि जौ हितू तौ हम भीतर जाहिँ।४।
यों जबाब द्विज कों दयो छरीदार उनमान।
गुसा होहिँ मो पर नृपति तुम्हैं बिदेसी जान।५।

(सोरठा)

छरीदार के बैन सुनि माधो चुप ह्वै रह्यो।
ग्रकबकात श्रुत नैन बधिकबिबस खग जाल ज्यों।६।

(दोहा)

बीना चार सितार द्वै द्वादस बजैं मृदंग।
चार ताल षट ताल मिलि सजै पाँच सुर संग।७।

(सोरठा)

माधो कर उनमान चोपदार सों यों कही।
मजा न होत निदान मजलिस मनुज प्रबीन बिन।८।

(दोहा)

मिरदंगी पूरबमुखी चल्यो सम्हारे जात।
ताको अँगुठा मोम को तातें ताल नसात।६।
नौ तेरा के बीच में नेवर काँकरहीन।
करत ताल सुर भंग तें रंग नसात प्रबीन।१०।
गुसा होत मुग्धा नटी सुर कठोर बरजाय।
सभा आँधरी जानिकै प्रगट न कहत रिसाय।११।
छरीदार जाहिर करी महाराज पर जाय।
परचो पा महराज ने द्विज कों लियो बुलाय।१२।

(चौपाई)

माधो कों राजा बुलवायो। तुरतहि विप्र सभा में आयो।
ऊभो भयो राय तिहि देखत। सभा लोग सब अचरज लेखत।१३।

(दंडक)

पाँवड़ी मुकुट खौर केसर लसत भाल
मीनाकृति कुंडल कपोलन पै छै रहे।
कुंदन बरन तन सुंदर मनोज जनु
बीना कर लीन्हें पोला पावन में ठै रहे।
लकुटी रँगीन औ प्रबीन ओढ़े पीत पट
कौलवत धोती फूलहार छबि दै रहे।

चंद्रवत आनन बिलोकिकै चकोरवत
चौंके से चके से लोग माधवै चितै रहे।१४।

(दोहा)

क्षिप्र बिप्र कों देखिकै सभा उठी भहराय।
पैर चारि चलिकै मिल्यो कामसेन नृप आय।१५।
करि प्रनाम राजा कह्यौ दूर किये त्रैताप।
त्यों असीस माधो दई तुव अखंड परताप।१६।
विद्यावान सुजान नर रूपवंत जो वाम।
जहीं जायँ पावैं तहाँ बड़ आदर इतमाम।१७।
नाम बूझि बूझी कुसल कामसेन करि प्रेम।
कही विप्र अब तौ भई तुव दरसन तें क्षेम।१८।
सिंहासन आसन दयो मुक्तामाल अनूप।
मानसहित कर पान लै उठिकै दीन्हों भूप।१९।
माधो के कंदला के झपटि गए जुरि नैन।
निकसि लड़त जिमि सूरमा खड़ी रहै दोउ सैन।२०।
सांगीतक नाचत त्रिया गावत गीत रसाल।
जाहि चाहि खग माधवा बींध्यो लालच जाल।२१।
नखसिख भूषन आभरन कहि षोड़स सृंगार।
लघु क्रम कछु सुरताल कहि कहिहौं नृत्य उदार।२२।

(सिखनखकथन)

(चौपैया)

बड़वारे कारे सटकारे केसन गूँदी बेनी।
मीतल के हीतल सीतल क्यों ब्यालवधू दुखदेनी।
रूपरास विच केसपास विच राजत माँग उदारी।
मनो धँसी घनस्याम मध्य तें ससि सों सुरसरिधारी।२३।
नीकी लसी लसी मुख ऊपर बंक अलक अलबेली।
गई दरार चंद्र के आनन त्यों मुख चारु नवेली।

नितप्रति नई कला कों धरि ससि तेरे मुख सों जोरै ।
सम न होय पूनो लौं सजि फिर कुहू रैन लौं फोरै ।२४।

(दंडक)

मदन सदन प्रानप्यारी को वदन ताकों
चाहि चाहि सुधाधर धीर न धरतु है ।
रहै निसिबासर समान अकलंक उर
संक सकलंक सोई मानि हहरतु है ।
बोधा कबि नितप्रति नौतम कला कों धारि
मास मास यों ही उपहासनु मरतु है ।
परवा तें पूनो लौं सो जोरिबो करत तैसे
पूनो ते कुहू लौं फेरि फोरिबो करतु है ।२५।

(भौंहकथन)

(कबित्त)

त्रेता माहिं साजो एक धनु भृगुनंद सोई
लीन्ह्यो रघुनाथ ने असुर वरियाने में ।
साजे द्वै धनुष नीके सीताजू के बालकन
कीन्हे जुद्ध भारी अस्वमेध जज्ञ ठाने में ।
बोधा कवि द्वापर में धनुष धनंजै साजो
करन के कारन कठोर सर ताने में ।
कलऊ में कीन्हीं महाबीरन के मारबे कों
कठिन कमानैं तेरी भौंह ये जमाने में ।२६।

(श्रवन)

(दोहा)

अति सुबेस सुखमासदन स्रवन तिहारे जोइ ।
जनौं एक रथ के लसत चक्र आयँ ये दोइ ।२७।

(अथ नेत्र)

(दंडक)

कारे सेत वर्न अनियारे भाल ही सृँगार
मारत जुरे तेँ ऐसे समराधिकारी हैँ।
रहत सुरंग चाहैँ सुर वहु नायकन
नित नव केलि करिबे कोँ हितकारी हैँ।
बोधा कवि चलत न मारग निबाह नाहि
नरबर पाइ मारे चाह ब्यभिचारी हैँ।
दृग मृग एक रीति सोँ बखाने माने वे तौ
काननबिहारी येऊ काननबिहारी हैँ।२८।

(दोहा)

लसत वाल के भाल मेँ रोरी बिंद रसाल।
मनो सरद ससि मेँ वसी बीरबहूटी लाल।२९।

(चौपैया)

मुकुर कपोल गोल गदरारे गाड़ैँ परीँ नवीनी।
जनु ससि ग्रसत राहु रस कारन गरुड़ अँगीठी दीनी।
लखि नासा को अजब तमासा सुवा सघन बन सेवै।
विद्रुम गलित भए अधरा लखि छबि प्रवाल नहिँ देवै।३०।

(दंतबर्नन)

(कबित्त)

अये हिरनाक्षी तू तौ हिरन करे हैँ स्याह
बिद्रुम गलित होत दर्पन तरकि गो।
पन्नग पताल सिह सेवत कदलिकुंज
चकवा बियोगी भयो बेल तौ भरकि गो।
बोधा कबि कोकिला फिरत ती बसंत ही कोँ
दंत काढ़े मंत सुवा बन कोँ सरकि गो।

चंद मंदकारी प्यारी मंद मुसकान तेरी
देखि दसनावलि कोँ दाड़िम दरकि गो ।३१।

(दोहा)

कामकंदला के लसत छावत इतो प्रकास ।
जनु रबि सन्मुख आरसी कर कंपित आभास ।३२।

(अथ चिबुकबर्नन)

(कबित्त)

तैँ तो हेरी हिर्न ओर हिर्न हेर्‌यो हरि ओर
हरि हेर्‌यो बिधि ओर गुसा योँ बिचार्‌यो है ।
तीक्षन कटाक्ष याके बिष सोँ सँवारे जाने
रंचक चितौन मेँ सुरंग कियो कार्‌यो है ।
बोधा कबि जानिकै सरोस हरिजू कोँ बिधि
ठौर ठौर सुधा को निवास योँ निहार्‌यो है ।
चिबुक ना तेरो बीर अमृत की चाँड़ बिधैँ
चंद्रमा के धोखेँ मुखचंद्र छेदि डार्‌यो है ।३३।

(चौपइया)

ठोढ़ी पके आम की बानिक तिल अलिछौन बिराजै ।
अल्प भार लचि जात ग्रीव तव मस्त कबूतर लाजै ।
कनकलता की बनिक बाहु बिय अँगुरी चंपकली सी ।
कीन्हीँ नखन लखत बहु लज्जित नखतन की अवली सी ।३४।
हाटकबरन कठिन उन्नत कुच गोल गोल गदकारे ।
कमल बेल गेँदा नारंगी चक्रवाकजुग वारे ।
बिबि कुच बीच सकीन संधि मेँ मन मतंग उरझानो ।
सकै न निकसि मृनालतार तहँ निकसि पार क्योँ जानो ।३५।
चंपक कमल चंद्रिका झूठी रँग पर वारौँ सोनो ।
रतनाकर की लहर निकट कटि रेखा तीननि मानो ।

कनकईँट सी पीठ डीठियतु कनक पिँड़ी उर लोनी ।
नाभी बर रोमावलि ब्याली कै मनमथ्थ मथोनी ।३६।

(अथ कटिकथन)

(कबित्त)

कमल मृनालहू तेँ दृगन महीन छीन
जोगी कैसी आसा पाइ रूप मानियतु है ।
सुमन सुगंध कबि अंकन अरथ जैसे
गनित को भेद साँचियो वखानियतु है ।
बोधा कवि सूत के प्रवान ब्रह्मज्ञान जैसे
चलत हलत तैसे योँ प्रमानियतु है ।
दृष्टि मेँ परै ना योँ अदृष्टि कटि तेरी प्यारी
ह्वैहै तौ बिसेष उनमान जानियतु है ।३७।

(चौपइया)

गुरु नितंव उरु है गदकारी लखि कदलीतरु लाजै ।
पिँडुरी गुल्फ सुढार सुल्फ अति चरन अंगुली राजै ।
लखियतु नखन रूप लखि अवली कनक जड़े जनु हीरा ।
पूरन भा की खनखन बाँकी एँडी ललित कहीरा ।३८।

(अथ आभूषनसृंगार)

(दंडक)

अंगराग भूषन बिविध मुखवास राग
केसपास मंजन योँ अंजन सरस की ।
अमल सुवास लोल लोचन चितौन चारु
हँसन लसन पाँव जावक परस की ।
गवन करी लौँ बानी कोकिला प्रबीन अति
पूरन सनेह चाह प्यारे के दरस की ।
सोरहो सृँगार साजै सहित बिलास राजै
कंदला अखाड़े बीच बारह बरस की ।३९।

(दोहा)

चोली सारी घाँघरो तरकसमय सब देखि।
तरकस सत्त मनोज को कामकंदला लेखि।४०।

(अथ सुबर्नभूषनबर्नन)

(कबित्त)

बेनी सीसफूल बीजबेनिया में सिर मौर
बेसर तरौना केसपास अँधियारी सी।
कंठी कंठमाला भुजबंध बरा बाजूबंद
ककना पटेला चूरी रत्नचौक जारी सी।
चोटीबंद डोरी क्षुद्रघंटिका नई निहार
बिछिया अनौटा बाँक सुखमा की बारी सी।
राजा कामसैन के अखाड़े कंदला कों पाय
माधो चकचौंधि रह्यो चाहिकै दिवारी सी।४१।

(दोहा)

फूलहार तियहिय परसि चलत बयार सुबेस।
बिरहज्वाल तन बिप्र के जाहिर होत कलेस।४२।

अथ बानीबर्नन

(कबित्त)

तूतिया मुनैया सुआ सारिका कपोत हंस
कोकिला मयूर अलि अवली बखानी है।
चक्रवाक खंजन पपीहा मैना चानडूल
दहिये दरेबा खूब खूमरी बिकानी है।
बोधा कबि स्वर न तँबूराहू को ठहरात
जलऊतरंग भुहचंग वाकुहानी है।
ढोल की गुमक बीन बाँसुरी सितार वारे
कंदला तिया की ऐसी अति मृदु बानी है।४३।

(अथ जलदताबर्नन)

भौँरियौ भवन केती रन मेँ नवन केती
चंग मेँ छवन केती काहू ने निहारी है।
फिरकी फिरन केती घेरनी गिरन केती
मोर मेँ थिरन केती किन्नरीकुमारी है।
बोधा कवि बाजी औ कमान मेँ मुरन केती
लक्का मेँ लगन कौन उपमा विचारी है।
गिरा गिरावाज लोट लोटन कबूतरी की
कंदला तिया पै एती तरलाई वारी है।४४।

(सांगीत)

(दोहा)

छंग मुहर गजमुहर पुनि लछ्छ ब्रह्म सब ताल।
तिवरी तांडव भेद सह नचत कंदला बाल।४५।

(छप्पय)

धा धा धा धिक निक धुकार धिं धिं सुरमंडित।
तंत्रिगिदं कं तं त्रिगिदं त्रगि त्रगि रव छंडित।
था था था थृगदिक थृकंत थुंगी धुनि थुगिरट।
फं फं फं फृगदिक कृकंत बोलत संगी नट।
इमि सज नेवर बीनाहि मिल झिझिम झुम झुंम सुर करत।
कं कृगद कृगदि ककतंतलं लृगति लखित आनँद बढ़त।४६।

(दोहा)

पल सूझै सूझै बहुत बूझै इतिक मसाल।
आफताब लौँ ह्वै रही उदै कै रही बाल।४७।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभानसंवादे कामावतिखंडे अखाड़ोवर्णनं त्रयोदशस्तरंगः।१३।

(चतुर्दश तरंग)

इस्क मजाजी नाम । अथ प्रसंग ।

(तोटक)

ऋगदं त्रगदं त्रगदं त्रगदं । कुकथौ कुकथौ कुकथौ थृगदं ।
घननं घननं घननं घननं । धिकतं धिकतं धिकतं तननं ।१।
ऋकतं ऋकतं ऋकतं ऋकतं । फृगदं फृगदं फृगदं करतं ।
गृगधं गृगधं गृगधं गृगधं । ततथै ततथै ततथै थृगदं ।२।

(चौपाई)

त्रिय नाचत प्रेम उमंग भरी । नहिँ बाचत एकध नृत्य करी ।
लखि नृत्य अपूरव प्रेममई । द्विज के हिय लालचबेलि बई ।३।

(सोरठा)

बेला जल भरि सीस धरि बाला थुंगा नची ।
सहित सभा नरईस वाह वाह माँच्यो बचन ।४।
द्वितिय नृत्य यहि रीति थारी में मुक्ता धरे ।
लटन गुहे कर प्रीति गति औ सुर साधे दुवौ ।५।
तीजे अद्भुत येह थारी पै बाला नची ।
सौ सौ दुहरी लेह गति न जाय थारी बचै ।६।
चौथे बटा अनेक फेरत नाचत सुर भरत ।
भूमि न आवत एक सिर पर छाय बिमान जत ।७।
पंचम अद्भुत और बटा एक कुच पर धरयौ ।
अंग अंग सब ठौर कर न छुयौ कर से फिरै ।८।
चौंसठ कला प्रबीन बीन बीन बाला नची ।
तीन लाख दै तीन सभा सहित साहब भयो ।९।
त्रिय को गुन उनमान रीझि सबै राख्यो कछू ।
अधिक अपुनपौ जान बिप्र न अधिकारी गुनी ।१०।

(मोतीदाम)

नची फिर तंडव मंडव जोर। घने घनकावत नेवर घोर।
तहाँ नटवा उचरै ततकार। चलै दुहरी तिहरी लहि नार।११।
अदा अँग अंग उमंगत बेस। इते गुन कौन गिनै विन सेस।
बजे जहँ बीन नवीन सितार। घने मिरदंगन रंग अपार।१२।
तहाँ मुहचंगन की गति जोर। मढ़ै खट तालन के कल सोर।
चली गति जाय अदा सुर सोय। कहूँ तिल आध असाध न होय।१३।

(दोहा)

कर पद दोनों चला कर काँटो कंठ लगाय।
मन सुनार तौलत सुघर साज वटहरा नाय।१४।
चंचरीक चातुर्य चित कुच पर बैठो आय।
काटै उर पीड़ा वढ़ै सकै न ताहि उड़ाय।१५।
अदा जात कर के छुए मुख बोले सुर जाय।
खैंच पवन कुचसोत सों दीन्हों भृंग उड़ाय।१६।
सभासहित साहिव तहाँ तिय की कला लखै न।
रीझ वड़ी माधवा उर उर में जीव रखै न।१७।
दयो त्याग महराज को माधोनल तिहि वार।
देखत सब दरबार के दयो नटी पर वार।१८।
तिय जानी यों जानकी जानी विप्र सुजान।
गिरजापतिबाहन जथा सभा आँधरी जान।१९।
गुनमय गुन माधवा को पुनि बोली नवलाह।
विप्र तिहारे गान की मेरे चित में चाह।२०।

(माधवबचन)

(पद्धरिका)

यहि राजसभा मेरो न काज। हौं गहौं बीन गावन न राज।
यह काम होय कसबीन केर। तब ज्याव दीन कंदला फेर।२

द्वै ठौर होत मुक्ता बिसाल। इक उदधि एक गजराजभाल।
ते लसत सोभ राजान ग्रीव। इमि बिप्र विचारौ सकतसींव।२२।

(माधवबचन)

(सोरठा)

मेरी तान कुरूप रंग भंग सिगरो करै।
उत्तर दीन्हों भूप द्विजमुख प्रेमबखान सुभ।२३।
गई माधवै भूल सुधि पुहुपावति नगर की।
पंचम गायो मूल लीन्हीं ब्याधि बिसाहि करि।२४।

(तोमर)

तव माधवा लै बीन। सुर ताल संजुत कीन।
जिहि ठौर रंचक वान। जिनके परी वह कान।२५।
वह चकित भो तिहि ठौर। पगु तौ धर्‌यौ नहिँ और।
सिगरी सभा अरु भूप। ह्वै रहे चित्रसरूप।२६।

(मोदक)

माधव ने कर बीन लियो जव। राजसभा यह हाल भयो तव।
जो जिहि ठौर रह्यो जिहि सूरत। सो लखिये तिहि ठौर बिसूरत।२७।

(दोहा)

प्रथम तान सुनि तिया की मोह्यो तन मन विप्र।
पुनि फिरि द्विज की तान पै तिया चकित भइ क्षिप्र।२८।

(चौपाई)

जदपि हतो राजा फरमायो। माधो तदपि वामहित गायो।
गुन के वस गुनवंत बिसेखी। सुनु सुभान यह आँखिन देखी।२९।

(दोहा)

द्विज के चित बर तीय है यह बर ती मो जोग।
सो कीजै जाते बढ़ै याके हिये बियोग।३०।

(चौपइया)

जानो नहिँ माधो गायो का धो पवन प्रचंड भयोई।
देखत ही हालै बुझीँ मसालै अचरज चाहन बोई।
वह बाल सयानी हिय अकुलानी कर बर बीन सुधारो।
दीपक तहँ गायो अतिथि सुहायो बरी मसालैं चारो।३१।
माधो योँ देख्यो अचरज लेख्यो पुनि घननाद बखानो।
पल अंतर नाहीँ दसो दिसाहीँ उमड़ि मेघ घहरानो।
तब तिय खिसियानी अतिहि रिसानी सारँगनाद कह्योई।
सुर सुनकर ताको दिस दस ताको खुलि घनस्याम गयोई।३२।

(सोरठा)

माधो बेपरवान रीझो तिय की तान पै।
कीन उचित उनमान तरुनी पै जादू तरल।३३।

(चौपइया)

पुनि कर गहि बीना अचरज कीना बाल विकल करि डारी।
सुर ताल नसानो राग भुलानो थरथर काँपी नारी।
यह भेदनि मानो क्षितिपति जानो गुसा चित्त में आनो।
तीक्षन करि भौँहैँ द्विज के सौहैँ बोल्यो करकस बानी।३४।
बीना कर लीने वदन मलीने अबहीँ द्वारे आयो।
हौँ बिप्र जानिकै प्रीति मानिकै आदरसहित बुलायो।
सिंहासन दीन्हो आदर कीन्हो जलजमाल पहिराई।
ये ते पर वारो सबै बिचारो करि करिकै अधिकाई।३५।

(दोहा)

क्षितिपति ही तिहि दै सकत मेरे आगे दान।
तू अधिकारी करि लई निछु करवायो न्यान।३६।
ये कहि ये लहि का मजा सर्बस दीन्ह्यो त्याग।
भयो रंक तैँ रंक फिर कौन रीझ अनुराग।३७।

(माधवबचन)

अये राज या रीझ की सीझ न दीजै भूल ।
चतुरहीन तेरी सभा जैसे मधु बिन फूल ।३८।
तुम काहू देखी नहीं या की कला कमान ।
हौं साहस बल कै तहीं आड़ी दै गिरमान ।३९।

(सोरठा)

चंचरीक चित चोर बैठो तिय के कुचन पर ।
काढ़त कीन्हों जोर ताहि उड़ायो जुक्ति करि ।४०।
उर की मेटी पीर सुर औ गति राखी दुवौ ।
अस्तन सोत समीर खैंचि उड़ायो भृंग कों ।४१।
दयो नटी पर वार त्याग तिहारो दयो सब ।
सीस दयो नहिं डार संक तिहारी मानिकै ।४२।

(राजाबचन)

(दोहा)

गयो ताल सुर भंग हो मोह छियो नहिं देख ।
तू या नटिनी पै करी जादूगरी विसेख ।४३।
है मजलिस कीन्हीं विघन तू गुन के अभिमान ।
पै अति सरजहु तें गजब गुसा हमारी जान ।४४।

(माधवबचन)

करिये गुसा बिबेक करि महाराज उनमान ।
संन्यासी दीजै छुरी यह तौ भली न जान ।४५।
है पूरब गाथा सुनी सो अब सत्य लखात ।
करक करी के पाँउ की क्यों खर दागे जात ।४६।
ताल गयो कंदला पहँ मो सह होत सरोस ।
कपिला नाहिंन कूटिये हरहाइन के दोस ।४७।

रीझ हमारी तान की आनकान करि राज।
सो मिटाय चाहत करो इतराजी को साज।४८।

(सवैया)

कै कै अनेक कला नटवा चढ़ि बाँस पै लाख तरा तन तोरत।
ढोलिया यों कहै हौं न बदौं इत आपु दिवैयन के कनफोरत।
बोधा तिन्हैं पै कहा कहिये गुन कों पहिचान नहीं दृग जोरत।
रीझि की बूझि कछू न करैं फिरैं खीझ के खोजन कों टकटोरत।४९।

(सोरठा)

वाह वाह करि जात रीझे पचै सुमेर सी।
करै घनो उतपात खीज तना सी ना पचै।५०।
रीझन सब सुख देइ खीझन खाहै खड़ग सिर।
ऐसे नृप जिन सेइ रीझ खीझ दोऊ विफल।५१।

(दोहा)

कौन करी है रीझ की अवही मौन गहौ न।
जौन करी है तौन अव मो सों जुक्ति कहौ न।५२।
मैं रीझो याके गुनै मेरे ये गुन पाहिँ।
मेरे याके चित मे विगो दूसरी नाहिँ।५३।

(सोरठा)

विषहर विष को मूल तजै न जो पायन परै।
होत मीन के तूल बाजीगर को राग सुनि।५४।
रागरीझ उनमान हिरन कहै हिरनीय सों।
कहा दीजिये दान यहै काम या वधिक को।५५।

(हरिनीबचन)

(हरिगीतिका)

सुनि ताहि चित्त उमाहिकै अवगाहि गुन कर लीजिये।
सुख पाय रीझ बनाय दोनों देह भिक्षा दीजिये।

गुनग्राम बधिक सुजान आसिक पायकै सुख पायहै।
मृगछाल हाल बिछाय तापर राग सुंदर गायहै।५६।
यह समुझिकै मजबूत दोनों देह भिक्षा देत हैं।
न समान तिनके आन धन मृगऊ यहै गति लेत हैं।
चित दत्त जाको नित्त जामें सो टरै नहिं अंग तें।
तन त्यागहीं हित रागहीं सुर ते कढ़ैं पुनि अंग तें।५७।

(दोहा)

देह दान दै बधिक कों मरयो मृगा परबीन।
मेरी छाला पै सदा मीत बजावहु बीन।५८।

(सोरठा)

मृगा रागबस होहिं बधिकन सों विनती करैं।
पुनि तू मारै मोहिं अबकी तान सुनाय दै।५६।

(दंडक)

स्तुति को सुन्यो न गान पात्र को दियो न दान
सत्रु की करी न हानि छल बल धायकै।
कियो न परायो काम रसना भज्यो न राम
रसमै गही न बाम हिय लिपटायकै।
बिद्या को करो न 'भ्यास माँगनो गयो निरास
बेनी पै करो न बास एकौ घरी जायकै।
बोधा ने बखान कीन्हीं बृथा गुजरानी यातें
बानी पछितानी ऐसे डीलन में आयकै।६०।

(दोहा)

गुजर करत हैं सुघर नर नादबेदसंजोग।
बहुत कलह भोजन बहुत बहु सोवैं सठ लोग।६१।

(राजाबचन)

हम मूरख सौ बेर हैं तुम निस्चय परबीन।
पर अब मेरे राज में बिलमो एक घरी न।६२।

(दंडक)

हिल मिल जानै तासों मिलकै जनावै हेत
हित कों न जानै ऐसो हितू न बिसाहिये।
होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै
लघु होय चलै तासों लघुता निबाहिये।
बोधा कवि नीति को निबेरो याही भाँति अहै
आपकों सराहै ताकों आपहू सराहिये।
दाता कहा सूर कहा सुंदर प्रबीन कहा
आपकों न चाहै ताकों आपहू न चाहिये।६३।

(दोहा)

अति सरोष रुख राज को लख्यो कंदला बाल।
सीख माधवा कों दई नीकी यह ततकाल।६४।

(सवैया)

चाह कै चित्त मरालन की निज हाथ तें तू जिन बाज उड़ावै।
गंग के नीर की आसा करै सरिताजल छोड़ि कहा बनि आवै।
जो तजने तौ तजो हितकै कवि **बोधा** न वाद बितर्क वढ़ावै।
संपति सों जौ प्रबेस नहीं तौ बृथा क्यों दरिद्र सों तोरि नसावै।६५।

(दोहा)

तव असीस नरईस कों दई बिप्र कर जोरि।
हौं भिक्षुक तुम भूप हौ खोट बकस सब मोरि।६६।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे कामावति खंडे अखाड़ोकथन चतुर्दशस्तरंगः ॥१४॥

(पंचदश तरंग)

इस्क मस्तान नाम

(सोरठा)

भागवदो फल देखि बड़े ठौर पहुँचे कहा।
ब्याल संभुगल पेखि ते समीर भखिकै जियत।१।

(दोहा)

बूड़े बूड़ा सहज ह्वै लीन्हों एकै गोत ।
कहा दोष दरियाव को भाग आपने होत ।२।

(छपदा)

बृथा सृष्टि स्रष्टा अनीति लखि लोक लोकपति ।
रबि ससि सेष सुरेस संभु जलजात जात रति ।
क्षर अक्षर अक्षरअतीत जो तियसरूप गनि ।
पल पल प्रेरत काल जहाँ लगि पंचतत्व भनि ।
सायत अधीन संसार सब दृष्टवान उनमान मति ।
वह कर्मरेख लिखखी सोई सत्य सत्य अदि्दष्टगति । ३ ।

(दोहा)

उद्यम सों अरु कर्म सों एकै भेद लखात ।
सो सुन गरुड़ उलूक की कथा लोकविख्यात ।४।

(चौपाई)

उत्तर कों तजि आयो दक्षिन । पर ना मिटो कर्म को लक्षिन ।
हरि गिरिधर कों उर धरि लीन्हों । राजसमाज त्रिप्र तजि दीन्हों ।५।
ता पीछे कंदला प्रबीनी । तासु विदा राजा ने कीनी ।
सो समीप माधो के आई । अपनी दासी सों फुरमाई ।६।

(दोहा)

ताहि पठायो कंदला जा कोबिदा नाम ।
तूँ कह माधो बिप्र सों चलो हमारे धाम ।७।

(माधवबचन)

(तोमर)

सुन कंदला परबीन । इहि भाल विधि लिखि दीन ।
दुख कोटि सुख को नास । तौ लहौं कहा सुबास ।८।
हौं उनहिके आधीन । आयो इतै परबीन ।
यह क्रूरकर्म कराल । इनही कियो यह हाल ।९।

इत भई प्रापति येह । तुव दरस परस सनेह ।
जद्यपि न प्रापति और । तुव दरस सुखसिरमौर ।१०।

(सोरठा)

प्रापति जदपि कुसंग तदपि सुसंगु न छोड़िये ।
भो मरालतन भंग कौवा की संगति करी ।११।

(दोहा)

उचित न रहिबो देस यह सुचित न रहिबो वाल ।
लेहि राखि को काहि तब कोप करै क्षितिपाल ।१२।

(कंदला)

(झूलना)

भय त्यागि मो हित लागिकै अनुराग प्रीति सुचित्त ।
मम गेह में वढ़ि नेह में सुख देह देहै मित्त ।
रतिरंग प्रेमप्रसंग राग उमंग नितप्रति गाइये ।
यक सेज मैनमजेज में रसलेजपुंज वहाइये ।१३।
तुव पाँय पाय प्रयाग से सेऊँ सदा करि प्रेम ।
तनु वारने मनु वारने धनु वारने इमि नेम ।
गुन गेह के वरने कहै सुनि वचन सहितविवेक ।
द्विज चल्यो ताके धाम कों भजि राम कों तजि टेक ।१४।

(सोरठा)

आई अपने धाम द्विज कों लैकै कंदला ।
मनमथ यह निज वाम मिले आय संजोग तें ।१५।
दरसन ही लौं प्रीत परसन ही हिय लौं भयो ।
सिसुता जान सभीत नृपति बाल बेधी नहीं ।१६।
माधो पहुँचो आय मजलिस मुजरा तीसरे ।
आप जोग सुख पाय मारग सित पंचमी तिथि ।१७।
हवाहवेली बीच सुबरन लखि सुवरन सहित ।
मचत सुगंधन कीच चित्र निहार विचित्र जित ।१८।

सुरपुरवारो बाग फुलवारी पर वारने।
वापै अंग तड़ाग मध्य महल में महल निजु।१६।

(अरिल्ल)

जटित दुलीचन भूमि जड़ित सब सोहती।
तनी रावटी पेस जरी जर जो हती।
तहँ प्रजंक को तौर न और वखानिये।
नखतन जुत नखतेसमरीची मानिये।२०।

(दोहा)

लोकरीति आतिथ्य करि प्रीतिरीति वित जाव।
लै बैठे निज सेज में दरसावो रतिभाव।२१।

(सोरठा)

माधव मृगपति जान कामकंदला पदमिनी।
कीन्ही रति उनमान निसा पंचमी पाय तिथि।२२।
होत सरद ऋतु माहिँ चारे ऊपर कीट इक।
दई कंदला काहिँ खैरौरी ता फेन की।२३।

(सुमुखी)

बीरा बिप्र के कर खात। तिय के कँपे थरथर गात।
ऊग्यो अंग अंग अनंग। समझो कोप को यह अंग।२४।

(दोहा)

स्वेद कंप रोमांच फुर अस्रुपात जंभात।
प्रलय बेबरन भंगसुर तन तोरत अलसात।२५।
प्रगट होत पियपरस तें ये लक्षन तियअंग।
निरखि कंदला देह ते माधव चाह्यो रंग।२६।

(सुमुखी)

तिय की गही पिय ने बाँह। तब तिय कही नाहीं नाँह।
मोकों दरद ह्वैहै मित्त। ऐसी आनिये नहिँ चित्त।२७।

पग के छुवत उलटी बाल। माधो गल गह्यो त्यों हाल।
ज्यों ज्यों करत कारन बाम। त्यों त्यों बढ़त द्विजहिय काम।२८।
नाहीं कहत बारंबार। टूटत जलज मनिमय हार।
कुच के छुवत झुकि झहरात। तकिया ओर टरकत जात।२९।
कंमर ग्रीव पकरी दोय। बाला रही दूनर होय।
सखियन सों कहै तुम धाय। मो कहँ आय लेहु बचाय।३०।
राखी दुवौ जंघन बीच। कुच भुज नैन दैकै घींच।
माधो गही बाल रिसाय। जंघा भुजा ऊपर नाय।३१।
लागी कँपन थर थर बाम। पिय पै चलत काँपै ठाम।
उझकत झुकत यों थहरात। चलदलपात लौं हहरात।३२।

(दंडक)

उझकि चलत झुकि सरकि उसीसे ही कों
तरकि करकि भौंहें होत अलबेली की।
सरकि सरकि सारी खरकि खरकि चूरी
मुरकि मुरकि कटि जात यों नवेली की।
बोधा कवि छहरि छहरि मोती छहरात
थहरि थहरि देह कंपत न केली की।
नीबी के छुवत प्यारी उलथि कलथि जात
पौन लागे लोट जात बेली ज्यों चमेली की।३३।

(सोरठा)

सुनि प्रबोध हो जाय साँची तें राची अधिक।
झूठी निपट सोहाय बाला की अरु सुकबि की।३४।

(भुजंगप्रयात)

घने घोर घुँघ्रून के सोर छाये।
घटा से चटाके उमड़ मैन आये।
खुले केस चारो दिसा स्यामता सी।
दियो देह दीपै तमी में छटा सी।३५।

परै मोतिया जो गिरै बूँद भारी ।
मची स्वेद की कीच यों देह सारी ।
तहाँ इंद्रपीनाक सी वाँक भौंहैं ।
तिन्हों के परे खौर त्रैरेख सौहैं ।३६।

परै पायँते ओर से वज्र भारी ।
धरा सी तहाँ जोर धड़्कै हि नारी ।
कँपे सैल से पीन दोऊ उरोजं ।
बली सों चली है दुरचो तो मनोजं ।३७।

तहाँ भूरिआँ चूड़िआँ चारु बोलैं ।
मनो कोकिला भेक झिल्ली कलोलैं ।
इतै प्रेमसंग्राम **बोधा** वखानो ।
मघा मास कैसो तमासो पखानो ।३८।

(कबित्त)

प्यारे जैतवारे के बरैया कुच दोनों मल्ल
जुद्ध के करैया कहूँ टारे न टरत हैं ।
सुभट बिकट जुरे जंघे वलवान ते तौ
भुजन सों लपटि न नेकु विहरत हैं ।
बोधा कबि भृकुटी कमान नैना बानदार
तीक्षन कटाक्ष सर सेल से परत हैं ।
दंपति सो रति के बिहार बिहरत तहाँ
घायल से पायल गरीब बिदरत हैं ।३९।

(दोहा)

छल बल बालम बाल सों लयो मजा करि केलि ।
नवढ़ा बाल खिलायबो जथा बाज कों खेलि ।४०।
सुसकत हिलकत हिय लगी नहिं पिय सों बतरात ।
निद्राबस चौंकत चकित उझकि झझकि सतरात ।४१।

(चौपाई)

भोर भयो तमचुर रव कीन्हों। तब उठि माधव बीना लीन्हों।
माँगी बिदा कंदला पाहीं। कर गहि बाल कही कै नाहीं।४२।
अहो यार चहिये नहिं ऐसी। अब तुम बात कहत हौ जैसी।
करी बिहाल इस्कमग मोहीं। अब मैं जान देहुँ नहिं तोहीं।४३।

(दोहा)

भूलि न ऐसी भाखिये ऐसी कटुक जबान।
रतनाकर सो मथन करि कहत कितै अब जान।४४।

(चौपाई)

तेरा आसन इक दिन माहीं। सुरत जुरयो ता बाला पाहीं।
भई सुमार मारवस प्यारी। ताहि आय सब सखिन निहारी।४५।

(दंडक)

मार तें कुमार सुकुमार अंग अंग जाको
नेकु न समान ऐसी निद्रा माँझ मोई सी।
अरुन कटाक्ष तारे टरैं नाहिं टरि रही
स्वेदकनछाई देह दरद में भोई सी।
बोधा कवि टूटे हार छूटे बार छहरात
कज्जल कपोल माहिं सारी रैन रोई सी।
धोई ऐसी सूरत बिसूरत सी सेज बीच
पड़ी वह बाल देखी छोई सी निचोई सी।४६।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे कामात्रतिखंडे पंचदशस्तरंगः ॥१५॥

(षोडश तरंग)

इस्क मजाजी नाम

(पद्धरिका)

तब सखिन आय दीनो जगाय। क्रम सहित तिन्हैं मज्जन कराय।
साजे सृँगार बाला प्रबीन। द्विज नित्यनेम करि बीन लीन।१।

इक सेज बैठि उमगे उमेद । लागे बतान ते नादभेद ।
बूझो सु कंदला बाल मंत । मोहिँ नादभेद समझाव कंत ।२।
भजि गौरिनंद कर बीन धारि । द्विज लग्यो कहन नादै बिचारि ।
है पुराचीन मत लख्यो जैम । हौं कहत राग को भेद तैम ।३।

(दोहा)

राग भूप भैरव प्रथम बाला पाँच बखान ।
लाला तिनके आठऊ कहनो बिबिध बिधान ।४।

(चौपाई)

प्रथम भैरवी गावत लोई । ताके परे बिलावल होई ।
कहि देसाख वहुरि अस लेख । बंगावली पंच तिय देख ।५।

(दोहा)

ललित बिभासा पूरिआ मधुमाधव तिहि ठान ।
कहि भूपाली अल्हैया सहित सुहेला जान ।६।
दूजे गावत गुनीजन मालकौस्तुभ राग ।
उपज न ताके सुने तें नर नारी अनुराग ।७।
धनासिरी जुवसिरी कहि जैतसिरी तिन गाय ।
माल रूपदौनाहिश्री तिया पाँच ठहराय ।८।

(चौपाई)

मारु सूर गंधार बखान । धाराधर बड़हंसै जान ।
गौरिगिरी टोड़ी पुनि गावै । रामकली गुनकरी बतावै ।९।

(दोहा)

पुनि हिँडोल गावत सुजन तीक्षन ताकी तान ।
सुनत होत ग्रेही जती जती ग्रेहरतिवान ।१०।
चंदबिब मंगला कहि परमानंद हमीर ।
कहि हिँडोल की कामिनी स्यों तैलंगी बीर ।११।

(चौपाई)

सिसिर बसंत अहीरी कही। देसगिरी तित पर लै कही।
भरज अरज कैमोद बखान। काफी सहित तिया वै जान।१२।

(दोहा)

कह तू दीपक राग की प्रथम गूजरी जोय।
काबेरी पटमंजरी पंचक नाहीं होय।१३।

(चौपाई)

कामोदी कुंतल पुनि गावै। कमल कुसुम कल्यान बतावै।
गौर सारँग सोहनी जान। माला सहितहि आठ निदान।१४।

(दोहा)

सिरीराग के संग कहि गौरी पटरानीय।
करनाटी आसावरी सारँग धनासिरीय।१५।

(चौपाई)

कुकुभ गौर गंभीर विसेख। कुंभ साददा सोरठ लेख।
कहियतु ईँमन पुनि केनीर। ये सुत सिरीराग के बीर।१६।

(दोहा)

पुनि नृप मेघ बखानिये बाला मेघमलार।
आसगुनी गुन फुनफुनी सायथ धूरिय धार।१७।

(चौपाई)

पुनि ताके सुत आठ बखान। केदारो बिहागरो ठान।
संकर नट स्यामा पुनि होय। जलधर सूहो कालिँग सोय।१८।

(दोहा)

राग रागिनी पुत्रजुत लघुमति कह्यो बखानि।
कला भारजा ना कही ग्रंथ बढ़त अति जानि।१९।
इतै माधवा कंदला लूटत सुख की हाट।
उतै सुवा बरईसुवन हेरत द्विज की बाट।२०।

मुवा किधौं कैफी हुवा इस्क तुवा कै दीन।
कुवाँ परयो आयो न द्विज सोचत सुवा प्रबीन ।२१।
भानु उदै तें अस्त लौं गायो राग समस्त ।
प्रथम जाम जामिनी जब रहस रच्यो दिल मस्त ।२२।

(मोतीदाम)

लयौ तब माधव बाहि मृदंग । नची बनिता जुत प्रेम उमंग ।
बजैं निबरा बिवरा तिन माँह । कभू सुर एक कभी सत जाँह ।२३।
रह्यो मिरदंग गले मिलि एक । कढ़ै सुर औ गति अक्षर तेक।
नची तिवरी पुनि ताडव जोइ । कवित्तन छंदन की तन सोइ ।२४।
अदा अँग अंग उमंगत जोर । उठै द्विज के तन मैनमरोर ।
दुवौ गुन पै अति रीझत दोय । रहे मिलि लोहहु चुंवक होय ।२५।

(सोरठा)

अर्द्ध रैन गुजरान जब जानी द्विज माधवा ।
लगि वाला के कान कह्यो सुरति कीजै मयन ।२६।

(द्रुबिला)

वह कोबिदा जो बाल । तिहि रची सेज बिसाल ।
पुनि सजे भूषन बेस । पिल सूजवार सुदेस ।२७।
तित दंपतिहि पउढ़ाइ । वह गई झरप लगाइ ।
तब माधवा उनमानि । रति करी तजिकै कानि ।२८।

(भुजंगी)

गही बाल की हाल ही पीन छाती ।
भई अंकु नौ को हिये यों डराती ।
कहै नाथ पै हाथ छाती न धारो ।
हित् जान हित् मान द्या उर् बिचारो ।२९।
निसा रंग सफ्जंग कीन्हों बिहानो ।
हिये धर् धरा सो नहीं थिर् थिरानो ।

हिये लाग सोवो न होवो अधीरं।
कहा भीर ऐसी न तोरो सरीरं।३०।
गह्यो माधवा कोपिकै लंक झीनी।
हकारं नकारं सुरं बाल कीनी।
दिया मेल डारो उघारो न देहं।
छुवो ना पिया मो हिया पाइ येहं।३१।
करै ताब्रिया फाब्रिया पीउ काहीं।
रजा यों मजा केलि के ठौर नाहीं।
करै कोटि सीबी गरीबी बतावै।
सुने तें उन्हें माधवा चैन पावै।३२।
करै जोर झक्झोर उल्छार जंघै।
लगै बाल के चार आसू उलंघै।
हिलक् के फिलक् के नहीं होत साँती।
किलक् के पिया चाह भै लाज माती।३३।
दचक्के मचक्के घने सोर चारो।
महीडोल सो रावटी में निहारो।
परो प्रेमसंग्राम को सो बखानै।
करै सोर पायल्ल घायल्ल मानै।३४।

(सोरठा)

लखि मुक्ता छविधाम सकल सेज फैले फिरैं।
मनो चाहि संग्राम पुहुपबृष्टि देवन करी।३५।

(दोहा)

तरल तरंगिनि तरुन की पैयत रति के ठौर।
सुनत मान संसार में अंमृत झूठो और।३६।

(दंडक)

काहू कह्यो अंमृत कवित्त के निवेदन में
कविन बतायो प्रेमगान में लसतु है।

प्रेमगान अंमृत बतायो है फनिदहू के
फनिप बतायो छपाकर में बसतु है।
छपाकर कह्यो सुधा साधुन की संगति में
साधुन बतायो बेदऋचा दरसतु है।
बेदऋचा अंमृत बतायो हमैं **बुद्धिसेन**
तरुनी की तरल तरंगन रसतु है।३७।

उन्नत उरोजन में दृगन सरोजन में
भौंहन के ओजन में मंद मुसक्यान में।
रसना दसनहूँ में कंचुकी कसनहूँ में
अंजन रसनहूँ में बेनी सुखदान में।
बेंदी के मसकिबे में नाहीं के कसकिबे में
रोस कै ससकिबे में रस की रिसान में।
भूले कोऊ अंत ही बतावत हैं **बुद्धिसेन**
अंमृत बसत है बिसेष नवलान में।३८।

रसहीन जान्यो जुवापन सो जहूरा पाइ
छाती और नजर के नेजा जो नहीं लये।
भए न दिवाने थोड़ी मुरि मुसक्यानहूँ में
कंचुकी कसन कुचकोर सों नहीं हये।
बोधा कबि बारन बधे न छूटे छूटी लाज
कसक में कसे नाहीं सी सी सों नहीं नये।
नेह प्रानप्यारी के न हारचो देह गेह ऐसो
जो ना इस्क जानो सो तौ मानुष बृथा भये।३९।

(चौपाई)

रहत कंदला के घर माहीं। द्वादस दिन बीते तिहि काहीं।
सर्बस सुख सनेह परिपूरन। मन भो इस्कपंथ पर चूरन।४०।
खूबी को बरनै कबि येती। मिली बिप्र माधव कों जेती।
धन औ गुन औ रूपनिकाई। मनबांछित माधोनल पाई।४१।

पै यह होनहार हो जैसी। सुध बुध्र देत जीव कों तैसी।
नृप की भय माधोनल माने। निस्चै प्रीत न निस्चल जाने।४२।

(दोहा)

जुदी सेज जुवती तहाँ जो द्विजद्रोही कोइ।
हुक्म न मानै भूप को अनायास दुख होइ।४३।
जौ कदापि राजा सुनै यह मेरो बिरतंत।
तौ विसेष मरने परै मो कों कछू न तंत।४४।
कामसेन रूसो इतै उत गोबिंद भूपाल।
इतहि न मिलसी कंदला उत लीलावति वाल।४५।

(सोरठा)

देही तें सब होय नेह ग्रेह सुख तेह पुनि।
अपने हाथ न कोय जद्यपि नहिँ तन आपने।४६।

(झूलना)

तब उमगि माधव कंदला सों कही चित की चाह।
परदेस कों दीन्हीं विदा इहि देस के नरनाह।
यह खवर मेरी पावही तौ सिगर होहिँ अकाज।
कवहूँ न कीजै जानके जिय जानहार इलाज।४७।
जग जियत रहिहौं फेरि ऐहौं भावदी तुव पास।
तुव आस जौ लौं स्वास मो तन हो न मित्त उदास।
यह सुनत पियरी भई प्यारी परी पियरी गात।
दृग उठत भरि भरि चलत ढरि ढरि मुख न आवत बात।४८।
गिरी परी ढाढ़ै दरद बाढ़ै रही गर लिपटाय।
कर धार देखो नारिका की नारिका न लखाय।
तब माधवा उर संकि कै भरि अंक लीन्हीं वाल।
सरमिंदगी उर आनि कीन्हीं रिंदगी ततकाल।४९।

(दोहा)

मेरो मन मानिक बिक्यो प्यारी तुव गुनहाट ।
मैं कीन्हीं तो सों हँसी तू कत करी निराट ।५०।

(सोरठा)

हे दिलवर सुन बात निज जिय की जुवती कही ।
पिय विदेस कहँ जात ते पसु जे सुनिकै जियत ।५१।
बोधा धृक वह जीव जो प्रीतम बिछुरत जियत ।
बिछुरत देखे पीव ऐसें दृग फूटे भले ।५२।
बधिर भले वे कान जे प्रीतम बिछुरत सुनैं ।
बोधा धृक वे प्रान प्राननाथ बिछुरत रहैं ।५३।
रसना किन जरि जाय जान कहै दिलजान सों ।
गेह लगै किन जाय भाव विना भाकसी सम ।५४।
नेह करे का जात सब कोऊ सब सों करैं ।
अरे कठिन यह बात करिबो और निवाहिबो ।५५।

(माधववचन)

(दोहा)

मेरे मन की बात सुन अहे भावदी बाल ।
जो तो सों बिछुरन परै तजौं प्रान ततकाल ।५६।

(सुमुखी)

इहि बिधि कामिनी समझाय । लीन्हीं माधवा उर लाय ।
केसर मंडि उरज बिसाल । लाग्यो करन रसमय ख्याल ।५७।
दिन के अंत ही तें कंत । बितरे केलि खेलि अनंत ।
सारी रैनि रसबस होइ । दोनों रहे निद्रा भोइ ।५८।
लागे झपकि तिय के नैन । माधो फिर न बोल्यो बैन ।
चित में करी चिंता येह । निबहत इस्क राखे देह ।५९।

देही गये सर्बसु जाय । फिर नहिँ बेद कहत उपाय ।
मो पर करै भूपति तेह । कैसे होत अविचल नेह ।६०।

(दोहा)

कर कागद लै लेखनी रुक्का लिखो वनाय ।
कर पर धरि कंदला के लीन्हों बीन उठाय ।६१।
तिय को हिय सोँ लायकै निज जिय को समझाय ।
सूरत लखि दृग नीर भरि लखि लखि कहि कहि हाय ।६२।
हिय हिलकत सुसकत सहित साहस निज उर धारि ।
चाहि चाहि तियवदनछवि गजरा लयो उतारि ।६३।

(सोरठा)

चल्यो विप्र तजि प्रीत करवत दै निज जीव कोँ ।
विरह पुरातन मीत संग बरोठे तेँ भयो ।६४।

(चौपाई)

चलि माधो निज डेरे आयो । सोवत बरईसुवन जगायो ।
पूरबकथा तासु पै वरनी । अपनी नृप की तिनकी करनी ।६५।

(पधारिका)

गुलजार मित्र सनेह प्रवीन । मम भाल लिख्यो विधि सुखहीन ।
सुख चाहि जाहि दिसि चलौँ मित्त । तित दरद सनेहै मिलत नित्त ।६६।
अब हौँ न रहौँ प्रिय नगर येह । क्षितिपाल करत मोहिँ चाहि तेह ।
आऊँ बिसेष बीते बसंत । सुख करौ भूप पढ़ि प्रेममंत्र ।६७।

(गुलजारबचन)

(दोहा)

जो अकाज यहि राज तेँ तौ नहिँ रोकौँ तोहिँ ।
सुनु माधो जित जाय तूँ तितै लै चलै मोहिँ ।६८।

(माधवबचन)

मेरे तेरे मिलन मेँ अंतर कवहूँ नाहिँ ।
तूँ मेरे जिय मेँ बसत जिय मेरे हिय माहिँ ।६९।

(चौपाई)

हिये लागि मिल लो पिय मेरे। अब फिर मिलन हाथ विधि केरे।
खिलवत खुसी दोस्ती लेखे। वे दिन वहुरि न बहुरत देखे।७०।

(बिरही)

(सवैया)

बोधा सुभान हितू सों कहै भिरवाइकै भारि कै फेरि भिरे ना।
फेरि ना फूली निवारी उतै उन नारिन सों फिरि कै अभिरे ना।
फेरि ना ऊसी भई अखती कबहूँ उहि बाग के घेरि घिरे ना।
खोरन खेलिबो संग सखीन के वे दिन भावदी फेरि फिरे ना।७१।

(गाथा)

यारा मिलन वहारं। विछुरंदं ताहिँ पुन हंसं नहीँ।
विछुरन दरद अपारं। संहं नाति प्रीय विछुरते।७२।

(चौपाई)

माधो कहै मित्त सों येही। यह जिन चिंता करहु सनेही।
बीते चैत मास फिरि आऊँ। कामसैन भूपतिहि रिझाऊँ।७३।
तू मति याद विसारै मेरी। तेरे हित फिरि करिहौं फेरी।
या कहि मिले प्रेम भरि दोऊ। सुन सुभान विछुरै नहिँ कोऊ।७४।
दृग भरि दीह उसासन लेहीं। मुरकि मुरकि हिय सों हिय देहीं।
करि प्रनाम गुलजार पधारचो। दै असीस माधवा सिधारचो।७५।

(दोहा)

पौष पंचमी कृस्न पछ भज राधे घनस्याम।
त्याग पुरी कामावती माधो चल्यो बिराम।७६।
जगी कंदला रविउदै लगी निहारन सेज।
निकट न देख्यो मित्र कों बाढ़ी बिरहमजेज।७७।

(द्रुबिला)

अति बढ़ी बिरहमजेज। प्रीतम न देख्यो सेज।
उठि चली अति अतुराय। आलिहि जगायो जाय।७८।

सुन कोबिदा दिलजानि। दुख जात नाहिँ बखानि।
निसि जग्यो निद्रा भोइ। हौँ रही रंचक सोइ।७८।
उठि गयो माधव मित्त। अब थिर नहीँ मो चित्त।
यह आय कैसी बात। काहूँ लख्यो नहिँ जात।७९।
अब तजौँ पल में प्रान। कै मिलै माधो आन।
तब कोबिदा सखि धाय। तेहि सेज देखी जाय।८०।
तहँ नहीँ मित्र प्रबीन। नहिँ बसन भूषन बीन।
इक चिठी तिहि थल पाय। कोबिदा लई उठाय।८१।
वह बाँचि भई अचेत। बिगरे गुने सब नेत।
किय माधवा यह हाल। कैसे जियै अब बाल।८२।
छलिकै गयो वह छैल। अब पाइये किहि गैल।
जो नहीँ आवत बिप्र। तो मरत बाला क्षिप्र।८३।
यह सोच मन में कीन्ह। फिरि टेरि बनितै लीन्ह।
तिहि सेज पै पौढ़ाय। बड़ि बेर लौँ समझाय।८४।
सुनि कंदला तु प्रबीन। जिन करै चित्त मलीन।
हिय धीर धर सुन बात। बिछुरे न मरि मरि जात।८५।
मिलिकै जु बिछुरन होय। बिछुरो मिलै सब कोय।
यह चिठी माधव केरि। बनिताहि लीन्ही फेरि।८६।

(दोहा)

चिट्ठी माधव विप्र की क्षिप्र बाँचिकै बाल।
प्रगट सुनायो सखिन कोँ द्विज के हिय को हाल।८७।

(चिट्ठी उदाहरन)

सोवत में तो कहँ तज्यो हे दिलवर दिलजान।
सो न चूक मेरी कछू भीत भूप की मान।८८।
हौँ अपनो तन राखिकै डगरयो प्रीति बिगोय।
जौं जीवत अबकी मिलौं तौ सनेह थिर होय।८९।

बरष एक लौं परखिये हे कंदला सुजान।
हत्या मेर हने की जौ तू तजिहै प्रान।६०।
कोटि कोटि तीरथ करौं जोग जज्ञ जप दान।
सीस ईस पर वारिकै मिलौं मित्र कों आन।६१।

(भुजंगी)

चिठी बाँचिकै भूमि सों लाय सीसं।
कही माधवा माधवा वार बीसं।
हने हाथ छाती समाती न स्वासं।
रहे पिंड में प्रान होके निरासं।६२।
कढ़्यो काढ़िने क्यों मढ़्यो दुख्ख मोही।
हितू साथ क्यों ना कढ़े प्रान द्रोही।
भई वज्र की क्यों फटै नाहिँ छाती।
अजौं माधवा प्रेम अनुरागमाती।६३।
अहे पापिनी नों दिया मोहिँ भोई।
भई सौतिया मौतिया काहि सोई।
बिरहसिंधु में बूड़ियो गोत खाई।
घरी एक लौं फेर स्वासा न आई।६४।

(मोतीदाम)

गिरी मुरछा लहिकै जब बाल। फिरीं अँखियाँ पुतरी ततकाल।
करैं सखियाँ सिगरी मिलि सोर। फिरैं घर आँगन दौरत पौर।६५।
लखैं पुनि नारिय नारिय आय। कहें नहिँ रंचक चेत लखाय।
कहौ यह बेद न भेद बिचार। ··· ··· ···।६६।
सुसेज प निक्ट न देखो यार। हकीमनहूँ न कही निरधार।
मिलै जब लौं नहिँ भावन मूर। न जाय बिथा तब लौं तजि दूर।६७।
करी द्विज माधव ने भलि प्रीति। बड़े बटपारन तें घट रीति।६८।

(दोहा)

माधोनल को नाम सुनि जगी कंदला नार।
गई फेरि गिरि सेज पै लख्यो न माधव यार ।६६।

(त्रोटक)

कहि माधव बाल गिरी जबहीँ। भय का सखियान कही तबहीँ।
यहि को उपचार कहा करिये। यहि के सँग ही सिगरी मरिये ।१००।
तब नारिन यों उपचार ठयो। अपने अपने कर बीन लयो।
कहि माधव माधव गान कियो। तबहीँ उठि कामिनि ज्वाब दियो ।१०१।

(चौपाई)

अब कित माधव प्रीतम पाऊँ। केहि मिलि बिरहदवागि बुझाऊँ।
कहै कोबिदा सुन सुकुमारी। कसिकै प्रान राख इहि बारी ।१०२।
तेरे हित माधो इत ऐहै। मुये कहाँ माधो कों पैहै।
यह सुनि फिर बोली सुकुमारी। मोकों कियो माधवा का री ।१०३।

(सोरठा)

नैया नेह चढ़ाय झेली इस्कपयोधि में।
माँझ धार छुटकाय गयो सनेही माधवा ।१०४।

(दोहा)

कहै कोबिदा सुन सखी अब जिन होउ उदास।
हौं माधो कों लायहों बार एक तुव पास ।१०५।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्रभाषा बिरहोसुभान-संवादे कामावतिखंडे षोडशस्तरंगः ।१६।

(सप्तदश तरंग)

इस्क कपोस्त नाम । अथ उज्जैन खंड

(दोहा)

पुरी त्यागि कामावती कामकंदला बाल।
पस्चिम दिसि माधो चल्यो बिरहज्वलित बेहाल ।१।

तोता सों माधो कही जो तू मेरा यार।
सो सातो ग्रंदर रह्यो हौं बन करत बिहार।२।
कामनृपति की त्रास तें कामनृपति बेराम।
कामनृपति की त्रास तजि कामकंदला बाम।३।

(पद्धारिका)

सुन हे प्रबीन प्रीतम सुजान। मम हृदय भयो दुख को निधान।
दिसि जहि चल्यो सुख चित्त चाय। तित दरद सनेही मिलत ग्राय।४।
यों भयो बीन ग्रौगुन उपाय। जित जावँ तहाँ लागत बलाय।
जौ तजौं बीन तौ मरौं ग्राज। कर छुवत होत जग में ग्रकाज।५।
यहि मनुज देह बसि भूमि ऐन। सुख सुन्यो स्रवन देख्यो न नैन।
बिधि लिख्यो कहा मेरे लिलाट। सब जन्म रिंग्यो नित नई बाट।६।
दसचार पढ़ी बिद्या प्रबीन। ते भईं बीन ग्रवगुन मलीन।
ग्रब सुख सनेह सूझत न मित्त। हौं ग्रंतकाल इच्छित निबित्त।७।
गिरि चढ़ौं गिरौं बूडौं पयोधि। मरि जावँ मित्र के लागि सोधि।
जौ इस्क त्यागि जीवहुँ सुजान। तौ दुहूँ भाँति जग में गलान।८।

(दोहा)

निमिष इस्करामृज पर वारौं सुरति सुराज।
इस्क बीच सिर ना दयो जग सो जियो ग्रकाज।९।

(सवैया)

चाँदनी सेज जरी की जरी तकिया ग्ररु गेंडुग्रा देखि रिसाती।
राती हरी पियरी लगीं झालरैं केसरधारी बिरी नहिं खाती।
बोधा इते सुख पै न रमै उत कारो को साँवरो रूप सिहाती।
यार के साथ पयार बिछायकै डीमन में नित खेलन जाती।१०।

(बरवा)

पीय साथ घबराहट चढ़ती रोय।
जार साथ जद होवै बड़ सुख होय।११।

(सवैया)

कंपत गात वतात सकात हैं साँकरी खोरिन औ अँधियारी।
पातहू के खरके छरके धरके उर लाइ रहै सुकुमारी।
कीच के बीच रचैं रसरीत मनो जुग जात चुक्यो तिहि वारी।
यों जुरि केलि करैं जग में नर धन्य वहै धनि है वह नारी।१२।

(सोरठा)

जियै बर्ष दस पाँच रहै सहित मनभावती।
नचै बिरहरस नाच बहुत जियै किहि काज तें।१३।
जौ बिसेष जग माहिँ एक बेर मरने परे।
तौ हित तजिये नाहिँ इस्क सहित मरिबो भलो।१४।

(चौपाई)

इहि विधि निज जिय को समुझावै। माधो चल्यो पंथ में आवै।
सुमिरि घरीक कंदला प्यारी। घरि इक लीलावति सुकुमारी।१५।
कहौ प्रबीन करौं अब कैसी। इस्क फँदी मनप्रकृति अनैसी।
प्रिय बिछुरे सब ठौर अनैसा। जैसा घर छिवलेतर तैसा।१६।
अब मैं जाय़ कहौं किहि सेती। को सहाय करिहै मो येती।
बीती हेम सिसिर ऋतु दोई। विरहबेदना घटत न कोई।१७।
अब वसंत ऋतु आवत तैसे। संनिपात बिरहिन कों जैसें।
कौन उपाय जियत जग रैहौं। कैसे फिर कामवति ऐहौं।१८।

(दोहा)

सुनि सुनि माधो के वचन गुनि गुनि सुवा प्रबीन।
कह्यो बिप्र उज्जैन चल राजा परम प्रबीन।१९।

(सुमुखी)

बिक्रमसेन नृपति उजैन। परदुख देखि सकत न नैन।
जाके राज बेद बखान। गो द्विज दीन को सन्मान।२०।

आगम निगम नित्त बिबेक। चित धरि तजत नाहीँ टेक।
रीझे करत दारिद दूर। खीझै तौ उपारै मूर।२१।
छल बल बुद्धि त्याग समस्त। को जग करत तासोँ हस्त।
बल करि बचै ना पुनि सोय। जद्यपि भानु को सुत होय।२२।

(दोहा)

हौँ हूँ जो देख्यो नहीँ कर सब जगत निवाह।
गुनी माधवा बिप्र सो बिक्रम सो नरनाह।२३।
कबहुँक हरहू के मिले रहै कर्म गुन पीर।
पै न रहै बिक्रम मिले दुख को आँस सरीर।२४।

(चौपाई)

जग मेँ द्विजद्रोही हो कोई। बचे न ता सह हरि किन होई।
बचे अदृष्टि दृष्टि नहिँ आवै। कासोँ भिरै न देखन पावै।२५।
दै दै दीरघ दान अचेते। करै अनिच्छ बिप्र जग जेते।
इच्छा बिन परद्रोह न होई। भूखे पाप करत सब कोई।२६।

(दोहा)

जा राजा के राज मेँ द्विज चोरी करि खात।
ताके पुरिखा कोटि लौँ चले नरक कोँ जात।२७।
बाइस चूकैँ बिप्र की माफ कहत संसार।
नृपति बिक्रमादित्य के द्विज की माफ हजार।२८।

(चौपाई)

तुम गुनवंत भूप बरदायक। बिक्रम तो कहँ होय सहायक।
निष्कलंक बिक्रम क्षितिधारी। तेरो दरद गरद करि डारी।२९।

(सोरठा)

सुनि प्रवीन के बैन माधव मन मोहित भयो।
चलन कह्यौ उज्जैन आसाद्रुम बिक्रम उतै।३०।

(दोहा)

भजत राधिका माधवै चल्यो माधवा जाय।
चकित भयो दिस चार तें चैत चपेटो आय।३१।

(सवैया)

मारन मंत्र पढ़ै भ्रमरा जनु आवत है बिरहीन कँपाते।
कूकि उठी कल कोयलिया मनो या ऋतुराज के बान ससाते।
बोधा नये नये पत्रन ये लखि चैत चमू की ध्वजा फहराते।
भूले हुलास बिलास सबै जब फूले पलास लखे चहुँघा ते।३२।

(दंडक)

बाँधे हैं सुभट अमलन के ये माथे मौर
भ्रमरसमूह मिलि मारू राग गायो रे।
कोकिल नकीब नये पत्रन पताक तंबू
चंद्रिका निहारि क्षितिमंडल में छायो रे।
बोधा कबि पवन दमामो दीह घहरात
सुमन सुगंध सोई जस बगरायो रे।
बिरहीसमाज बधिबे के काज लाज त्यागि
साजि ऋतुराज रतिराज पठवायो रे।३३।

(चौपाई)

यह आफत बसंत ऋतु तैसी। भाँति भाँति माँहिं भई अनैसी।
बरबट बिरहपयोधि बहावै। को जग हितू तीर में ल्यावै।३४।

(दोहा)

चैत अष्टमी कृस्न पख द्विज पहुँचो उज्जैन।
सहर रम्य नृपधर्म लखि भयो आय चितचैन।३५।
बिक्रम सकबंधी जहाँ सात द्वीपपति धीर।
निस्चय मान्यो माधवा जान्यो लाग्यो तीर।३६।

डरत एक अपराध कों हरत भूमि को भार।
हारयो एक अदृष्ट सों जीत्यो सब संसार।३७।

(द्रुमिला)

लखि माधवा उज्जैन। तित नृपति बिक्रमसैन।
सत कोस सब पुरबास। तिहि मध्य नृपति अवास।३८।
सुरवधू ऐसी वाम। नर लखत लज्जित काम।
लखि महल सबके येह। जनु आयँ सुरपतिगेह।३९।
धन धर्म पूरन लोइ। दुख दोष लहत न कोइ।
हरिभजन दान पुरान। रतिरंग ही गुजरान।४०।

(दोधक)

बाग तड़ागन की अधिकाई। हेम हवेलिन सुंदरताई।
देखत रम्यपुरी चहुँधा अति। भूलि गई द्विज कों बिरहागति।४१।

(दंडक)

आठऊ दिसान दरवाजे अस्ट राजैं खाईं
कोट औ कंगूरन की कौन सरखत है।
महल महल प्रति वाग औ तड़ाग चौक
चौबिस बजार देखे लंक लरखत है।
राजत सुरेस से नरेस कवि **बोधा** तहाँ
बिक्रम समर्थ जाहि मीच हरखत है।
जाही ओर जाही खोर चलिये उजैन बीच
ताही ओर सरस वहार बरखत है।४२।

(दोहा)

चूरामनि पंडित तहाँ खट दरसन को दास।
क्षुधित भयो द्विज माधवा गयो तिन्हों के पास।४३।

(कुंडलिया)

ब्यापति जासु सरीर में भूख भूतिनी आय।
रूप सील बल बुद्धि हित ता क्षन सबै नसाय।

ता क्षन सबै नसाय ज्ञान गुन गौरव हरही ।
पुनि कंदर्प बिनास पान बीरा अति करही ।
सुत सोदर पितु माय नारि सों नेहु उथापति ।
जब जाके तन माहिँ भूख भृतिनि ह्वै ब्यापति ।४४।

(रोला)

सुनि माधो के बैन बिप्र आदर अति कीन्हों ।
नमस्कार कर जोरि उच्च आसन पुनि दीन्हों ।
भोजन रच्यो सुबेस कह्यो निज नारिन पाहीं ।
पुनि लै भीतर भवन गयो माधो द्विज काहीं ।४५।

(संयुता)

द्विज माधो सनमानि कै । पग धोयो निज पानि तै ।
षट ब्यंजन् जिवनार के । परसे कंचन थार में ।४६।

(चौपाई)

भोजन करि द्विज बीरा लीन्हों । नमस्कार चूरामनि कीन्हों ।
दै असीस माधव द्विज चल्यो । मदन मस्त जाके हिय मिल्यो ।४७।

(तोमर)

द्विज पूछियो सुक काहिँ । टिकिये कहाँ पुर माहिँ ।
तब यों कह्यो परबीन । नृपबाग चाहि नवीन ।४८।

(दोहा)

नृप अवास के अग्रसी बाग असोक नवीन ।
निकट तड़ाग महेसमठ तहाँ अयन द्विज कीन ।४९।

(चौपाई)

बट औ लट माधवा निहारयो । मृगछाला तिहि ठाँ पर डारयो ।
मदनदीप द्विज के हिय जाग्यो । कहन बारता सुक पै लाग्यो ।५०।

(दोहा)

विधि बिनऊँ कर जोरिकै मोहिँ देहि द्वै ईठ ।
कै मृगनयनी बगल में कै मृगछालापीठ ।५१।

(चौपाई)

निज जिय की माधोनल कहै। मेरे जिय चिंता यह रहै।
हौं छल करि आयो प्रिय पाहीं। जियै कंदला कैधौं नाहीं।५२।
ऋतू बसंत अंत तक आई। सुधि न मीत बनिता की पाई।
मेरे चित प्रतीत है येही। बिछुरे मित्र न जियै सनेही।५३।

(दोहा)

बोधा कवि नरदेह धरि प्रीति करै जनि कोय।
जौ कदापि बिछुरै प्रिया मरै कि रोगी होय।५४।

(चौपाई)

जग में जियत न सुन्यो बियोगी। जियै कदापि होय तौ रोगी।
करै जोग उनमादी होई। या तें प्रीति करौ जनि कोई।५५।
मैं किमि खबर मित्र की पाऊँ। अस को जिहि धावन दौराऊँ।
कहै प्रबीन बिदा कर मेरी। मैं सुधि ल्याऊँ बाला केरी।५६।
माधो कहै तोहिँ पठवाऊँ। मो किहिँ मिलै कि त्रिरह बिहाऊँ।
दूर देस तैं गगन उड़ाही। मग में कहीं बाज धरि खाही।५७।

(दोहा)

तैं मेरे हित लगि मरै मैं तेरे हित पायँ।
मेरे तेरे मरे पुनि दो बनिता मरि जायँ।५८।
कहै सुवा सुन माधवा होनी हती न जाय।
हरि गिरिधर के हिय बसै तऊ काल धरि खाय।५९।

(चौपाई)

जौ पै बिधना यहै बनाई। तौ ना मिटै किये चतुराई।
पठवौ मोहिँ खबरि लै आऊँ। तेरे दिल की साल मिटाऊँ।६०।

(दोहा)

दिलदुख लिखि करि सुक गरे दई पत्रिका बाँध।
करि प्रनाम माधवा कों चल्यो कीर मगु नाँध।६१।

(चौपाई)

दिन बिलमो इकंत तरु माहीँ । चल्यो निसा कामावति काहीँ ।
दिवस चार मारग सो धायो । क्षेम क्षेम कामावति आयो ।६२।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे उज्जैनखंडनाम सप्तदशस्तरंग ।१७।

(अष्टादश तरंग)

इस्क चका नाम । अथ प्रसंग

(दोहा)

भानुउदय अस्नान करि कामकंदला बाम ।
फुलवारी बैठी लखी भजत माधवा नाम ।१।
दरबा दरखत डार पर बैठो सुवा प्रबीन ।
कथी माधवा विप्र की कथा विरहरसलीन ।२।

(गाथा)

हो कंदला प्रबीनं । परबीनं तुव वियोग दुख लीनं ।
छिना छिना छिन दीनं । बुद्धि रटत माधवा जोगी ।३।
त्वं बियोग दिलजानं । हिय हनंत मकरध्वज द्विजद्रोही ।
कुत हउँ जाइ पुकारं । ना जानत यह दुख्ख कोई ।४।
इत्थं सुनि सुकबानी । चक्रित वाल चाहत चहूँ पासं ।
किहि य गाथा बखानं । अहं मित्र माधव वियोगी ।५।

(कंदला)

(सोरठा)

माधोनल गुनगाथ को जानै पेख्यो कहाँ ।
कित अस्थित अब नाथ कौन दिसा नगरी कवन ।६।

(प्रबीन)

(दंडक)

छोड़्यो अन्नपान बह्मज्ञान योँ नश्यो है जाके
कामनाई जो है एक इष्ट अवराधवा ।
सोवत जागत सपनेहू चिता मित्र ही की
करत कलोलै मिटै रंचक न साध वा ।

बोधा कबि नगर उजैन चैन चाहैं टिक्यो
संभू के दिवाले लागी दृगन समाध वा।
कंदला के दरद में दिलदार घूम घूम
जोगी भयो डोलत बियोगी मित्र माधवा।७।

(चौपाई)

सुनि सुकवचन बाल उठि धाई। चलि दरवा दरखततर आई।
अहो परवते पिय के धावन। मेरे पास उतरि किन आव न।८।

(दोहा)

उड़ि बाला के बाँह पर बैठो सुवा प्रबीन।
माधोनल के दरद को रुक्का ताको दीन।९।

(बिलाप)

सुनि कंदला मृगनैनि। हौं आ गयो उजैनि।
आनंद तन मन मित्त। तुव फिकर ब्यापति चित्त।१०।
हौं का करौं हे बाल। बस नाहिँ कर्म कराल।
हौं करत कारज जोय। थिर नेह जातें होय।११।
वह होनहार समर्थ। हो जात तोइ अनर्थ।
निहचै यहै मम चित्त। अब मिलहुँ तो कहँ मित्त।१२।
चिंता न करियो चित्त। सुखसहित रहियो मित्त।
जग जियत रहिहौं जोय। तौ फेर मिलिबो होय।१३।

(चौपाई)

सुक की कुसल कुसल पिय केरी। बूझी बाल सहसहू बेरी।
पाँच दिवस बीते मग माहीं। भोजन अब लौं कीन्हों नाहीं।१४।
कनककटोरा क्षीर पियायो। दृगन अंग सुक कों बैठायो।
सखि बुलाय किस्सा समझाई। जैसी कछु प्रबोन ने गाई।१५।

(दोहा)

चिठी बाँचि बूझी कुसल सुक कों दूध पिवाय।
लगी उरहनो देन पुनि द्विज के कृत कों गाय।१६।

सोवत मोकों छोड़िकै गयो छैल छलि कीर।
हौं राख्यो निज कौल पै अब तक प्रान सरीर।१७।
हित कीन्हों सुख चाहिकै सो नहिं आयो काम।
हमकों वह बारी भई माया मिले न राम।१८।

(चौपाई)

कहै सुवा सुन स्वामिनि मेरी। दुख अपार देख्यो इहि बेरी।
अब जौ मिलन होय सुनु प्यारी। बढ़ै परस्पर सुख अधिकारी।१६।
बेग बिदा कर मोर गुसाँइन। हौं जानत माधवा सुभाइन।
पल पल बिरह बूड़ि द्विज आवै। करै प्रलाप कौन समझावै।२०।
कहै कंदला सुन सुक बात। तू ल्यायो पिय की कुसलात।
तू मोहिं मिल्यो धनंतर जैसे। अब मैं जान देहुँ कहि कैसे।२१।

(दोहा)

तोहि पाय मैं प्रान सो पायो सुवा सुजान।
अब या अपनी जबाँ से कबहुँ कहौं ना जान।२२।
कहै सुवा सुनु कंदला जिन रोकै मो काहिं।
मैं लै आऊँ बिप्र कों यामें संसय नाहिं।२३।

(चौपाई)

चिट्ठी लिखन लगी पिय काहीं। कर कंपत सुधि आवत नाहीं।
कसि करि लिखी मित्र कों पाती। दीह स्वास तन में न समाती।२४।

(सोरठा)

तुव गुन मानिक चाय बूड़ी इस्कपयोधि में।
कर तें गयो हिराय धन रहियो धारा गई।२५।

(सवैया)

साँकर लौं बरुनी कसिकै अँसुआन मई तसबी कर राखैं।
डोरे रहे बनि बास सुरंग तहाँ कफनी पल टारिकै झाखैं।
बोधा निबुद्धि हो मौन रहैं मग माधवा साधवा को अभिलाखैं।
त्यागि कै भोग सँजोग सबै रहीं जोगिनी होय बियोगिनी आँखैं।२६।

(सोरठा)

मन ध्यावत है तोहिँ दृग लागे तुव बाट मेँ।
मदन दहत है मोहिँ तन पचि लाग्यो खाट मेँ।२७।

(बरवा)

परि गइ प्रीतिभँवर में जाँजर नाव।
इहि बिरियाँ माहिँ केवट पार लगाव।२८।
यह दिल की दिलगीरी लखतु न ग्रान।
कै दिल जानै की दिलवर दिलजान।२९।
बिरह बारि बढ़ि नदिया चली तुराय।
मो नवजीवन बिरवा उखरि न जाय।३०।

(चौपाई)

पाती लिखि कंदला प्रवीनो। बाँधि गरे सुक के वह दीनी।
बहुतक खबरि जबानी गाई। करि प्रनाम सुक चल्यो उड़ाई।३१।

(दोहा)

दिना चार मारग रिंग्यो बीच न टिक्यो प्रबीन।
पंचम दिन माधवा कोँ ग्राय दंडवत कीन।३२।
सुक कोँ ग्रावा देखिकै सुक सोँ बूझ्यो बिप्र।
क्षेम क्षेम कंदला की खबरि सुनावौ क्षिप्र।३३।

(मोतीदाम)

कथ्यो सुक माधो सोँ तव येह। रही ग्रति जीरन हो तिय देह।
हरी पियरी सियरी ह्वै जान। बिना जिय की पल माहिँ बखान।३४।
करे उपचार बिचार ग्रनेक। लगै नहिँ रोगहु जोगहु एक।
हकीमन की न चलै मनसाह। लखै तियदेह ग्रपूरव दाह।३५।

(सोरठा)

माधोनल तुव नाम दीपक राग समान तिन।
जगत दिया लौं बाम इहि सँजोग जीवत रहत।३६।

(चौपाई)

सुनिकै बिप्र बिरहरस मोयो। बिधि की बुद्धि मंद पर रोयो।
जौ महेस बिधि यही बिचारी। नये नेह बिछुरै सुकुमारी।३७।
तौ कत नादबेद मोहिँ दीन्हा। बृषभ समान मूढ़ किन कीन्हा।
मूरख नरतन ब्यापै यारी। खर सूकर लौं रति अधिकारी।३८।

(सोरठा)

बिछुरे दरद न होत खर सूकर कूकरन कों।
हंस मयूर कपोत सुघर नरन बिछुरन कठिन।३९।
मो सम अधम न आन प्रान प्रिया बिछुरे जियत।
हियो बज्र भयो न्यान बिरह घाव बिहरत नहीँ।४०।
पढ़ि चिठ्ठी यह हेत भयो माधवा बिप्र कौँ।
जथा चोर कौँ चेत भूलि जात पनहीँ मिले।४१।
भरि आए दोउ नैन गरे आइ ढौका लग्यो।
उत्तर देत बनै न पैरवार बूड़त जथा।४२।

(दोहा)

कहै सुवा माधवा सोँ और कहौँ मैँ काह।
तुव हीतल सीतल करै यह बिक्रम नरनाह।४३।
नृपति भोर अस्नान करि नित आवत सिवधाम।
तब तैँ राजा कौँ मिलै होय सिद्ध सब काम।४४।

(चौपाई)

यह सुनि बिप्र संभुमठ आयो। करि दंडवत चरन सिर नायो।
पुनि कबित्त सिव को अस कीन्हो। हौँ प्रभु तुव सरनागत लीन्हो।४५।

(दंडक)

कोऊ न सहाय कलिकाल मेँ दुखी को आय
कासोँ कहौँ जाय भारी बिरहकलेस को।
देखे राज राय दयाहीन सब ठौर जाय
गिनती कहाँ लौँ आय देसहू बिदेस को।

बोधा कबि ध्याय ध्याय धाय धाय परि पाय
भरम गँवाय कीन्हों करम अँदेस को।
काहु के न जैहों जैहों आदर न पैहों याते
चरन गै रैहों मैं तो सरन महेस को।४६।

(चौपाई)

संकर सों बिनती यह कीन्हीं। पुनि कर खरी माधवा लीन्हीं।
जातें असर होय नृप पाहीं। दोहा लिख्यो संभुमठ माहीं।४७।

(दोहा)

धन गुन बिद्या रूप के हेती लोग अनेक।
जो गरीब पर हित करैं ते नहिँ लखियतु एक।४८।

(चौपाई)

दोहा लिखि सिवमठ में माधौ। निज अस्थाने आयो बाधौ।
दरिमाफल प्रबीन कों ल्यायो। सिवमठ की बिरतंत सुनायो।४९।

(दोहा)

नृप बिक्रम अस्नान करि भोर गयो सिवपास।
लखि दोहा मठ में लिख्यो बाँचत भयो उदास।५०।

(चौपाई)

राजा मन में चिंता करै। अर्थ न दोहा को अनुसरै।
है कारन या दोहा माहीं। पै हित जान परत है नाहीं।५१।

(सोरठा)

दरद भरे नरईस दोहा को पद द्वै लिख्यो।
काज पराए सीस देत एक बिक्रम सुन्यो।५२।

(चौपाई)

मन में गुनत भूप घर आयो। कारन ना काहुवै सुनायो।
चिंता रही चित्त में लागी। हिये माँझ करुना अति जागी।५३।

(दोहा)

अन्य दिवस मठ संभु पं ज्वाब माधवा पाय।
फिर गाथा निज दरद की मठ पै लिखी बनाय।५४।

(गाथा)

कूतकि अंग पुकारं। जौन राम अवधेस की पुकारं।
बिछुरं दरद अपारं। सहि जानति माधवा बिरही।५५।

(कुंडलिया)

बिरहीजन की पीर कों अब जग जानै कौन।
अवधनाथ जानत हते तिन सो साधो मौन।
तिन सो साधो मौन जिन्हें बिछुरी ती सीता।
अब कहिये कित जाय कठिन बिछुरन को गीता।
बहुत भूत किहि हेत सुनत निजु दुख नहिँ थिरही।
या कलि में करतार करै काहू जिन बिरही।५६।

(दोहा)

अन्य दिवस महराज यह मठ में गाथा देखि।
अपने बल की बारता मठ में लिखी बिसेखि।५७।
गाज परै ता राज में मुख ताको जरि जाय।
बिरहीदुख टारे बिना अन्न पान जो खाय।५८।

(चौपाई)

पूजा करि नृप डेरे आयो। सचिव समाज सबै बुलवायो।
तिनसों कही आपने जी की। पूरब कथा तासु बिरही की।५९।

(पद्धरिका)

इक बिरहदुखी नृपनग्र माह। आयो अचान जान्यो सनाह।
इहि बेग तासु कीजै तलास। है बिरहबेदना भई जास।६०।
दुख हरौं करौं ताको सुचैन। तब राज करौं फिरि कै उजैन।
हौं अन्न पान करिहौं न सोय। जब लौं न बियोगी सुखी होय।६१।

(दोहा)

ढोल दिवायो सहर में घर घर करो तलास ।
को बिरही नर कहाँ है लै आवौ मो पास ।६२।

(भुजंगप्रयात)

हुकम् राय को पाय मंत्री हकारे । सहस् एक कीन्हे जमा ढोलवारे ।
बजे ढोल सारी पुरी सोर छायो । बियोगी को नाहीं कहूँ सोध पायो।६३

(चौपाई)

पुरबासी सबही उठि धाए । किहि कारन ये ढोल पिटाए ।
तिनसों कह जानो तुम ऐसी । किसा एक हम सुनी अनैसी ।६४।
बिरही एक नग्र में आयो । ताको चिन्ह नृपति कछु पायो ।
राजा करी प्रतिज्ञा एही । जौ लौं सुखी न होय सनेही ।६५।
कर ना छुवौं पान अरु पानी । अन्नखान की कौन कहानी ।
ल्यावै खोज बियोगी कोई । तापर कृपा राज की होई ।६६।

(दोहा)

यों सुनि गुनि निज चित्त में वारवधू बर रूप ।
बिरही कों ल्यावन कह्यो धीर धरहु तब भूप ।६७।

(तोटक)

बिरही कहँ खोजन बाल चली । बर केसरि अंगन अंग मली ।
ससि आनन कानन नैन छिये । लखि हाटक कुंभ उरोज हिये ।६८।
मद मत्त मतंग जथा गवनी । प्रउढ़ा सब कोककला रवनी ।
कर बीन लिये मग में डगरी । लहि मोह करै सबरी नगरी ।६९।

(चौपाई)

पुनि तिहि बाला भैरो गायो । ताको सुर माधो ने पायो ।
अपने दिल में यहै बिचारी । यह है कोइ वियोगिनी नारी ।७०।
प्रिय बिछुरे मन कों समझावत । गौरी समय भैरवी गावत ।
ताके निकट माधवा आयो । तौ लग बाल पूरबी गायो ।७१।

(चौपैया)

बीना डार पुकार यार कों पुनि वह रोवन लागी।
अस्तुति ताकी अकथ कथा की लखी बिप्र अनुरागी।
कँदला जान कै प्रीत मान के ऐपर आय निहारयो।
बाल सयानी बड़ी निधानी कहि या दोस्त पुकारयो।७२।
सुनि माधव जोगी बिरहबियोगी गिरयो सूल धरि ऐसे।
कंदलै ध्यायकै झमा खायकै सर लागे मृग जैसे।
लखि बिप्रहाल कों भयो बाल कों निस्चय मन में सोई।
बिरही पहिचान्यो निस्चय मान्यो दूजो और न होई।७३।

(दोहा)

अहे कंदला कंदला कही माधवा टेरि।
यों सुनि बाला की बिथा हरी बिप्र तन हेरि।७४।

(चौपाई)

उठि तिहि बाल बाँह गहि लीन्हो। निस्चय ताहि बियोगी चीन्हो।
हिये लगाय अंक भरि भेंटी। चाहै बिथा बिप्र की मेटी।७५।
कहै बिदग्धा सुनु प्रिय मेरे। सब उजैन हेरी हित तेरे।
अब निजु कारन मोहिं सुनावौ। जाते तुम निस्चय सुख पावौ।७६।

(दोहा)

तासों पुनि माधो कह्यो अपने जी को नेह।
समझि बिदग्धा बाल ने उत्तर दीन्हो येह।७७।

(चौपाई)

तुम पंडित परबीन सुजान। भूले रति बेस्या सों ठान।
लोक हँसी परलोक नसाई। याते तुमको है न निकाई।७८।
तब माधो जवाब अस दीन्हा। जिनने नहीं इस्कमग लीन्हा।
तिनकों लगी बात वह फीकी। जाने कौन पराये जी की।७९।

(बरवै)

घरी न घर ठहराती खीझत नाह।
बंबुरतर मन लागि कटीली छाँह।८०।

(दोहा)

सुन सुभान ता बाल पै पुराचीन सव हाल।
भाँति भाँति आसिकन के जथा कहे ततकाल।८१।

(तोटक)

बिरतंत सबै सुनि बाल लयो। पुनि माधव को यह ज्वाब दयो।
द्विज धन्य तु ही जग में जन है। गति एक अनन्य लग्यो मन है।८२।

(दोहा)

अगिन वहै थल एक लगि दूजे रहै घटै न।
कीच बीच जैसे गुरा खँचिकै फिर उचटै न।८३।

(चौपई)

चलि माधो विक्रम नृप पास। पूरन होय तुम्हारी आस।
एक दिवस रजनी पुनि गई। नृपघर नहीं मुखारी भई।८४।

(दोहा)

कहै बिप्र सुन बिदगधा हौं न लहौं तुव साथ।
अमिल संग लखि कै हँसै निदाजुत नरनाथ।८५।

(चौपाई)

रबि के उदय बिदग्धा नारी। महाराज के आग्र जुहारी।
बट की छाँह बाटिका माहीं। करयो ठीक मैं बिरही काहीं।८६।
माधो नाम बिप्र अति सुंदर। बय किसोर ज्यों लसत पुरंदर।
यह सुनि राजा रथ पहुँचायो। तापै चढ़ि माधोनल आयो।८७।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान-
दे उज्जैनखंडे अष्टादशस्तरंगः।१८।

(ऊर्नविंशतितम तरंग)

इश्क दो टूक नाम। यथाप्रसंग

(सुमुखी)

माधो आय नृप के पास। राज रूप मदन परकास।
प्रेरित विरह दुर्बल देह। मूरतवंत लसत सनेह।१।
राजत केस मुकुट सुढार। कंद्रपदेह निजु अवतार।
केसर खौर लकुटी हाथ। ओढ़े पीत पट रतिनाथ।२।
कुंदन बरन अरुन कटाक्ष। भरे सनेह ....।
धोती कमलपत्र रसाल। पाउँन पाँवड़ी लहि लाल।३।
गजरा दुवौ हाथन माहिँ। गल में मालिका बहु आहिँ।
नृप दरवार पहुँच्यो आय। क्षितिपति उठो दर्सन पाय।४।

(दोहा)

माधोनल कोँ देखिकै उठो तुरत अवनीस।
महाराज कोँ देखिकै माधो दई असीस।५।

(आसीर्बाद)

(सवैया)

द्योतित संग दुती जब लौँ जब लौँ दरियाउ में बारि भरा है।
राम को नाम महीतल में जब लौँ जग होत बिरंचि करा है।
जौ लौँ सुरेस गनेस दिनेस सुमेर ध्रुवा जब लौँ अचरा है।
तौ लगि राज करौ महराज जू जौ लगि सेस के सीस धरा है।६।

(दोहा)

पढ़ि कवित्त तंदुल धरे महाराज के सीस।
पुनि माधो ऐसी कही क्षेम जुगत अवनीस।७।

(चौपाई)

कही नृपति माधो द्विज पाहीँ। तुम्हरी क्षेम क्षेम हम काहीँ।
सुखजुत ब्रह्मबंस है जौ लौँ। मेरो राज भूमितल तौ लौँ।८।

(द्रुमिला)

द्विज माधवा तिहिँ बार। नृप बचन सुनत उदार।
दृग डभकि आयो बारि। नृप रह्यो ताहि निहारि।६।
पुनि कह्यो द्विज पर येह। किहि हेत कंपित देह।
अँसुआ चले भरि नैन। हम हेतु सो समझैँ न।१०।

(दोहा)

पुराचीन मेरे हितू सो बिछुरे तोहिँ देखि।
याते मेरे दृगन में पानी भर्यो बिसेखि।११।

(कबित्त)

जनमसँघाती चार यार सरदार मो ते
बिछुरे रिसाइ मिला भेँट होत तन मेँ।
एकै सतरात एकै दूर खड़े थहरात
एकै हौँ न देखे जात गए कौन खन मेँ।
बोधा कबि चलत उजैन नगरी कोँ मेरो
दारिद सनेही सो हिराय गयो बन मेँ।
रोग गयो डेरा ते बियोग गयो मारग ते
जोग जानहार भो सँजोग आयो मन मेँ।१२।

(मोतीदाम)

जिमीँ पर लै तब तीर डटाइ। धरो तिहि पै थरिया अब आइ।
चढ़्यो तिहि ऊपर दै बिबि पाँउ। लहै दुहरी तिहरी भरियाउ।१३।
बटा कर एक फिरावत जात। तहाँ दुहरी लहिकै थहरात।
कँपै नहिँ पाँव धरै नहिँ धीर। टरै न तहाँ टठिया लपि बीर।१४।

(दोहा)

कला एक अद्भुत करी माधोनल गुनवान।
धायो काचे सूत पर डोरी एक प्रमान।१५।
मेलै बटा अकास कोँ इत ते दुहरी लेइ।
दाँत दाबि अधबीचही पग थारी पर देइ।१६।

मने करी महाराज तब फुर बरहू धरि लीन्ह ।
निज आसन बैठारिकै दान लक्ष इक दीन्ह ।१७।
माधोनल की ओर लखि सोच सहित नरनाह ।
बीरा दै पूँछन लग्यो नाम ग्राम चितचाह ।१८।

माधव (संयुता)

द्विज माधवा मम नाम है। पुहुपावती मम धाम है।
तहँ भूप गोबिँद चंद जू । लहि सोमबंस अनंद जू ।१९।
कहिये गढ़ा वहि देस कोँ । सुनिये तहाँ न कलेस कोँ ।
मम बेद बृत्ति बखानिये । नरनाह पूजित जानिये ।२०।

(राजा बचन)

(तोमर)

द्विज क्योँ तज्यो वह देस । जुत धर्म नीक नरेस ।
तब माधवा कहि येह । मम कर्म कूर सनेह ।२१।

(दंडक)

सुदिन के साथी होत हाथी हथियार यार
तात मात सोदरा औ नारि लरिका कही ।
सुदिन के साथी राजा राउ खान सुलतान
मान या बितान तब पालकिन की लही ।
बोधा कवि सुदिन समापति भये तौ आय
आपति अन्यास सुखप्रापति कहीँ नही ।
वा दिन सपूतियौ कपूतियौ ता दिन अहै
अदिन परे ते नीर नदिन रहै नही ।२२।
सीता सी कुमारी रामचंद्र से क्षितीस भुज
बीस दससीस तिन आफतै घनी सही ।
डोमघर पानी भरयो राजा हरिचंद्र बली
बली बलिराय की कहानी बेद मेँ कही ।

बोधा कवि पंचबीर पांडवा पराई पौर
द्रौपदी सभा में दुहसासन खड़े गही ।
वा दिन सपूतियौ कपूतियौ ता दिन अहै
अदिन परे ते नीर नदिन रहै नही ।२३।

(दोहा)

यों सुनि गुनि निज चित्त में पुनि बूझी नर येस ।
कहा गरज चितचाह करि गवन कियो यहि देस ।२४।
सुनि सुभान माधो कह्यो नृप पै सब विरतंत ।
पुहुपावति कामावती दुखी भयो तिहि तंत ।२५।
सुनि सुभान राजा कह्यो सुनु माधो गुनवान ।
कामकंदला नटी सों प्रीति करी का जान ।२६।

(चौपाई)

माधो कह्यो सुनो नरनायक । चित की लगी होत सब लायक ।
रूप कुरूप प्रबीन अयानो । वहै सरस जासों मन मानो ।२७।

(राजाबचन)

प्रथम बिप्र पुनि बेद बखानत । कथा पुरान नादविधि जानत ।
हरिहरभजन तुम्हारे लायक । बंस अठारह के तुम नायक ।२८।
प्रगट साख सिगरी जग जानी । कस लायक यह प्रीति बखानी।२९।

(माधवबचन)

है वह सत्य आप जो बरनी । मो सों सुनो इस्क की करनी ।
पीर पराई लखत न कोई । जाके लागी जानत सोई ।३०।

(कुंडलिया)

घुन कों जौ घिव प्याइये तौ तुरतहिं मरि जाय ।
वाकों वही मिठास है सूखी लकरि चबाय ।
सूखी लकरि चबाय चकोरन बूझौ येही ।
तुम क्यों अँगरा भखत सुधाधर करयो सनेही ।

कमलन सों यह बूझि देत का दिनकर उनकों।
घिव प्याये मरि जाय लकरिया भावत घुन कों।३१।
सकबंधी बिक्रम सुनो भूल जात धन धाम।
लागि गई तब लोक की लीक न आवत काम।
लीक न आवत काम लाज गृहकाज न सूझै।
जग भो यों उपहास जाति पाँतिहि को बूझै।
बोधा कवि गुन ग्यान ध्यान भूलै सनबंधी।
लगे इस्क की चोट सुनो विक्रम सकबंधी।३२।
त्यागत तन मृग राग सुनि दीपक संग पतंग।
मछरी जल बिछुरत मरै यही प्रीति को अंग।
यही प्रीति को अंग स्वाति चातक घन बरही।
चुंबक लोहो मिलै फेरि न्यारो को करही।
बोधा कवि दृग लगे लोक अचरज सो लागत।
हारिल सों बूझियै लकरिया काहे न त्यागत।३३।

(दोहा)

कीन्हीं प्रीति कुरंग सों भरत भूप तप छंडि।
मृगा भये नरदेह तजि प्रेम प्रकृति अस मंडि।३४।

(दंडक)

सफरी कुरंग लोहो चुंबक पतंग भृंगी
हारिल पपीहा दिया बरही बिकाने हैं।
कमल कुमोद कोक मंजरी घुनौ ताकीरा
कमल न भायो कसतूरी अंग जाने हैं।
पन्नग चकोर चूना हरदी परेवा मेघ
चंचरीक चंदन औ चंदा चित्त आने हैं।
क्षीरनीरसूती हंस चित्र के सुवा लौं देखि
प्रेमरतनाकर के बूड़ा ये बखाने हैं।३५।

(सोरठा)

योँ माधो के बैन सुनि बोल्यो बिक्रम नृपति ।
तेरे लायक है न माधो प्रीति नटीन की ।३६।
पूरब पुन्य सनेह मनुज भयो यहि काल मेँ ।
पुनि द्विज के घर देह नादबेद सो दु ज्जजुत ।३७।

(चौपाई)

मनुज जन्म पावत नहिँ कोई । मनुज भयो तौ बिप्र न होई ।
होहि बिप्र तौ नाद न जानै । बेद जान नहिँ नाद बेखानै ।३८।
जौ कदापि पुनि रागहि पावै । तौ अस रूप न कोऊ पावै ।
तो कहँ बिधि ने सबही दीन्हीँ । पूरब बड़ी तपस्या कीन्हीँ ।३९।

(सोरठा)

निगम कही यह रीति चित बित दीजै पात्र कोँ ।
करि बेस्यारति प्रीति ऐसे बदन न खोइये ।४०।

(दंडक)

जाको सतसंग पाय चलत निवान ऐसी
नैया भवसिंधु मेँ न दूसरी लखात है ।
ताही नरदेह सोँ सनेह तू करत नाहिँ
स्यामा स्याम ध्याइबे की येही अवखात है ।
बोधा कबि फेरि याको पायबो कठिन बड़ी
कठिन सोँ पाइ थोरे कसट रिसात है ।
ऐसी प्रानप्यारी इहि बारी तू मेरे कहे ते
राखत बनै तौ राख जात है पै जात है ।४१।

(माधवबचन)

(चौपाई)

ब्यभिचारी ब्यभिचारी चाहत । ज्वारी ज्वारी प्रीति निबाहत ।
रसिकनरन के मन ब्रजनायक । बसत सहित गोपिन सुखदायक ।४२।

रसवँत ब्रह्म निगममति गावत। ता कहँ जोग जज्ञ को पावत।
सोरा सहस नायका गावै। जोगी जडमति सो क्यों पावै।४३।

(छप्पय)

मच्छ रूप बीभत्स कच्छ बत्सल रस जानी।
भय स्वरूप बाराह रुद्र नरसिंह बखानी।
बामन अद्‌भुत रूप बीर भृगुनंद ताहि गनि।
करुनामय रघुनाथ कृस्न सृंगारदेव भनि।
निर्बंध बौध **बोधा** सुकबि लहि कलंक पर हास रस।
सहित इष्ट गावत निगम दस रसमय रसवँत पुरुष।४४।

(सोरठा)

नादबेद रतिरंग सुंदरता अनभव विभव।
ये लखि जिनके अंग तिनहीं में ब्रजराज नित।४५।

(दोहा)

मगन रहत रतिरंग में गावत रस सृंगार।
टेर कही ब्रजराज ने सोई मेरो यार।४६।

(चौपाई)

मैं अपने जिय यहै विचारी। सत बैकुंठ कंदला नारी।
जब देखौं निज प्रीतम काहीं। मुक्त होन में संसय नाहीं।४७।

(दोहा)

आपहि होके सारथी मोहिं चलै लै राम।
तौ न जाउँ वा लोक कों बिना कंदला बाम।४८।
बिन यारी का लै करौं सुरपुरहू को बास।
मित्रसहित मरिबो भलो कीन्हे नरकनिवास।४९।

(चौपाई)

तब नृप के मंत्रिन मत कीन्हा। ज्वाब एक माधो कों दीन्हा।
ऐसी नहिं सराहिये यारी। चाहौ लियो पराई नारी।५०।

परदारा अपनी करि जानत। ताही सों तुम इस्क बखानत।
बरबस कोऊ परधन चाहै। बिना दिये कैसे वह पाहै।५१।

(माधव)

(दोहा)

ल्यावत चोर चुरायकै दियो भिखारी लेत।
बरियाई हाकिम कहैं आन मिलै सो हेत।५२।
वा मेरी निजु नायका मैं वाको निजु नाह।
कछु दिन जानी आपनी नृप पै भयो गुनाह।५३।

(राजाबचन)

पाँच लाव उज्जैन की बस्ती को परमान।
कल्पलता सी कामिनी केती करौं बखान।५४।

(सुमुखी)

द्विज तुम लखौ सब उज्जैनि। घर घर सोहती मृगनैनि।
बिटिया बधू बाला कोइ। कौनौ जाति सुंदर होइ।५५।
जामें चुभै तेरो चित्त। सो मैं देहुँ तो कहँ मित्त।
माधो कही नाहिंन राज। दूजी बाम सों कह काज।५६।
मेरे मित्त के सम कोइ। तीनों लोक में नहिं होइ।
यह सुन सचिव सब परबीन। उत्तर माधवा कों दीन।५७।

(दोहा)

हुकुम पाय महराज को धीरज क्यों धरिये न।
जो होनी सो होयगी अब पीछे फिरिये न।५८।

(सवैया)

निसिबासर नींद औ भूख नहीं जब ते हिय में मेरे आन बसी।
मिलते न बनै जग की भय ते बरहू न रहै हिय की हुलसी।
कबि **बोधा** सुनै हे सुभान हितू उरअंतर प्रेम की गाँस गसी।
तिनकों कल कैसे परै निरदै जिनकी है कुजागर आँख फँसी।५९।

बातनहीं समुझावैं सबै वह पीर हमारी न पावत कोई ।
का करै मान सिखापन सो जिय जाही को आपने हाथ न होई ।
बोधा कदाचित जानै वहै यह मो हिय में जिन बेदन बोई ।
चाव कचोट कटाक्षन की तन जाके लगी मन जानत सोई ।६०।
बोधा सुभान हितू सों कही या दिलंदर की को सही करि मानत ।
ता मृगनैनी की चारु चितौनि चुभी चित में चित सो पहचानत ।
तासों बिछोह दई ने करयो तो कहौ अब कैसे मैं धीरज आनत ।
जानत हैं सबही समझाय पै भावती के गुन कों नहिं जानत ।६१।

(राजाबचन)

(तोमर)

सुनि माधवा प्रति बैन । फिर कह्यो बिक्रमसैन ।
मम महल भीतर जाय । जित नायकासमुदाय ।६२।
सब कोकिला परबीन । नवजौबना रसलीन ।
बनिता बधुन में मित्त । जिनमे चुभै तव चित्त ।६३।
सो देउँ तो कहँ आज । अरु ग्वालियर को राज ।
निज टेक तजिकै बिप्र । यह कान कीजै क्षिप्र ।६४।

(माधव)

(दंडक)

हेरि हिरनाक्षी हारो चारहू दिसा में भारी
जिनके कटाक्षन सों पाहन सिला कटै ।
तेऊ तो चुभै ना **बोधा** चक्र कुचकोरन के
जोरन हितू कै कोऊ मुख सों कहा रटै ।
सुन हे सुभान हियो हीरा ते सरस ता
वियोग बज्र घाउन सों रंचक नहीं फटै ।
खूबी के समाज ठौर ठौर देखि आयो यार
पै ना दिलदार को या दरद कहूँ घटै ।६५।

(दोहा)

कहै नृपति सुनु माधवा जिन भूलै बेकाज।
निज कुटेक कों त्यागके करो ग्वालियर राज।६६।

(माधवबचन)

(चौपाई)

कहा राज करिये लै स्वामी। जो न घटै दिल की बेरामी।
मेरो राज्य कंदला नारी। ता पै सबै रजायसु वारी।६७।
जौ लौं हौं जीवत जग माहीं। तौ लौं भजौं कंदला काहीं।
जियतै जियौं मरे मरि जाऊँ। जन्म जन्म दिलवर को ध्याऊँ।६८।
स्वरग हितू तौ स्वर्ग पधारौं। नरक हितू तौ नरक सिधारौं।
जप तप करौं उस के कारन। जौ लग धरिहौं देह हजारन।६९।

(दोहा)

संकर बिष कूरम धरा बाड़व उदधि निहारि।
अंगीकृत **बोधा** सुजन तजत न दुसह बिचारि।७०।

(राजाबचन)

(दोहा)

सुनु माधो करतूति में कमी करौं मैं नाहिं।
तारे मांगौ स्वर्ग के तौ मैं पाऊँ काहिं।७१।

(माधवबचन)

(दोहा)

महाराज द्वै भाँति के बचन कहत संसार।
ते न्यारे न्यारे कहौं सत्य असत्य बिचार।७२।

(सत्य बचन)

(सवैया)

भानुउदै उदयाचल ओर ते पूरब कों पुनि पाँव करै ना।
त्यों सिरनेत सती धरिकै घर के फिरिबे कहँ चित्त धरै ना।

ज्यों गजदंत सुभाय कह्यो कदलीतरु दूसरि बेर फरै ना।
त्यों ही जबान बड़े नर की मुख सों निकसै वरु फेरि फिरै ना।७३।

(**असत्य बचन**)

(दंडक)

धूम धाम चाम दाम बाम बाजी खैंचे आम
फागु जैसे बावरा तौ मन को कलेवा है।
भानमती सती जैसे सपने की रती जैसे
संन्यासी पती जैसे पाठ को परेवा है।
बोधा कबि कपट की प्रीति भीति रैनुका की
करिबो दहत जैसे सूमन की सेवा है।
... ...
... ... ।७४।

(दोहा)

दूजो दिन बीतो नहीं बीच बसी नहिं रात।
संकरमठ की बारता अबहीं बिसरी जात।७५।

(**राजाबचन**)

कहै नृपति सुनु माधबा यो है बचन बिबेक।
लखि अपनी सामर्थ्य लौं बड़े निबाहत टेक।७६।
कामकंदला नटी पर कामसेन को प्यार।
सो कहु कैसे पाइये बिना किये हथियार।७७।
माँगे वै देहैं नहीं लरिबो उचित न होय।
कहौ बिप्र कैसे बनै ये अबद्य लखि दोय।७८।

(कुंडलिया)

बाचा लौं स्वासा भली सुनु बिक्रम नरनाथ।
भई भली कै होय पुनि बाचा स्वासा साथ।
बाचा स्वासा साथ टेक बिन एक न नीकी
स्वासा कबहुँक जाय टेक छूटै नहिं जी की

स्वासा सार सरीर बचन लौं क्षितिपति राचा।
कहा जिये को स्वाद जाय जा दिन गिरि बाचा।७६।

(दोहा)

सुनि सुनि माधो के बचन भो क्षितिपति उर तेहु।
फौजदार सों यों कही क्यों न नगाड़ा देहु।८०।

इति श्री यिरहवारीश माधवानलकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुथानसंवादे उज्जैनखंडे ऊनविंशतितमस्तरंगः।१६।

(विंशतितम तरंग)

लोह चुम्बक नाम इस्क। अथ प्रसंग।

(भुजंगप्रयात)

बजै खाखरा यों घनी घोर कीन्हीं।
मते दिग्गजन् जोर चिक्कार दीन्हीं।
नगाड़े जथा मेघमाला धुकारैं।
तिन्हैं चाहि ढाढ़ी सिखंडी पुकारैं।१।
बजै तूरही भूर ही भेरि गाजैं।
मनो गाज चिल्ली हजारान राजैं।
बजैं साहनाई घने ढोल जंगी।
गजैं साह के चाह मानो मतंगी।२।
बजैं गुड़्गुड़ी ढक्क बीना भनाके।
जथा बाटिका भूरि भृंगी भनाके।
बजै नारसिंही चढ़्यो जोर चित्ता।
पढ़ैं राव राना हजारों कबित्ता।३।

(सुमुखी)

छत्री सजे छत्तिस कौम। जम पै जे जनावैं जौम।
धसकत धरा कंपत सेस। रहियो धूरि पूरि दिनेस।४।
जंकत संक मान दिगीस। करकति दिग्गजों की खीस।
उछलत सिंधु बारि प्रचंड। थरथर कँपत भारतखंड।५।

(चौपाई)

बिक्रम के दल की बहुताई । सो किमि जाय कवित्तन गाई ।
जानत हैं जग सो छतधारी । दीपति सातहु दीप निहारी ।६।
खोरिन खोरि खड़ी असवारी । भूरि गरद नहिँ जात सम्हारी ।
सेल बरच्छिन सों पुर बँध्यो । यों दल दीरघ बिक्रम ठठ्यो ।७।

(दोहा)

चैत सुक्ल पछ रोहिनी प्रथम जाम सनिबार ।
पाय सुभग तिथि पंचमी भयो नृपति असवार ।८।

(मोतीदाम)

चल्यो दल दीरघ बिक्रम साज । उठै बड़ि मत्त मतंग गराज ।
ररै रनमार बढ़ा हिय जोर । कवित्तन मंडित भाटन सोर ।९।
कँपै जिमि भूमि चलैदल पात । लखै दिसि चार ध्वजा फहरात ।
रिँग्यो सिगरे दिन ता पुर माँझ । भई पुर बाहिर आवत साँझ ।१०।

(दोहा)

दिन अथयो डेरा परे क्षितिपति सों ह्वै दीन ।
माधोनल बिनती करी भोजन करौ प्रबीन ।११।

(राजाबचन)

(सोरठा)

जौ लौं द्विजहित भौ न तौ लौं भोजन ना करौं ।
सत्या हारै कौन थोड़े दिन के जियन कौं ।१२।
मास एक को काज कहै नृपति सों माधवा ।
कैसे जीहौ राज तौ लग पानी पानबिन ।१३।
समझायो बहु भाँति सबही ने महराज कों ।
तब धरि निज उर साँति फलाहार क्षितिपति करचो ।१४।

(मोतीदाम)

जग्यो नृप चाहि उदै रबि केर। कह्यो तब कूँधुनि की बन टेर।
बजैं घन से अति दीह निसान। खड़ो दल जोजन आठ प्रमान।१५।
सरक्कत भूमि धरक्कत सेस। करक्कत सूकरडाढ़ कलेस।
बरक्कत धूरि भई असमान। परै लखि नाहिँ दुरयो कत भान १६।
निसान लयो लखि लालिय साज। चल्यो धरि देह मनो ऋतुराज।
रह्यो दिन में वह रैनि प्रमान। हरखिखत भे चकही चकवान।१७।

(दंडक)

साजि चल्यो बिक्रम समर्थ दल दीह तिन
दिग्गज के दंतन दरे से दीजियतु है।
पारावार बार के फुहारे से बढ़त देखि
तंकित दिगीसन के हिय सीजियतु है।
बोधा कबि सारी बसुधा में अँधियारी चाहि
कोकनद कोटिन बियोगी कीजियतु है।
एक माधवा को यों दरद हरिबे को चक्र-
वाकन को नाहक सँताप लीजियतु है।१८।

(सवैया)

बोलत झुंड नकीवन के सुनि सो कुइलीन की कूक सुहाई।
कैयो हजार रवाब बजैं जनु कुंजित भृंगन की बहुताई।
बिक्रम की चतुरंग चमू लखिये दिसि चारि ध्वजा अरुनाई।
धायो बसंत सदेह मनो सब भूमि पलास के पुंजन छाई।१९।

(दोहा)

चमू सबै चतुरंग सो बिदा करी नरनाथ।
आप चल्यो कामावती सौ साँवत लै साथ।२०।

(माधवबचन)

(चौपाई)

मेरे चित प्रतीति है है ऐसी। मधुरितु बिरही नरन अनैसी।
कैसे जियत कंदला नारी। नवजौवन बाला सुकुमारी।२१।

(सोरठा)

मारन धायो मोहिं नृप बसंत अति गुसा करि।
ऐगर देख्यो तोहिं मुरक्यो फेर निरास ह्वै।२२।

(राजाबचन)

(दोहा)

जौ में निज कानन सुनौं मुई कंदला नारि।
तौ जमपति कों बाँधि के देउँ उदधि में डारि।२३।

(चौपाई)

बचनबिलास करत नरनायक। सहित विप्र रथ पै सुखदायक।
बीत्यो पक्ष एक मग माहीं। आयो नृप कामावति काहीं।२४।
कोस आठ पुर बाकी जबहीं। कह्यो बिप्र राजा सों तबहीं।
देखो नृप कामावति आई। जोजन पाँच बसत समुदाई।२५।
कनस कलस बहु भाँति बिराजैं। ते मंदिर नरेस के राजैं।
यह जो अटा घटा सम जोहै। सोऊ हरमंदिर दृग मोहै।२६।
जो यह उदित भान सम देखी। रतनक्षत्र क्षितिपति को लेखी।
नीचे महल होय नटसारा। तिहि नीचे लागत दरवारा।२७।
पूरब दिसा अटा इक जोहत। ललित चँदोवा ता पर सोहत।
तिहि अवास यह बसत कुमारी। अब प्रभु दक्षिन ओर विहारी।२८।
कनककलस गुम्मट अति भारो। अवधनाथ मंदिर धनुधारी।
कंजारन्य ताल सुखदायक। रवन वाग तिहि तट नरनायक।२९।
कोस एक बाकी पुर जवहीं। डेरा कीन्हों विक्रम तवहीं।३०।

(दोहा)

मदनावति के वाग में डेरा करचो नरेस।
आप चल्यो कामावती किये बैद को भेस।३१।

(चौपाई)

बैदभेस महराज वनायो। सत्वर चलि कामावति आयो।
दक्षिन दरवाजे नृप पैठा। देखा तहाँ जगाती बैठा।३२।

गठरी लखी भूप कोँ लीन्हे ँ। पकरि बाँह तिन ठाढ़े कीन्हें ँ।
तब नृप कह्यो बनिक हम नाहीँ। नहीँ लोन यहि गठरी माहीँ।३३।
हम हकीम बर बैद्य सयाने। औषध भाँति भाँति की जाने।
पुरिया एक लाख तिहि माहीँ। नृप रस कह्यो जगाती काहीँ।३४।

(दोहा)

चलि नृप आयो सहर मेँ कामकंदलाद्वार।
सत बैद्यन तेँ सरस अति कीन्हीँ तहाँ पुकार।३५।
सुनत कंदला की जनी बैद्यै आई लैन।
गइ लिवाय निज महल मेँ जहाँ बसत मृगनैन।३६।

(चौपाई)

चलि हकीम महलन मेँ आयो। दरसन ता बनिता को पायो।
उत्तम उच्च बैठका दीना। नृप ता पर बैठो आसीना।३७।
देखत नृपति कंदला काहीँ। भयो चकित ताही क्षन माहीँ।
कस ना माधौ इहि बस होई। ऐसी तिया और नहिँ कोई।३८।
कहै हकीम हाथ मोहिँ दीजै। नारी लखि उपाय सोइ कीजै।३९।

(दोहा)

नारी की नाड़ी लखी कपटसहित महराज।
पुनि तासोँ लाग्यो कहन रोगसमाज इलाज।४०।

(मोतीदाम)

घरीकन माहिँ हरी ह्वै जात। परी पियरी पल माहिँ लखात।
घरी सियरी अति दीरघ स्वास। नहीँ तिय के कर मेँ बिस्वास।४१।
नहीँ कफ पित्त सुबात बखान। नहीँ अस्लेष हिये अस जान।
नहीँ तन रक्तबिकार लखाय। नहीँ तिय के तन प्रेत बलाय।४२।
लगी नाहिँ डीठ न मूठसँजोग। परै लखि नाहिँ अपूरब रोग।
नहीँ यह बेदन बेदन देखि। कही लुकमान हकीम बिसेखि।४३।

(दोहा)

पित्तदाह कों प्रथमहीं पित्तपापरो ऐन।
दूजे निंबुआ तीसरे दाख कही सुखदैन।४४।
ससिबदनी के बदन सों रहिये बदन लगाय।
तिक्के बिक्के पित्त के पल में देव ठँढाय।४५।
पुहकरमूली सोंठि पुनि मिरच कटाई आनि।
या काढ़े ते होत है कफ के ज्वर की हानि।४६।
इसे कौक ढोका करै त्रकुटी लौंग मिलाय।
द्विन द्वै गोली खाय तो कफ खाँसी हटि जाय।४७।
अधकच जीरे लीजिये आधे भूँजे लेय।
मलै सरसुवाँ अंग सों बातज्वर तजि देय।४८।
मधु पीपर सेवै सदा नित संजम सों खाय।
मास एक में तासु को विषमज्वर नसि जाय।४९।
कही अजीरन रोग कों अजवायन अरु लौन।
निरगुंडी गठबात कों कही बकायन तौन।५०।
संनिपात पर यों कह्यो काढ़्यो सुंठी आदि।
कै चिंतामनि रस करै संनिपात कहँ बादि।५१।
कह्यो धना पाचक भलो संग्रहनी पर जोर।
अतीसार पर रस करै आनँदभैरो तोर।५२।

(चौपाई)

रक्तबिकारी गोंच लगावैं। प्रेतकाज पंद्रहा भरावै।
बहुनायक तें गरमी होई। चोपचिनी नासक तेहि सोई।५३।

(दोहा)

बहुत रोग औषध बहुत नाड़ी गुन समुदाय।
प्रथम कह्यो है बैद को चलै सगुन सुभ पाय।५४।

(सुमुखी)

अद्भुत रोग तिय के अंग। जाको समुझ परत ना रंग।
सहसक लखे रोगी सोय। ऐसो रोगिया नहि कोय।५५।
यासों बूझिये यह बात। तेरे कौन ठौर पिरात।
तोकों होत कैसी पीर। दिल की कहो सो धरि धीर।५६।

(**कंदलाबचन**)

(सवैया)

काहू सों का कहिबो सुनिबो कवि **बोधा** कहे ते कहा गुन पावन।
जोई है सोई है नीकी बदी मुख से निकसे उपहास बढ़ावन।
याही ते काहू जनैये न बीर लहै हित की पै कहै नहिँ दावन।
जीरन जामा की पीर हकीमजी जानत हैं हम कै मनभावन।५७।

(चौपाई)

तब हकीम बोल्यो मृदुबानी। प्रेमपीर अब हौं पहिचानी।
बिरहरोग जाके हिय जानो। जीवत मुयो ताहि पहिचानो।५८।
तिय की सखिन अर्ज यह कीन्हीं। है यह पीर सत्य तुम चीन्हीं।
अब इलाज याको कछु कीजै। प्रानदान सर्बस किन दीजै।५९।

(**बैदबचन**)

(दंडक)

सिखी केर जारयो जियै सिंह को बिदारयो जियै
बरछी को मारयो जियै वाको भेद पाइये।
गरल को खायो जियै नीर को बहायो जियै
पर्वत सों ढायो जियै औषधी पिवाइय।
साँपहू को काटो जियै जमहूँ को डाटो जियै
मौतहू को बाधा जियै जतन बताइये।
बैद्य ह्वै बिधाता जौ उपाय करै **बोधा** कबि
नैनन को मारयो कहो कैसे कै जिवाइये।६०।

(सोरठा)

सुनि हकीम के बैन फिर बूझी तिय कोविदा ।
क्यों पावै चित चैन बिरह भुवंगम के डसे ।६१।

(बैद्यबचन)

(सुमुखी)

बिरही नाहिँ जीवै कोइ । जीवै अगर रोगी होइ ।
कै पुनि करै जोग बिसेखि । कै उन्माद पूरन देखि ।६२।
चित में रही येही नित्त । हा अब कहाँ पाऊँ मित्त ।
कबहुँक जियै रोगी जीव । जीवहि पावही निज पीव ।६३।

(सोरठा)

जिहि तन बिरह बलाय सो प्रानी कैसे जियै ।
जीवै प्रीतम पाय सो उपाय या रोग को ।६४।

(सखीबचन)

(चौपाई)

अहो बैद्य या त्रिय को भावन । छल बल सों समरथ जिमि बावन ।
बैस किसोर बिप्र अति सुंदर । लहि राजसु जनु आय पुरंदर ।६५।
गुनी माँझ अस गुनी न कोई । आगे भयो न अब फिर होई ।
गुनबस कामसेन कहँ कीन्हा । द्विज कों देसनिकारा दीन्हा ।६६।
अति बिहाल बाला भइ तबही । देख्यो द्विजै जात मग जबहीं ।
कामकंदला प्रीतम काहीं । राख्यो एक पक्ष घर माहीं ।६७।
द्विज अपने मन में यह जानै । मो पर भूप गुसा अति ठानै ।
सोवत तजि सो गयो सनेही । देस उजैन सुन्यो अब तेही ।६८।
बरषअवधि कीन्हीं द्विज द्रोही । अब को आनि मिलावै वोही ।६९।

(दोहा)

वय किसोर बीना लिये केस मुकुट तन गोर ।
कामकंदला बाल को माधोनल चितचोर ।७०।

(सोरठा)

रतिपति धरि नरदेह किधौं आय तिय कों छल्यो।
कहाँ पाइये नेह बैरी पूरब जन्म को।७१।

(चौपाई)

सुनत बचन नृप यहै विचारी। धन्य माधवा धनि यह नारी।
अस सनेह कस होय न लोनो। सम दायक लायक ये दोनो।७२।
चाहै नृपति प्रतिज्ञा लीन्हा। तिहि मारै का उद्यमं कीन्हा।
कह्यो सत्य वहि माधव काहीं। देख्यो मैं उजैनि पुर माहीं।७३।
बीन लिये बाउरी रखावै। केसरखौरि सो भाल बनावै।
लकुट रँगीन पीतपट धोती। पगन पाँउड़ी कानन मोती।७४।
मुक्तमाल सेली गल देखी। फूलहार अरु त्रिगुन बिसेखी।
द्वै गजरा दोनों कर माहीं। दोनों दुवो भाँति के आहीं।७५।
अति दुर्बल तन बिरह सतायो। कछुक अजार और तिहि पायो।
अब वह बिप्र जियत है नाहीं। त्यागो तन उजैन पुर माहीं।७६।

(दोहा)

बैद्यबचन हिय अति कठिन लागे कुलिससमान।
हाय मित्र माधवा कहि तजे कंदला प्रान।७७।
निज कुबुद्धि कर धनुष गहि सर सी जबाँ चलाय।
हरिनी सी बनिता हनी बिक्रम बीन बजाय।७८।

(सारंग)

मरी निहार कंदला हरी हरी नरेस कीन्ह।
गयो नसाय चौकचाय हौं बिसाह पाप लीन्ह।
लगी सु कौन बुद्धि मोहिं वोहि ज्वाब देब कौन।
हरी न पीर हौं करी भई न लोक माहिँ जौन।७९।

(सोरठा)

मुई लखी जब बाम हाहाकार पुकारि कै।
सखियाँ गिरीँ तमाम कहि बिरंचि का निर्मई।८०।
होनहार को ख्याल जम भो जतन हकीम को।
उठ्यो ढाल ते काल कहो ओट दीजै कहा।८१।

(मोटनक)

हा हा कहि सोर सखीन कर्यो। काहू पल एक न धीर धर्यो।
राजा इक बात कही तबहीँ। जीहै यह बाल लखौ अबहीँ।८२।

(चौपाई)

कहै बैद्य सब सखियन पाहीँ। तुम जिन सोच करौ मन माहीँ।
हौँ इक अजब इलाज बनाऊँ। मुयो सात बासर को ज्याऊँ।८३।
जौ लौँ न फिरि आउँ इहि पासा। तौ लौँ तजौ न तिय की आसा।
परख्यौ चार पहर मोँ काहीँ। हत्या मोहिँ जियै जौ नाहीँ।८४।

(दोहा)

क्षितिपति निज डेरे चल्यो चित में करत गलानि।
जस करि तन अपजस लग्यो धनि कलिजुग बलवान।८५।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे उज्जैनखंडे विंशतितमस्तरंगः।२०।

(एकविंशतितम तरंग)

इश्क कुज नाम। अथ युद्धखंडे

(पद्धरिका)

नृप हतो करत चित मेँ गलानि। अति धन्य धीस कलिजुग्ग मानि।
हौँ कहौँ हाल का सिफत तोरि। पल मेँ पलटी तू बुद्धि मोरि।१।
हौँ सुजस बाद यह काम कीन्ह। तुम अजस अन्यासै लाय दीन्ह।
इमि मरी कंदला बाल येह। उत मरहि बिप्र याके सनेह।२।

हौं जावँ कहाँ यह सुजस लादि। अब भयो मोर जग जियन बादि।
जौ जियत रहौं नहिं मरौं अब्ब। तौ सुजस सपूती बृथा सब्ब।३।
अन घटै जगत उपहास होय। धृग जियत रह्यौं जौ सुजस खोय।
अब मरन मोर उत्तम बिसेखि। जग में उपाय नहिं आन देखि।४।

(दोहा)

अगम अंक ये भाल के जतन बृथा हैं मित्त।
होनी प्रथमै जात है पाछे दौरत चित्त।५।
धन्य धन्य बिधि बुद्धि तुव करी आन की आन।
करनवार कर में रही तेरी करी प्रमान।६।
पै ना करत बिचार कै है ना नीकी साध।
जल प्यावत प्यासो मरै अनप्यावत अपराध।७।

(दंडक)

जलज थलज कीन्हें सुमन कटीली डार
ससि में कलंक बँकवार सरसाती है।
जोबनवतिन धौ न ताही के सुपासन में
नारिका निपुंसन के सुंदर लखाती है।
बोधा कबि सुजन बियोगी रोगी महाराज
पंडित निधन धनवंतमति माती है।
बारिनिधि बार छार गूढ़ थल कीन्हे बार
या ते बाजी बिधि की तौ खाली चली जाती है।८।

(चौपाई)

परचो सोचसागर नरनायक। अब जग जियन न मोरे लायक।
सोचत निज डेरा कों आयो। हँसि माधौ कों पास बुलायो।९।
चाहै तासु परिक्षा लीन्हीं। तुरत खबरि बनिता की दीन्हीं।
जीवत या कामावति माहीं। माधौ कामकंदला नाहीं।१०।

(दोहा)

मरी नारि यह स्रवन सुनि माधो तन तजि दीन ।
हाय कंदला कंदला कहँ कंदला प्रबीन ।११।
संखनाद देवन कियो छाए ब्योम विमान ।
इत तन त्याग्यो माधवा उत कंदला सुजान ।१२।
सिव बिरंचि हरि निगम नित सोधत जाकी बाट ।
ता अखंड निज धाम के खुले अन्यास कपाट ।१३।

(तोटक)

मधवा तन त्याग कियो जबहीं ।
अति चक्रित राज भयो तबहीं ।
हउँ नाहक दो जिय धात कियो ।
गरुवै अपराध बिसाहि लियो ।१४।

(पद्धरिका)

मरिबो सलाह दूजी न बात । जग जियत सुजस सर्बसु नसात ।
तब कह्यो नृपति मंत्रिन बुलाय । परि रचौ चिता चंदन मँगाय ।१५।
हौं जरहुँ विप्र के साथ आज । तुम करौ सबै उज्जैन राज ।
तब कहै मंत्रिनायक प्रबीन । किहि हेत विप्र तन त्यागि दीन ।१६।
तब कहै नृपति सुनिये सुजान । हौं किये दुहुँन के प्रानहान ।
उत जाय कह्यो कंदला पाँह । तुव मीत मरचो उज्जैन माँह ।१७।
यह बचन सुनन तन तज्यो नारि । कहि हाय मित्र माधौ उचारि ।
मैं अति गरूर द्विजपास आय । सब कही कथा तिहि अग्र गाय ।१८।
तिय मरी सुनत माधौ प्रबीन । कहि हाय मित्र तन त्यागि दीन ।
हौ अमर करन आयो विसेखि । अब अमर भयो मुख मोर देखि ।१९।
मुख मोर स्याह देखौ न कोय । इहि काल चिता बनि त्यार होय ।
इमि सुनत बचन नृप के वियोग । तब सचिव कह्यो बिगरचो सँजोग ।२०।
द्विज मरचो नृपति मरिहै बिसेखि । नहिँ तजत टेक क्षितिपाल देखि ।
को देय मरचो ब्राह्मन जिवाय । किहिं भाँति जियत जग रहै राय ।२१।

(दोहा)

रूसे कोइ मनाइये सर्बसु कहिये दैन ।
मुवा न जीवै साहिवा जोवन गयो फिरै न ।२२।

(चौपाई)

माधौ मर्‌यो कंदला नारी । इनकी यही निमित्त बिचारी ।
हमरे मन प्रतीति अस होई । मरे साथ मरि जात न कोई ।२३।
कहै नृपति सुन सचिव सयाने । मोर सुजस क्षितिमंडल जाने ।
सो सुनि गयो विप्र मो पासा । करि निज मित्र मिलन की आसा ।२४।
द्विज के जिय प्रतीति अस होही । बिक्रम करी सँजोगी मोही ।
मरी कंदला माधौ दोई । यह प्रकास लोकन में होई ।२५।
मैं अब मुरकि उजैन न जाऊँ । कहौ सुजस जग में कस पाऊँ ।
सुजस सहित मरिबो भल सोई । अजस न जियत जगत जन कोई ।२६।

(दोहा)

सुरन साखि पाल्यो न प्रन कर्‌यो जीव को घात ।
एते पै बिक्रम जियै अचरज कैसी बात ।२७।
सुनि सुनि बिक्रम के बचन बोल्यो सचिव सुजान ।
सुजसकाज संसार में काहे तजौ न प्रान ।२८।

(सवैया)

औगुन सोक करै न कहा इक सोभै जहाँ ये तहाँ सबरे हैं ।
दीनदयाल गमें जिनके तिनके तन पातकपुंज भरे हैं ।
मूरख पूरुषहीन वहै ते सदा दुख दारिदसिंधु परे हैं ।
सत्य सो वित्त गयो जिनको जब ते लखिये तवहीं बसरे हैं ।२९।

(दोहा)

निधन न कहिये पंडितन मूरख धनिय न मानि ।
जियत न कहिये अपजसी जसी मुये जनि जानि ।३०।

(मंत्रीबचन)

(छप्पय)

धन दै बिसहि बिपत्ति दाम दै बाम बचाइय।
बास त्यागि तजि देस देस तजि घर हित आइय।
घर नाखै लै प्रान प्रान तें सब कछु होवै।
धन प्यारी परिवार देस दुर्जन कहँ खोवै।
तजिये न प्रान **बोधा** सुकवि राजनीतिमत साखिये।
सुजस एक की का चली सर्बस तजि तन राखिये।३१।

(राजाबचन)

(दोहा)

धन बिछुरे धन फिर मिलै तन बिछुरे तन छार।
बिछुरा जोई ना मिलै जस सपने को यार।३२।

(चौपाई)

मंत्री कहै नृपति सों येही। हौ निस्चय तुम दीनसनेही।
अपनी मौत मरो द्विज माधौ। होनहार को करिये का धौ।३३।
यामें अजस न तुमकों होई। कालहि जीति सक्यो नहिं कोई।
मरि को गयो मरे के साथा। तव बोल्यो बिक्रम नरनाथा।३४।

(दोहा)

अमर होव संसार में तो मरि गये अकाज।
एक बेर मरने परै तो मरिबो सुभ आज।३५।

(दडंक)

निमिष में बरष में चौकड़ी मन्वंतर में
कल्प में प्रलै में जब आवैगी जिसी गली।
संधि पाय सबकों चवाय लैहै **बोधा** कवि
जनमैबो पारन सँहारन वही छली।

तीनों लोक तीनों गुन पाँचो तत्व सृष्टिवान
काहु कों न छोड़िहै अदृष्ट सब ते बली।
त्रिगुनी बचै न और जीव की कहानी कौन
देबीहू कों मारी तौ पुजेरी की कहा चली।३६।

(दोहा)

एक बेर मरने परै **बोधा** यहि संसार।
तौ जैसे दस दिन जिये तैसे बर्ष हजार।३७।

(चौपाई)

जौ मैं इनके साथ न मरिहौं। तौ अब राज किते दिन करिहौं।
यों कहि भूप उठो करि त्यारी। पगिया मेलि भूमि पर डारी।३८।

(मोतीदाम)

भयो दल में अति दीरघ सोर। सुन्यो नृप बिक्रम को हठ घोर।
रही नहि रंचक केहु सँभार। चल्यो नृप कालहु सों करि रार।३९।
धरौ घननाय नगारन चोभ। लख्यो नृप बिक्रम को सत सोभ।
लगे नर ढोवन चंदन काठ। कियो नृपकाज चिता कर ठाठ।४०।
सुगंध तहाँ त्रिविधा करि लाय। चिता धरि देह सुगंध सनाय।
ब्रिमानन छाय रह्यो असमान। सती लखि बिक्रम बिक्रमवान।४१।
दये घृत सों बर कुंड भराय। धरो नृप माधौ को तन ल्याय।
करे अस्नान त्रिबेनिय नीर। दये द्विज देवन दान गँभीर।४२।

(दोहा)

इतने क्षन में बिप्र इक बय किसोर बुधिमान।
सिर फिकार अस्नान करि चढ़्यो चिता पर आन।४३।

(चौपाई)

ताहि देखि नर बूझत ऐसी। चिता चढ़त तुम सो गति कैसी।
माधौ हेत मरी वह नारी। माधौ तिय को हेत बिचारी।४४।

सुजस हेत राजा तन त्यागत। मरन तुम्हार अचंभव लागत।
तब तिन बिप्र कही तिन सेती। मेरी सुनो बारता जेती।४५।

(सोरठा)

प्रात बिप्रमुख देखि भूमि पाव प्रभु ने धरयो।
सोइ दृष्टि प्रति लेखि उठयो मोर मुख देखि नृप।४६।
कुसलकाज यह काज महाराज बिक्रम कियो।
पूरन भयो अकाज मोरे मुख को दोष यह।४७।
लटी भये कछु बात प्रकट भये संसार सब।
रे उठि आज प्रभात कौन दुष्ट को मुख लख्यो।४८।
मों आनन सम आन आनन धृक नहिँ आन को।
जाके देखे हान भई नृपति कों प्रान की।४९।

(चौपाई)

अब यह मुख लाए बनि पावै। फिर ना काहू हानि दिखावै।
तव जवाब क्षितिपति ही दीन्हों। बृथा सोच द्विजवर तुम कीन्हों।५०।

(दोहा)

बेद थके विधि हरि थके संकर थके बिसेखि।
महा अपूरब कालगति तिनहुँ परी नहिँ देखि।५१।
कालपुरुष ने ख्याल यह फेरि रच्यो तिहि काल।
चिता बैठतैं राज के आय गयो बैताल।५२।
दूती के परपंच ते हत्यो निकास्यो ताहि।
प्रानन ते प्यारो अधिक हितू भूप को आहि।५३।
पूरब ताकों सेससुत बर दीन्हों यह ऐन।
जित सुरेस पहुँचै तितै देहि चित्त को चैन।५४।
प्रान जात नरनाथ के सो वर आयो काम।
हनूमान बैताल ज्यों द्विज नृप लक्ष्मन राम।५५।

(चौपाई)

आय बीर बिक्रम सों बूझी । यह कछु लीला मोहिं न सूझी ।
किहि कारन तन तावत स्वामी । भई कहा तुम कों बदनामी ।५६।
तब नृप सब बृत्तांत सुनायो । सुनि बैताल बहुत दुख पायो ।
जौ मैं आय न काज सँवारौं । तौ ये बृथा मरे ते चारौं ।५७।
कर गहि नृप को ठाढ़ो कीन्हों । या बिधि ताहि सिखावन दीन्हों ।
धन्य धन्य बिक्रम नरनायक । तुम सब करी आपने लायक ।५८।
अब निज डेरा कों पग धारौ । पूर्न भयो ब्रत भूप तिहारौ ।
इतै और नर रहै न कोई । उठि माधोनल ठाढ़ो होई ।५९।
भाँति भाँति बैताल सिखायो । तब चलि बिक्रम डेरे आयो ।
बैठ इकंत बीर बैताला । आकर्षेउ फनपति को लाला ।६०।
सो ततकाल आय गो ऐसे । गज के काज गरुड़ध्वज जैसे ।
कहौ कौन कारन मोहिं ध्यायो । तब बैताल प्रसंग सुनायो ।६१।
सुनि सब कथा सेससुत लीन्हीं । बड़ी सिफारिस नृप की कीन्हीं ।
उभय बूँद अंमृत तिन दीन्हा । पिँगली गौन भौन कहँ कीन्हा ।६२।
माधौ निकट बीर चलि आयो । अमीबुंद ताके मुख नायो ।
सुधाप्रबेस कंठ भो जवहीं । कहि या दोस्त उठो द्विज तवहीं ।६३।
द्विज कों लै बैताल सिधायो । निकट उजैनपती के आयो ।
क्षितिपति मिल्यो बिप्र कों ऐसे । अवधनाथ कैकइसुत जैसे ।६४।
रघुबर ज्यों हनुमत जस गायो । त्यों क्षितीस बैतालहिं ध्यायो ।
माधौनलै वहै जक लागी । कहाँ कंदला परम सभागी ।६५।
ताको उत्तर बिक्रम दीन्हों । मैं तो तेरो परचो लीन्हों ।
आसिक एक तु ही जग माईं । त्याग्यो तन तिनुका की नाईं ।६६।
हौं जीवत छाँड़ी वह नारी । मिथ्या तो सों मुई उचारी ।
अमीबुंद क्षितिपति तब लीन्हो । गवन देस कामावति कीन्हों ।६७।
पहुँच्यो कामकंदला पासा । देखत बढ़ी सखिन की आसा ।
अमीबुंद ताके मुख डारचो । उठि बाला कहि मित्र पुकारचो ।६८।

तब नृप कही कंदला सेती । मेरी एक किसा सुन येती ।
तेरे काज माधवा बिरही । बन बन फिरो प्रलापन करही ।६९।
कहूँ न दरद घटत जब जान्यो । मरबै को उपाय तिहि ठान्यो ।
सुवा प्रबीन माधवा पासा । तिहि यह दई बिप्र कों आसा ।७०।
कही प्रबीन माधवा सेती । तेरी बिप्र बिपति कह केती ।
नृप बिक्रम सकबंधी जानो । नग्र उजैन तासु को थानो ।७१।
गज के काज गरुड़ध्वज जैसै । सो परपीरहरन कों ऐसे ।
ताको चलि निज दरद सुनावो । पार बिरहबारिधि को पावो ।७२।

(दोहा)

दीनबंधु बिक्रम नृपति परपीरा सुनि कान ।
सुखी करै कै तासु सँग तुरतहि करै पयान ।७३।

(चौपाई)

यह बिरतंत बिप्र सुनि पायो । तब चलिकैं उज्जैनै आयो ।
अपनो दरद दिलंदर केरा । सिवमठ माँह लिख्यो तिहि बेरा ।७४।
हौं बाँच्यो कारन पहिचाना । तिहि क्षन यहै महाहठ ठाना ।
अन्न पान मैं तबहीं करिहौं । बिरही नल को दुख जब हरिहौं ।७५।
दूती खोज बिप्र कों लाई । मोसों आय मिलाप कराई ।
मैं बड़ आदर द्विज को कीन्हा । आसन निज सिंहासन दीन्हा ।७६।
पुनि बोल्यों द्विज सों असि बानी । कहि द्विज अपनी पीरकहानी ।
तेरो दरद हरौं मैं जबहीं । अन्न पान पाऊँ मैं तबहीं ।७७।
यह सुनि माधो दरद बखानो । तब मैं सुनि उपाय यह ठानो ।
बुलवाई हजार द्वै नारी । नवजोवन सुंदर सुकुमारी ।७८।
पुनि माधो सों यह फरमाई । ढूँढ़ि लेव बाला मनभाई ।
गढ़ ग्वालियर रजायसु लीजै । एक कंदला कों तजि दीजै ।७९।
माधौनल एकहु नहिं माने । मोसों तर्क अनेक बखाने ।
तब मैं तुरत खाँखरा दीन्हो । गवन देस कामावति कीन्हो ।८०।

(दोहा)

पुष्पवती के बाग में डेरा कीन्हो आय ।
हौं आयों तेरे भवन बैद सुभेष बनाय ।८१।

(चौपाई)

परचै काज तोहि छल कीन्हों । तैं तन ताही क्षन तज दीन्हों ।
तुव माधौ को खबरि सुनाई । मरचो बिप्र कछु बार न लाई ।८२।
अजस होत जान्यो जग माहीं । हौहूं मरन लग्यो तिहि ठाहीं ।
चिता चढ़त बैताल सिधायो । तिहि माधौ को आनि जिवायो ।८३।
द्वितिय बूँद अंमृत मैं लीन्हा । सो लै तेरे मुख महँ दीन्हा ।
अब तू मत चिंता मन राखै । बिक्रम झूठ वचन नहिं भाखै ।८४।

(दोहा)

चढ़ि धायो उज्जैन ते माधौ द्विज के काज ।
कालि पकड़ने खेत में कामसेन महराज ।८५।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे युद्धखंडे माधवानल कामकंदला मूर्च्छितजागरण नाम एकविंशतितमस्तरंगः ।२१।

(द्वाविंशतितम तरंग)

इस्क पनाह नाम

(दोहा)

कामकंदला बाल पै नृपति परिक्षा पाय ।
रसमय बोल्यो बचन कछु बाँह तासु गल नाय ।१।

(द्रुबिला)

तब कह्यो बनिता येह । सुन नृपति धर्मसनेह ।
द्विजबंस के तुम दास । यह लोक लोक प्रकास ।२।
हौं बिप्रबाल प्रबीन । तुम कौन यह रस लीन ।
राजान की यह रीति । द्विजबंस पालन प्रीति ।३।

(सवैया)

जौने हजार भईं पुरहूत के कंचनदेह विहारमई है।
अंजनी क्वारें जनो सुत को सिगरे जग सो उपहास भई है।
बोधा पुराननहूँ सुनिये हम तौ बरनी नहिँ बात नई है।
विप्रबधू के सनेह लखो अजहूँ लौं छपाकर माँझ छई है।४।

(चौपाई)

तब नृप कह्यो कंदला पाहीं। तुम द्विजपतनी होती काहीं।
गनिका दूजे नृप की दासी। पुन्यजोखिता सबकी आसी।५।
दान देय सोई पति प्यारो। यहै पतिव्रत कहिये थारो।
कहै कंदला सुन नरनायक। या ना तेरे कहिबे लायक।६।
हौं तन धरि नर और न जानो। एक माधवा विप्र बखानो।
नृपघर रही एक पखवारा। दरसन लौं स्वारथै बिचारा।७।
इच्छाबर माधोनल कीन्हा। देहदान दूजे नहिँ दीन्हा।
दिवस एक राजा मो पासा। आयो केलि करन की आसा।८।

(दोहा)

कर मेरी छाती धरयो अग्नि परयो जनु जाय।
महाराज तबहीं रह्यो ज्यों ठगमूरी खाय।९।

(चौपाई)

कहै बाल बिक्रम नृप सेती। मेरी लेहु परिक्षा येती।
मेरो जीव बिप्र की देही। या देही में बिप्र सनेही।१०।
अँगरा बाल हाथ पर लीन्हो। परच्यो यह राजा को दीन्हो।
निज डेरे जैये नरनाथ। देखिय जाय विप्र को हाथ।११।
यह सुनि भूपति डेरे आयो। माधोनल को पास बुलायो।
दहिने कर लिय अँगरा लीन्हों। बायों हाथ बिप्र को चीन्हों।१२।

(दोहा)

जरयो हाथ में माधवा नृपति लख्यो निज नैन।
सिफत इस्क दरियाव की मुख ते कहत बनै न।१३।

(चौपाई)

यह परसंग बिप्र पर गायो। सुनि नृप सचिवसमाज बुलायो।
हुकुम पाय मंत्री सब आये। तिनकों नृप ये बचन सुनाये।१४।
कामसेन क्षितिपति पर जैये। कारन मेरो उन्हें सुनैये।
हौं रन मंडित होत बिहाने। दैहैं त्रिया कि जुद्धहि ठाने।१५।

(दोहा)

नृपसासन सुनि सचिव सव कीन्ह प्रनाम बनाय।
कामसेन नृप पैं चले बिप्र पचौरी पाय।१६।

(पद्धरिका)

तहँ अमरसिंह पंडित प्रबीन। कबि कालिदास रसनौम लीन।
संकर समान सिंधुर सुजान। वररुचिर बुद्धि तिनकी बखान।१७।
कवि कोक धनंतर बैद्य और। बैताल सचिव सिर गिनत मौर।
नृप कामसेन के द्वार जाय। पठयो प्रनाम राजहि जनाय।१८।
उज्जैनराय के सचिव जानि। लीन्हें बुलाय नृप हेत मानि।
हिय सों लगाय भेटे सुप्रेम। नरनाह सहित सव् बूझि क्षेम।१९।

(दोहा)

उचित उचित सन्मान कर उचित उचित बैठार।
सिंहासन ब्रैठ्यो नृपति कामसेन तिहि वार।२०।

(सवैया)

चौरन झौर ढरैं चहुँ ओर ते खौलत केसरनीर फुहारे।
मंडित छत्र सिँहासन पै भुइलोक मनो रविदेव पधारे।
सूरसमाज लसैं सुर से कल कोकिल गान करैं गुनवारे।
काम महीप की दीपत ऊपर एक सहस्त्र सतक्रतु वारे।२१।

(चौपाई)

कामसेन बूझी यह चाह। क्षेमजुक्त बिक्रम नरनाह।
क्षेमकथा बैताल सुनाई। तब नरेस ने यों फरमाई।२२।

कारन कहौ कहाँ तुम आए। कहा बचन नृप कहि पठवाए।
तब इहि ओर बीर बैताला। कहन लग्यो माधौ को हाला।२३।

(दोहा)

मित्र कंदला बाम को बिप्र माधवा नाम।
गयो त्रास महराज के देस छोड़ि अरु ग्राम।२४।
भयो फिरादी सो गयो महाराज के पास।
नृप कों कौल करायकै कह्यो आपनो त्रास।२५।
करी प्रतिज्ञा राय ने सुनत बिप्र के बैन।
विरही को दुख टारिकै राज करौं उज्जैन।२६।
पस्चिम कामावती के परचो आय नरनाह।
हमैं पठायो आप पै कहि पठई यह चाह।२७।
देहि कंदला बाल कों कै बाँधै किरवान।
वचन सुनत कोपित भयो कामसेन भुवमान।२८।
ज्यों सप्रेम नवलाहि लखि कामी उर अकुलात।
त्यों ही नृप प्रज्वलित भो सुनत जोम की बात।२९।

(पद्धरिका)

यह बचन सुनतही जरचो भूप। बैठो सकोप ह्वै कालरूप।
द्विज दरद पाय उज्जैनराय। नृप कामसेन पर चढ्यो धाय।३०।
अति गर्ब बढ़्यो विक्रम बिसेखि। क्षत्री न आन क्षिति माँह लेखि।
पठये बसीठ अति ही उताल। तुम चलौ लेन कंदला बाल।३१।
लाज्यो न नेकु यों ही बतात। इत नहीं दूसरो अन्न खात।
हौं देहुँ कंदला बाल तब्ब। जब ब्रह्मसृष्टि मिटि जाय सब्ब।३२।
तब कह्यो बीर बैताल येह। किहि हेत करत नरनाह तेह।
द्विजहेत दीजिये प्रानदान। यह राजनीति समझौ सुजान।३३।
तब कह्यो फेरि पुनि कामसेन। तुम चले लरन को दान लेन।
तुम बिप्रबंसपालक भुवाल। है किती बात कंदला बाल।३४।

(राजाबचन)

(चौपाई)

जौ पै दान लेन नृप आए। तौ किहि हेत बसीठ पठाए।
दलबल लै उजैन कों जावै। विप्रभेष धरिकै फिर आवै।३५।
द्वै कर जोरि अर्ज यह कीजै। द्विज कों कामकंदला दीजै।
यह उपाय करिकै नृप आवैं। तवहीं कामकंदला पावैं।३६।

(दोहा)

कहै बीर बैताल तव मोहिं न आन लखाय।
को समर्थ संसार नृप विक्रम जापै जाय।३७।

(छप्पय)

दस राजा चंदेल बीस चौहान तीस भर।
छत्तिस गूजर गोंड़ गोर सुरकी छप्पन घर।
पैंसठ नृप राठौर साठ तैलंग फिरंगी।
पीपर कुरम तुरक्क असी हाड़ा सफजंगी।
सिरनेत वघेले बैस पुनि गहिरवार पड़िहार सत।
समरत्थ विक्रमादित्य के इते भूप चौकी रहत।३८।

(सुमुखी)

को नरनाह और समत्थ। विक्रम जाहि जोड़ै हत्थ।
जाको धाकु प्रवल प्रचंड। थरथर कँपत भारतखंड।३९।
अस को भूमिपाल निहारि। कर गहि खड्ग मंडहि रारि।
हौं नहिँ लखहुँ क्षत्री कोय। बिक्रम के जु सनमुख होय।४०।

(कामसेनबचन)

(छप्पय)

अहे बीर बैताल बृथा जिन गाल बजावै।
जव हौं गहौं कृपान कौन मो सनमुख आवै।
सो वे दोऊ दीन रहत जूती कर लीन्हे।
जिन कृपान कर धरी बाँधि बैरिन तिन दीन्हे।
मम हट्ट भट्ट जाहिर जगत झूठी वातन भाखि दिय।
सो करौं बैर उवरै तदपि जदपि सिरन सिव राखि हिय।४१।

(बैतालबचन)

थरथर कँपै पहाड़ उदधि उछलै अकास कहँ ।
रबि रज सों पुरि जाय द्वैस में रैन होहि तहँ ।
अमद होहिँ मदमत्त गर्भ गब्बिन तिय डारैं ।
झिरना झिरैं पषान सिह संकित चिक्कारैं ।
छुटि जाहि तेग बैताल भनि को क्षत्री सन्मुख रहहि ।
सुन कामसेन नरनाह तू जि दिन खड्ग बिक्रम गहहि ।४२।

(राजाबचन)

अहे भट्ट मतिनट्ट हट्ट बोलत कस बानी ।
सट्ट घट्ट सब करौं बट्ट बिक्रम रजधानी ।
कुट्ट कटक पुनि लुट्ट छत्र सिंहासन ल्याऊँ ।
पुनि उजैन निरसंक एक छतपती कहाऊँ ।
जाहिर न तोहि मेरी गुसा भूलि गर्ब जिन रख्ख हिय ।
मम कामसेन मुख चुप्प रहि एती बढ़ किमि भष्ष दिय ।४३।

(बैतालबचन)

(चौपाई)

बारा जोजन के विस्तारा । परचो लाख वाइस असवारा ।
एक एक क्षत्री रनधीरा । जोजन भर फटकारत तीरा ।४४।
हाथी सात बेध सो जाई । कौन ओट करि बचिहौ राई ।
बिक्रम को दल जीतै कोई । सिव बिरंचि हरिहू किन होई ।४५।
रस में देहु कंदला बाला । बेरस ना करिये क्षितिपाला ।
बेरस भए होय नहिँ नीकी । राज जाय अरु आफत जी की ।४६।

(राजाबचन)

(चौपई)

पर्बत उड़ै पंख जौ लाइ । तरुवर चहै धराधर खाइ ।
पस्चिम बहै गंग को नीर । कामसेन हट तजै न बीर ।४७।

(बैतालबचन)

अचल चलै चल रहै थिराय । पर्बत परै उदधि में जाय ।
कँपै सुमेरु धरै नहिँ धीर । बिक्रम जब फटकारै तीर ।४८।
उमानाथ आसन सों चलैं । धरासहित धाराधर हलैं ।
दिगदंती करिहैँ चिक्कार । जब बिक्रम धरिहैँ हथियार ।४६।

(राजाबचन)

(छप्पय)

अहे बीर बैताल भट्ट झूँठी जिन भाखै ।
जब हौं गहौं कृपान कौन भट धीरज राखै ।
बन बन के तुम होहु फिरौ हथियार ढुकावत ।
माँगिन की औखाद कहा तू गाल बजावत ।
लखिबी न तोहि रन के जुरे दूत कहा बड़ उच्चरै ।
उठि जाय बेग सठ प्रान लै बिना काज जिन हठ करै ।५०।

(दोहा)

डरत लोक उपहास कों भिक्षुक हतत न कोय ।
अहे दूत उठि जाय किन प्रानहान जिन होय ।५१।

(बैतालबचन)

(छप्पय)

... ...
... ...
जा दिन मर बैताल ति दिन गौरी सत छंडहिँ ।
जा दिन मर बैताल रुधिरधारा सब झंपहि ।
मरि जाहिँ भूप भू पर जिते क्षत्रिहीन पुहुमी करहुँ ।
सुन कामसेन नरनाह तू जि दिन खड्ग हौं कर गहहुँ ।५२।

(राजाबचन)

(दोहा)

अहे भट्ट मतिसट्ट तू बोलत क्यों न बिचारि ।
कहै पकरि दरबार में देहुँ फेकरन डारि ।५३।

(बैतालबचन)

(छप्पय)

को पर्बत कर धरै कौन सुम्मेरु हिलावै ।
कों पयोधि नकि जाय को जु केहरि चढ़ि धावै ।
कौन हलाहल खाय कौन अहिपूँछ मरोरहि ।
कौन पवन कर धरहि कालसन्मुख को जीतहि ।
को चढ़ै जाय धौरागिरिहि को पकरै जमजाल कहँ ।
स्वर्गनिसेनी देह की को पकरै बैताल कहँ ।५४।

(राजाबचन)

(छप्पय)

अहे बीर बैताल प्रथम तू आय भिखारी ।
पुनि आयो ह्वै दूत कहा तेरी अधिकारी ।
पंच न मारत कोय नीति यहि भाँति बखानत ।
हतौं न तोहिं तिहि हेत मोहिं निर्बल तू जानत ।
उठि जाव बेगि निज राज पै यहै ज्वाब मम दीजिये ।
सफजंग भोर तौ हौं करहुं आप तयारी कीजिये ।५५।

(दोहा)

करि प्रनाम महराज कों चल्यो बीर बैताल ।
इतै बिक्रमादित्य पै सबै बखान्यो हाल ।५६।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे युद्धखंडे कामसेनवाग्विलासो नाम द्वाविंशतितमस्तरंगः ।२२।

(त्रयोविंशतितम तरंगः)

इस्क नौतब नाम

(सोरठा)

प्रात उठो गलगाज कामसेन नरनाह उत ।
इत बिक्रम महराज भए नगाड़े दुहूँ दल ।१।

(झूलना)

उत कामसैन प्रचंड इत बिक्रमादित्य समत्थ ।
रवि के उदय संग्राम कों धारयो कृपानी हत्थ ।
अति दीह दिग्गज बीह लै करियो नकारन सोर ।
रन सूरमा हरषन लगे सुनि खाँखरों की घोर ।२।

(दोहा)

निकस्यो कामावती सों कामसेन नरनाथ ।
हैदर पैदर गज रथी एक कोटि लै साथ ।३।

(झूलना)

सफजंग कों ठाढ़ो भयो सजि कामसैन नरेस ।
दस कोस करयो पयान धरि करि रच्यो खेत सुबेस ।
दिसि चार को मुहरान लाग्यो घने बरकनदाज ।
पुनि चार पंगत अस्व की सजि बीच में महराज ।४।

तिन मध्य गज रथ ऊपरे धरि रतनछत्र बिसाल ।
नरनाथ तित ठाढ़ो भयो जड़ि चारहू दिसि हाल ।
पहुँचै न तीर कमान जिहि अस्थान कौनउँ बान ।
सरदार कों तित राखिये यह राजनीति प्रमान ।५।

हरबल्ल मेढ़ामल्ल लै करि तुरी तीस हजार ।
कढ़ि खेत में ठाढ़ो भयो सिरनेति धरि तिहि बार ।
उस ओर विक्रमदित्य को रंजोरसिंह पमार ।
उठि धाय यों गलगाज कै सत सात लै असवार ।६।

जुरि गये अतिहि रिसायकै मभियायकै दल दोय ।
वह कौन मेढ़ामल्ल मेरे आय सन्मुख होय ।
सुनि बचन यों रनजोर को यों कह्यो मेढ़ामल्ल ।
हम चोर नाहिंन ताकि मो तन घाव पहिले घल्ल ।७।

(त्रोटक)

रनजोर कह्यो तुम चोर नहीं । रनचोरन कों निकसे हमहीं ।
तुम घालहु घाव सम्हारि अबै । पुनि होहु बिना सिर सेल सबै ।८।
तब यों पुनि मेढ़ामल्ल कह्यो । कुलफै बड़री तुम काहिँ रह्यो ।
तुम घालहु घाव गई न करौ । पुनि तौ अमरापुर कों पधरौ ।९।

(द्रुबिला)

इक धूरिया मरहट्ट । बलवान लीन्हें टट्ट ।
रनजोर ऊपर आय । तिहि हनी सक्ती धाय ।१०।
वह आड़ियो रंजोर । ब्यापो न रंचक तोर ।
उन फेर लीन्ह कमान । तिहि हने बाइस बान ।११।
ते सबै वान बचाय । उठ्ठचो पमार रिसाय ।
उलछार खग्ग कराल । कियो धूरिया को काल ।१२।

(मोतीदाम)

इते क्षन बावन बीर प्रचंड । कह्यो रनजोर इतै रन मंड ।
हन्यो तिहि के सिर खग्ग पमार । गयो बचि नेकु भयो नहिँ वार ।१३।
भयो अति कोपित बावन बीर । लग्यो वर्षा वर्षावन तीर ।
बली बलभद्र प्रचंड चँदेल । हन्यो तवहीं तिहि के सिर सेल ।१४।
गिरचो भुवि बावन कै अति सोर । जुरचो रन में तव भम्मन जोर ।
अरे बलभद्र लखै किन मोहिँ । बिना हथियार हनौं सठ तोहिँ ।१५।
जुरचो वलभद्र इतै खन आय । हन्यो तिहि भम्मन खंजर धाय ।
गिरचो बलभद्र लख्यो विरसिंघ । जुरचो रन में भटभीर उलंघ ।१६।
अरे सुन भंमन बावनपूत । भये तुम खीचियबंस सपूत ।
हत्यो बलभद्र बली मम बीर । हनौं अब तो कहँ बावन बीर ।१७।
इतै खन छूरनसिंह बघेल । हन्यो बिरसिंह बली कहँ सेल ।
बच्यो बिरसिंह रह्यो उठि सोय । गये जुरि घूरन घूरन दोय ।१८।
इतै बलवान बघेले बीर । उतै लखि भाट महारनधीर ।
लरे दोउ घूरन कै घमसान । गये तिनके इक साथहि प्रान ।१९।

इते बिरसिंह बली पर आय। जुरयो सिरनेत बिहंडनराय।
हन्यो तिहि के बिरसिंह चँदेल। गयो लहि प्रानन तीक्षन सेल।२०।
लरयो बिरसिंह खरो रन माँह। किये बिन प्रान हजारन काँह।
जुरयो तिहि सों रन भम्मन आय। हने दुउ बीर हजारन पाय।२१।
गिरे भुवि एकहि साथहि दोय। रही भुइँ सोनित आमिष मोय।
बली नृप बिक्रम को भट बीर। जुर्यो रन गौर सपूत हमीर।२२।

(छप्पय)

इतै बीर हम्मीर उतै भावामल गूजर।
लरे बीर संग्राम करैं दोनों दल ऊजर।
झुकि झुकि बाहत खग्ग मुंड बरषत बर्षा इमि।
भभकत सोनितकुंड रुंड सफरी गूलर जिमि।
किलकंत भूत बैताल भनि कटे बीर सोरह सहस।
उड़ि गयो मुंड हम्मीर को रुंड जुर्यो पुनि रन रहस।२३।

चलहिँ परिघ तरवार कई हज्जार सेल सर।
गिरत रुंड पर रुंड मुंड पर मुंड लगी झर।
मदगल गय बिन सुंड चाप बिन तरल तुरंगम।
बिन बाहन असवार रुधिरधारा भय संगम।
हंकित मध्य हम्मीर जब भूत किते सुरपति चकित।
सब कटंकुट्ट हट्टिय न फिर कामसेन दल कहँ कहत।२४।

(सुमुखी)

कटक अपार कीन्ह धर जब। जुरयो मेढ़ामल्ल बल तब।
लिय सूर समरत्थ सत्थह। गहिय सूल कृपान हत्थह।२५।
इतहि बीर हम्मीर हंकित। हूँक सुनत पुरहूत कंपित।
धराधर धरख्खत धरधर। भूमि सैल दिगीस थरथर।२६।
बजत तरपड़ मुंड भटभट। सूल खग्ग कृपान खटखट।
धड़ाधड़ ढरकंत ढल्लन। झरत सोनितबुंद झल्लन।२७।

परे सोनितकुंड रुंडह। भकाभक भभकंत सुंडह।
सरासर सरसंत सरबर। कूर रव कूँकंत करवर।२८।
कटत सूर सावँत फकफक। कँपत कायर कूर धकधक।
जड़ाजड़ जड़कंत दंतन। घनाघन रब घोर घंटन।२९।
लसत सैल कृपान झलझल। ताकि सोनित सकल जलथल।
सिंधुवार प्रचंड उछलत। सहित मेह मुनीस मलकत।३०।
गिरिय भावामल्ल भारी। नच्यो संकर देइ तारी।
सहित दस सात्रंथ कुट्टिय। बीर गौर हमीर हट्टिय।३१।

(दोहा)

सहस तीस कुट्टिव कटक खड्ग म्यानजुत कीन्ह।
तज्यो बीर हम्मीर तन पिंड प्रान कहँ दीन्ह।३२।
मेढ़ामल समरथ्थ इत उत रनजोर पमार।
खड़े खेत हथियारजुत रबि अथयो तिहि बार।३३।

(झूलना)

तव कह्यो मेढ़ामल्ल सुन रनजोर सिंह पमार।
रवि गयो अपने धाम कों अब तु ही क्यों न पधार।
रबि उदय फिर रन मंडबी नहिँ छोंडबी यहि खेत।
है स्वास जौ लौं देह में तौ लौं न छोड़ों नेत।३४।
यह कौल करि दोनों पधारे गये निज निज ऐन।
विरतंत सवरो पाइयो महराज कंद्रपसैन।
रबि के उदय रन को सज्यो हरबल्ल मेढ़ामल्ल।
इक लक्ष तरल तुरंग लै सत सात मत्त मतल्ल।३५।

(दोहा)

तनभाई पच्चीस लै आयो उत रनजोर।
है जाके बल जोर को दोनों दल में सोर।३६।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे युद्धखंडे त्रयोविंशतितमस्तरंगः।२३।

(चतुर्विंशतितम तरंग)

(सोरठा)

मेढ़ामल वलवान कह्यो बीर रनजोर सों ।
तू मति खोवै प्रान विनु दलवल निज गर्ब वसि ।१।
कह्यो बीर रनजोर मोर तोर सरियत यही ।
वात डारियै छोर जो हारै ताको नृपति ।२।

(चौपाई)

जुवाजुद्ध दोनों ठहरायो । छत्रसिँहासन बाजी लायो ।
बूझि दुवौ नृपतिन सों लीन्हों । यही पटो दोनों लिखि दीन्हों ।३।
मेढ़ामल्ल जुद्ध जो हारी । छत्रसिँहासन देवै नारी ।
जो रनजोर युद्ध में हारै । देय छत्र उज्जैन पधारै ।४।

(दोहा)

दुहूँ ओर अति सोर भो रन हाँको रनजोर ।
सारधार वर्षा भई गजन कीक दइ घोर ।५।

(मोतीदाम)

जुरचो रन में रनजोर झकोर । गयो भट बीर हजारन फोर ।
इतै सुरकी लखि होगरराय । हजारन जानत जुद्ध उपाय ।६।
अहे रनजोर पमार समत्थ । इतै पल एक करै किन हत्थ ।
अड़ो तिहि सों रनजोर पमार । चल्यो दुहुँ ओर घन्यो हथियार ।७।
बली नृप बिक्रम को प्रतिहार । कह्यो रन पूरनमल्ल खँगार ।
महाबलवान हुसेन पठान । हन्यो सुरकी उर तीक्षन बान ।८।
गिरचो रन डोंगरराय निहार । जुरचो सुरकी धनसिंह पमार ।
इतै लखि गोंड़ बली अनिरुद्ध । लिये कर खग्ग कियो बड़ जुद्ध ।९।
गिरचो धनसिंह घने भट और । मरे सत सत्तर एकहि ठौर ।
महाबर गोंड़ बली पर आय । जुरचो रन बारिय उद्धमराय ।१०।
कह्यो वहि ओर हुसेन पठान । गही तब बीरमदेव कृपान ।
बड़ी पड़ सर्रझरी लखि सोय । भयो रन तो कहँ आड़ न कोय ।११।

असी सत सूर समर्थ सँहारि। करी तिहि सों पुन वारिय रारि।
गयो कटि बारिय वारिय जोह। चल्यो तव बीरम कै अति कोह।१२।
चल्यो हथियार जितै मेढ़मल्ल। गयो तहँ बीरम कै अति गल्ल।
तुरी उलछार चढ़्यो गज धाप। लये मुखबीच हजारन छाप।१३।
हत्यो गज औ नृप केर खवास। गिरे सत चालिस औ तिहि पास।
मर्‌यो तब बीरमदेव समत्थ। रहे अटके हउदा सन हत्थ।१४।

(सोरठा)

चढ़्यो आन गजराज मेढ़ामल्ल समर्थ तव।
उतै मारि गलगाज कह्यो मेढ़ भजि जाय किन।१५।
मेढ़ा हँसी वढ़ाइ खाजी खूंव पमार की।
सो रन रोरै काइ केतो जोर पमार में।१६।

(दोहा)

भली कही रनजोर तू या जानै सव कोय।
ग्रीषम अंत पमार की भाजी साजी होय।१७।

(त्रोटक)

तब यों रनजोर पमार कही। अबहीं यह जानि परी सबही।
तुव दोजक माँह पमार परै। अकि तो कहँ फारि सिकार करै।१८।

(दोहा)

वह मेढ़ा जिन जान तू राँध खात सब गावँ।
मैं वह मेढ़ामल्ल हौं पेट फारि कढ़ि जावँ।१९।
होत न सदृस पमार को एक जने को साग।
एक मेढ़ में होत है आधे दल को भाग।२०।
मेढ़ा की ठोकर लगे वर पीपर थहरात।
केतिक बात पमार तू उखरि खुरी सों जात।२१।
सुनि सुनि मेढ़ामल्ल के वचन गर्ब गंभीर।
रनगाजी बाजी चढ़्यो कर्न पमार सुधीर।२२।

(पद्धरिका)

गहि खंग खेत दाबो पमार। भइ बृष्टि सृष्टि पर सारधार।
चौहान बीर मंगल उदंड। नृप कामसेन दल में प्रचंड।२३।
अति कोप करन पर जुरचो आय। तिहि हन्यो बीर अनुरुद्ध राय।
बचि गयो फेर चौहान बीर। अनुरुद्ध गोंड़ उर हन्यो तीर।२४।
जूझ्यो प्रचंड वह गोंड़ तब्ब। रनजोर गह्यो कर खग्ग जब्ब।
वहि ओर बीर मंगल समत्थ। रनजोर सिंह सों कीन्ह हत्थ।२५।
कटि गयो बीर चौहान धोय। तब जुरचो दुंद अति क्रोध होय।
अति सबल जान चौहान बीर। इहि ओर कर्न परमार धीर।२६।
ते लड़े प्रथम कमान बान। पुनि सेल सक्ति गहिकै कृपान।
दोनों समर्थ सावँत प्रचंड। जिन मल्लजुद्ध कीन्हों उदंड।२७।
पुनि कर कटार गहि जुद्ध कीन्ह। इक बेर दुवौ तन त्यागि दीन्ह।
दल कट्यो सब्ब बाइस हजार। तब फेर खेत हाँक्यो पमार।२८।

(चौपाई)

इतहि बीर रनजोर प्रचार्यो। उतहि मल्लमेढ़ा ललकारचो।
खलबल भयो दुहूँ दल भारी। किलक कीन्ह पसुपति दै तारी।२९।

(मोतीदाम)

सरासर सेल घने सरसंत। झराझर सोनितबूँद परंत।
खड़ाखड़ होत खड़ग्गन जोर। धड़ाधड़ ढाल ढलक्किन सोर।३०।
भटाभट मुंड बजैं रनबीच। मची सनि आमिष सोनित कीच।
नचैं रनभूमि पिसाचिय जोर। पियैं घट सोनित खप्पर फोर।३१।

(दोहा)

जूझो मेढ़ामल्ल तब कामसेन सुधि पाय।
नृपति बिक्रमादित्य पर मंत्री दए पठाय।३२।

(चौपाई)

चलिकै दूत राय पैं आयो। कामसेन को हुकुम करायो।
महाराज विक्रम सुनि लीजै। अब मिलाप की त्यारी कीजै।३३।

कामसैन मिलिबे कहँ आयो । तजि बिरुद्ध प्रभु हेत पठायो ।
यह सुनि बिक्रम त्यारी कीन्हीं । ज्वाब सुदेस दूत कों दीन्हीं ।३४।
चलिकै दूत राय पै आयो । बिक्रम केर सँदेस सुनायो ।
सुनतहिँ कामसैन नरनाहा । मिलन चल्यो करिकै चितचाहा ।३५।

(दोहा)

कामसैन आयो तुरत नृप बिक्रम के पास ।
करि मिलाप ब्यौहार सब बैठे सहित हुलास ।३६।

(चौपाई)

पुनि नृप कामसैन या कही । हम जो तेग राय पै गही ।
सो नरेस अनुचित नहिँ मानो । राजनीति मत यही बखानो ।३७।
क्षत्रीधर्म प्रथम करि लीजै । पीछे हेत सुहृदता कीजै ।
तब बिक्रम बोल्यो अस बानी । महाराज तुम नीतिनिधानी ।३८।
हम तो लघु सेवक हैं तेरे । कामसैन सुन साहिब मेरे ।
मैं द्विजहेत पास तुव आयो । तुम अपने जिय भेद बढ़ायो ।३९।
मैं न कह्यो जाच्यो नृप तोहीं । तैं दुर्जन करि मान्यो मोहीं ।
तब नृप कामसैन या कही । दूतन भेद बढ़ायो सही ।४०।

(दोहा)

कामसैन नृप पै कही नृप बिक्रम यह बात ।
मुख करैं बैताल अति भाटन की औखात ।४१।
कहनावत साँची भई पुराचीन यह ईठ ।
सजना सजना ढुरि मिले भूठे परे बसीठ ।४२।

इति श्री विरहवारीश कामकंदलामाधवानलचरित्र भाषा विरही-सुभानसंवादे श्रृंगारखंडे चतुर्विंशतितमस्तरंगः ।२४।

(पंचविंशतितम तरंग)

(चौपाई)

कामसैन माधवै बुलायो । विरही राजसभा में आयो ।
मिल्यो सप्रेम नृपति द्विज काहीं । गुसा रंचभर राखी नाहीं ।१।

नीके भूप कही द्विज माधौ। नृपति कहैं तुव दरसन साधौ।
राजा उभय प्रेमजुत देखे। माधौ भाग्य सुफल करि लेखे।२।

(दोहा)

कामसैन कर जोरि करि बिनतो कीन्हीं येह।
कामावति चलिये नृपति बिक्रम तजिकै तेह।३।

(चौपाई)

कामसैन बिक्रम नरनायक। माधौ औ मंत्री जो लायक।
चले सबै कामावति काहीं। बैठे तीन एक रथ माहीं।४।
घरी भीर कामावति आए। अवधनाथ के दरसन पाए।
पूजा प्रभु की बिक्रम कीन्हीं। सहस गऊ बिप्रन कहँ दीन्हीं।५।
पुनि नृप रवनबाग में आयो। हवा देखि बहुतइ सुख पायो।
पुरबासी सब देखन आए। तिन दरसन बिक्रम के पाए।६।
जो चलि निकट राय के आवै। नमित करत बीरा सो पावै।
पुनि महीप महलन पग धारा। प्रथमहिं महल मयूर निहारा।७।
पुनि दरबारभूमि नृप आयो। कामसैन तब विनय सुनायो।
सिंहासन दोऊ नृप ऐसे। राजत दोइ पुरंदर जैसे।८।

(पद्धरिका)

नृप महल देखि अतिही सुबेस। दिलमस्त भयो विक्रम नरेस।
अति चित्रसहित राजै दिवाल। पुनि गिलम चाँदनी लखि बिसाल।६।
तब कही नृपति सुन कामसैन। सुन महाराज पालक उजैन।
इहि महल रहत कंदला बाल। अति रूपवंत गुनमय रसाल।१०।
तुव हुक्म पावँ बुलवाय लेवँ। उहि बेग माधवै सौंपि देवँ।
सब भीड़भाड़ नृप टारि दीन्ह। पुनि बाल कंदला टेरि लीन्ह।११।
जब भेद सुन्यो कंदला येह। तब अंग अंग उमग्यो सनेह।
दृग फरकि उठो बायों बिसेस। पुनि बावँ लंक फरक्यो सुदेस।१२।
यह सरस सुख्ख जानै न कोय। हिय लखित कुलाहल ताहि होय।
उत फरक्कियो माधवा अंग। दुहुँ ओर प्रेम सरस्यो अनंग।१३।

तब सखिन कह्यो कंदला पाहिँ। करि लो सृँगार सब अंग माहिँ।
तिय कहत कहा साजौँ सृँगार। पिय मिलन माँह ह्वैहै अबार।१४।
उठि चली बाल माधवा पास। उमग्यो अनंद अति हिय हुलास।
पुरहूत आदि साहिबी सब्ब। तृन मान कंदला लखी तब्ब।१५।
दृग देखि कंदला विप्र काहिँ। भो अति हुलास हिय तासु माहिँ।
दुहुँ ओर दुहुँन बिस्तार बाँह। दरबार बीच सकुचे न काँह।१६।

(दोहा)

द्वै डोरी के बीच तेँ दोनोँ बाँह पसार।
मिलन हेत दोनोँ लही ज्यौँ बिरहानिधि पार।१७।

(चौपाई)

मिले सप्रेम हिये लगि दोई। यह सुख जानत बिरलो कोई।
माधो दृगन नीर भरि आयो। तिय हिलकन को सोर मचायो।१८।
सखिन आय न्यारे तिहि कीने। दुर्बल अंग बिरह के छीने।
द्विज के चरनन बाला लागी। मेरु समान प्रीति उर जागी।१६।
दोनोँ चलि राजा ढिग आए। निज करुना के वचन सुनाए।
अंजलि जोरि दुहुँन नें लीन्ही। कामसैन की अस्तुति कीन्ही।२०।

(हरिगीतिका)

चिर जिवौ काम भुवाल गो द्विजपाल भुवभरतार ही।
चिर जिवौ दीननिवाज राजसमाज स्रुतिमग धारही।
चिर जिवौ कामपुरीस सब नरईस करुनाकंद जू।
तुव रहैँ रछक गिरीस गिरिजा जानकी रघुनंद जू।२१।
चिर जिवहु बिक्रमसैन नगर उजैन छत्र बिराजही।
चिर जिवहु परदुखहरन कलि करतार करन समाजही।
चिर जिवहु करुनाकरन तू सकबंध क्षितिमंडल करै।
जग अचल कीरति विदित अवधभुवाल के सम बिस्तरै।२२।

(दोहा)

जौ बिक्रम ममतामुखी जौ जग तुम होते न।
तौ या कलि में प्रीति करि जीवत हम दो ते न।२३।

(सोरठा)

बूड़त बिरह पयोधि नौका नृप बिक्रम भयो।
दो जिय राखे सोधि धन्य धन्य उज्जैनपति।२४।

(चौपाई)

दुवौ नृपति ने यों मत कीन्हों। द्विज कों राज बनारस दीन्हों।
हय गय सिबिका रथ समुदाई। हाटक रजत हवेली पाई।२५।
अखै तीज माधो सित होई। बिरही भए सँजोगी दोई।
आज्ञा दुहूँ नृपन की पाई। निज घर कामकंदला आई।२६।

(दोहा)

नृपति बिक्रमादित्य को कामसैन महराज।
भाँति भाँति आतिथि करी मिजमानी को साज।२७।

(चौपाई)

मास एक विक्रम नरनायक। अन्नपान कीन्हों नहिँ भायक।
कीन्हें सुखी बियोगी दोई। ऐसो हठ पारत नहिँ कोई।२८।
बिरही सुखसंदेह मिटायो। तब बिक्रम नृप भोजन पायो।
जो ऐसी करनी नृप करही। सोई पग सिंहासन धरही।२९।
इत कंदला माधवा बिरही। बूझति कुसल क्षेमजुत थिरही।
बसन पटंवर भूषन नाना। बिप्रन दयो कंदला दाना।३०।
वारि जवाहिर सखियन दीन्हों। मिलन अनंद कंदला कीन्हों।
सुक प्रबीन की अस्तुति कीन्हीं। विपतिसँघाती पिय कों चीन्हीं।३१।

(त्रोटक)

लखि जानु भुजान परे विलसै। जनु कंद्रप दोइ तूनीर कसै।
सम लाज मनोज सुवाल हिये। बिहँसै पट अंचल ओट दिये।३२।

पिय नाहियँ नाहियँ यों कहती। मन माह उमाह घनो गहती।
मुसक्याय कभू मुख हाय कहै। तब माधव ही सुख छाय ग्है।३३।
कुच चारु बिचार कहा लहिये। मदनद्दल के कलसा कहिये।
कटि छीन प्रबीन उतंग करै। उमग्यो तन स्वेदप्रवाह ढरै।३४।
कुचसंध सकीरन के उचकै। मनहू उहिँ पार न जाय सकै।
हिरनाक्षन जोर कटाक्ष करै। मुख हट्ट लखें मनु चाव धरै।३५।
पियरी तन ज्यों बिरहा सरसी। अनुराग ललाम बढ़ी नरसी।
बिथुरी अलकैं चहुँघा लहिये। जनु राहु ससेट ससी कहिये।३६।
छहरै मुकता लहरै हियरे। तिय नाक सकोर कहै पिय रे।
चित चायल पायल घोर करै। मदनद्दल घायल से चिहरै।३७।

(दोहा)

कनककलस से चारु कुच गहे मरोरत कंत।
मनहुँ लंक को सीस गहि हिलरावत हनुमंत।३८।
दोनों जाँघ भुजान पर कर में पीन उरोज।
अचरज पियमुख इंदु लखि बिहँसत कंज सरोज।३९।
मतो मतो ठहराय के रदछद कियो कपोल।
अकबकाय पिय पर कह्यो रस अनखौहें बोल।४०।

(चौपाई)

अति अनखौहें लोचन कीन्हे। चरन खैंच कंधन ते लीन्हे।
चरन उठाय अतिहि अनखाई। पिय कों सौंह अनेक दिवाई।४१।
उझकत झुझकत कही न मानत। बरबट मान तमासो ठानत।
छुटी जात नहिँ बसन सम्हारत। टुटी प्रीति मुख ते उच्चारत।४२।
कटि भुज गहि तिय कों द्विज खैंचहि। भूषन बसन कामनीयै चहि।
गाय उठी अति रूठी बाला। ज्यों माधोनल दौंदि खुसाला।४३।
कहि न बाल बालम की मानी। चली रूसि अतिही खिसियानी।
तब द्विज माधौ बीना लीना। चल्यो रिसाय हिये रसभीना।४४।

जयश्री राग विप्र उच्चारी । कृपा करत रहिये सुन प्यारी ।
सुनिकै बाल मंद मुसुक्यानी । डगर चल्यो माधौ द्विज ज्ञानी ।४५।
झपट बाल बहियाँ गहि लीन्हीँ । बूझी कित को जात्रा कीन्हीँ ।
अब यह गुसा माफ कर दीजै । चलिये बहुरि अमावस कीजै ।४६।
माधो अतिहि रूख मन कीन्हा । तब तिहि बाल अंक भरि लीन्हा ।
लपटत झुकत सेज पर आए । दुहुँन दुहुँन कोँ नयन चुराए ।४७।
कामकंदला अति पछितानी । भूले मानप्रकृति मैँ ठानी ।
मन मिलाय पुनि बिहरन लागे । प्रेमप्रवाह दुऔ हिय जागे ।४८।
तिहि अवसर गुलजार तमोली । कहि पठई माधौ सोँ बोली ।
पायो राज कंदला नारी । कहहु याद को करै हमारी ।४९।
जब सुत के घर आवत नारी । विषसमान सूझत महतारी ।
यार लोग किहि लेखे माहीँ । माधौ अनुचित कीन्होँ नाहीँ ।५०।
सुनिकै माधौ अति सकुचाना । आयो मिलन मित्र अस्थाना ।
सकुचत मिल्यो अतिहि सुख पाई । अपनी सब वारता सुनाई ।५१।
मित्र सहित निज घर कोँ आयो । यहै प्रसंग कंदला पायो ।
मिल्यो प्रबीन तमोली काहीँ । बूझो दुवौ कुसल दुइ पाहीँ ।५२।

(दोहा)

कामकंदला माधवा वरई सुवा प्रबीन ।
मिले क्षेमजुत सुख बढ़्यो छिन छिन अति रसलीन ।५३।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरही-सुभानसंवादे शृंगारखंडे पंचविंशतितमस्तरंगः ।२५।

(षड्विंशतितम तरंग)

(अथ लीलावती की बारहमासी)

(दोहा)

माधोनल कामावती कामकंदला गेह ।
लीलावति विरहिनि इतै ब्याकुल तासु सनेह । १ ।

जेठ मास पुहुपावती तजी माधवा मित्त।
ता दिन ते लीलाबती धीरज धरयो न चित्त।२।
सुखित होत संजोग में निसि नभ सौरभ चंद।
बाग तड़ाग सुराग सब विरहिन कों दुखदंद।३।

(ज्येष्ठ)

(भुजंगप्रयात)

नसेठै बड़ी ग्राज जेठै करी री। पुकारै सखी धाय हाहा मरी री।
बड़ी ज्वाल जग्गै जरी जात देही। बुझै ना बिना विप्र माधौ सनेही।४।
चढ़ी चौखटा नौखटा लौं निहारै। दिसा चार हेरै कि हाहा पुकारै।
कहूँ धूरिया धूरिया लोग गावै। जरे पै मनो भीड़ लोनै लगावै।५।
मरै कोकिला या करै सोर माई। हनै प्रान पापी पपीहा कसाई।
जरै चंद्रिका चंद्र पापी धरै री। विना माधवा प्रान मेरे हरै री।६।
निसा साँवरी प्रेत की जोय जैसी। जरै जोगिनी जामगीजोत ऐसी।
करैं प्रेमसंग्राम यो जान नीके। चढ़ी चौखटा जे त्रिया साथ पी के।७।
कहौं टेर कापै न कोऊ सुनै री। विना जान वा पीर को धौ गुनै री।
ग्रहे माधवा माधवा यों पुकारै। विना माधवा साधवा को सँभारै।८।

(चौपाई)

सुन सुभान लीलावति नारी। विरहदवाग जरत सुकुमारी।
ग्रीषमतपन भोर ग्रति होई। पिय विछुरे सहाय नहिँ कोई।९।
मूर्छित पड़ी सेज पर कामिनि। विषसो वासर जम सी जामिनि।
बूड़त उछलत दिवस बितावत। बिरहसिंधु को पार न पावत।१०।

(सोरठा)

माधौ मेरी पीर यहि जग कोई जान नहिँ।
जानत नहीं सरीर रजा मजा वाकिफ इन्हैं।११।

(सवैया)

हिय ग्रान कै यो जिय जान तहीं जब लौं नहिँ ग्रान कों जाहिर है।
मन में गुनि ग्रावै कहे न बनै निसिवासर तावत ताहि रहै।

कवि **बोधा** न आन के जानबे को यह प्रेम को पंथ जवाहिर है।
दिलमाहिर सों जो मिलो बिछुरो बा किसा तो वही दिल माहि रहै।१२।

(दोहा)

बिरही मन चौगान लै इस्क महल्ला झेल।
अपने सिर कों बढ़ाकर मन भावै तो खेल।१३।

(प्रमानिका)

बिहाल बाल यों भई। सनेह या दगा दई।
कुरीति कों कहै खरी। नसेठ जेठहू करी।१४।
न कान नेकु मानहीं। अलीन ही न जानहीं।
करी कहा भई कहा। विरंचि निर्दई महा।१५।
बियोग नित्त सो कियो। अपार दुख्ख ही दियो।
कठोर कोकिला ररै। पपीहरा हियो हरै।१६।
प्रचंड पौन ज्यों चलै। लतादि बृक्ष त्यों हलै।१७।

(दंडक)

सुन हे सुभान दिनमान की निकाई अब
लीजै कहा ग्रीष्म की तपन तनु ताइयै।
फेर द्विज माधौ को सँदेसहू न पायो भारी
नौरतनवारे नौ ते नंद सरसाइयै।
बोधा कवि संग की सहेली कहैं बार बार
पूजा कीजै बर की बियोग बिसराइयै।
पूजियै कहा री जो पै बर घर नाहीं आली
तब कहौ कैसे बरसात हौं मनाइयै।१८।

(बरवै)

गावहु री तुम गावहु तुमहीं चैन।
हमहि न सुख बिन मितवै तरसत नैन।१९।

(चौपाई)

सुन सुमुखी सुख भयो'व हानी। बिन माधौ सब जग दुखदानी।
भली निबाही जेठ जिठाई । सो करनी कहि जात न गाई।२०।
अब तौ बर्षा ऋतु नियरानी। चाहत हमहिँ दई अब जानी।
फिर ना मिली माधवा काहीँ। रही यहै आसा मन माहीँ।२१।

(सोरठा)

सुन सुभान यह रीत मिलि बिछुरै हिय प्रीतमहिँ।
सुनि हिय होत सभीत ज्योँ त्रिसंकु नृप की कथा।२२।

(चौपाई)

ज्योँ ज्योँ जेठ मास ऋतु आई। जीवत रही प्रीतमहिँ छाई।
सजल घटा दिसि पूरब देखी। कालसरूप बियोगिन लेखि।२३।
सुन सुभान लीलावति नारी। या माधौ माधौ रूरकारी।
सुमुखिय ध्याय गई गिरि ऐसे । बेधिय वधिक कुरंगिनि जैसे।२४।

(सवैया)

कारी घटा दिसि दक्षिन देखि भयो री हितू हियरा जरि कारो।
ताही घरी कहि हाय वहै गिरि गै भुव पै लहि प्रेमतमारो।
केते न आय लगाय थके कवि **बोधा** हकीमन को उपचारो।
पै ना धरै वह धीर अरी न मिलै वह पीर को जाननहारो।२५।

(चौपाई)

सखी आय तब नारि निहारी। तजत प्रान नहिँ आन बिचारी।
भलि यह प्रीति माधवा कीन्हीँ। जम के हाथ बीच तिय दीन्हीँ।२६।
माधव नाम सुनत सुकुमारी । उठि पुनि पूरब दिसा निहारी।
कीन्ह प्रलाप घटा लखि सोई । सुधि बुधि नाहिँन देई कोई।२७।

(आषाढ़)

(भुजंगप्रयात)

महाकाल कैधों महा कालकूटे ।
महाकालिका के किधौं केस छूटे ।
किधौं धूमधारा प्रलैकालवारी ।
किधौं राहुरूपै किधौं रैन कारी ।२८।
महामत्त मानो मही कों हलावै ।
चढ़ो चंचला ज्वालमाला फिरावै ।
ररै मोर वा सोरवा भूमि छाई ।
करै तोरवा पौन तीनो कसाई ।२९।
महा घोर वा मेघ की को सँभारै ।
चढ़्यो नाकनाके सु त्यों बारि झारै ।
करै कोकिला यों कलापान हेली ।
बिना माधवा मोहिँ जानो अकेली ।३०।
कहौं कौन पै को सुनै पीर माई ।
बुरी आय आषाढ़ ने लाय लाई ।
घटा मध्य पापी बकापाँत जोरै ।
मनो मैन के बान बिरहीन छोरै ।३१।
अरे नग्रवासी परे बैर मेरे ।
सु गावैं हिँडोरा सबै देत टेरे ।
अरी प्रीति की रीति हौं तो न जानी ।
भई री हफासेट कैसी कहानी ।३२।

(सवैया)

नइ प्रीति में प्रीतम तो बिछुरो बनै काहू न पीर सुनावत री ।
बिरही चकचौंधि रही बनिता वै अषाढ़ी घटा लखि आवत री ।
सुनि भूली सुभान सबै मुरवा धुरवान को धावन धावत री ।
हफासेट लौं बाये फिरै मुख को बनै रोवत ही नहिँ गावत री ।३३।

(बरवै)

रोवत बनै न गावत सहै सरीर ।
इहि अषाढ़ मांहिँ बाढ़ी अटपटि पीर ।३४।

(भुजंगप्रयात)

अरी आय आषाढ़ ने गाढ़ पारी ।
मरी री मरी माधवा मोहिँ मारी ।
अरी चाँदनी सेज लै दूर डारौ ।
इतै आय कासा कि सज्जा सँवारौ ।३५।
तजौँ प्रान हत्या पपीहै चढ़ाऊँ ।
किधौँ पाप लै मोरवा सीस नाऊँ ।
किधौँ दोष आषाढ़ के सीस डारौँ ।
किधौँ मित्र के सीस सोँ सीस मारौँ ।३६।
बृथा प्रेम के सिंधु मेँ मोहिँ डारी ।
गयो त्याग ऐसी करी है चका री ।
खरी सौत सी या अहै रैन कारी ।
सबै लायबे जोग बेमाधवा री ।३७।

(सोरठा)

बीत्यो मास अषाढ़ सावन तन तावन लग्यो ।
बिरहिन के हिय गाढ़ मनभावन दावन बिना ।३८।

(चौपाई)

सावन सखी लग्यो तन तावन । क्योँ जीवै बिरहीमन भाव न ।
सजल घटा चहुँ दिसि ते धावत । मनहुँ मतंग जंग कहँ आवत ।३९।
ररत मयूर चंचला छहरै । बिन भावन बिरही हिय लहरै ।
घहरि घटा गर्जन जनि छहरति । बिहरत गिरि बिरही नर लूटति।४०।
पीउ पीउ चातक रट लागो । बिरहीहिये लगावत आगी ।
बिन माधौ हौँ कल नहिँ पाऊँ । मित्र बिमुख किहि सरन मनाऊँ ।४१।

(मेघ)

(सोरठा)

मेघइ मेघइ धूम हौं बिरहिन तालीम इम ।
महिरम बेमालूम विरह किताब पढ़ावसी ।४२।

(श्रावन)

(मोतीदाम)

सखी सुन सावन आवन कीन्ह ।
भई बिन भावन हौं अति दीन ।
खरी यह कोकिल कूकत बीर ।
लगे बिन भावन मो हियँ तीर ।४३।
चपै चपला छहरै घन माँह ।
चलै चमकाय वियोगिन काँह ।
महाघन घोरत फोरत कान ।
ररै मुरवा न हरै मम प्रान ।४४।
मनो धुरवा छहरै भुवि आय ।
मनो बिरहीवध जालउपाय ।
बढ़ी सरिता हरिता सब भूमि ।
दसो दिसि मेघ रहे तिमि भूमि ।४५।
चलै तहँ तीक्षन बेग बयार ।
लगै बिरहीहिय ज्यों कठफार ।
लगे बर्षा वर्षाविन मेह ।
खड़े चुचुवात बियोगिन गेह ।४६।

(सोरठा)

मेरी बेदन बीर हरिबो पावस मास द्वै ।
जसु कै माधौ धीर देह गये देही रहै ।४७।

(सवैया)

ऋतु पावस स्याम घटा उनई लखिकै पुनि धीर धिरात नहीँ।
धुनि दादुर मोर पपीहन की लखिकै क्षन चित्त थिरात नहीँ।
जब ते मनभावन ते बिछुरो तब ते हिय दाह सिरात नहीँ।
हम कौन सोँ पीर कहैँ दिल की दिलदार तौ कोई दिखात नहीँ।४८।

(बरवै)

यह दिल मेँ दिलगीरी लखतु न आन।
कै दिल जानै आपन कै दिलजान।४९।

(त्रोटक)

सजि सावन दावनगीर चढ़यो।
नभ घोर कठोर निसान मढ़यो।
बकपंगत स्वेत ध्वजा फहरै।
तिनकोँ लखिकै बिरही थहरै।५०।

घन घोरत मैगल मत्त मते।
बिरहीजन प्रानन काज दते।
रनमंडन है कि धुजा चपला।
तिनकोँ लखिकै थहरै नवला।५१।

रनसूर मयूर घने चिहरैँ।
धुरवा झुकि सात्रँथ से बिहरैँ।
रन ढाढ़िय चातक चारु धरै।
यह भेख कबित्तन चित्त हरै।५२।

जुगनूगन जामगिज्योति जगै।
रन घोर कठोर सो तोप दगै।
त्रिविधा तहँ पौन तुरंग चलै।
बिरहीन हियो द्रुम जोर हलै।५३।

सुरपत्तिकमान विमान छई ।
घन बानन की बरषा सु ठई ।
सर से बर बुंद परे धरनी ।
सरिता उमड़ी तजिकै तरनी ।५४।
जल में जलबुंदक माल परैं ।
त्रिदसा जनु फूलन बृष्टि करैं ।
जुरि इंद्रबधू मग में डगरैं ।
बिरहीजन सोनितबुंद परैं ।५५।
सुमुखी यहि रीति नवान भई ।
सुखदायक ते दुख देत दई ।
बिन भावन कौन सहाय करै ।
सगरे निदरा हटि मौन धरै ।५६।

(दोहा)

समय पाय बिरहीन को भेख टरुटी देत ।
सरिता के तट बैठिकै मजलिस मुजरा लेत ।५७।

(दंडक)

ररत मयूर मानो चातक चढ़ावै चोप
घटा घहरात तैसी चपला छटा छई।
तैसी रैन कारी बारिबुंद झरि लाई भेखि
झिल्लिन की तान रुचि बाढ़त वही नई ।
साजी चित्रसारी नई प्रीतम पियारी ठई
गावैं मघा यों हिंडोरा कोरा प्रीतमैं भई ।
बरषाबहार तरुनाई को तमासो मोहिँ
सावन की रैन मनभावन दगा दई ।५८।

(चौपाई)

माधौ मोहिँ महादुख दीन्हा । वर्षासमय बियोगिन कीन्हा ।
सजहिँ सृंगार अभूषन नारी । करहिँ गान ते पियहि पियारी ।५९।

गलबाहीँ डोलैं दृग राती। नवल नारि जोबनमदमाती।
दंपति मिले हिंडोरा झूलहिँ। मोहिँ बिरह की सूलन सूलहिँ।६०।

(सोरठा)

सखी दुसह यह पीर मेरे हिय खटकत रहत।
त्यागि न देहि सरीर इहि दुख बिरही माधवा।६१।

(भादों)

(त्रोटक)

झकझोरत पौन प्रचंड चलै। बिरहीद्रुम मूलसमेत हलै।
घहरै घनघोर घटा छहरै। नव पल्लव लौं वनिता थहरै।६२।
निसि वासर भेद कछू न रह्यो। चकहा चकहीन वियोग दयो।
बरहीगन सों बिरहीय जरै। जुगनूगन जोर परै सुपरै।६३।

(भुजंगप्रयात)

मघामेघ मातंग से जो रचाए। महाघोर संसार में जोर छाए।
महा मेघमालान के घोर भारी। कहूँ सिंह चिक्कार थैरात नारी।६४।
कहूँ वज्र की घोर पप्पी चिहारैं। कहूँ मोरवा सोर कै मोहिँ मारैं।
घने भारदी भेख झिल्ली कलोलैं। कहूँ चंचला मेघ के चित्त डोलैं।६५।
कहूँ तान हिंडोर की जोइ गावै। हिये लागि पी के घने रंग छावै।
सखी ते सबै बैर मेरे परे री। नहीँ होत साँती हिये ते करे री।६६।

(सोरठा)

पाली हती मयूरि आली हौं चित चाहिकै।
सौत भई अब कूरि बिरह बिवस पावसनिसा।६७।

(दंडक)

आठौ जाम पवन प्रचंड की झकोर तैसी
मेह झरना की मैड़ी सरिता तलान की।
तैसियै कलापी मारू करखा अलापै तैसी
झिल्लिन की झौंर कारी रजनी कलान की।

बरही रही बखानै तैसियै हिये में बाढ़ी
बिरहमजेज पंचबान के झलान की।
प्रीतम सुजान प्यारी कैसे कै सँभारै भारी
घन घहरान छहरान चपलान की।६८।

(सोरठा)

रे रे चातिक कूर अबध बाल जानत जगत।
भावन हमरो दूर सूने मत सकती करै।६९।

(सवैया)

प्यारो हमारो प्रवासी भयो तब सों सहिये बिरहानलतापन।
एते पै पावस की जो निसा हियरा हहरै सुनि केकीकलापन।
चातक याते करौं बिनती बिन काम क्षमौ अपनी या अलापन।
तैं अपने पिय कों सुमिरै पै मरैं हम तेरी जुबान के दापन।७०।

(दोहा)

मारचो केकी कुहुक कै बिरही ही निरसंक।
चातक अवसर आपने तू मत सहै कलंक।७१।

(चौपाई)

प्रथम निदाघ तपनि तन तायो। बच्यो अषाढ़ ताहि पुनि लायो।
ताही पै सावन रिस कीन्हीं। फिर तिहि खौफ भादवै दीन्हीं।७२।
अधम भूप भादों गत सोई। बड़ अंधेर रैनि दिन होई।
दिन के राज सूर नहिँ देखी। नहिँ द्विजराजप्रसंग बिसेखी।७३।
बरषत बहुत नेम नहिँ कोई। सरिता सरबर नदिया सोई।
चलत पंथ नित नित सो खूटी। रानी जिनकै बीरबहूटी।७४।
पानिप गलित गलित थल ऐसो। सुरभीदान सूद्र कों जैसो।
सब थल पाय पंक सरसानी। बेदबिबाद मलिन तियबानी।७५।
सजत न दूर कोकिला कीन्हीं। विषहर भेखी पातुरि चीन्हीं।
बिदुवा कहत मेंढ़कन काहीं। पढ़त बेद निसि दिन जल माहीं।७६।
अमल कमल फुलि रह्यो न कोई। जिनको बिदुकि राज छय होई।
उड़ै लाय जुगनू लखि ऐसे। चाहै कूर कूर नृप जैसे।७७।

(दोहा)

गोँच जोँक अहि केँचुआ कानखजूरे भेख।
बिच्छिन कोल पतंग डस भगदर बढ़हिँ अलेख।७८।

(सोरठा)

भादोँ पटतर भूप भयो जो प्रजा अभाग ते।
जम सम सरल स्वरूप अचल पंथ तम रैनिदिन।७९।

(दंडक)

सजल सरूप परमारथ सनेही बार
बेगि बलवान आयो गैन चढ़ि धाय है।
हौँ तो परपीरक बिसेष तोहिँ जान्यौ करि
बृष्टि कै कै छाया म्हारी तपन बुझायहै।
उत्तर सुनाऊँ आयो उत्तर दिसा ते जो पै
कौन देस कौन गाँव बसती बतायहै।
मौन मत होय एरे मेघा हे हमारे बीर
साँची कहु बालम बिदेसी कब आयहै।८०।

(सोरठा)

बिरह बाउरी बाल तोहिँ खबर कछु सम असम।
इन मेघन के गाल गला होत करता बचै।८१।

(चौपाई)

पै कछु दोष तोहिँ यह नाहीँ। बिरही बिकल बाउरे आहीँ।
मेघन दूत सुनो मैँ कोई। सावधान बिरही किन होई।८२।

इति श्री बिरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे श्रृंगारखंडे षड्विंशतितमस्तरंगः।२६।

(सप्तविंशतितम तरंग)

इस्क बराम नाम

(कुँवार)

(सोरठा)

उध्धत आस्विन भूप प्रमुदित कोविद कोकनद ।
जल थल नीत अनूप बंछित सुर नर नाग जिहि ।१।

(पद्धरिका)

जल अमल कमल प्रफुलित बिसेखि । तल अमल ऊर्ध आकास देखि ।
यह सरद सुखद सब काल आय । मोहिँ ज्वालमाल बिन पिया पाय ।

(सोरठा)

अहे सुनो ब्रजनाथ बिन सँजोग प्रिय नाथ के ।
लखि अद्भुत यह गाथ सरद चाँदनी देत दुख ।३।

(चौपाई)

फूले कास कुसुम बहुताई । जनु बरषा यह लई बुढ़ाई ।
घटै द्रब्य दाता लखि जैसे । बिन भावन बिरही तिय तैसे ।४।

(भुजंगप्रयात)

अहे जूथ भौँरान के जोर धावैँ । जिसी ओर जावैँ मजा खूब पावैँ ।
भए मत्त नौनी लता नेह कीन्हेँ । घने फूल फूवार योँ पाय लीन्हैँ ।५

(त्रोटक)

जलहू थल फूलमई सो भई । यह फूल मयंदन के उनई ।
ऋतु सीतल सीतल पौन चलै । निसि रूप लखे अवकूफ हलै ।६।

(दोहा)

सब गुन सुखदायक सुकबि सरदनिसा नव नार ।
हसत लसत सी ससिमुखी गोरी सील उदार ।७।

(सोरठा)

सुन सुमुखी यह पीर लेत देत बीरा जगत।
मोहिँ न बीरा बीर खानो बिन माधो मिले।८।

(कार्त्तिक)

(चौपाई)

कातिक अमल मास जग जानत। नर नारी हरि सोँ हित मानत।
मोहिँ न हरि के हित सुख होई। मेरो हरि माधवनल कोई।९।

(झूलना)

प्यारी पियारे पीउ की नारी भरी अनुराग।
पूजा करै हरिदेव की जलदेव की बड़भाग।
चर्चैँ सुचंदन चारु अंगन फूलहार सुबेस।
धोती सुउज्जल ही हरै छूटे जि मेचक केस।१०।
गावै बजावै तारियाँ दै बोलि हरि हरि खूब।
इहि मास मोहिँ उदास करि गो माधवा महबूब।
देवैँ दिया आकास कोँ गृह बारि दीपक पूरि।
गावैँ सुदीपक राग बाला सजे भूषन भूरि।११।
खेलै जुवा जुरि जाइ बनवै देव गोधन धारि।
मदमत्त नाचैँ ग्वालियाँ हकरंत लरत पचारि।
करि अन्नकूट बिसाल देव उठाय नर नारीय।
साजैँ सु गौन बिबाहमंगल गाय गनगौरीय।१२।
वह देखि आनँदमूल सब जग सूल मो हिय जानि।
देखे बिना द्विज माधवा क्योँ लीजिये सुख मानि।१३।

(मार्ग मास)

(सोरठा)

लाग्यो मारग मास जग तो भायो उस्न जल।
जल थल सीत प्रकास भारे सम बिरहिन भवन।१४।
यह मारग यह सीत मोहिँ आन होतो रुचिर।
होतो माधौ मीत हियरे पर हियहार ज्योँ।१५।

(चौपाई)

यह बिरंचि की लखि चतुराई। दिलवर नरन दरद अधिकाई।
माधव से महिरम नर काहीं। बन बिहार बस्ती घर नाहीं।१६।
नाहक नर उपहास बढ़ावै। गुनसमुद्र को स्वाद न पावै।
नाहक नृपति निकारा दीन्हा। हिय हवाल हेला उन कीन्हा।१७।
सात दीप की दीपति जो है। सो तौ माधोनल कहँ सोहै।
ता कहँ छाँह न सीतल पानी। राज साज की कौन कहानी।१८।
याते बिधि अबिबेकी देखा। राँगा रूपा सम करि लेखा।
दूजे जग के नर अज्ञानी। तिन माधो की प्रीति न जानी।१६।
मूरखसभा चतुर नर कैसे। बगुलन माहिँ हंस लखि जैसे।
याते बग मूरख छल छावैं। हंस सुजान रहन नहिँ पावैं।२०।
औगुन कथन काम का कीन्हा। मारग मास छोड़ तिहि दीन्हा।

(पूस मास)

लाग्यो पूस सीत सरसानो। बनिता फिर निजु हाल बखानो।२१।
निसि दिन सीत लहैं नर नारी। तूलन तपी प्रीतमहि प्यारी।
तिनकों ऋतु को गुन सम लागत। जिनके हिय लगिकै पिय जागत।२२।
जिनके गेह न प्रीतम प्यारो। तिनहिँ ज्वालसम जगत हिमारो।
होहिँ बिबाह गीत तिय गावहिँ। आधी रात बरात जिमावहिँ।२३।
मड़वातर बरात छबि छाई। बजैं दाँत जिमि बजत बधाई।
परस्यो भात न आगे खाहीं। लूघर लूघर सब चिचियाहीं।२४।

(माह मास)

अब सुन सखी माघ इत आयो। सबरे जगत मोदमद छायो।
प्रथम मकर अस्नान दान नित। फिर बसंत आगम प्रबीन चित।२५।
कहुँ कहुँ आमन मौर निहारैं। कहुँ कहुँ कोकिल बचन उचारैं।
हरित बाल जोबन हरियानो। आगम ऋतु बसंत को जानो।२६।
जगत धमार नारदी गावै। रुचिर हार सृंगार बनावै।
ऊँचे महल झरोखन झाँखैं। जिनकी लगी जिन्हों से आँखैं।२७।

(फाल्गुन मास)

अब सुन सखी फाग नियरानी। यह फागुन सब जग सुखदानी।
चढ़ी चौखटा नार नवेली। निसि दिन जे प्रीतम सँग केली।२८।
सम गर्मी सम सीतलताई। संजोगिन कहँ मौज बनाई।
ऊपर ललित चँदोवा साजै। नीचे गिलम दुलीचा राजै।२९।
ता ऊपर परजंक बिछायो। तिहि पर मदनजुद्ध सरसायो।
सने सुगंधन लज्जा त्यागे। लपटे छुटे जुटे उठि भागे।३०।
एक नार आँगन के माहीं। गलबाहीं बैठी बहु आहीं।
नाना रुचि मनोहरा गावैं। द्वारे कढ़त लट्ठ लै धावैं।३१।
बरियाई करि वा सन मारैं। बसन छीनि कहि घनी तुकारैं।
बंधु बाप की आन न राखैं। मदमाती अबला सब भाखैं।३२।
बीन मृदंग झाँझ झनकावैं। नाचि गाय सब लोग हँसावैं।
एकै राजसमाजन माहीं। उड़त अबीर रंग सरसाहीं।३३।
केसर नीर अर्गजा बरषैं। सने गुलाल नारि नर हरषैं।
एकै फूँकि होलिका आवैं। भाँति भाँति के स्वाँग बनावैं।३४।
गदहा चढ़े जटा सिर बाँधैं। हाड़न की माला आराधैं।
धूर उड़ावत गावत सोई। अनहोनी जो जग में होई।३५।

(सवैया)

गोबर कीच सने ये बने अरु कीन्हे कुसुंभै सराब के नस्सा।
हाथ में लट्ठ लटैं बिथिरी उनमाती सी नारि किये रसमस्सा।
धूरन पै लपटैं झपटैं सने इल्लत गावैं खसूर फफस्सा।
को बरनै जो लख्यो इन आँखिन फागुन मास को धूमर धस्सा।३६।

(चैत मास)

(चौपाई)

सुन सुमुखी बसंत ऋतु आई। माधोनल की खबर न पाई।
कूकन लागी कोयल पापिन। बिरहिन मारन लगि संतापिन।३७।

(सवैया)

कोकिल या तो कुठार सो बान लगे पर कौन को धीरज रैहै।
याते मैं तोसों करों बिनती कबि **बोधा** तुहीं फिरिकै पछितैहै।
स्वारथ औ परमारथ को फल तेरे कछू सुन हाथ न ऐहे।
ठौर कुठौर बियोगिन के कहूँ दूबरी देहन में लगि जैहै।३८।

(बरवै)

कूक न मार कोइलिया करि करि तेह।
लगि जाहै बिरहिन के दुबरी देह।३९।

(पद्धरिका)

लखि कंज खंज प्रफुलित बिसाल। किंसुक समाज ज्यों ज्वालमाल।
लखि सुभट आम सिर धरे मौर। ऋतुराज आज सिरताज तौर।४०।
बन बाग सबै पतिझार देखि। यह चैत मास कारन बिसेखि।
सव फूलजुवत द्रुम बेलि देखि। बेदन समान बिरहीन लेखि।४१।
जल अमल चलत त्रिबिधा समीर। उर तीन ताप सम लगत बीर।
दिसि चार चैतसन्या निहारि। कहि 'हाय मित्र' भुइँ परी नारि।४२।

(सवैया)

कोकिल कूकत रोसो दयो दृग देखि पलास समाज सटा लौं।
बाढ़ लखो तो घने भमरान की स्यामता घोर लखात घटा लौं।
या सब ठौर मनोहर है अमलान के मौर वितान पटा लौं।
एरी बसंत को फेरी परयो मनु मारयो फिरै चउगान बटा लौं।४३।

(भुजंगप्रयात)

दिसा चारहू पौन को चक्र धावै। कहूँ कोकिला कूकिकै लाइ लावै।
कहूँ भीर भौंरान की घोर भारी। कहूँ तान सारंग बीनादि न्यारी।४४।
कहूँ कामिनी कंथ ऊँची अटारी। उठै कामकल्लोल यों रैन सारी।
दिसा चारहूँ द्वारिया चूब खोलै। हरी लाल पीरी डरी झर्प डोलै।४५।
खरी चाँदनी ज्यों चँदेवा तनायो। घनो गारि घंसार सारे बहायो।
रची चाँदनी सेज सुम्नादि नीकी। अहै सै निसा कै निसा राम जीकी।४६।

(सवैया)

लखि ये पतिभार पलास बढ्यो नवबेली दवागिन ज्यों दहतीं ।
सुनि कोकिला कूकन काम भभूकन चंपक भूकन ते सहतीं ।
कबि बोधा जे कोऊ प्रवासी कहूँ तिनकी बनिता दुख यों कहतीं ।
धनि वेई त्रिया या बसंत समै छतियाँ लगि कंत की जे रहतीं ।४७।

(बैसाख मास)

(दोहा)

संजोगी बिरहीन को तन तावत ज्यों लाख ।
सुन सुमुखी की साखि यह बीस बिसा बैसाख ।४८।

(प्रमानिका)

कठोर कोकिला ररै । पपीहरा हियो हरै ।
प्रचंड पौन ज्यों चलै । लतादि बृक्ष त्यों हलै ।४९।
सखी कहा बिथा कहों । दई दई सोई सहों ।
न मित्र इत्त आवही । न चित्त चैन पावही ।५०।

(सोरठा)

सुनि सुमुखी यह पीर बालापन बेधत दई ।
क्यों करि धरिये धीर सुधि नहि माधो ने लई ।५१।
बीते बारह मास मास मास गलि माँस गो ।
रही निगोड़ी साँस माधो के स्वासन लगी ।५२।
माधो मेरे यार यारी में ख्वारी करी ।
बीती अवधि अधार अब जीवों आधार किहि ।५३।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-**संवादे** शृंगारखंडे लीलावती बारहमासी संपूरणं सप्तविंशतितमस्तरंगः ।२७।

(अष्टाविंशतितम तरंग)

इस्क गुजरान नाम सृंगारखंडे

(दोहा)

स्वपने देखी माधवा लीलावती बिहाल ।
हा प्यारी प्यारी सुमिरि भूमि गिरचो तिहि काल ।१।
कष्टित रव सुनि मित्र को कष्टित उठि अकुलाय ।
हाय हाय कहि कंदला द्विज कों लयो उठाय ।२।

(चौपाई)

सखियन सहित कंदला नारी । माधौ सों बोली तिहि बारी ।
सुनो बिप्र माधौ मम स्वामी । भई कहा तुमकों बेरामी ।३।
कहो बुझाय बार जिन ल्यावो । किहि कारन प्यारी गुहरावो ।
सौ सुनि बिप्र कह्यो तिहि पाहीं । अकथ कथा कहिबे की नाहीं ।४।

(सोरठा)

अहो प्रिया सुन प्रान संकाजुत माधौ कहै ।
मोहिं तोहि चिंता न कानन हो कानन सुनी ।५।
कही न याते जाय जाय सील याके कहत ।
ताते तन में लाय तन ताऊँ ताकी तपन ।६।

(चौपाई)

यह सुनि फेरि कंदला नारी । माधौ सों बोली सुकुमारी ।
कै करतूत सखिन कछु कीन्हीं । कै मैं चूकि गई मतिहीनी ।७।
कै कछु कामसेन फिरि कीन्हा । कै काहू दूती मत दीन्हा ।
कै कछु कालकला अवरेखी । कै कोऊ सपने प्रिय देखी ।८।
चूकै सखी दूरि तिहि कीजै । मेरी चूक सिखापन दीजै ।
कामसैन को डर कछु थोरा । निकट उजैनपती को डेरा ।९।
दूतीचरित ध्यान करि लीजै । निस्चय काज सुफल तो कीजै ।
का डर होनहार के माहीं । मोहिं तोहि जब अंतर नाहीं ।१०।

जौ कदापि सपने प्रिय देखी। तौ कर तासु तलास बिसेखी।
सत्य होय तौ आनि मिलाऊँ। जद्यपि भवन भानु के पाऊँ।११।
एक और संका मो काहीँ। जो गजरा दहिने कर माहीँ।
रुचि रुचि काहू बाल बनावा। तुम्हरे कर में कैसे आवा।१२।
अब जिन मोहिँ दुरावौ स्वामी। जिन दिल पर ओढ़ौ बेरामी।
जो प्यारी पिय के मन प्यारी। सो स्वामिन सौ बेर हमारी।१३।
ताके चरन झवाँ लै झाऊँ। अन्हवाऊँ अरु तेल लगाऊँ।
सजौँ सृँगार सेज बैठारोँ। अपने कर बिजना तँहि ढारोँ।१४।
रुचि रुचि बीरा रुचिर खवाऊँ। पानी पिवोँ हुकुम जब पाऊँ।
ताते नाथ झेल नहि कीजै। मेरो ए करार सुनि लीजे।१५।

(दोहा)

जो पुहुपावति पुरी में बीती द्विज पर आय।
कही कंदला बाल पै सत्य सत्य सो गाय।१६।
सो सुनि चलि तिय कंदला मन महँ कारन जानि।
निकट बिक्रमादित्य के कही दीन ह्वै बानि।१७।

(द्रुबिला)

हो दीनबंधु भुवाल। सुत बिप्र गो गोपाल।
परदुख्ख काटनहार। रघुबंस सम औतार।१८।
तुव प्रथित पारावार। सो बिदित सब संसार।
इकखंड मंड महीप। तुव सुजस सातो द्वीप।१९।
चिरजीव बिक्रमराज। गो दीन द्विज के काज।२०।

(चौपाई)

धर्मपुत्र पांडव को गावै। स्वाद सरस तव जस को पावै।२१।

(दोहा)

आना को बीघा जुतत माफी सबै हबूब।
फिर यह भुइँ कहँ पायहै तोसो राजा खूब।२२।

नहीं मेड़ मैड़ी कहूँ गिरि पयोध सरहद्द ।
जमीन जाके राज में लखी कि सौ भर रद्द ।२३।
आमल को अरु मुल्क को खर्च बाहिरो छोड़।
जमा रुपय्या कोस में सुनि छ्यानबे करोड़ ।२४।

(चौपाई)

तुम उजैनपति हौ नरनायक । तेरो जस गावै सो लायक ।
अवधनाथ गावै सुख पावै । अपनी मति तो सरिस दृढ़ावै ।२५।
गावै सेस सहस फन ताके । दो सहस्र रसना हैं जाके ।
यों सुनि बचन कंदला केरे । हँसि नरनाथ कृपा करि हेरे ।२६।
अहो कंदला कहँ तू आई । भई कहा तुम कहँ दुचिताई ।२७।

(दोहा)

जो पुहुपावति में भयो माधो द्विज को हाल ;
सो बिक्रम नरनाथ पं कह्यो कंदला बाल ।२८।

(चौपाई)

जिहि लगि माधौ बीन बजायो । जिहि लगि सिरी राग पुनि गायो ।
जिहि लगि पुरनारी अकुलानी । जिहि लखि प्रजा फिरादै ठानी ।२९।
जिहि लगि मंत्रिन मंत्र बिचारयो । माधोनल को दयो निकारयो ।
लीलावति की प्रीति सुहाई । नृप पै कामकंदला गाई ।३०।

(दोहा)

लीलावति द्विज की सुता माधव ताको यार ।
प्रेमन में समता सुभग राजा करत बिचार ।३१।

(चौपाई)

माधोनल को पास बुलायो । कामसैन को कहि पठवायो ।
बजे नगारे सब दल माहीं । कूच कीन्ह पुहुपावति काहीं ।३२।
कामसैन बिक्रम बजरंगी । माधवनल बैताल प्रसंगी ।
गज रथ ऊपर सबै सम्हारे । भूमिपंथ जनु भानु पधारे ।३३।

दल अपार बरनै कबि कोई। भरतखंड चलदलदल होई।
कछु दिन मारग माहिँ बिताए। पुहुपावती पुरी नृप आए।३४।

इति श्रीविरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभान-संवादे श्रृंगारखंडे अष्टाविंशतितमस्तरंगः।२८।

(ऊनत्रिंशत्तम तरंग)

(चौपाई)

जोजन एक नगर लखि नेरा। करचो उजैनपती ने डेरा।
माला सम पुहुपावति घेरी। घर घर खबर भई तिहि बेरी।१।
जिहि माधव कहँ नृपति निकारा। सो द्विज देस उजैन पधारा।
लै उज्जैनपती कहँ आवा। कस न करी अपने मन भावा।२।
सुमुखी खबर कहूँ यह पाई। त्वरितहिँ लीलावति ढिग आई।
सुख अथाह गदगद हिय फूला। मन सनेह के झूलन झूला।३।
चाहै कहो किसा तिहि पाहीँ। भरे गरो कहि आवत नाहीँ।
साहस करि यह बचन उचारा। यहि दल बीच मीत सखि थारा।४।
यह कहिकै लपटानी दोई। अधिक कथा कहि जात न कोई।
हिय हिलकै सुख कै सुख ध्याई। सत्य असत्य खबर तिहि पाई।५।
पुनि धरि धीर सखी गहि बाहीँ। योँ बोली लीलावति पाहीँ।
सुन सखि चाह सत्य मैँ पाई। नगर उजैन केर नृप आई।६।
दूसर नृप कामावति केरा। तिनके साथ मीत पुनि तेरा।
तीस लाख असवार गनायो। एक लाख लै पैदल आयो।७।

(दोहा)

उतै माधवा बिप्र सोँ बिक्रम बोल्यो बैन।
चलो डगर चलि देखिये पुहुपावति को चैन।८।

(चौपाई)

दस हजार गज रथ सुभ साजैँ। राजा देस देस के राजैँ।
नरसमूह गनि पार न पाई। क्षिति तमाम तंबू तनि छाई।९।

यह सुनि खंड पाँच में प्यारी। लीलावति आई तिहि बारी।
जथा मेघमाला छबि छाजै। यों दल पुर चकहूँदा राजै।१०।
पेसवान सत सातक संगी। माधवनल बिक्रम बजरंगी।
डगर चले तिन पुरी निहारी। अमरावति ते सरस सँवारी।११।
चारहु दिसि आरन्य सुहाई। बाग तड़ाग मँडल सघनाई।
सुब्रन कलस मँदिर प्रति सीहै। कलसन ललित पताका जोहै।१२।
चौक बजार दिवाले देवा। जोगी जती करैं तहँ सेवा।
सरिता रम्य अमल जल देखी। मंदाकिन सम सोभ बिसेखी।१३।

(दोहा)

वहि आवासे बसति तिय लीलावति तिहि नाम।
सीलवंत सुखमा सुरत गुन नवरस अभिराम।१४।
इतने क्षन जन एक तहँ कुन्नस करि कर जोरि।
अर्जवंत ठाढ़ो भयो नजर अग्र भय छोरि।१५।
निगह पाय बोला बचन हे कलिमलन कलेस।
आवत तेरे मिलन कों गोबिंदचंद नरेस।१६।
बचन सुनत क्षितिपती को जरद दुलीचा ल्याय।
करे बिछौना दूरि तक भूमि सुगंध सिंचाय।१७।
सिंहासन पर छत्रजुत मसनद चारो भाग।
उचित उचित बैठारने सब राजन अनुराग।१८।

(चौपाई)

हुक्म पाय नरनायक केरा। तुरतहि खड़ा कीन्ह तिहि डेरा।
बहुत बितान जरकसी ताने। कितिक दुलीचा गिलम बखाने।१९।

(दोहा)

अये बिराजो बंधु यों बिक्रम अज्ञा दीन्ह।
मसनद नीचे पाँव धरि अंगमालिका कीन्ह।२०।
सभा बीच भूपति सबै मिलि करिकै करि प्रीति।
बैठे निज निज आसनन अपनी अपनी रीति।२१।

(चौपाई)

नजरानी सौंपी नरनायक। फिरि बिनती कीन्हीं जो लायक।
भरतखंड मंडन छतधारी। और भूप सब प्रजा तुम्हारी।२२।
बड़े भाग प्रभु दरसन दीन्हो। घर बैठे सनाथ मोहिं कीन्हो।
इतनी सुनि बिक्रम नरनाथा। गज रथ नजर कीन्ह धरि हाथा।२३।
द्रब्य अनेक सों टीका कीन्हा। प्रीतिसहित बीरा पुनि दीन्हा।
रीति बिरादर आदर जोई। दुहूँ ओर दोउ राजन्न होई।२४।
फिरि गोबिंदचंद्र नरनायक। आयो पुहुपावति सुखदायक।
नगरी माँझ नकीब फिरायो। मोदी और दिवान बुलायो।२५।
सीधा लेय तुम्हारे कोई। नृप बिक्रम के दल में जोई।
तासों दाम द्रब्य नहिं लेने। चाहै जिन्स तौल सो देने।२६।
फिर नरेस डेरन में आयो। रघूदत्त कों पास बुलायो।
तासों कही कथा समुझाई। बरष एक में जो हो आई।२७।

इति श्री बिरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान-संवादे शृंगारखंडे ऊनत्रिंशत्तमस्तरंगः।२९।

(त्रिंशत्तम तरंग)

(चौपाई)

बिक्रम कही माधवा काहीं। मन चिंता कछु कीजै नाहीं।
जो जातिय माधोनल केरा। सो कुलपूज्य मोर सौ बेरा।१।
जौ कदाचि यह काज न कीजै। तौ बिरोध को बीरा लीजै।
चलौ निबरिये परघर आई। नाहक मरजादा पुनि जाई।२।
यह सुनि जब रघुदत ने लीन्हो। ज्वाब सुदेस नृपति कहँ दीन्हो।
जो कारज उत्तम प्रभु जानो। करौ वही मेरे मन मानो।३।
प्राननाथ ज्योतिषी बुलायो। ताही क्षन तासों फरमायो।
सगुन सुमंगलमूल बिचारी। रचि सुमुहूरत सब सुखकारी।४।

सचिव ज्योतिषी औ पुरवासी। पंडित बैरागी संन्यासी।
पूज्य पूज्य पूरुष औ नारी। आए सब तहँ तेही बारी।५।
अजिर लिपाय चौक सुभ साजा। मध्य देव गननाथ बिराजा।
गवरिहि ध्याय सगुन सुभ पाई। मंगल बारहि लगन लिखाई।६।
जेठ कृस्न पंचम तिथि साजी। घरी दोइ गत रात बिराजी।
बृस्चिक लगन श्रवन तहँ पायो। तीजे मकर चंद्रमा आयो।७।
चौथे सनि पाँचे भृगु होई। नवमे सुंदर सुरगुरु सोई।
दसमे कुज सुंदर सुठि आहीँ। गरहेँ सुन्न असुभ कछु नाहीँ।८।
लिखी लगन पंडित सुर ज्ञानी। सोध मुहूरत अति सुखदानी।
हरद द्रब्य चावर औ चंदन। जरकसमय कपड़ा आनंदन।६।
पाँच लाख की लगन सँवारी। हय गय रथ सब दिय सुखकारी।
नाऊ ब्राह्मन भाट पठायो। चलि बिद्यापति के घर आयो।१०।
समाचार बिदुवा जे पाये। कुटुँब सनेही सब बुलवाये।
कुटुँब सहित बिक्रम ढिग आयो। घर को सबै प्रसंग सुनायो।११।
सुनि राजा अनेक सुख पायो। माधोनल को पास बुलायो।
परचो तात के पायन माधो। पुनि सनमुख हिय लाग्यो साधो।१२।
तात पूत एकत भे दोई। महाराज बिक्रम पुनि सोई।
लेहु लगन यह बात बिचारी। बिदा करी राजा तिहि बारी।१३।
गज रथ और जवाहर दीन्होँ। मंत्रिन सहित बिदा नृप कीन्होँ।
कोटिक दीन्ह खजाना सोई। तुरत ब्याहु की त्यारी होई।१४।
धन्य धन्य बिक्रम महराजा। अपने हाथ माधवै साजा।
माधौसहित कंदला नारी। रथ ऊपर बैठे तिहि बारी।१५।
केतक भूप सुभट हय हाथी। करि पठये माधौ को साथी।
कामकंदला सहित सुहायौ। दूलह बिप्र बनो घर आयो।१६।

(दोहा)

कलस पाँवड़े आरती गीत सुमंगल गाय।
माताजुत नारी सबै मिलीँ माधवै आय।१७।

पहुँचायो टीका सु करि गौरि गनेस मनाय ।
पुतहूजुत निज पूत कोँ माता चली लिवाय ।१८।

(चौपाई)

पूतसहित पुतहू घर आई । घरी चार तक बजी बधाई ।
दान बहुत मँगनो कहँ दीन्होँ । निवतो सबै नग्र को कीन्होँ ।१९।
अँगन लिपाय चौक पुरवायो । फलदानी समाज बुलवायो ।
इत सृँगार माधौ को साज्यो । सोरह कला मदन तब राज्यो ।२०।
दूलह बनि नृप चौके आयो । सबहिन आँखिन को फल पायो ।
मंगलगान नारि सब गावैँ । पंडित लोग अचार करावैँ ।२१।
पूजि गनेस लगन कर धारी । भइ प्रसन्न हिमवानकुमारी ।
अर्घ दीन दूलह घर आयो । धनसमूह विदुवा ने पायो ।२२।
लगन खोलिकै सबहिँ सुनाई । बीरा दै पुनि बाँट मिठाई ।
फलदानिन जिवनार जिमावैँ । भाँति भाँति की गारी गावैँ ।२३।
सजन जिँवाय बिदा पुनि कीन्हेँ । वर्जे दाम नाउ कहँ दीन्हेँ ।
चलि प्रतिया नृप के गृह आयो । समाचार सब प्रभुहि सुनायो ।२४।
सुनि नृप सकल समाज बुलायो । रघूदत्त के मंदिर आयो ।
अँगन लिपाय दिवाल पुताई । जरकसमय बखरी सब छाई ।२५।
जातरूपमय कलस सँवारी । चित्र सहित बहुधा छबिवारी ।
हरित बाँस मंडफ सुभ साजा । जामुन पल्लव छाय बिराजा ।२६।
नीचे जर अंबर तनवाए । मनि मोतिन गुच्छा छबि छाए ।
सुबरनमय अनार छबिछायक । सुबरनमय थूँनी सब लायक ।२७।
पंचम खंभ जवाहिर जड़े । मंडफ मध्य खड़े सो करे ।
जड़ित जवाहिर बंदनवारे । पौँरदार छबिदार सँभारे ।२८।
द्वार कलस मंडफ महँ सोई । जगमग मग सब ठौरै होई ।
गौरिँ थापि मायेँ सब साजी । करैँ सृँगार नारि रत राजी ।२९।
मोदभरी मंगल सब गावैँ । एकै तीया तेल चढ़ावैँ ।
एकै बनिता तपैँ रसोई । हरबर हरबर सब ठाँ होई ।३०।

कुटुँब बुलाय जमा सब कीन्हों । मंडफ भोग सबहिँ कहँ दीन्हों ।
भोर मायनो फेर रसोई । दरोबस्त बस्ती कहँ होई ।३१।
तीयन हरदी तेल चढ़ायो । नगरमध्य नाऊ फिरवायो ।
बरन अठारह सब पुरबासी । पंगत बैठी देवसभा सी ।३२।
बरन बरन पंगत सब न्यारी । जेँवत खोवा पुरी सुहारी ।
दूजे पुन सब कुटुँब बुलायो । बरा भात मड़वा को खायो ।३३।
फेर प्रभात नगर सब माहीँ । कुटुबन के घर चढ़ी कराही ।
तुलहि मिठाई गजलैँ गावैँ । छकरा भरि जनवासे आवैँ ।३४।
पुरी कचौरी बहु तरकारी । ढेरी सब जनवासे डारी ।
चारो पानी लकड़ी जोई । कनिकदार घृत सक्कर सोई ।३५।
जनवासो इहि भाँति सम्हारी । मंडफ माहिँ रची जेवनारी ।
टीका लाख दसक कर साजा । अपर अभूषन हय गय राजा ।३६।

(दोहा)

आवनहार बरात की तय्यारी सुनि कान ।
पुरबासी नर नारि सब देखन चढ़ी अटान ।३७।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकायकंदलाचरित्र भाषा विरहीसुभानसंवादे श्रृंगारखंडे त्रिंशत्तमस्तरंगः ।३०।

(एकत्रिंशत्तम तरंग)

(दोहा)

कामसैन बिक्रम नृपति द्विज माधव के साथ ।
सहस्र तुरी गज तीन तहँ साजी सुभग बरात ।१।

(चौपाई)

नौवत बजै सुभग सहनाई । नगरी सब बरनन धुनि छाई ।
सिगरे नगर खोर सब माहीँ । आतसबाजी पूरन आहीँ ।२।
कलस दीप महताब अलेखी । जानत वह जिन खूबी देखी ।
प्रथम भूप जनवासे आए । उचित उचित डेरा लगबाए ।३।

मिजमानी सब ही ने पाई। तौ तक निवतहरी तहँ आई।
उमह्यो नगर नारि नर सोई। कुचमर्दन ठौरन में होई।४।
नौबत बजी भई असवारी। आतसबाजी त्यों उजियारी।
द्वारचार कहँ दूलह आयो। मनहुँ भानु भूलोकहि छायो।५।
उमह्यो नगर नृपति यह देखी। जिहि कर अपजस सुनत बिसेखी।
महाराज बिक्रम तिहि बारी। कलस कंठमाला मनि डारी।६।
दूलह उतरि द्वार जब आवा। नेगन को तब जोग लगावा।
टीका किये बहुत रथ बाजा। सिबिका कनकथार गजराजा।७।
मनिगनमाला बहुतक दीन्हीं। बिनती बहु प्रकार सों कीन्हीं।
मंडफ मार फिरो दुल्हराई। सब बरात डेरन कों आई।८।
चढ़चो चढ़ायो बहु बिधिकाई। नग अमोल कछु बरनि न जाई।
बहुरि बराती डेरन आए। बीती निसि रबि उए सुहाए।९।
फिरी राछ लीलावति जबहीं। भाँवरि सुघरी आई तबहीं।१०।

(दोहा)

गजमोतिन के चौक जब पुरवाए सुख पाय।
कनकपटा कंचनकलस तहाँ धराए आय।११।
एक ठौर लीलावती सहित बैठि रतिनाथ।
मनिगनखचित जो मौर सिर बिप्र उचारहिँ गाथ।१२।
गनपति पावक पूजिकै समिध सुपारी पान।
परि भाँवरि रतिनाथ की बहुबिधि बजे निसान।१३।

(चौपाई)

डेरन गये सबै सुख पाई। रहसबधाए दुलहिन आई।
किये निछावरि मनि अरु हीरा। गज अरु बाजि बहुत विधि चीरा।१४।
मंगल गावहिँ हिलि मिलि नारी। गई भवन कों दुलहिन प्यारी।
मड़वा घर बरात सब काईं। भोजनहित मंडफहि बुलाईं।१५।

(दोहा)

सब बरात कामा (वति) नृपति माधौ विक्रमराय ।
चलि पहुँचे रघुदत्त के (तिन) बैठारे सुख पाय ।१६।

(पद्धरी)

बहु बिबिध भाँति के अन्नपान । परसे सबकों आनंद मान ।
जेवहिं सब मिलि करिकै जु प्रीति । गावहिं जु सुंदरी बहुत गीत ।१७।

(दोहा)

भोजन करि भूपन सहित हर्षि चले रतिनाथ ।
सबहिन कों बीड़ा दियो बड़ी प्रीति के साथ ।१८।

(पद्धरि)

विद्यापति आनँद वढ़ाय । डेरन गयो बहुत सुख पाय ।
निसि भई हानि जब उए भान । गर्जहिं निसान घन के समान ।१९।

(दोहा)

सब बरात रघुदत्त ने बुलवाई तिहि बार ।
सजि सजिकै मंडफ गए करिबे पलकाचार ।२०।
रेसम को जु बिछावनो ऊपर तनो बितान ।
बैठारे भूपनसहित रघुदत अति सुख मान ।२१।

(तोमर)

पलका बिचित्र बनाय । उनि बस्त्र दिये बिछाय ।
माधौ लिलावति जाय । तहँ बैठियो सुख पाय ।२२।
सब बने भूषन अंग । पहिरे दुकूल सुरंग ।
सोभा अधिक सरसाय । मैं देहुँ पटतर काय ।२३।
घन दामिनी बहु भाँति । ससि देखि ताहि लजात ।२४।

(दोहा)

नेग सकल कुल के भए बेदन कहे बखान ।
सब बरात डेरन गई अति आनँद उर मान ।१५।

(पद्धरिका)

जजमान सकल रघुदत बुलाय। गे दिय दायज सबको लिवाय।
गज बाजि रथहि सिबिका बिसाल। मनिगन अनेक मुक्तान माल।२८।
दिय बहुत भाँति के कनकथार। अरु भाँति भाँति अंबर अपार।२७।

(दोहा)

बार बार बिनती करै कहत जोरि करि हाथ।
सेवा कों दासी दई तुमको मैं रतिनाथ।२८।

(चौपाई)

बहु प्रकार सों भयो बिबाहा। नर नारिन को भयो उछाहा।
नेग सकल कुल के भे जवहीं। बिदा करी बरात कों तवहीं।२९।

(दोहा)

मात पिता कों भेंटिकै लीलावति सुकुमार।
चली सासुरे भेंटिकै सब सखियन तिहि बार।३०।

(चौपाई)

हय रथ दासि दास अरु हाती। माधो को दीन्हें वहु भाँती।
लीलावति के सहित सुहायो। दूलह बनो बिप्र घर आयो।३१।

(दोहा)

कलस पाँवड़े आरती गीत सुमंगल गाय।
माता जुत नारी सबै मिलीं माधवै आय।३२।
मुहचायन टीका सु करि गौरि गनेस मनाय।
पुतहूजुत निज पूत कों माता चली लिवाय।३३।

(चौपाई)

पूत सहित पुतहू घर आई। घरी चार तक वजी वधाई।
दान बहुत मँगतन कहँ दीन्हो। निवतो सकल नग्र को कीन्हो।३४।
इ बिधि ब्याहु माधौ कर भयऊ। सब पुरवासिन अति सुख लह्यऊ।
लीलावती कंदला सोऊ। रहन लगीं अति सुख सों दोऊ।३५।

(दोहा)

माधो सों लैकरि बिदा कामा (वति उज्) जैन नरेस ।
सकल सैन्य तय्यार करि गये आपने देस ।३६।

इति श्री विरहवारीश माधवानलकामकंदलाचरित्र भाषा बिरहीसुभान-संबादे शृंगारखंडे एकत्रिंशत्तमस्तरंगस्समाप्तः ।३१।

—: ० :—

प्रतीकानुक्रमणी

विरहीसुभानदंपतिविलास

(इश्कनामा)

विरहवारीश

अभिधान

(इश्कनामा)

अंक भरौं—आलिंगन कर सकूँ (ऐसा अवसर दीजिए, वर दीजिए) ५३
अंग—शरीर ६
अँगेजिकै—सहकर ७०
अँगोटी—रोका छेका ४९
अँटको—अटक गया है (निकल नहीं पाता) ५९
अंदरबेली—भीतरी लता, मन, भीतर ही भीतर फैलनेवाली लता ४१
अँधेरे—अंधे (सावन में हुए अंधे को) ५४
अकेली—केवल १०३
अखती—अक्षय तृतीया, वैशाख शुक्ल तृतीया (का उत्सव) ७३
अखत्यार—(इख्तियार, अख्तियार) अधिकार, काबू ४६
अचानक—एकाएक ९९
अजब—अनोखा, अद्‌भुत ३४
अजमति—(अरबी अज़मत) चमत्कार ८९
अजान—(अज्ञान) ज्ञानरहित व्यक्ति ५, १४, ९१
अजूबा—अजीब्, अद्‌भुत ६६
अटा—छत ६९
अटारी—(अट्टालिका) अर्थात् महल ६२
अधरा—नीचे वाला होँठ ५०
अधूरी—(अर्ध पूर्ण) अपूर्ण, जो पूरा न हो, अधकचरा २२
अनतैं—अन्यत्र कहीं भी (या अनितै—अनित्य) ५६
अनाथघरी—वह समय जिसमें कोई सहायता या रक्षा करनेवाला न हो ६९
अनियारो—तीखा, तिखाई से युक्त ३२
अनी—नोक ७
अनुकूल—सुमुख, मुताबिक ८५
अनैसो—(अनिष्ट) बुरी, भद्दी २४
अनोखी—निराली, नई (अनोखा—नोक—नोख-अनोख-अनोखा) ११, ८६
अबकी—इस बार ११०
अभिरेना—(जाकर) नहीं टिक पाए ७३
अभोगिया—'अभोग' वाले, अभाव वाले, कमी वाले ५६
अरगाइकै—अलग होकर, विरत होकर ४५
अरज—विनय, निवेदन ३२
अरति—अड़ जाती है, लड़ने की ठानती है ८८
अराबो—रथ (ज्ञान का रथ) १०
अरु—और भी (अधिक) २२
अरूझैन—उलझता ही नहीं, लगता ही नहीं (देखता ही नहीं) ५४
अरै—अड़े अर्थात् स्मृति में आए ८
अलमस्त—निर्द्वंद्व, निश्चिंत ७४
अलाप—(आलाप) बोली की रट ५१
अली—सखी ९५
अलोक—अयश, अकीर्ति, निंदा १८
अवगाहिबो—धारण करना, साधन करना १११
अहार—(आहार) भोजन ८३
अही—(अहि) सर्प १०
आँकु—अक्षर ('पी' के अतिरिक्त) ५२
आकिल—अक्ल, बुद्धि ८५
आँख कसी—आँखों की मार मारी, आखों से आघात किया ३९

एक रुखी–एक ही चेहरे वाला, एक ही प्रकार का १०३
ऐठनि प्रीति–प्रेम की ऐंठ, प्रीति का गर्व ३४
ऐहै–आएगा, मिलेगा ३६
ओज–तेज, प्रताप ११०
ओढ़ने आवत–ओढ़ने (शिरोधार्य, अंगीकार) के काम में आती है २४
ओर निबाहिबो–अंत तक निर्वाह करना १९
और–अन्य, दूसरा ही कुछ (ब्रह्मेतर) २
कंत–(कांत) पति ११०
कका–(काका) पिता ८६
कचनार–(सं० कांचनार) बसंत में फूलने वाला भीनी सुगंध का एक पुष्प ९५
कजरा–काजल (प्रेयसी की आँखों का), वही काजल काजल है, वही उजाला ही है ३१
कजाकी–धूर्तता, धोखेबाजी २१
कटाछ–(कटाक्ष) तिरछी चितवन १०७
कढ़ि–निकलकर ७१
कढ़ै–निकलता है (मृग की सींग को बजाते हैं, राग निकालते हैं) ११
कढ़ै–प्रकट हो १३
कढ़ो न–(बाहर) निकलती ही नहीं ८६
कथा–वृत्तांत, कहानी १०१
कथा रहाई–कहानी भर रह जाएगी ८९
कथियै–कही जाए १०१
कदंब–प्रसिद्ध वृक्ष और उसका सफेद फूल, कदम ९६
कनेर–(सं० कर्णोर) करवीर, एक पुष्प जो दो प्रकार का सफेद और लाल होता है ९५
कपोत–कबूतर ८
कबहूँ–कभी अर्थात् किसी प्रकार से ३८
कबहूँक–कदाचित् कभी ४१
कबै–किस समय ७४
कमलनि कसि–कमलों की सी १२
कर–हाथ ६०
कर–हाथ में (वश में) ७७
करता–(कर्ता) निर्माता ७७
करबी–करेंगे १०
करहै–(करिहै) करेगा (प्रीति) ६
कराल–भयंकर, भयानक ७
करी–की १००
करील–(सं० करीर) एक कटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं। इसमें गुलाबी रँग के फूल होते हैं ९६
करुना–दया ३८
करैं घुघुरून घनाको–मंजीरों सा कोलाहल करके बदनामी करती हैं ८७
करै पाँख–केवल पंख लगा लेने से कबूतर की भाँति कोई उड़ सकता है ९४
कल–चैन ३९
कलकानि–परेशानी, बेचैनी, हैरानी ५२
कल परै–चैन मिले,आराम रह जाए ३९
कलानिधि–चंद्रमा ७८
कलाप–मोर की बोली ५१
कसक–टीस, पीड़ा ९०
कसकत–पीड़ा करता है ५
कस न–कैसे नहीं, क्यों नहीं १२
कहाँ को–किस काम की, निरर्थक ३१
कहा–क्या ११०
कहा करबी–क्या करूँगी, फिर तो कुछ भी करते धरते न बनेगा ४७
कहा करियै–किस काम में लाऊँ २५
कही–(कथित) कही हुई बात २४
कहूँ–(कहीं) कभी तो ३७
कहे को–(किसी के) कहने का (निंदा करने का) २४

कहे तें कहावत–कहने के लिए कहना ही पड़ता है २४
का–क्या १३
का कहावतु है–और क्या कहा जाता है (कहना तो इसे चाहिए) ६८
का गरीब बेसाह करै हथियै–भला क्या निर्धन हाथी को खरीद सकता है १०१
काज –(कार्य) काम, प्रयोजन ७०
काज –प्रेमसंबंध ७०
काठ (काष्ठ) लकड़ी ३
कानि–मर्यादा ८६
कापै–किससे २२
काहू की–किसी की (भी) २४
काहू के–किसी के यहाँ ४६
काहे न–क्यों नहीं ११
कियारी–(सं० केदार) क्यारी, दो मेड़ों के बीच का वह छोटा अंतराल जिसमें बीज बोते हैं ५८
किरवान–(कृपाण) तलवार ११२
किसा–(किस्सा) हाल ३८
किसू–किसी (से) ४५
कीच–कीचड़ १७
कीमति–मूल्य २३
कुंचि–कुंजी ७९
कुंज–लता वृक्ष से सघन स्थान जहाँ सूर्य की किरणें दिन में भी भूमि तक न पहुँचती हों ७०
कुंड़ी–कूँड़ी, पथरी (जिसमें भाँग घोटते हैं) १०७
कुंद–माघ में विशेष फूलने वाला एक सफेद फूल, माघ्य ९५
कुँवा–कूप, कूआँ ६२
कुच–स्तन ५९
कुठार–फरसा ३६
कुनहुदार–मनमुटाव करनेवाला ३२
कुबरिहि–कुबड़ी (कंस की दासी) को ६१
कुरंग–हरिण ११
कुरंग फँदैती–मृग को फंदे में फाँसने की सी क्रिया ६४
कुरबान–निछावर ३१
कुलकानि–कुल की मर्यादा ६६
कुलाहल–कोलाहल, शोर ५२
कुलुफ–(अरबी कुफ्ल) ताला ७९
कुसाँगरे–बुरे संकट की स्थिति में ३८
कूक–कोयल की 'कू कू' बोली ३५
कूकर–(कुक्कर) कुत्ता १६
कूर–मंदबुद्धि या क्रूर २७
केकी–'के का' करने वाला मोर ५१
केतकी–सुदर्ण केतकी, एक प्रकार का केवड़ा, इसके फूल तीव्र गंध वाले होते हैं ९६
केतन–कितनों ने ४२
केवरो–केवड़ा, सफेद रंगवाली केतकी ९६
केसरवारी–केसर पड़ी हुई १०७
केहरि–सिंह ८
कैयो–कई ३१
को–कौन २२
कोइलिया–कोयल ('इया' होने से विशेष कोयल) ३५
कोई–कई, बहुत ६६
कोटिक–करोड़ का, संख्या में बहुत १११
कौनौ–कोई भी (बात) २४
कौल–इकरार, वादा, प्रतिज्ञा ११, ८६
क्वैलिया–कोयल (विशेष) ३६
खगी–धँसी, वैठी १०२
खचिकै–धँसकर १७
खटको–आशंका ९९
खर–गदहा १६
खरके–खरखर ध्वनि होने पर, खरखराने पर १०८
खरी–तीखी, तेज़ ४७
खरैं–अत्यधिक ११०
खरो–खड़ा है ११३

खलधायक–खलों को मारनेवाली (राम की भौहैं) ८४
खाति न चाउ–उसका जोश रुकता नहीं ८८
खिन खिन–क्षण क्षण, प्रति क्षण, सतत ३२
खिलवत–एकांत (में) अर्थात् सहवास में ३२
खुदा–तुम जिसे खुदा (ईश्वर) कहते हो उन्हें ऐसी बुद्धि से ठीक ठीक पहचान लिया ८५
खुसिहाल–(खुशहाल) सुखी, जिसकी स्थिति अच्छी हो, संपन्न १०३
खूब–विशेष, अत्यधिक ३३
खूबावारो–अच्छाइयों से युक्त, विशेषतामय ३२
खूबों सों–अच्छों से (भी बढ़कर) ३२
खेलिबो–खेल करना, तमाशा ६५
खैंचती–खींचती हैं, रोकती हैं ८३
खोई–खोदी , बिगाड़ दी (कलंक से) ७८
खोरि–गली (कुचों के मध्य की) ५६
गजराज–भारी हाथी (जिसके पैर तले प्रह्लाद को कुचला जा रहा था) १३
गथ–पूँजी ३६
गदिया–छोटा गद्दा १०६
गनै न–गिनता नहीं मानता ही नहीं ३३
गरीबनेवाज–दीनदयालु ८४
गरुवी–भारी, वजनी २५
गली–मार्ग, पथ, प्रणाली ६२
गसी–चुभी ३६
गहि पाइ–भली भाँति लेकर ६१
गहियै मुख मौन–मुख मौन कर लीजिए, चुप हो जाइए ७२
गहें ना–ग्रहण किए नहीं रहते (इन्हें भी त्याग दिया) ५८
गहे–अकड़ में आ जाने पर भी ३८
गाँठि तें माल हिरानो–गाँठ में बँधा द्रव्य गिरकर कहीं खो गया है ६७
गाँस–नोक (आँख के तीर का फल) ३६
गात–(गात्र) शरीर १०८
गावत–बखान करते, वर्णन करते (बताते हैं) १४
गावतु–अर्थात् मचाता है ५२
गाहक–ग्रहण करने वाले, (आदर से) लेने वाले १०६
गिरिढाहन–पर्वत पर से गिरने (से) १३
गिरिबर–श्रेष्ठ पर्वत, गोवर्धन ६०
गिरें–यदि तू गिर गया तो फिर अपने ग्राहक को पहचानता तक नहीं ६२
गीध–(गृद्ध) जटायु (राम और कृष्ण को एक माना है) ६०
गुजरान–गति, पहुँच, निर्वाह ३१
गुन–(गुण) विशेषता ४४
गुनि आवै–समझते बनता है, समझा जा सकता है ६७
गुनी–अर्थात् जादूगर , बाजीगर ६४
गुनीन के आम–बाजीगर जो आम आदि फल असमय में दिखा दिया करते हैं जादू से ६४
गुनै–चिंतन करे ४
गुमान–घमंड २०
गुमानी–गर्व करने वाले २७
गुर कों–गुड़ क्रय करने के लिए ६१
गुरा–ढेला, चक्का १७
गुल–गुलकंद, गुलाब और चीनी के मेल से बनी मीठी वस्तु ३४
गुल–गुलाब का फूल ६५
गुसा–(गुस्सा) रोष ६१
गेंदे–'गेंदा' के गोलगोल फूल जो सामान्यतया पीले रंग का होता है ६५
गेड़आ–तकिया १०६
गेह–घर १८
गो–गया ४२
गोसाइँ–(गोस्वामी) मालिक, स्वामी, नायक ४६
घटै–घटित होती है (आ पड़ती है) २२

घटै–घट जाए, कम हो जाए २३
घटा–बादलों का समूह ३०
घटि–घटकर, कम कीमत वाला ९१
घटि चेत गयो–चेतना कम हो गई १०१
घन–घना, बहुत ५२
घनाको–जोर का शब्द, कोलाहल ८७
घनी–अर्थात् तीखी ७
घन्नी–बहुत १५
घने–बहुत १०९
घनो–बहुत, अधिक १०७
घरबात–घर का सामान, संपदा ९२
घर भीति तका की–घर की ताखों वाली भीत (दीवार) को ही पकड़े बैठी रहती हो
घरी–एक घड़ी के लिए भी ४७
घरी पल में–एक घड़ी क्या पल भर में ही ८७
घहराइ–जोर से चिल्लाकर ४२
घाट–नदीतट २५
घुघरूँ–मंजीर ८७
–घोटन घोटना, घोटने वाला डंडा (भाँग पथरी में डालकर डंडे से घोटी जाती थी) १०७
चकचूर–(चक्र चूर्ण) चकनाचूर, भली भाँति चूर्ण, चूर्ण विचूर्ण २०
चकचौंधी–चकपकाई हुई ६९
चढ़ावत हैं–(पूजा में) अर्पित करते हैं १४
चतुराई–बुद्धिमानी, विवेक ७८
चतुरानन–चार मुख वाले, ब्रह्मा; (चमत्कारार्थ चतुरा + न + न) चतुर नहीं नहीं ७८
चतुर्दस–१४ भुवन, सात स्वर्ग, सात पाताल (भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्य, अतल, सुवितल, सुतल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल, पाताल) ७७
चाँदनी–बिस्तर के ऊपर बिछाई जाने वाली सफेद चद्दर १०६

चाउ–उमंग २५
चाड़–इच्छा, कामना ५३, ९६, १०३
चाड़ सरी–उत्कंठा पूरी हुई ७१
चात्रिक–चातक, पपीहा ५१
चाम–(सं० चर्म) चमड़ा ९४
चाय–उमंग ५५
चारु–सुंदर ४४
चाह–संवाद, समाचार, खबर ६३
चाहक–चाह वाले, काम के १०९
चाहिकै–देखकर, प्रेम करके ६६
चाहि कै–इच्छा करके, प्रयत्न करके और देखकर १०६
चाहियै–चाहते हैं ९
चाहै–चाहे, माने २९
चिकारि–चिंघाड़ करके, जोर से चिल्ला कर १३
चितौनि–चितवन, दृष्टि ४४
चित्त–मन अर्थात् इच्छा १
चिन्हारिऊ–चीन्हा-परिचय भी, जान-पहचान भी २३
चीकने–(चिक्कण) बराबर, जो खुरदुरे नहीं हैं ९३
चुकायो नहीं–चुकता नहीं किया, दिया ही नहीं २३
चुभी–धँस गई है, बैठ-पैठ गई है ४४
चेत–चेतना, होश ५०
छकी–तृप्त होकर उन्मत्त (होकर) २७
छके–परितृप्त ५१
छड़ाइ दई–छोड़ दिया, परित्यक्त कर दिया ५८
छबि–सौंदर्य, रूप २३
छबिदार–छबीली (विशेष आकर्षक) २७
छबिमै–छवियुक्त, छविवाला ५४
छमा–क्षमा, माफी ४७
छमा करिहै–माफ नहीं करेगो, छोड़ेगी नहीं ४७
छरकै–छटकती है, उछल जाती है १०८

छ्वै–छू पाता है　५४
छीन–(क्षीण) पतला, सूक्ष्म, महीन　७
छुए तें–जहाँ मैंने मृत्यु को स्पर्श किया कि सारी सीमाएँ समाप्त　८७
(एक ओर बदनामी, दूसरी ओर इनकी यह जबर्दस्ती, मरने की नौबत आ गई है)
छोटी[1]–कम, मंद　४६
छोटी[2]–अल्प　४६
छोड़े बनै नहिं ओढ़ने आवत–न अस्वीकार करते बनती है, न अंगीकार (स्वीकृत) करते ही　२४
छोर–किनारा, सीमा　८७
जकी–डरी हुई　६८
जग जीति चुक्यौ–ऐसी अनुभूतिपूर्वक मानो संसार को ही जीत लिया हो　१०८
जना–इस जन (पर रोष है जो पड़ोसी होकर यह जबर्दस्ती करता है)　८७
जनावत हैं–जनाते हैं, जानकारी देते हैं　१४
जनि–मत, नहीं　१८
जनैयै–जनाती, बताती　४३
जमराज–यमराज, काल, मृत्यु　३८
जरबी–जलूँगी, संताप से पीड़ित होऊँगी　४७
जराय जरी–रत्नजटित　१०६
जरि कारो–जलकर काला (उद्दीपन से परितप्त होकर)　४२
जरैलिन–जलनेवाली, ईर्ष्या-डाह करने वाली　७०
जलजंतु–जल के वे (बड़े) जीव जो खा जाने वाले हैं (जैसे, सर्प)　१०
जलेबी–कुंडल के आकार की शीरे में डुबोई हुई मिठाई　७५
जवाहर–रत्न अर्थात् श्रेष्ठ　६७
जस–(यश) कीर्ति　८५
जहाँ–(जहान) संसार　३१
जहाँ लगि–जहाँ तक, यावन्मात्र, सभी　३१
जहान–संसार　३१, ८३
जाइ–जाते हैं (कहीं आते जाते नहीं)　४६
जाकों–जिसे　२७
जाती–चमेली का पुष्प　६६
जान–(ज्ञान) जानकार　४
जान–जानकारी प्राप्त करके, जानकार, जानने वाले होकर　१४
जान–प्रिय　३१
जान–प्राण, जी　८१
जान–जानकर, समझकर　८६
जानत–जानता हूँ, मैं समझता हूँ, मेरी धारणा है　६
जानत हैं–(केवल शरीर की पीड़ा) जान सकते हैं　४३
जाननहारी–जाननेवाली　४१
जानबी–जानना, समझना　७
जानि परैगो–बोध होगा, ज्ञान प्राप्त होगा　४
जानी–(यह बात) समझ ली　२३
जाने–जान लिए, समझ लिए　३२
जान्यो–ज्ञान प्राप्त कर लिया, (जिन्हें) बोध हो गया　५
जाम–(याम) पहर　७७
जाया–शरीर　४३
जाहि–जिसको　२४
जियावत–(जी को) जिलाते (भर रहते) हैं　१५
जिसी–जिससे　१०५
जिहि–जिसने　६०
जी अरौ–जी में अड़ गया है (लाज का बंधन)　६
जीभ–(जिह्वा)　२४
जीभ चलावत–जीभ से (बिना समझे) बोलते रहते हैं, दूसरे की निंदा करते रहते हैं　२४

जीरन–(जीर्ण) रोग या पीड़ा से व्यथित ४३
जीव–प्राण २२
जुबान–बोली, वाणी (से उत्पन्न) ५१
जुबान–दी हुई जुबान, दी हुई बात, वादा ६४
जुलुफ–सिर के पीछे की ओर लटकने वाले लंबे केश, कुल्ले ७६
जुही–(सं० यूकी) चमेली के फूल से मिलता जुलता सफेद पर काफी छोटा फूल ६६
जूझै–(प्रिय की ही छवि पर) मरता रहता है ५४
जेठानी–पति के बड़े भाई की पत्नी ४७
जोग–योग (अष्टांग योग) १४
जोगिया–योग वाला, योगी (संयोगी होकर) ५६
जोबना–स्तन, कुच ८७
जोर–जोर से, बलपूर्वक ८७
जोम–उमंग, घमंड २०
जौ–यदि १८
जौ लौं–जब तक २०, ६८
जौहरी–रत्नों का पारखी ६१
ज्यौ–जी, प्राण, जीवन ४८
ज्वाब–(जवाब) उत्तर ६३
झलकन–चमकीली ६०
झारितें–घनघोर बरसा से, गहरी वर्षा करने पर ७३
झालरी–(सं० झल्लरी) झालर १०६
झिराव–वृष्टि ७३
झिरे ना–(फिर)बर से नहीं ७३
झिलिहैं–पानी में धँसेंगे, (जीवन के) प्रवाह में उतरेंगे १०
झिलै–बरबस प्रवेश करता है (तल्लीन होने के लिए) ३३
झिलौ–सहन किया १०४
झूरी–कमी, न्यूनता २०
झूरी निकारत–कमी दूर कर देता है, कोई कोर कसर बाकी नहीं रहने देता २०
टटिया–टट्टी ८७
टाँड़ो–(सं० अट्टाल) वह माल जो लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाय ७
टाँड़ो लदावनो–बिक्री का माल लदाना ७
टुक एक–थोड़ा सा, कुछ देर के लिए १०४
टूक–टुकड़ा, खंड ३८
टूट–(त्रुटि) हानि, टोटा २३
ठई–हो गई २३, ८६
ठई–स्थिति ५८
ठहराइ–निश्चित प्रमाणित होता है ३
ठहराई–ठहराकर, निश्चित कर ८६
ठानत ना–करने में प्रवृत्त नहीं होता ७५
ठौर–(स्थान) अर्थात् प्रकार के २
ठौर–स्थान १७
ठौर कुठौर–(अच्छी जगह, बुरी जगह) अनुपयुक्त स्थान पर ३६
ठौर–के लिए, निमित्त १०३
डगरै–(वे चारो फल) उधर ही चल पड़ते हैं ५५
डसे–डंक मारने पर भी ३८
डगावनो–विचलित होने देना ७
डलिया–टोकरी २५
डेलन–मिट्टी के ऊबड़ खाबड़ ढेलों वाली भूमि पर १०६
ढरै–ढलते हैं, अनुकूल होते हैं, कृपालु होते हैं ५५
ढिग–पास २५
ढिलिहैं–डाल देंगे अर्थात् खिला देंगे १०
तंत–(तंत्र) शरीर की रक्षा का उपाय ११०
तकते–ध्यान से देखने पर ३४
तका–(ताख) आत्मा ८६

तकि—तककर, ध्यान से देख-समझकर ३३
तबियेदार—(तबिअतदार) रसिक, सहृदय ३३
तमारो—चक्कर, घुमटा ४२
तमासो—रंजक सजावट के दृश्य, वैभव के प्रदर्शन ६२
तरंगिनि—तरँगों वाली नदी २५
तरबो—भवसागर पार करना ६८
तरवार—(सं० तरवारि) तलवार, असि ७
तरहै—(तरिहैं) तर जाएँगे ९
तरी सरिता— नदी को (पत्थर की नाव) पार कर गई (इसे कौन मानेगा) ८१
तरै—संसार (सागर) से पार हो जाए ८
तहाँ को—वहाँ कौन (टिकता है) ३१
तार—कमलनाल को तोड़ने से निकलने वाले महीन तंतु ७
तार—समान, सदृश ७९
तारिसि—तार दिया ६०
ताल—तालाब ६२
तावतु—तपाता है, जलाता है ५२
ताही घरी—उसी समय, तत्काल ४२
तिन—उनके, प्रेयसी के ५५
तिन की—तृण से बनी हुई ८७
तिनुका—(तृण) तिनका (तुच्छ वस्तु) ६६
तिन्हैं—उनमें जो (बनावट) ५४
तिन्हैं—(जिन्होंने उसके लिए घर बार छोड़ दिया था) उन्हें ८५
तिनुका करि—तृण की भाँति तुच्छ करके करके (समझकर) ८५
तिरछी—टेढ़ी ३८
तिरछे—बंकिम, बाँके ३८
तिसी—तैसी, वैसी, ऐसी १०५
ती—स्त्री (दिख पड़ी नारी को) ५२
तीखी—कड़ी कड़ो बातें ४७
तीर—पास ८२
तूल—रूई (की भाँति हलका हो गया है) ११०
तेह—प्रचंडता, क्रोध ३५
तैं—तू २०
तो—या १३, १००
त्याग कों जोग—(संसार के) त्याग को ही योग कहते हैं ८३
त्यागै—परित्यक्त कर दे तो ८९
त्रिपुंड—तिलक ६३
थके—हार मान बैठे ४१
थल—(स्थल) स्थान पर वस्तु या व्यक्ति से १७
थहरानी—काँपती हुई ४८
थिरातो नहीं—स्थिर नहीं होता, चंचलता नहीं छोड़ता ३०
थिरे ना—स्थिर होकर नहीं रहे ७३
दई—(दैव) विधाता ४४, ६६
दगादार—धोखेबाज ६४
दगी—जल उठी १०२
दम—साँस ५७
दरकार—अपेक्षा, आवश्यकता १००
दरद—(दर्द) पीड़ा, कष्ट १६
दरद दरियाव—पीड़ा के समुद्र में ३३
दरेरे कहैं—रगड़ती हुई, गहरी चोट करती हुई, कहते हैं ४८
दवाग—(दावाग्नि) वन की आग ९५, १०८
दवागि—(दावाग्नि) वन की प्रचंड आग ३८
दहे—(भली भांति) जल जाने पर भी ३८
दहैजी गली—निकल भागने का मार्ग तक जलने लगेगा ९५
दादुर—मेढक ३०
दाप—जलन, ताप ५१
दाम—मूल्य २३
दाम—सिक्का ९३
दाह—तपन, जलन ३०
दाहन—(आग से) जलाने में १३

दाहन—(जलनों) (से) ७२
दिखाते—(अभिमान) प्रदर्शित करते हुए ३३
दिगंबर—नग्न, वस्त्र के आवरण से हीन १०४
दिलंदर—मन के भीतर की ४१
दिल—मन, चित्त, हृदय २३
दिल की—मन में होनेवाली (पीड़ा) ४३
दिलदार—हृदयवाला, सहृदय ३०
दिल माहिर—मन के मर्म का ज्ञाता, प्रिय १०, २५
दिल माहर[२]—मन के रहस्य के ज्ञान का आचरण करने वाला, प्रेमी ६७
दिलसूर—हृदय का वीर, सहृदय शिरोमणि ३३
दिवानी—पगली ४८
दिवाने—पागल ३२
दिवारी—दीपावली, कार्तिक कृष्ण अमावस्या का दीपोत्सव ४१
दिवारी जोग—दीपावली के प्रकाश के संयोग से (सूर्य चंद्र के प्रकाश में नहीं दीपावली के प्रकाश में संयोग के प्रकाश में वह जड़ी मिल सकती है जिससे पीड़ा हटे, प्रिय के दर्शन से ही वह दूर हो सकती है) ४१
दुऔ—दोनो ही ६८
दुकानदार—दुकान करने वाला ३४
दुखमूल—दुःख देने वाले ५८
दुनिया—संसार (के लोग) २४
दुबरो—क्षीण, अशक्त ३५
दुरि—छिपकर १०८
दूजो—(द्वितीय) दूसरा, अन्य ८३
दूबरी—अशक्त, क्षीण ३६
दूरि—दूर करके (अपने से) हटाकर १०
दूसरो—अन्य (अर्थात् प्रिय) २०
दृगबारि—नेत्र का जल, आँसू ७२
दृग लागे—आँखों से आघात हुआ ३८
देखि फिरौ—(मेरा मन) देखता फिरा ५४
देव दुआरे—देव मंदिर के द्वार पर ४६
देवारो को देवा—दीवाली पर पूजन के लिए बनाए गए देवता ६४
देह०—भिक्षा माँगनेवाले इस शरीर को (मुझे) मन के दर्शनों की भिक्षा नहीं मिली। कोई दर्शनीय मन वाला न मिला २८
दै—देकर, रखकर ७
दै नैन—नेत्र दानकर, नेत्र प्रिय से मिलाकर ३३
दौलति—संपत्ति १५
द्वार—अंतराल, निकलने का स्थान ७
धँसै—घुसता है ७६
धक—आशंका ३३
धका—संताप, हानि ८६
धर—धड़, सिर के अतिरिक्त शरीर का शेष भाग १८
धरकें—हृदय में धड़कन बढ़ जाने से १०६
धरियै—रखूँ २५
धरोजै—धारण करना ११३
धरें—पकड़े हुए (टट्टी के भीतर से) ८७
धरो—पकड़े रहती हो ८६
धातु—सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, काँसा, लोहा, आदि (जिसकी मूर्तियाँ बनती हैं वे धातुएँ) ३
धार—तीखा सिरा, बाढ़ ७
धारिसि—धारण किया ६०
धावनो—दौड़ना (केवल चलना नहीं) ७
धिरातो नहीं—(धैर्य) धारण नहीं करता ३०
धीर—धैर्य, धीरज २२
धीरज ही—धैर्य को ही (नहीं धर पाती) ६९
धुनि—धुन से अर्थात् लगातार ५३
धूम को धाम—धूएँ का घर ६४

धोखे मिलौं–(मुझे तुम्हें देखकर चमेली का) धोखा हुआ इससे तुमसे मिला १०४
धौं–न जाने ७४, ११०
न आनके जाइबे कों–केवल अन्य (प्रिय) के पास जाने भर के लिए, केवल संयोग सुख के लिए ६७
न आनतु–नहीं ले आता ७४
नउका–(नौका) नाव १०
न जात गिलौ–निगला नहीं जाता, खाया नहीं जा सकता १०४
नजीकी–(नजदीकी) निकट रहने वाला अर्थात् सेवक ८४
न ठानतु है–नहीं ग्रहण करता, नहीं मानता ७४
नथियै–(मस) बँधी, नत्थी हो १०१
न थिरै–स्थिर नहीं होता ७६
ननदी–(सं० ननांद्र) पति की बहन ४७
नफा–लाभ, प्राप्ति २३
न बसै–द्वार पर बसता भी नहीं, रुकता भी नहीं ७६
न भावै–नहीं भाता, नहीं रुचता ८९
नमें–नमन करते हैं, प्रणाम करते हैं। ५५
नरनाथ–नरेश, राजा १
न रमै–रमती नहीं, मन नहीं लगाती १०६
नरसिंह–नरश्रेष्ठ, वीरवर १११
न रासर–रास में न आने योग्य, न गिनने योग्य ७७
न लसै–न अपने रंजनकारी में होता है ७६
नवेली–नवयौवना नायिका ४१
न हिलौ–स्पंदन ही नहीं हुआ, अनुभूति या लालसा तक न हुई १०४
नहीं उर आनैं–मन में (निद्रा और आहार की बात) लाती ही नहीं, (न नींद है न भूख) ८३
नातो–नाता, संबंध, लगाव १८
नासर–(नाश) प्रलय ७७
नाहक–व्यर्थ, बेमतलब ३७
नाहिन छाँह–किसी को छाया देने में भी असमर्थ हो, किसी पर छाँह नहीं कर पाते १०४
निगोड़िनि–अभागी, जिसके कोई न हो (गाली) ६९
नित–नित्य, शाश्वत रूप (सुख का) ५६
निबहैं–निकल जा सकते हैं, बच जा सकते हैं ३८
निबाहियै–निबाहे, व्यवहार करे २९
निबाही–निबाहेगा, निर्वाह करेगा ६१
निबेरा–निपटारा २९
निरदै–(निर्दय) दयाहीन ७७
निरधारी–(भले ही) निश्चित की
निरबाहिबो–निर्वाह करना, अंत तक निभाना ११२
निरसंक–(निःशंक) निर्भय २७
निवारी–निवारण कर ली, रोक ली ९६
निसिबासर–जौहरीमुक्ता से कहता है, तुम्हारे ऐसे रात दिन यहाँ अपनी कीमत जचवाने को डटे ही रहते हैं। ९२
निहारि–निहारो, ध्यान से देखो ४९
निहारी–ध्यान से देखी हो ४१
नीकी–अच्छी (बात) १४
नीच–मंद, मलिन, निकृष्ट (व्यक्ति) ६
नीतिनिबाह–प्रेम की नीति (चलन, आचरण) का निर्वाह १८
नीर बहे–नदी के प्रवाह में बह जाने पर भी ३८
नेकी–अच्छी, भली ४३
नेकी–भलाई ५८
नेजहु–भाले (के फल की अनी) से भी (तीखी नोक) ७
नेत–व्यवस्था, स्थिति ५०
नेम–नियम, सिद्धांत ६९

नेवारि—चमेलीकी जाति का भीनी गंध का सफेद फूल, वनमल्लिका ६६
नेवारी—उजले पुष्प का पौधा ७३
नेवारी—निवारण की, दूर की १०१
नेह—(स्नेह) प्रेम २३
नेह के देवता—प्रेम के देव, कामदेव ५३
नेहु निबाहिबो ही परौ—पर प्रेम का तो अंत तक निर्वाह अब करना ही पड़ेगा ६६
नेहफंदा—प्रेम का फंदा, प्रीतिबंधन ४७
न्यारे—पृथक् पृथक् २
पंथ—मार्ग ७
पक्षिन कौं—पक्षियों (चिड़ियों) के लिए १०६
पचै रहियै—पचा कर, दबाकर रहती हूँ ७२
पठवैं—जिनके पास उन्हें (चारो फलों को) भेजते हैं ५५
पढ़ैं—पढ़ने के लिए ५२
पतवारी—पतवार, नाव को मोड़ने या घुमाने का डंडा १०
पताकों—पताका वाले, ध्वजवाले अर्थात् प्रभावशाली २७
पदवी—उच्च स्थान ३१
पपीहन—चातकों ३०
पयार—पुआल, धान का डंडा १०६
पयोधर—जलधर, बादल ११
पयोनिधि—समुद्र ७२
पर—पंख (मोरपंख) ११
परि—निश्चय ही १०६
परतीति—(प्रतीति) विश्वास ७
परतैं—(में) पड़ने पर, होने पर
परपीर—(प्रपीड़ा) अधिक वेदना ८१
परबी—पड़ जाऊँगी, फँस जाऊँगी ४७
परमारथ—परमार्थ, मोक्ष ३६
परवाह—चिंता, फिक्र ५३
पराने—(पलायन) भागे ८५
पराये की—दूसरे की ८१
परेखो—पछतावा २४
परेवा—कबूतर ६४
परोसिनि—पड़ोस में बसी स्त्री, सौत ८८
पलहूँ—क्षण भर के लिए भी ७६
पलास—(पलाश) टेसू, किंशुक ११०
पलीत—भूत प्रेत ६४
पहिचान—जान-पहचान, चीन्हा-परिचय ६३
पाँडर—पाटल नाम का सफेद या लाल रंग का पुष्प ६६
पाँव दै—पैर रखकर, चलकर ७
पाउँ परौं—पैरों पड़ती हूँ, प्रणाम करती हूँ ५३
पाखान—(पाषाण) पत्थर ३
पातन—(पत्र) पत्ते ६३
पातन सों—(करील पर अन्योक्ति) अपने में पत्ते ले आने के लिए, पत्र-युक्त होने के लिए १०४
पाती—पत्ती (भाँग की) १०७
पावन—पाना ही (है) ४३
पावस—(प्रावृष्) वर्षा ३०
पाहन (पाषाण) पत्थर १३
पाहनपोत—(पाषाण पोत) पत्थर की नाव ८१
पिंड—शरीर ८१
पिंड में ब्रह्मंड—(यथा ब्रह्मांडे तथा पिंडे) पिंड में ब्रह्मांड स्थित है ८१
प्रिय—प्रिय ५१
पियरी—पीली १०६
पिया—प्रिय, पति ८४
पिलिहैं—बरबस धँसेंगे, जबरन उत-रेंगे १०
पिलै—बरबस पैठ जाती है, चल पड़ता है ३३
पीरो—पियरी, पीली रँगी धोती ६०
पीस—(शरीर एवम् मन दोनों को) पीस डालकर (सूर्य की किरणों से तप कर) १२
पीसेई डारति-समाप्तप्राय किए डाल रही है ३७

पुरहूत—इंद्र ५६
पुरानऊ—पुराण भी १४
पूरन—पूर्ण ५६
पूरी—भरपूर, भलीभाँति २०
पेरा—गोल और चिपटे आकार की खोवा एवम खाँड़ से बनी मिठाई ७५
पैँड़े—मार्ग में १८
पैँड़े परै—पीछे पड़े, अनुगमन करे १८
पै—निश्चय ही ८, २३
पै—से ६८
पौन को खैँचती—प्राणायाम करती हैँ ८३
प्यारे—नायक ५२
प्रतीति कै—विश्वास की (पतवार—लेकर) १०
प्रभु—ईश्वर १३
प्रवासी—परदेशी ५१
प्रसूतपीर—प्रसूता की पीड़ा, बच्चे को जननेवाली को वेदना ९०
प्रापति—(प्राप्ति) लाभ १००
प्रिय—अच्छे लगने वाले, भाने वाले ५२
प्रीति निबाहन—प्रेम का निर्वाह (पालन) करने से १३
फँदै—फंदे में पड़ जाए ६४
फँसो—(सेमर की रुई से सुग्गा अंधा तक हो जाता है) कष्ट में पड़ा ९३
फकीर—भिक्षुक, भिखारी ९९
फना—मृत्यु (को) ८७
फल—प्राप्ति, लाभ, सिद्धि १४
फलचारि—चारो फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) ५५
फागु को बापु—होलीपर गाली देने में बाप बन जाना ९४
फिरि आवन—उससे पलट आना, दूर हो जाना, बच निकलना ४३
फिरिकै—पलटकर, पलटे (तू ही) ३६
फिरिकै—पुनः ७३
फिरि फिरि—बारंबार, पुनः पुनः २६
फिरिबो करौ—(आनंद से) फिरती रहो, (सुखपूर्वक) टहलान देती रहो २०
फिरे ना—लौटे नहीँ, पलटे नहीँ ७३
फिरै—बेचने वाले के पास लौटा दिया जाए २३
फिरै—लौट जाती है ७१
फ़टका—लावा (या दाल भरी पूड़ी) ७५
फेनी—लपेटे सूत के लच्छे के आकार की मिठाई, सुतरफेनी ७५
फेरि—तदनंतर ४५
फेरि—पुनः ७३
बँधुवा—(बंधु) मित्र, प्रिय ६२
ब—अब ५७
बई—बो दी ५८
बकबाध—बकवाद, व्यर्थ की बात ८०
बका—जो बाकी रहे, निरंतर रहनेवाली, अटूट ८६
बखानतु है—वर्णन करता है, विस्तार से बताता है २२
बखाने—बखान किए गए (प्रशंसा की गई) ८५
बगिया—छोटा बाग १००
बच्यो—(मरने से) बच गया, जीवित रह गया १३
बजाइ—डंके की चोट, खुल्लम खुल्ला ३, ८, ६५
बजिकै—हठपूर्वक, बरबस २३, ५०
बटपार—बाट में डाका डालनेवाला, डाकू ५८
बटपारन—बटपारनी, डाका डालनेवाली (गाली) ११०
बटा—(बाट) मार्ग, पथ १०
बढ़ावन—बढ़ाना ही (है) ४३
बढ़ै न—बढ़कर जाए नहीँ (एक को छोड़कर दूसरे से लगाव न हो) १७
बतराते—बातचीत करते हुए ३४, ६५
बतात हैँ—बातेँ करते जाते हैँ १०८
बतासा—चीनी की चाशनी टपकाकर

बनाई हुई खोखले हलके बुलबुले के रूपवाली मिठाई ३३
बदी–बुरी ४३
बदी–बुराई ५८
बनहूँ घर आपने–वन भी अपना हो घर ही है १०५
बनाइ–भली भाँति रचकर, सँवारकर १
बनियैं–बनिया के, परचून बेचने वाले के ९१
बनै–बात बनती है (लाभ होता है) २३
बनै नहीं–बनता नहीं, सिद्ध नहीं हो जाता १३
बयाने–पेशगी में २३
बर–(अपने) पति से ८५
बरजी–मना करने पर भी ३९
बरफी–चीनी की चाशनी में पीसा बादाम, पिस्ता आदि या खोवा डालकर जमाकर चौकोर काटती हुई मिठाई ३३
बरसें–बरसने में, रस वृष्टि होने से ९६
बरहामर–ब्रह्मेश्वर सर्वव्यापक और सबके स्वामी ७७
बरही–(वर्ही) मोर (वर्ह–मोरपंख) ११
बरहीपर–मोर के पंख १४
बरहूँ–भले ही ७६
बरहू–(ये नये) वर (प्रिय श्रीकृष्ण) भी ८५
बरहू–बलपूर्वक ९२
बरिआइ–जबर्दस्ती ८८
बरिआई–बरबस ८८
बरिबरि उठति–बारंबार जल उठती है ८८
बलि–हे सखी (या बलिहारी जाती हूँ) ८६
बस–(वश) अधिकार, काबू ७५
बसु–आठ ७७
बसुधा–पृथ्वी १०३
बहाइबे–बहा देना, छोड़ देना ७०
बहुतेरे–अत्यधिक ३८
बाँझ–वंध्या, अप्रसवा, जिसे संतान नहीं होती ८१
बाँधत–बाँधते, निश्चित करते हैं ७८
बाँधि धुजा–ध्वजा बाँधकर, खुल्लम-खुल्ला, सबकी जानकारी में १०
बाज–(बाजि) घोड़ा ८
बाजी–दाँव (अर्थात् खेल) ६५, ९७
बाट–मार्ग २५
बाट परै–बाधा आ उपस्थित होगी ५०
बात कहा–केवल बातों से ही ४०
बानि–(वाणी) बोली ३६
बानि–टेव, आदत ५२
बानि–बनावट ५४
बानी–(वाणी) बात ४८
बारी–समय १०८
बाल–(बाला) नायिका ३७
बालम–(वल्लभ) प्रिय ४८
बासर–दिन ७७
बाहक–वहन करने वाले, धारण कर वाले १०९
बाहिबो–चलाना ११२
बिचारने–(विचारणा) तर्क, कल्पना ९
बिछुरें–वियोग होने पर १६
बिछुरो–बिछुड़ गया, वियोग हो गया ९७
बिछुवा–(वृश्चिक) बिच्छू (के डंक) ६२
बिछू–(वृश्चिक) (जहरीले) बिच्छू ३८
बिज्ञान–बोध, बुद्धि, चेतना, होश १०
बिते–व्यतीत हुए, बीते, गए ७७
बिथा–व्यथा, पीड़ा १०२
बिथाहर–(व्यथाहर) कष्ट को दूर करनेवाली ९
बिदा–रुखसत, प्रस्थान ९३
बिधि–ब्रह्मा ७७

मरै—परेशानी सह रही है ३७
मलै—चंदन ६२
मस्ताने—मस्ती में आए हुए, मत्त ३२
महबूब—प्रिय, प्रेम का पात्र ३३, ३८
महबूबाँ—प्रेमिका, प्रिया (यही दुकानदार हलवाई है) ३४
महिरबान—दयालु, कृपालु ३३
महिरम—(अरबी महरम) घनिष्ठ मित्र ८६, ११२
महिरैबे की—प्रेमतत्त्वज्ञ बनने की, दिलमाहिर होने को, रसिकता की १०२
महीप—पृथ्वीपाल, राजा १०६
महेस—(महेश) महादेव (योगीश कहलाते हैं) १११
माँगी—अर्थात् चाही ६३
माँस की—मांस को बनी हुई (अर्थात् जड़, चेतनाशून्य) २४
माख—(अमर्ष) बुरा मानना ४६
माटी—(मृत्) मिट्टी ३
मातौ—मतवाला हो जाए ६७
माथे—(मस्तक) सिर पर ११
मानत ना—हठ छोड़ ही नहीं रहा है, रास्ते पर आता ही नहीं ७५
मानिहैं—अंगीकार कर लेंगे, स्वीकार कर लेंगे ५
माल—(क्रय-विक्रय की) वस्तु, सामान (यहाँ 'मन') २३
मालती—एक भीनी महक वाला सफेद फूल जो भौंरों को बहुत प्रिय है ९६
माहिरबाँ—(मेहरबान) कृपालु, दयालु ३२
मितवा—(मित्र) दोस्त, सखा '(वा') प्रत्यय के कारण विशेष मित्र) १२
मिरचैं—गोल मिरिच १०७
मिलावत—मिलने का संयोग उपस्थित करता है ६४
मिलिबो—मिलाप होगा, भेंट होगी ७१
मिलिहैं—भेंट करेंगी अर्थात् प्रेम करेंगी १०
मिसिरी—जमाई हुई दानेदार चीनी, मिस्री ७५
मिसी—(मिस्सी) मिस्सी के (कालिख) के बदले कोई और सुख हमने सुना ही नहीं, कलंक ही लगा १०५
मीत—(मित्र) हे सखा, हे दोस्त ८
मुए—(मृत) मरा हुआ (गाली), कामदेव मरकर ही अनंग हुआ है ६३
मुकुता—(मुक्ता) मोती ९१
मुकुति—(मुक्ति) मोक्ष ८०
मुखईलौं—हृदय से मुख तक (आती है) ४५
मुलाकात—भेंट, मिलन २३
मुसकाहट—मुसकान ३१
मुसक्किल—(मुशकिल) कठिन १११
मुहि—मुझसे ९९
मूरि—जड़ी ४०
मृग—हिरन ८
मृगतृस्ना—मृगमरीचिका, मृगजल, मिथ्या प्रतीति २५
मृनाल—(मृणाल) कमलनाल, कमल-दंड ७
मृगनैनी—हरिण के नेत्र से नेत्रों वाली प्रेयसी ४४
मेवा—किशमिश, बादाम, अखरोट, आदि सूखे बढ़िया फल ६४
मैन—(मदन) काम १०७
मोल कियो—सौदा किया (आपने, प्रिय ने) २३
मौत—मृत्यु ५७
मौत कलेस—मृत्यु की पीड़ा ८३
मौरसिरी—(मौलिश्री) बकुल, बरसात में फूलनेवाला मुकुट के आकार और तारे सा छोटा मीठी गंध वाला फूल ९६
य—यह ८६
यह—एक ९५
यहि—इस (सुग्गे) ने ९३
यहि बाग—इस बाग से ९५

यहि रूप—कोयल का यह काला काला रूप (आकार) और वैसी मीठी तान ७८
या—यह ३३
यार—उपपति, प्रिय १०६
यारी—दोस्ती, प्रीति ६४
यो उर आनै—यह हृदय समझता है, मानता है ६६
रंक—गरीब २७
रंग में—आनंदपूर्वक १०७
रँगराते—आनंद में लीन ६५
रँगहीन—शोभा रहित १०२
रंचु—(रक्तिक) थोड़ी, नाममात्र की ३३
रकाने—गुलामी करनेवाला, (प्रेम से) विवश ३३
रगरैं—(सं० घर्षण) रगड़े, बारंबार घिसे १०७
रघुनायक—रघुवंश में श्रेष्ठ रामचंद्र ८४
रचै—(सरीति) आनंद की रीति रचती है, काम क्रीड़ा करती है १०८
रजनेरो—रंजित करने की कला ५२
रजा—मरजी, इच्छा ७६
रढ़ै—रटता है, घोषणा करता है (श्रुतिवाक्य की भाँति) ११
रति—प्रीति १०३
रतिकौ—(रक्तिक) थोड़ा भी ३७, १०१
रधवा—राधा (श्रीकृष्ण का कथन) ४६
रतीकौ—थोड़ा भी ६२
रतो—अनुरक्त हुआ, आसक्त हुआ १००
रनसूर—युद्ध के सुभट २७
ररिहै—रटेगी, बोलने की धुन लगाएगी ११०
रस—आनंद, सुखात्मक वृत्ति ६८
रसकेलि—रसक्रीड़ा, आनंदयुक्त क्रीड़ा ९९
रसाल—आम ३७, ११०
रहै—रहती है, बसती है ६७
रहै—होता रहता है ६७
राइ—(राम) राजा १०९
राखन—रक्षा करने के लिए, बचाने के लिए ४६
राखै इस्क—प्रेम की रक्षा करता है, प्रीति निबाहता है ३२
राती—लाल १०७६
राते—अनुरक्त, आसक्त ६५
राम दिवानी—राम (ईश्वर) पर दीवानी, फकीरो में मस्त ५८
रामदोहाई—राम की सौगंध, ईश्वर की शपथ ८
रिझाय फिरौ—प्रसन्न करने के लिए नाना प्रकार से गुंजार आदि करता ९५
रिस—रोष ९१
रिसाती—रोष करती है १०६
रीझि—पसंद, रुचि ७८
रीझिकै ग्रीव हली—मेरे रिझाने (प्रसन्न करने) के प्रयत्न में अनुकूलतासूचक गर्दन तक न हिली ९५
रु—(अरु) और ५८
रुकै न छांरि—उलझना छोड़कर रुकता हो नही ५९
रुखाई—सूखापन, बे मुरौवती ३४
रूप—सौंदर्य ३१, ७४
रैहै—रहेगा, बचेगा ३६
रोसु—(रोष) क्रोध ६८, ८७
लखि—लखो, देखो, समझ लो ५४
लखि पायो उसे—जिस स्त्री को देखता है यही समझता है कि सुभान को ही देख रहा हूँ (जिसको रंजनकला में सीख नहीं पाया, अतः सभी स्त्रियों को परेशान करता है) ५२
लखु—लख ले, ध्यान देकर समझ ले २०
लगन—प्रीति ६१
लगनि—लगन, लगाव १७
लगि जाइ—आँखें कहीं लग जाएँ (तो उससे लगा कलंक) ४५
लगि जैहै—लग जाएगा, चोट पहुँच जाएगी ३६

लगि जैहैं–मन में रुच जाएँगी, इनकी प्रीति हो जाएगी ४७
लगी–(दूसरे से) प्रीति (होने की) पीड़ा हुई ८१
लगी नहिं–लगाव नहीं हुआ, आघात नहीं हो सका २०
लगे न रहैं–अखंड नहीं रह पाते (टुकड़े टुकड़े होकर रहते हैं) ३८
लगैं–लगती हैं, दिखाई देती हैं; प्रभावित करनेवाली हैं ४७
लघु–छोटा अर्थात् विनम्र २९
लघुता–छुटाई, विनम्रता २९
लटको–लटक हो गया, दुबिधा में पड़ गया
लटी रहतीं–लिहाड़ी लेती, बुराई करती हैं ७४
लटू–मोहित (होकर) ७०
लड़ुआ–गोल बँधो मिठाई, लड्डू, मोदक ७५
लथेरे–भूमि पर पछाड़ कर घसीटने पर भी ३८
लदाई करै–आक्रमण करता है ६५
लपटाइ हिये–छाती से लिपटा कर, आलिंगन करके ७०
लला–(श्रीकृष्ण) लाल ४७
लली–(मानवती) लाड़ली ११३
ललीजी–राधाजी ८६
लसी–सुशोभित है ४९
लहिकैं–प्राप्त करके, प्राप्ति हो जाने पर ४३
लहे–पाए, मिले (श्रीकृष्ण) ८४
लागियैं–ये आंखें लगती भी हैं (तो निष्प्रयोजन) ४६
लाली रहै–मुख की लाली बनी रहे, प्रतिष्ठा रक्षित रहे ४६
लुटियैं–लूट लिया जाता है, अनायास मिल जाता है ३१
लूक–लुत्ती, ज्वाला ३७
लूटि भई–लूट हो गई (क्रेता ने क्रय का स्वांग भर किया, वह लूट करनेवाला निकला) २३
लेखि लेत–गिन (ही) लेता है ७७
लेस–(लेश) थोड़ा भी लगाव ८३
ल्यैं–लिए ५९, ७५
लै–लेकर (प्रिय को लिए दिए) ९
लै –लेकर, पाकर, पड़कर २५
लै –फँसकर २५
लै –ले जाकर २५
लै –लेकर, पाकर २५
लोनी–लावण्यवाली, सुंदर ९९
लौ –सदृश, समान २५
वह–प्रह्लाद १३
वारने–निछावर ५६
वारियै–निछावर देना चाहिए १८
वहिकें–उसके ४०
वाहियैं–उस बनावट को ५४
श्रमबुंद–पसीने की बूँद ६३
संक–शंका, भय ८६
संकरिया–कई मिठाइयों के मेल से बनी मिठाई जैसे करनसाही ३४
सँकरी–(संकीर्ण) पतली, तंग ५९
सँग–(संग) साथ १३
सभारैं–सहन कर ले १११
संभु–(शंभु) महादेव (के सिर पर कमल होकर) ११
सई की–सचमुच की, वास्तविक, परमार्थतया ११
सक–(शक) शंका, संदेह ९, ८५
सकात–शंका करते हुए, डरते हुए १०८
सक्रीन–(संकीर्ण) महीन, अपेक्षाकृत कम ७
साख–मर्यादा, प्रतिष्ठा ४६
सच–(सुख) आराम ९३
सजीवनि–(संजीवनी) मरे को तुरंत जिला देनेवाली ४०
सठ–(शठ) दुष्ट ९३
सतक्रतु–सौ यज्ञ करनेवाला, इंद्र ३१
सत जज्ञ–(शत) सौ यज्ञ (इंद्र का नाम

ही है शतक्रतु, जो सौ यज्ञ करनेवाला है) १५
सती अरु भानुवती—भानमती (जादूगरनी) खेल में पति के साथ सती होने का स्वाँग करती है, वह सिर्फ जादू के खेल के लिए, सचाई वहाँ कहाँ ६४
सधै—सिद्ध हो, पूरी हो ८६
सनमानी—संमान पाने वाले २७
सपने—स्वप्न में (सेनापति हो जाना) ६४
सबै—सब कुछ, सर्वस्व ४
सम—समता, बराबरी ५४
सम—समान, बराबर ५८
समयौ परि—समय पड़ने, दिन बिगड़ने पर ६२
समाइकै—अर्थात् छानकर, भीतर ही भीतर फैलकर ४५
समाज—समूह ८१
समान के—बराबरी के, तेरी समता वाले ५६
समानै—लीन हो जाने पर ८३
समुझै—हृदयंगम करे, मन से ग्रहण करे ४
सयान—(सज्ञान) चतुराई ५०
सर—तालाब (जल में) ८
सरसावै—रसपूर्ण करे १०७
सराहै—(श्लाघा) सराहे, प्रशंसा करे २६
शरीर—सारे शरीर में ४५
सरी न—पूर्ण नहीं हुई ५३
सरोज—सर से उत्पन्न, कमल १४
सरोजमुखी—कमलमुखी, सुमुखी १०३
सवादु—स्वाद, सरसता (अच्छाई) २२
सहजै—सहज ही, सरलता से ६१
सहल—सरल (जो कठिन न हो) ११२
सही—ठीक, सत्य ४४
साँकरी (संकीर्ण), सकरी, पतली १०८

साँग—बरछी १११
साफी—छानने का वस्त्र, छन्ना १०७
सारो—सारिका, मैना ८
साल—पीड़ा ६२
साल पिरानो—साल (मोच आने या काँच धसने) की पीड़ा हो रही है ६७
सावन—श्रावण का महीना (जब हरियाली ही हरियाली चारो ओर होती है) ५४
सिखावन—सीख ४०. ५७
सिखी—(शिखी) अग्नि १११
सिखीन को दाहिबो—आग (की लपटों) का जलाना १११
सिगरी—(सकल) सारी, सब १००
सिद्धि—सफलता ३
सिया—सीता, जानकी १८४
सिरातो नहीं—ठंढा नहीं होता ३०
सिरावै—शीतल होता है ६५
सिरैबो—ठंढी या शांत हो जाती है ७१
सिहाती—ललचाती है १०६
सीस—(शीर्ष) सिर १२
सुईबेध—(सूची वेध) सूई में का वह छेद जिसमें डोरा डालते हैं ७
सुक—(शुक) सुग्गा, तोता ८
सुखमूल—सुख के आधार, जिनसे सुख प्राप्त होता था, सुखमूलक स्थितियाँ ५८
सुघर—चतुर, जानकार १६
सुजान—(सुज्ञान) अच्छे ज्ञान से संपन्न २६
सुतसोगु—(सुतसोक) पुत्र के मरने का शोक ६७
सुधा—अमृत ६८
सुने—सुनने पर ४७
सुनै—(गुरु आदि के उपदेश के रूप में) सुने, सुनने का प्रयत्न करे ४
सुबास—बसने का अच्छा स्थान ६३

सुबुंद–अच्छी बूँदें, प्रेमरस की अनुकूल वृत्तियाँ ३२
सुजान–सज्ञान या सुज्ञान, सहृदय ७८
सुभान–प्रेयसी का नाम, सुभान नाम की वेश्या ७६
सुभान–(सुबहान) धन्य ७६
सुभायन–स्वभाव से ही, सहज ही ५५
सुमिर–चिंता करते हैं ५१
सुमिर–स्मरण करता है, बारंबार नाम लेता है ५१
सुमुकता–बहुत अधिक ३४
सुरत–स्मृतियाँ, यादें ६२
सुरुखी–सुंदर चेहरेवाली, सुवदना, सुमुखी १०३
सुरेस–देवपति, इंद्र १५, ६५
सुवा–(शुक) सुग्गा ९३
सूकर–(शूकर) सूअर १६
सूझ–दिखाई देता है ५४
सूम की सेवा–कंजूस की सेवा (में भी कोई अंत तक नहीं खटता, पारिश्रमिक ही नहीं मिलता) ९४
सूर–(शूर) दृढ़तापूर्वक वीरता दिखानेवाला योद्धा २०
सूर प्रभा–सूर्य की सी तेजस्विता २७
सेमर–(सं० शाल्मली) सेमल ९३
सेव–(सं० सेविका) सूत या डोरी के रूप में बेसन से बना पागा हुआ मीठा पकवान ३४
सेवती–एक प्रकार का सफेद गुलाब, चैती गुलाब ९५६
सो–को, के लिए १०४
सो–वह व्यक्ति (जो) ९
सोऊ–वह सब भी १८
सोग–(शोक) चिंता ९८
सोगिया–शोक वाले, शोकयुक्त ५६
सोनजुही–(स्वर्णयूथी) पीली जूही १०२
सोहाग–सौभाग्य ११३
स्रिग–(शृंग) सींग ११
स्वादबिहीन–स्वाद रहित, (करील का फल कसैला होता है) १०४
हकीकत–वास्तविकता ६६
हकीम–वैद्य ४३
हती–थी ७८
हतो–था १००
हद–सीमा, मर्यादा ७८
हनाहक–(नाहक) व्यर्थ (ही) ४६, ६४
हबूबो सो–झूठमूठ की बातों से ३२
हरवा सो हिलबो कर–हार खो जाने की भाँति कुछ खोया खोया सा नित्य ही प्रतीत होता है ७१
हरि–श्रीकृष्ण १४
हरो हरो–हरा ही हरा (केवल हरा) ५४
हलवाई–मिठाई बेचनेवाला ३४
हलाहल–भयंकर विष १४
हवा–वायु, अर्थात् खुले स्थान में ६५, ७५
हहरै–दहलता है ५१
हाट–(हट्ट) बाजार २०
हातो–दूर, पृथक् १८
हाथ बिकाने–परम अधीन हो गए ८५
हाथ लै–हाथ पकड़कर (पाणिग्रहण सा करके) ८५
हार–माला (रत्नादि की) ६३
हाल–स्थिति १०३
हित–अनुकूलता, सुमुखता १
हितू–सुहृद्, मित्र, प्रिय २४
हिय–(हृदय) छाती (में) ५
हियरा–हृदय ४२
हिय–(हृदय) मन ३९
हिये–हृदय में ५, ३२
हिये–(कलेजे में) ३९
हिलि मिलि जानै–परस्पर गहरी मित्रता करना जाने २९
हिलै–प्रविष्ट हो जाता है, धँस जाता है ३३

ही–हृदय, मन ६९
हुकुम–(हुक्म) आदेश १
हुतो–था ७५
हुलासी–उल्लसित, उमंगित ३९
हेतु–प्रेम (का स्वरूप) ४
हेरान–निहारना, देखना ५०
होई–होए, हो ४०
होऊ–होए, अस्तित्व हो (धड़ से सिर को पृथक् ही माने) १८
होने न पाव–(कोई सुख) शाश्वत नहीं होने पाता ५६
होलिका–प्रह्लाद की बुआ जिसको वरदान था कि वह आग में जल नहीं सकती। प्रह्लाद को आग में लेकर बैठी कि मैं न जलूँगी वह जल जाएगा। पर उसको अकेले न जल पाने का वर था। इससे बात पलट गई वह जल गई, प्रह्लाद बच गया १३
ह्याँ–यहाँ (मेरे पास) वन में ८४
ह्वाँ–वहाँ (रामचंद्र के पास) ८४

अभिधान

विरहवारीश

अंक—गोद, अकवार २।३८, २५।२७
अंक—स्तन ७।१६
अंक—लेख, अक्षर २१।५
अंकन—शब्दों के १३।३७
अंकु—गणित में संख्या १, २ आदि १६।२६
अंग—अंग रूप में १५।१६
अंगमालिका—भेंट, आलिंगन २६।३०
अंग प्रकारं—शरीर की स्थिति १८।५५
अगरा—आग का अंगारा १६।३१
अंगराग—सुगंधित लेप १३।३६
अँगाटी—आग रखने का पात्र (जिससे राहु हटे) १३।३०
अँगूरो—उगलियों की गाँठें, पोरे १२।२५
अंजनि क्वाँरे—अंजनीपुत्र, हनूमान् २२।४
अंत—अन्यत्र ४।६१
अंतकाल—मृत्यु १७।७
अंत तक—समाप्ति के निकट १७।५३
अंतर—अलगाव ४।६३
अंतर—भीतर ५।४०
अंतर—मन, चित्त, हृदय ५।५४
अंतर धन—गुप्त धन ४।६३
अंतर पट—परदा, आड़ ८।५६
अंदर—मन (में) ६।२२
अंदर बेली—अंतर (भीतर—मन) की लता १०।२६
अंदेस—अंदेशा, चिंता १८।४६
अंधेर—अंधेरा ११।७
अंबर—वस्त्र ३१।२७
अकथ—अकथनीय ४८।७२
अकबकात—चकित होते हैं १३।६
अकबकाय—घबराकर २५।४०
अकबकाय रह्यो—भौंचक्का रह गया ८।६४
अकरी—अत्यधिक ५।४
अकलंक—दोष, लांछन १३।२५
अकाज—हानि १६।४६
अकि—या कि, किंवा, अथवा २४।१८
अचार—(आचार) (पूजन के) व्यवहार ३४।२२
अखती—अक्षय तृतीया, अखतीज (वैशाख शुक्ल ३) १६।७०
अखरौटी—सितार पर बोल बजाने की क्रिया ३।७
अखाड़े—गाने बजाने वालों की मंडली में ८।२०
अखै तीज—अक्षय तृतीया २५।२६
अगम—कठिन २१।५१
अग्र—आगे ३।६३
अग्रसी—आगे स्थित, आगे बना १७।४६
अचंभव—अचरज २१।४५
अचरज्ज—आश्चर्य ७।४८
अचरा—अचल, स्थिर १६।६
अचान—अचानक १८।६०
अचेते—अकल्पित १७।२६
अछेह—(अछेद्य) अखंड, अत्यधिक ५।२२
अछ्छर—(अक्षर) बोल, नृत्य, ताल के बोल १६।२४
अजब—अद्भुत १।४३
अजयासुत—अजासुत, बकरी का बच्चा, बकरा ८।७०

अजवायन—(यवानिका) यवानी २०।५०
अजहूँ—अद्यापि, अब भी ५।१५
अजार—रोग २०।७६
अजिर—आँगन ३०।६
अजीरन—(अजीर्ण) अपच २०।५०
अटकत—रुक जाते हैं, असमर्थ हो जाते हैं १।२
अटा—अटारी, छत, ऊपरी मंजिल ५।२
अठिलाय—ऐंठ दिखाकर ८।२१
अडंग—अडिग, अचल, स्थिर ४।२०
अड़ो—अड़ा हुआ, सामने टूटा हुआ २४।७
अतन—कामदेव १।२६
अतीसार—अधिक दस्त होना २०।५२
अतुराय—अकुलाकर ८।३२
अथयो—डूब गया २०।११
अदा—मुद्रा, चेष्टा १४।१२
अदिन—बुरे दिन १९।२२
अदृष्ट—भावी, भाग्य २१।३६
अदृष्टि—अदृश्य १३।३७
अद्रिष्ट—जो दिखाई न दे, भाग्य १५।३
अधकच—आधे कच्चे, बिना भूने २०।४८
अधर—नीचे का ओठ २।८
अधिकाई—अधिकता, सीमा के बाहर, मर्यादा से अधिक १४।३५
अधिकारी—अधिकता, सीमा के बाहर की १४।३६
अधिकारी—अधिकार २२।५५
अनखाई—रुष्ट हो गई २५।४१
अनखौहैं—रोष से भरे २५।४०
अनन्य—अद्वितीय, अनुपम १०।७
अनप्यावत—न पिलाते हुए, बिना पिलाए २१।७
अनभव—अनुभव १९।४५
अनिच्छ—इच्छारहित पूर्णकाम १७।२६
अनित्त—अनित्य, जो शाश्वत न हो १५।२
अनिमिख—निर्निमेष, पलकें नहीं गिरतीं १२।१५
अनियारे—अनी वाले, तीखे २।८
अनी—नोक १।३०
अनुजा—(छोटी) बहन १२।४५
अनुरागा—अर्थात् मान लिया, स्वीकार किया १२।२१
अनुसरै—लगता है १८।५१
अनेग—(अनेक) बहुत १२।४१
अनैसी—(सं० अनिष्ट) बुरी २।४१
अनौटा—पैर के अंगूठे में पहनने का गहना १३।४१
अन्नकूट—कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट का त्यौहार मनाया जाता है, अन्न का पहाड़ बनाकर २७।१२
अन्यास—अनायास, सरलता से १९।२२
अन्‌राग—(अनुराग) प्रेम १६।९३
अपत—पत्ते से हीन, अप्रतिष्ठित १०।३९
अपलोक—कलंक, दूषण ९।८
अपूर—आपूर्ण, अत्यधिक ३।६९
अपूरब—अभूतपूर्व अर्थात् प्रचंड १८।३५
अबकी—इस बार २।४३
अबद्य—त्याज्य, अकरणीय १९।७८
अबध—अवध्य, जिसे मारना विहित नहीं २६।६९
अबस्य—विवशता में २।५५
अबहौं—अबहूँ, अब भी १४।५२
अबार—अबेर, देर, विलंब ४।२३
अबास—(आवास) घर ४।३०
अविचल—अटल, अखंड १०।४१
अबिधा—विधिहीन, अनियमित १०।३०
अब्ब—(अब) अभी, इस अवसर पर २१।३
अभरन—आभरण, गहना १४।१०
अभिरे ना—(प्रेम की) लड़ाई लड़े नहीं १६।७०
अभिलाख—(अभिलाष) विरह की दस दशाओं (अभिलाष, गुणकथन, स्मरण, उद्वेग, उन्माद, चिंता, व्याधि, प्रलाप, मरण) में से एक ५।२३
अभीत—निडर, दुराव से रहित ६।६
अभूसन—आभूषण (गहना) ३०।३७

इतिक–इतनी सी, थोड़ी, घटकर १३।४७
इतै छन–इसी समय २३।१३
इत्त–(अत्र) यहाँ २७।५१
इत्थं–इस प्रकार की १८।५
इमि–इस प्रकार १३।४६
इलाज–दवा, औषध १६।४६
इल्म–विद्या ४।३३
इल्लत–दोष, अपराध २७।३७
इष्ट–(इच्छित) मित्र १८।७
इकसूत–इकट्ठे होकर ८।७२
इस मजकूर–इस प्रकार कथित ५।३१
इसे–(यष्टि) मुलेठी २०।४७
इस्क तुवा–प्रेम से परितप्त, विरहाकुल १६।२१
इस्कबाग–प्रेमोपवन १२।६
इस्करामूज–(इश्क रमूज) प्रेमपूर्ण कटाक्ष १७।२१
इस्कहकीकी–अलौकिक प्रेम ५।४०
इहिँ–ऐसे, इतने, अधिक १८।६०
ईँमन–ईमन, ऐमन १६।१६
ईठ–(इष्ट) मित्र १७।५१
ईस–महादेव ६।२६
उँगरी–अँगुली २।१५
उंचित–ऊँची ८।५२
उकसत–ऊपर उठते हुए, उभरते हुए ५।३०
उग्र–प्रचंड (नदी के लिए) १२।५
उघारी–नंगी ७।४४
उचटै न–निकलता नहीँ १८।८३
उच्चाटन–कामदेव के पाँच बाण—उच्चाटन, मोहन, शोषण, उन्मादन, मारण ३।८
(उन्मादनस्तापनश्च शोषणस्तम्भनस्तथा । संमोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः ।।
—अमर कोश की सुधा व्याख्या
हर्षण रोचन द्रावण शोषण मारण—कालिका पुराण)

उजियार–उजला, सफेद ८।१७
उझकत–उचकता है २५।४२
उझकी–चौँकी ५।६
उठाइ–उठाकर, धारण करके ६।२२
उठाय–अपने को उठाकर, उठकर ७।१३
उड़ै०—जुगनूँ उड़ते ऐसे लगते हैँ जैसे ज्वाला ही उड़ रही है २६।७७
उढ़नी–ओढ़नी ७।४९
उतंग–ऊँची ४।२८
उतय–दूसरी ओर से, विपक्ष से २४।१५
उत्तर१–एक दिक्, एक दिशा २६।८०
उत्तर–जवाब २६।८०
उथापति–उठा देती है, हटा देती है १७।४४
उदार–अच्छा, श्रेष्ठ १३।२२
उदारी–अच्छी, बढ़िया १३।२३
उदास–दुखी ११।५
उदिबेक–उद्वेग, आवेश पूर्ण कार्य ११।५३
उदै करै–उदय करती, प्रकाश करती (है) १३।४७
उनई–प्रकट हुई, दिखाई देने लगी २७।६
उनमादीँ–पगली हो गईँ ७।४०
उनमान–अनुमान ११२७
उनमादी–पागल १७।५५
उनमान–समान ११४२
उनमान–(अनुमान) यथा सामर्थ्य १५।२२
उनमुन–(उन्मन) उन्मनी मुद्रा की साधना, परमतत्त्व को ध्यान मेँ देखने की साधना ५।२७
उनीदे–उन्निद्रता मेँ ही, नीँद बिना पूरी हुए ही ७।२१
उन्माद–पागलपन २०।६२
उपचार–उपाय १२।३७
उपचार–चिकित्सा, इलाज २६।२५
उपचारसों–उपचार करने वाला, दूर करने वाला १३।३
उपचारी–दवा करने वाले १०।३६

उपदेसी–(उपदेशी) उपदेशक, योगी (माधव) ११।३१
उपपति–दूसरे की नारी का प्रेमी १।३७
उपहास–(अवमाननायुक्त) हँसी ४।७०
उपाय–अर्थात् कारण १७।५
उबाहिबो–चलाना १।२६
उभय–दो २१।६२
उभै–दोनों ओर से २।१०
उमाह–उमंग ७।४१
उमाहि–उमंगित होकर १४।३६
उमेद–(उम्मीद) आशा १६।२
उर–गर्भ ४।७
उर–हृदय में १०।११
उर–छाती १३।३६
उरझानो–फँस गया है १३।३५
उरहनो–उलाहना १२।६
उरु–जंघा १३।३८
उलंघै–पार करके जाता है १६।३३
उलछार–ऊपर करके, उठाकर १६।३३
उलथि–उलटकर १५।३३
उलूक–उल्लू १५।४
उसास–(उच्छ्‌वास) ऊँची साँस ६।१५
उसीसे–सिरहाने की ओर १५।३२
ऊगै–उदित हो ६।११
ऊजर–उजड़ा ५।१६
ऊजरी–दीप्तिमती ३।६६
ऊपरी–बाहरी १३।१
ऊभी–गहरी और व्याकुलता भरी ६।६
ऊभो–खड़ा १३।१३
ऊरध रेखा–उर्ध्वरेखा, सौभाग्य–शालिता सूचक हाथ की रेखा ५।४६
ऊसी–जैसी १६।७०
ऊहर–चिंतनीय ७।३६
ऋचा–मंत्र १६।३६
ऋतुराज–वसंत ११।३८
एक–अद्वितीय ४।२
एक–केवल १८।७
एक०–जैसे जीव बिना शरीर और शरीर बिना जीव व्यर्थ होता है १।३६
एक जने को–एक व्यक्ति के लिए २४।२०
एकत–(एकत्र) इकट्ठे ३०।१३
एकध–(एकधा) एक ही प्रकार से, एक समान १४।३
एक भेड़ में–एक भेड़ा के पकाने से बहुत अधिक खाद्य बनता है २४।२०
एकौ अंग–निश्चय ८।२६
एबर–(ऐपर) इस पर, तदनंतर १८।७२
ऐगर–(अग्र) आगे २०।२२
ऐन –ठीक १२।४५
ऐन नैनी–(हरिणनयनी) नायिका १२।३६
ऐहै–आएगा १६।१०३
ओखे–बहाने, मिस से २।१२
ओछे–दुर्बल ८।७१
ओट–आड़, बचाव के लिए आधार २०।८२
ओटपाय–शरारत, दुष्टता ३।१२
ओड़िया–ऊपर से लिया, वारण कर दिया २३।११
ओड़िहैं–सहेंगी २।३१
ओड़ौं–सहूँ ५।१६
ओड़ौ–सहो २८।१३
ओढ़ने आवत–अर्थात् किसी उपयोग में भी नहीं आती ६।१२
ओर दीवानी–अत्यधिक दीवानी १२।३८
ओर०–छोर तक, अंत तक निबाह करे १।४७
ओर निबाहिबो–अंत तक निर्वाह करना ६।१७
ओर–अधिक ७।११
औ–और, अधिक २४।१४
औखाद–औकात, सामर्थ्य २२।५०
कँगूरन–बुर्जों १७।४२
कंचुकि–चोली ४।४६
कंज–कमल (नेत्र) २५।३६

कंजारन्य–कमल वन २०।२६
कंठनीलता–गले की श्यामता २।६
कंठमाला–गले की बड़ी गुरियों की माला १३।४१
कंठमाला मनि–अपनी कंठमाला का रत्न घड़े में डाला ३१।६
कंठी–छोटी गुरियों की माला १३।४१
कंठुका–गले का हार ८।१५
कंथ–(कंत) प्रिय, नायक ७।१५
कंदर्प–काम १७।४४
कँदेला काँधे–साड़ी का छोर सिर पर न ले जाकर कंधे पर डाले हुए ७।४५
कंद्रप–(कंदर्प) कामदेव २।४४
कंद्रिपसैन–कंदर्पसेन, कामसेन २३।३२
कँपाते–कंपित करता हुआ १७।३२
कंबु०–शंख के गले को भाँति २।११
कंमान–धनुष २४।२७
कँहीरा–(कौहर) इंद्रायन १३।३८
ककना–(कंकण) कलाई पर का गहना १३।४१
कचौरी–उर्द आदि की पीठी से भरी पूरी ३०।३६
कच्छ–कच्छप, कछुआ १६।४४
कछनी–घाँघरे के ढंग का घुटने तक पहना जानेवाला वस्त्र ४।५२
कछु१–थोड़े में भी, संक्षेप में भी ७।३
कछु२–कतिपय ७।४
कटं कुट्ट–कटना और कूटना, कचरकूट २३।२४
कटाई–भटकटैया २०।४६
कठफार–कठफोड़ पक्षी, जो पेड़ों को चोंच से फाड़ती रहती है कीड़े खाने के लिए २६।४६
कठहरा–काठ की पेटी ३।६२
कठिन–कठिनाई, मुश्किल १३।१
कठिन की–कठिनता वाली, दुस्सह ५।२८
कढ़ि जाय–निकल जाय, चली जाए ७।५५
कढ़चो–निकल गया १६।६३
कत–कैसे १।२७
कथन–कथाएँ १२।३
कथन०–कथाओं के कहने में १।२६
कथनी–कहना १।५५
कदलिकुंज–कदली वन (जहाँ सिंह रहते हैं) १३।३१
कदली–केला १३।३८
कदाचि–(कदाचित्) कहीं ५।१५
कदी–(कदा) कभी १२।८
कधी–कभी ५।३३
कध्धी–(कदी–कदा) कभी १२।१६
कन फोरन–कान फोड़ता है, कानों को (ढोल की तीखी ध्वनि से) कष्ट देता है १४।४६
कनिकदार–कणवाला, दानेदार, उत्तम (घी) ३०।३६
कपाट–किवाड़े २१।१३
कपिला–सीधी गाय १४।४७
कपोत–कबूतर १३।४३
कफनी–साधुओं का बिना सिला कपड़ा, मेखली १८।२६
कबित–कविता ५।५८
कबित्त–कविता १।७
कबित्तन–कविता के छंदों द्वारा २०।६
कभू–कभी १६।२३
कमलपत्र–कमल के पत्तों की भाँति कोमल १६।३
कमान–धनुष १३।२६
कमान–तोप या बंदूक १४।३६
कर–किरण १३।३२
कर–हाथ २।११
करक–कसक, पीड़ा ११।२७
करक–कड़क, तीखी, कड़ी १६।३३
करकति–टूटती है २०।५
करकस–कर्कश, कड़ी १४।३५
करक्कत–कड़कते, टूटते हैं २०।१६

कसाई–हत्यारा ११।११
कसि–दबाकर ७।१६
कसि करि–(बहुत) कष्ट करके, मुश्किल से १८।२४
कसिकै–जोर देकर, जोर से ७।११
कसिकै–बरबस, साहस करके १६।१०२
कसिहैं–कष्ट देंगी २।४५
कसौनी–अँगिया ७।४२
कह–क्या १६।५६
कहर–आफत, गजब ५।४३
कहा–क्या २।३६
कहि–कहो तो १३।२
कही–कहा जाता है, उक्ति है, कहावत है १६।२२
कह्यो–आदेश दिया २४।४०
काँटो–तराजू का काँटा १४।१४
का–कौन सा १०।१०
का–क्या १२।१८
काहू–किसलिए १४।१६
काई–को ३१।१५
कागदै वारि–जल को (श्वेत) कागज की भाँति निर्मल किया ११।१५
कागा–(काक) कौआ ५।४१
काचे–कच्चे १६।१५
काज–करतूत ८।८
काज१–लिए २१।४७
काज२–कार्य २१।४७
काजी–न्यायकर्ता ५।४१
काजै–प्राप्ति हेतु २।१०
काठ में पाँव–स्वयम् को जानते बूझते संकट में डालना (अपराधियों के पैर में काठ की बेड़ी बड़ाकर ५।६
काढ़िनै–(प्राण) निकाल ले जाने वाला (प्रिय) १६।६३
काढ़ी–निकाली १२।३
काढ़े–(दाँत) निकाल दिए (दैन्य के प्रदर्शन में) १३।३१
काढ़े–(क्वाथ) जिस प्रक्रिया से पानी का चतुर्थ अंश तक जलाकर आग पर ओषधियाँ पकाई जाती हैं २०।४६
का धौं–(किं ध्रुव) क्या निश्चय ही २१।३३
कान कान२–एक कान से दूसरे कान में ५।१०
कान कान२–सब कानों में ५।१०
कानन–कानों में २८।५
कान कीजै–अर्थात् मान लीजिए १६।६४
कान खजूरे–(खर्जू) गोजर २६।७८
कानन बिहारी१–वन में विचरने वाले १३।२८
कानन बिहारी२–कानों तक फैले हुए (नेत्र) १३।२८
काननहूँ–कानों से भी ८।६४
कानि–मर्यादा १६।२८
कानी–एक आँख से हीन नारी ५।४३
काम–लालसा २।३३
कामद–कामतानाथ पर्वत (चित्रकूट) ११।२८
कामदा–कामनादायिनी १२।११
कामताई–कामना हो, इच्छा ही १८।७
काम नृपति–कामसेन राजा १७।२
कामनृपति–कामदेव १७।३
कामपुरीस–कामावती नगर के स्वामी २५।२१
कामा–कामिनी ४।६१
कामिनी–कामवती १२।११
कामिनी–पत्नी, भार्या १६।११
काय–किससे ३१।२३
कारन–(कारुण्य) करुणाजनक स्थिति ६।१८
कारन–(यहाँ) कार्यकलाप ७।२०
कारन–बचने का उपाय १५।२८
कारन–विशेष प्रयोजन १८।५१
कारो को–कृष्ण का १७।१०

काल कला—समय का करतब, काल की लीला २८।८
कालकूट—भयंकर विष, हलाहल २६।२८
कालिंदी—यमुना (श्याम शरीर के लिए) २।१०
कालि—आने वाला कल २१।८५
कास—काँसा, एक प्रकार की घास २७।४
कासा—(काश) कांस, घास २६।३५
काह—क्या ५।५
काहि—किसलिए १६।६४
काहीं—किसलिए १०।२०
काहिँ—कैसे १६।७१
काहीं—को २।४०
काहुवै—किसी को भी १८।५३
किंकिनी—करधनी, क्षुद्र घंटिका २।१५
किंसुक—पलाश २।१५
किजानत—क्या (कभी) समझता है १२।४८
कितको—किस प्रकार ८।४४
किताब—कुरान ५।५८
कित्तको—कितना ही, अत्यधिक ४।४१
किधौं—अथवा १६।२१
किन—कैसे १।६
किन्नरी—किन्नर (संगीत में निपुण एक प्रकार के देवता) की स्त्री १३।४४
किमि—किंवा, चाहे ५।१५
किमि—कैसे ५।१६
किये हथियार—युद्ध किये, लड़े १६।७७
किरवान—(कृपाण) तलवार १।३४
किलककै—हर्ष से किलकते हुए १६।३३
किला—दुर्ग (कड़ा घेरा) ८।८
किसा—(किस्सा) कथा, बात १८।६४
किसी—किसी ने (भी) ५।४०
किहिँ—कैसे १७।२७
की—(पुकार) सुनी १८।५५
कीक—चिंघाड़ २४।५
कीना—किया १४।३४
कीन्ह राज—बिराजी, बैठी ३।२
कीन्ह हाथ—(परस्पर) प्रहार किया २४।२५
कुंजित—कूजते हुए, गुंजार करते हुए २०।१६
कुंड—कुंडा, बड़े बड़े पात्र २१।४२
कुंडल—सर्प की फेंटी, इँडुरी २।१२
कुंडल—कान का गहना १३।१४
कुंदन—खरा सोना, शुद्ध तपाया सोना ८।५१
कुइली—कोयल २०।१६
कुचा—कुट, स्तन (बहुवचन) ५।५२
कुचाह—स्तन (बहुवचन) ४।४४
कुज—मंगल ३०।६
कुजागर—कुत्सित चेतना वाली १६।५६
कुटक—छोटे छोटे टुकड़े कर दूँ २२।४३
कुटेक—बुरी टेक, बुरा हठ १६।६६
कुट्ट—कूट कर, मार कर २२।४३
कुतह—(कुत्र) कहाँ १८।४
कुन्नस—(कोर्निश) झुककर प्रणाम करना २६।१५
कुमकुम—केसर ४।५१
कुमोद—कुमुदिनी, रात में खिलने वाला कमल, कुईं १६।३५
कुयारी—बुरी प्रीति, धोखा देनेवाली प्रीति ६।११
कुरंग—हरिण, मृग १।४०
कुरम—(कूर्म) कछवाहे २२।३८
कुरूँ—'कुरूँ' ध्वनि करके १२।२८
कुर्रा—कोड़ा ५।४१
कुलकान—वंश की मर्यादा ८।८
कुलफैं—लोहे के खोलों में २३।६
कुलाहल—(कोलाहल) शोर, गुंजार १२।३१
कुलिस—(कुलिश) वज्र २।३८
कुल्कान—(कुलकानि) वंश की मर्यादा ७।३३
कुल्ल—सब १।२४
कुवाँ—गड्ढा २।१०
कुवाँ परयो—कूएँ में गिर पड़ा १६।२१

कुसलात–कुशल वार्ता, कुशल रहने का समाचार १८।२१
कुसुंभी–कुसुंभ के रंग का, लाल ११।२
कुसुंभे–अफीम और भाँग के योग से बना मादक द्रव्य २७।३७
कुसुंमिय–कुसुम वाली १०।२९
कुसुमाकर–वसंत २।४६
कुहू–अमावस्या १३।२४
कूँधुनि–मुर्गे की ध्वनि, कुकड़ूँ कूँ २०।१५
कूक–कोयल की बोली २०।१९
कूच–प्रस्थान, प्रयाण २८।३२
कूटिये–पीटिए, पीटी जाए १४।४७
कू तकि–कौन ताकता देखता है १८।५५
कूप–कुंड ५।४४
कूब–(खूब) अच्छी तरह १२।२९
कूर–(क्रूर) दुष्ट ५।५४
कूर–कठोर (कष्टप्रद) १९।२१
कूर–मूर्ख ८।५४
कूरम–(कूर्म) कच्छप १९।७०
कूह–कूक, चिल्लाहट ७।३६
कूहर–कुहराम ७।३६
कृत–(कर्तृक) वाला ९।६
कृत–किया हुआ, करतूत ३।१४
कृत–करनी, करतूत ७।५६
कृस–(कृश) क्षीण ८।५३
केकीरव–मयूर की सी वाणी वाली ८।५३
केर–का १०।२४
केरे–के ५।२७
केल–(केलि) खेल १२।२७
केलि–(खेल) मृग, रति (नेत्र) १३।२८
केलिकथन–कामक्रीड़ा की बातों में १।२६
केस पास–(केश पाश) केशों का समूह अंधकार है (जिसमें गहने चमकते हैं) १३।४१
केसमुकुट–केशों का ही मुकुट धारे हुए २०।३०
केसरधारी–केसर से युक्त १७।१०
केहरि–सिंह ५।५१
कैं–या, अथवा १२।८
कैं–से १२।३
कैकइसुत–भरत २१।६४
कैफ–नशा, मद ६।८
कैफी–मतवाला १६।२१
कैम–(कदंब) कदम १०।२९
कैमोद–कामोद १६।१२
कौं–के लिए १०।२
को–कौन ११४९
कोई–कुछ भी १७।१७
कोक–कोकशास्त्र, कामशास्त्र ८।५६
कोक–चक्रवाक, चकवा ११।७
कोक कला–कामकला १८।६९
कोकनद–कमल २०।१८
कोकिला–कोमल (वाणी के लिए उपमान) १३।३१
कोट–प्राचीर, शहर पनाह, किले के चारों ओर की दीवाल १७।४२
कोट कोट–कोटि कोटि, बहुत अधिक १०।१०
कोतवाली–पहरेदारी, रक्षण व्यवस्था ११।१६
कोता–छोटी, कम लंबी ८।५५
कोपत–कुपित होता है, बढ़ता है ५।२३
कोपित–(कुपित) अर्थात् वेगवान ७।१५
कोपिकै–उत्तेजित होकर १६।३१
कोबिदा–कोविदा १५।७
कोय–कोई, कुछ भी (जो होता है) १६।४५
कोर–नोक, अग्र भाग १६।३८
कोरा–(क्रोड) गोद २६।५८
कोल–सूअर २६।७८
कोह–क्रोध ३।४१
कौक–काकड़ा सींगी २०।४७

कौन—क्या २।३०
कौम—जाति २०।४
कौल—इकरार, वादा २२।२५
कौलवत—(उजले) कमल सी १३।१४
क्रकंत०—नाच की मुद्रा के ताल १४।२
क्रगदं०—नृत्य की मुद्रा के ताल १४।१
क्रीट—(किरीट) मुकुट, छत्ता १५।२३
क्रूर—कठोर ८।५५
क्रोध—क्रोधपूर्वक २४।२६
क्षमा—अवकाश, फ़ुरसत ३।६८
क्षितिपति—पृथ्वीनाथ, महीपति, राजा १४।३४
क्षितिपाल—राजा १५।१२
क्षिप्र—शीघ्र ७।५५
क्षेम—कुशल १०।१५
क्षम—कुशलतापूर्वक १२।३८
खँगार—खड्ग चलाने में दक्ष २४।८
खँचि कै—धँसकर १८।८४
खंज—(खंजर) कटार २७।४१
खंजर—कटार २३।१६
खंड—(खड्ग) तलवार ६।२२
खगतु—अटक जाता है १२।१५
खगि जाहि—अनुरक्त हो जाता है १३।२१
खगो—प्रविष्ट, लीन १०।३८
खग्ग—(खड्ग) तलवार ४।५
खचिकै—फँसकर ५।५२
खचित—जड़ा हुआ ३१।१२
खटताल—(षट्ताल) आठ मात्राओं का एक ताल जिसमें दो मात्राएँ खाली होती हैं १४।१३
खट्—(षट्) छहो १७।४३
खड़े—खड़े खड़े अर्थात् बिना विरोध के, सरलता से १६।२३
खड्गपत्र—तलवार की धार १०।१
खन—(क्षण) समय ५।४
खनखन—ठनाठन अर्थात् बढ़िया १३।३८
खर—गधा १४।४६
खरकि—खड़ककर, बजकर १५।३३
खरके—खड़कने से, पत्तों की ध्वनि होने से १७।१२
खरी—गदही ८।३३
खरी—खरिया (लिखने के लिए) १८।४७
खरे—अधिक तीखे २।४६
खरै—भली भाँति ७।१०
खरै—खरा, प्रचंड १०।२५
खल—अधम ५।५४
खलबल—खलभली २४।२६
खवास—खिदमतगार, सेवक २४।१४
खसूर—(कसूर) अपराध, खता २७।३७
खाईं—खंदक १७।४२
खाखरा—झाँझ, धातु के बने बड़े घन वाद्य २०।१
खाजी—खाद्य (शाक) २४।१६
खादिम—सेवक ५।५६
खान—सरदार, उमराव १६।२२
खाली—रिक्त, व्यर्थ २१।८
खासन—विशेष ३।२५
खाहै—खा जाता है, काट लेता है १४।५१
खिजाईं—चिढ़ाईं, दिक कीं, तंग कीं ३।७
खिन—एक क्षण के लिए भी
खिलवत—एकांत वास १६।६६
खिलायबो—केलि करना १५।४०
खिलौना—अर्थात् तमाशा १२।५१
खिसियानी—लज्जित होकर २५।४४
खीज—खीझ, झुँझलाहट, अप्रसन्नता १४।५०
खीजै—रोष को १।२३
खीजै—रुष्ट हो जाए १७।२१
खीझ—(खिद्य) झुँझलाहट अर्थात् अप्रसन्नता १४।४६
खीस—निकले दाँत २०।५
खुरदा—लघु, छोटे, हलके ११।८
खुरी सों—खुर के लगने मात्र से २४।२१
खुलिये—प्रकट हो ४।६१
खुसाला—आनंदित, मुदित (होकर) २५।४३

खुसी—(खुशी) प्रसन्नता १६।६६
खूजन—खोजने का, पकड़ने का २।२२
खूब—पूरी तरह से १३।४३
खूब—खूबी वाला २८।२२
खूबी—विशेषता १।१३
खूमरी—(कुमरी) मधुर गंभीर वाणी वाली चिड़िया १३।४३
खेत—रणक्षेत्र २१।८५
खेत दाबो—युद्ध में सेना को पीछे हटा दिया २४।२३
खेह—धूल १।३५
खैंचे—चित्र में बने हुए १६।७४
खैन—खाने की क्रिया ५।१
खैरौरी—मिठाई, लड्डू १५।२३
खोजन कों—तलाश में ही १४।४६
खोट—दोष १४।६६
खोटी—बुराई १।१३
खोटो—दूषित ८।३७
खोर—गली ७।४२
खोर—दोष ८।३७
खोरि—गली, मार्ग २०।७
खोलैं—छोड़ दें ७।३५
खोवा पुरी—खोए से भरी हुई पूरी ३०।३४
खौर—माथे पर का आड़ा तिलक ८।१५
ख्याल—ध्यान ६।६
ख्याल—खेल ८।४०
ख्वारी—बरबादी २७।५४
गंधार—गंधार राग १६।६
गई न करौ—बचा मत जाओ, छोड़ मत दो २३।६
गजदंत—हाथी का दाँत (दूसरी बार नहीं निकलता) १६।७३
गजब—अनर्थकारी १।४३
गजमुहर—ताल का एक प्रकार १३।४५
गजरा—बड़ी और लम्बी माला २।११
गजराज०—हाथी के शुंड सा हाथ ४।५३
गजलैं—शृंगारी मुक्तक कविता ३०।३५
गजैं—गरजते हैं, गर्जना करते हैं २०।२
गठरी—मोटरी २०।३३
गत—गया, समाप्त ११।२८
गतकारी—मांसल २।१५
गति—नृत्य की गति, चाल १३।४६
गति—चाल, स्थिति १८।८२
गति—व्यवहार, आचरण २१।४४
गदकारी—गुलगुली, मुलायम १३।३८
गदकारे—गुलगुला, मुलायम १३।३०
गन गारीय—नाना प्रकार की गालियाँ, जो इस अवसर पर गाई जाती हैं २७।१२
गननाथ—गणपति, गणेश ३०।६
गनि—गिनो, समझो, मानो २६।५३
गनिक—वेश्या का प्रेमी १।३७
गबड़ी—उभरती जवानी वाली ५।५१
गब्बिन—गर्भिणी २२।४२
गभीर—गहरा, अधिक २१।४२
गय—(गज) हाथी २३।२४
गयद—(गजेंद्र) श्रेष्ठ हाथी ८।५५
गरज—प्रयोजन से १६।२४
गरजी१—जरूरत वाला, जिसे कोई आवश्यकता हो १३।३
गरजी२—चाहनेवाला, गाहक १३।३
गरद—धूल, नष्ट १७।२६
गरमी—फिरंग रोग, आतशक, सिफलिस २०।५३
गरल—विष २०।६०
गराज—गर्जना २०।६
गरीब—(दरिद्र) प्रेमी ११।२५
गरुड़—पक्षियों के राजा जो अग्नि के समान माने जाते हैं १३।३०
गरुड़ध्वज—विष्णु २१।६१
गरु—(गुरु) मंद ४।४४
गरे—गले में १८।४२
गरै परी—गले पड़ी, इच्छा के विरुद्ध प्राप्त हुई ६।२३
गर्ब बसि—गर्व में लीन होकर २४।१
गलगाज—खुशी से गरजता हुआ २३।१

गुलनारै—गुलदार फूलों से भरी ६।४०
गुल्फ—एँड़ी के ऊपर की गाँठ, टँखना २।१५
गुसाँइन—स्वामिनी १८।२०
गुसा—क्रुद्ध १२।२८
गुहरावौ—पुकारते हो २८।४
गुहारि—रक्षार्थ पुकार ६।१०
गूँदी—गूँथी १३।२३
गूजर—क्षत्रियों का एक भेद २२।३८
गूजरी—ग्वालिन ३।६६
गूढ़—रहस्यमय १०।६
गृह०—घररूपी पात्र २।२४
गेंदा—गेंद, कंदुक १३।३५
गेरहें—ग्यारहवें स्थान में ३०।६
गेह—घर २।३
गैंडुआ—गोल तकिया १७।१०
गैन—(गगन) आकाश २६।६५
गोंड—मध्य भारत के शासक जाति जिनके नाम से गोंडवा का नाम पड़ा है २२।३८
गो—गया ८।६
गोड़िहैं—पददलित करती रहेंगी २।३१
गोत—गोता, डुबकी ४।२६
गोता—डुबकी ७।४६
गोताखाँय—डुबकी लगाने लगती हैं ७।४६
गोधन—गोवर्धन (कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोधन पूजन होता है) २७।१२
गोपाल—गाय के रक्षक, यहाँ केवल रक्षक २८।१८
गोर—(गौड़) ३६ प्रकार के राजपूतों में से एक जिनका स्थान उत्तर पश्चिम भारत है २२।३८
गोवत—छिपाते रहते हैं ६।२२
गोवो—छिपाओ ८।२
गोसू—कौंच, कपिकच्छु २०।५३
गौंच—(गोचंदना) एक प्रकार की जहरीली जोंक २६।७८
गौन—(गमन) गति ४।६६
गौन—गौना, द्विरागमन २७।२२
गौर—क्षत्रियों की एक शाखा २३।२२
गौरि—गौरी १६।६
गौरिनंद—गणेश १६।३
गौरी—गौड़ी, एक रागिनी जो रात के पहले पहर में गायी जाती है १८।७१
ग्रीवा—गर्दन ४।२८
ग्रेह रतिवान—गृह का अनुरागी, गृहस्थ १६।१०
ग्रेही—गृही, गृहस्थ १६।१०
ग्वालिया—ग्वालिन, गोपी २७।१२
घंसार—(घनसार) कपूर २७।४७
घट—शरीर ११।१६
घट—घटकर, निकृष्ट १६।२८
घटा—घनघटा, बादलों का जमाव ११।१५
घटा१—समूह, भीड़, झुंड २७।४४
घटा२—घनघटा, बादलों का जमाव २७।४४
घटाघन—बादलों की घटा ११।६
घटि—घटकर, कम ११।४६
घटिन—घड़ियाँ, दिनों ३।६०
घटी—बुराई ५।१२
घटै—घटित होती है, हो जाती है, दिखती है १२।५४
घन—अधिक २।६
घनकावत—तीव्र ध्वनि करती है १४।११
घननाद—मेघ राग, जिससे बादल खिंच आते हैं १४।३२
घनी—सघन, तीखी ११।३०
घनै—घना ही, अधिक ही १६।३४
घनो—घना, बड़ा, बहुत १४।५०
घरनी—गृहिणी १२।११
घरी—घड़ी भर में २०।४१
घरीकन—कुछ ही घड़ी में, कुछ ही समय में २०।४१
घरी भीर—घरी भर के कष्ट में, थोड़ी ही देर में २५।१५

चलदी–चलती १२।२५
चली–चलित हो गई, उठी है १५।३७
चलैदल–(चलदल) पीपल २०।१०
चवाई–बदनामी करने वाले ३।२२
चवार–बँगला ३।२५
चसके–चाट, स्वाद १।२५
चाँड़–लालसा से १३।३३
चाँड़े–प्रचंड, प्रबल ३।२५
चाँदनी–चंद्रमा का प्रकाश, चंद्रिका २७।४७
चाँदनी–बिछाने की (सफेद) चादर २७।४७
चोटीबंद–चोटी बाँधने पर लगने वाला गहना १३।४१
चाड़ि–इच्छा, लालसा ६।१३
चातुर्य चित–चित की चतुराई से, विदग्ध मन से १४।१५
चानडूल–(चंडूल) खाकी रंग की एक मधुर बोलने वाली चिड़िया १३।४३
चाम दाम–चमड़े का सिक्का १९।७४
चाय–चाव, उमंग १७।४
चायल–चाव से युक्त २५।३७
चार–चलता रहा ३।२५
चारे–गमन २।३९
चारे ऊपर–घास पर, घास में १५।२३
चारो–चारो ओर १६।
चारो–चारो ओर की १४।३१
चारो–चारा (पशुओं के लिए खाद्य) ३०।३६
चावक–चाव करने वाली, उमंग बढ़ाने वाली १९।६०
चाह–इच्छा १३।३९
चाह–देखो १७।४८
चहुँघा–चारो ओर १७।३२
चाह–प्रेम २०।२
चाह–समाचार २२।२२, २९।६
चाहक–चाहने वाले ९।९१
चाहना–इच्छा ८।५३
चाहन–चाहना, आसक्ति १४।३१
चाहि–देखकर ४।६७
चहियतु–होना चाहिए अर्थात् होगी ११।११
चाहियैं–देखिये, ध्यान दीजिए ४।६९
चाही–चाहिए ६।६
चाहैं–देखकर, विचारकर १८।७
चित–चिता १०।३८
चिक्कार–चिंघाड़, हाथी की गर्जना २०।१
चित०–चित्त सुखी नहीं हुआ १।१५
चित०–जिसने मुझे मोहित चित्त कर दिया १।१६
चित्त–चेतना २०।६३
चित्त–हृदय अर्थात् मध्य २६।६५
चित्त चहा–मन में ही समझ लिया २।३३
चिता–चित्त में, मन में २०।३
चित्र–अर्थात् रूप १२।१५
चित्र के–चित्र में बने, निष्प्राण जड़ १९।२५
चिन्ह–संकेत, अंदाज १८।६५
चिन्हारि–परिचय ३।३
चिरजोव–दीर्घजीवी १०।२५
चिल्ली–बिजली २०।२
चिहरैं–चिल्लाते हैं, हँकारते हैं २६।५२
चिहरै–पीड़ा व्यंजक शब्द करते हैं, चिल्लाते हैं (पायल की ध्वनि पर कल्पना) २५।३७
चिकने–चाटुकार ६।२१
चीती–सोची, समझी ५।३७
चीन्हो–पहचानी, जान ली ११।२१
चीन्हों–चिह्न, दाग २२।१२
चीर–वस्त्र ११।२
चीरा–वस्त्र ३१।१४
चुगल–पीठ पीछे निंदा करने वाला ८।४८
चुचात–जल टपकाते हुए ७।४१
चुनरी–बुंदकीदार लाल वस्त्र ११।४

छितीस—क्षितीश, राजा १६।२३
छिन—(क्षीण) दुर्बल १८।३
छिना—(क्षण) प्रतिक्षण १८।३
छिन्न—खंडित, नष्टभ्रष्ट १०।३४
छिप्र—(क्षिप्र) शीघ्र १६।८३
छिये—छुए हुए, स्पर्श करते हुए १८।६८
छिये—छुया, स्पर्श किया १४।४५
छिवले तर—पलाश के पेड़ के नीचे १७।१६
छुछुम—सूक्ष्म, पतली ८।५३
छुटकाय—साथ छुड़ा कर १६।१०४
छुटबै—छूटने के लिए ५।५३
छुद्र घंटिका—(क्षुद्र घंटिका) घुँघरू-दार करधनी १३।४१
छुवत—छूते अर्थात् बजाते १७।५
छूट—खुले ५।२६
छेम—(क्षम) कुशल ११।३५
छेम जुगत—क्षम युक्त तो हैं ? १६।७
छैल—(छविल) सुंदर बनाठना, नायक १६।८३
छैल बृत्त—रँगीले चरित्र ३।६१
छोई—रस चूसी गड़ेरी, सारहीन १५।४६
छोकरीं—लड़कियाँ १२।१६
छोड़त—छोरत, खोलते हुए ७।१७
जंकत—चकपकाते हैं २०।५
जंगी—युद्ध वाले २०।२
जंघजोट—जंघों को बाँधकर ३।३८
जंघु—(अपनी) जंघा को सुयश दे दीजिए, मैं जंघा के नीचे से निकल जाऊँगा २।३७
जँजीरन—साँकलें, कड़ियों की लड़ियाँ ५।५३
जँभात—जँभाई लेती है, (जृभा सात्त्विक) १५।२५
जँम्हीरी—नीबू १२।२२
जंत्र—(यंत्र) बाजा (भट्ट वीणा) १०।६
जक—धुन, रट ११।८
जकि—चकपकाकर ५।५
जकी—चकपकाई ७।३५
जगत—प्रकाशित रहती है १८।३६
जगबंद—जतद्वंद्व, विश्ववंदित ४।१
जगाती—कर लेने वाला ८।४७
जगीर—जाने वाला, सचेत रहनेवाला १०।३८
जटित—युक्त, मढ़ी हुई १५।२०
जटीन—युक्त ४।५१
जड़कंत—(दाँत) एच दूसरे से जुड़कर ध्वनि करते हैं २३।२६
जड़ता—अचेतन व्यवहार ६।११
जड़ाजड़—दाँतों के कटकटाने की ध्वनि २३।२६
जड़ि—जड़िया, जरड़त्व ५।२३
जड़ित—रत्न जटित १५।२०
जड़िता—(जड़ता) विरह की एक दशा ५।२३
जत—जथा, यथा, जैसे १४।७
जती—(यती) संन्यासी, विरक्त १६।१०
जथा—(यथा) जैसे १०।८
जद—यदा, जब १७।११
जन—व्यक्ति, लोग १३।१
जनकाया—(झनकाव) झनक, वेदना १।१०
जनमसँघाती—जन्म भर के साथी, सारे जीवन के मित्र १६।१२
जनवासे—बराती जहाँ टिकाए गए हैं उस स्थान पर ३०।३५
जनि—मत १८।५६
जनि—मानो ७।१८
जनी—दासी २०।३६
जनौं—मानो १३।२७
जबाँ—जबान, वाणी १८।२२
जबानी—मुँहजबानी, मौखिक १८।३१
जम—यत्न हो यम (काल) हो गया २०।८२
जमा—इकट्ठा ३०।२८
जमाने—समय १२।२६

जमान्दार–जमानतदार, जमानती १३।३
जमीँ–(जमीन) भूमि २८।२३
जय श्री राम–इसके द्वारा विदाई के समय का अभिवादन करते हुए २५।४५
जर–सोना १५।२०
जर अंबर–जरदोजी के काम के कपड़े ३०।२८
जरकसी–सोने के तार से निर्मित ८।१४
जरद–पीला ८।१८
जरो१–सोने के तार का काम १३।१०
जरो२–(जटित) युक्त १७।१०
जर्द–पीली ४।५१
जल की वाढ़ि–विरह के जल की वृद्धि (जो घातक होती है) ६।२६
जलज–मोती ८।१५
जलज–जल से उत्पन्न (सुमन–पुष्प) २१।८
जलतरंग–जलतरंग की जल भरी कटोरियों पर हलकी चोट से बजाया जानेवाला बाजा १३।४३
जलजमाल–मोतियों की माला १४।३५
जलजाक्षर–(उसपर फिर) कमल रूपी अक्षर लिखती हुई ११।१५
जलजात–कमल १११७
जलजातजात–ब्रह्मा १५।१३
जलतरि–जलतरण, तैरना ४।३३
जलद–जल (आँसू) देने (गिराने) वाले (हो गए) ४।२४
जलसुत–मोती २।८
जलसुत–कमल ८।१६
जहूरा–दिखावा, प्रदर्शन १६।३८
जाँजर–(जर्जर) टूटी फूटी १८।३८
जाँह–हो जाते हैँ, नकिलते हैँ १६।२६
जा–जिसका १५।७
जा–या, यह, ये, इन २६।७०
जागत–जागता है, जी उठता है ८।४०
जाच्यो–माँगा, याचना की २४।४०
जाट–जटा २६।३७
जात–जाते समय २।३८
जात–जाता है, प्राप्त होता है ११।७
जातरूप–सोना ३०।२७
जान–जानती है ६।१६
जान–प्राण १२।३०
जान–प्राण, प्रिय १६।५३
जान–(जानु) जंघा २५।३२
जानकी–जानकारी, विदग्धता १४।१६
जाननहारी–जाननेवाली १०।३६
जानहार–प्राणघातक १६।४६
जानहै–(जानिहै) जानेगा १०।३८
जानि जाय–समझ मेँ आता है १०।१०
जानो–जाया जाए १३।३५
जाम–(याम) पहर २।२१
जाम–प्याला, कटोरा ४।७१
जामगि–तोप का पलीता २६।५३
जामगी–तोप का पलीता २६।७
जामा–शरीर २०।५७
जाय२–चला जाता है, समाप्त हो जाता है २८।६
जार–जाल २।२५
जारत–जलाता रहता है, प्रज्वलित रखता है ६।१
जारी–जाली, जिसमेँ छेद बने होँ १३।४१
जाल–जाल मेँ (या समूह) १३।६
जावँ–जाता हूँ १७।५
जाव–(यावत्) यावन्मात्र, जो कुछ संभव था १५।२१
जावक–महावर १३।३६
जास–जिसको १८।६०
जाहिर–ख्यात, प्रसिद्ध १।११
जाहिर–प्रसिद्ध, प्रख्यात २२।४१
जाहो–जाता है, बीतता है ६।६
जाहै–जाएगा २७।४०
जि–जिस ५।२३
जिअन–(जीवन) जीना ५।२३

जिकिर०–पता चला १।१९
जिठाई–जेठपना, बड़ाई (दिन की लंबाई) २६।२०
जित–जहाँ १५।१८
जिन–मत, नहीं ९।४०
जिन्स–वस्तु २९।२७
जिमी–जमीन, भूमि १९।१३
जिय–जी, प्राण १६।६८
जिय०–प्राण चला जाए १।३२
जियन–जीना २१।९
जी–प्राण ८।२७
जीय–जी, प्राण ६।२
जीरन–(जीर्ण) दुर्बल १८।३४
जीरन जोर–जिसका जोर जीर्ण (समाप्त) हो गया हो ५।५२
जी ला–जी को, प्राण को ५।३५
जुक्ति–युक्ति (पूर्वक समझाकर) १४।५३
जुदी–पृथक्, भिन्न १६।४२
जुरिकै–डटकर, भलीभाँति ५।३
जुरेतें–जुड़ने से, मिलने से (नेत्र); (लड़ने के लिए) भिड़ने से (मृग) १३।२८
जुर्रा–बालों की उठी हुई चोटी, कलगी ८।१४
जुलन–ज्वलन, ताप ३।१०
जुल्फ–सिर के लंबे बालों का पीछे लटकता पट्टा ८।१४
जुवाजुद्ध–जूएँ वाला युद्ध, बाजी वाला युद्ध २४।३
जुहारी–प्रणाम किया ३।३०
जेठ–(ज्येष्ठ) ज्येष्ठ का महीना; बड़ा २६।२०
जेठै–ज्येष्ठ (मास) ने २६।४
जेती–जितनी ९।३५
जेब–शोभा २।७
जेवनार–भोजन १७।४६
जैतवारे–जीतनेवाले १४।३९
जैत श्री–जय श्री १६।८
जैम–जिस प्रकार १६।३
जो–यदि ११।४
जोइ–देखकर १३।२७
जोइ–जो ही, वही १६।२४
जोग–संयोग १।४१
जोग–योग्य १४।२०
जोग दिवारी–दीवाली का योग होने पर, सुदिन आने पर १०।३६
जोजन–(योजन) चार कोस २२।४४
जोत–(प्रेम की) लौ ६।१
जोतिय–ज्योतिवाला, प्रकाशमय १५।३
जोम–युद्ध २२।२९
जोय–नारी १।५२
जोतिय–ज्योतिवाला, प्रकाशमय १५।३
जोम–युद्ध २२।२९
जोय–नारी १।५२
जोय–यदि १८।१३
जोर–प्रभाव, बल ५।२५
जोर–शक्ति (या जोड़ा, समता) ९।३९
जोरन–जोर से, जबरन् १९।६५
जोरै–तुलना करता है १३।१४
जोह–देखकर २४।१२
जो हारै ताको नृपति–जो हारे उसका राजा हारे २४।२
जौन–जिस प्रकार से १८।५५
जौम–जोश, उमंग २०।४
ज्याऊँ–जिला दूँ २०।८४
ज्यों–जिस प्रकार, जैसे ५।२९
ज्वारी–जुआड़ी, जुआ खेलने वाला १३।३
ज्वै–देखकर, समझकर २६।४७
झंपहिँ–(खून से) सब ढक जाएँगे २३।५२
झंपित–(धूल से) ढका ४।५
झकोर–झकझोरता हुआ २४।६
झकोरकै–झकझोरकर ११।२५
झनकार–झंकार, ध्वनि ११।९

झनकारो—(झंकार) ध्वनि, आवाज १२।८७
झनाके—झनकार कलने वाले २०।३
झपकि—पलकें लगकर १६।५८
झपटि—त्वरित गति से १३।२०
झमा—चक्कर, झाँई १८।७३
झरप—परदा, चिक ७।६
झर्प—चिक, परदा २७।४६
झलकाय—चमकाकर, दिखाकर ४।४८
झलक्यो—चमका, बिजली चमकी १०।६
झलझलान—चमका ७।२८
झला—वृष्टि, झड़ी २६।६८
झलै—उत्कट इच्छा के लिए ४।४२
झल्लन—झला, वृष्टि की झड़ी लगाकर २३।२७
झवाँ—झाँवा, पैरों का मैल छुड़ाने की ईंट २८।१४
झहराय—झल्लाकर, खिजलाकर १२।१५
झाँखैं—झाँकती हैं, देखती हैं १८।२६
झाऊँ—रगड़ कर मैल छुड़ाऊँ २८।१४
झारि—(स्वयम् घन) घोर वृष्टि करके १६।७०
झिझकी—भड़की ५।६
झिरना—(निर्झर) झरने की भाँति पानी २२।४२
झिरनाइ—(दूसरों से) वर्षा करा के १६।७९
झिरे—बरसे १६।७०
झिल्ली—झींगुर ११।६
झीनी—पतली १६।३१
झुकत—नवता हुआ, निहुरता हुआ १२।१५
झुकत—रुजू होते हुए, मुखातिब होते हुए २५।४७
झुकि—रिसाकर, रुष्ट होकर १२।१५
झुझकत—झुँझलाती है २५।४२
झूकन—झोंका, धक्का २७।४८
झूरी—सूखी ५।१८
झेल—विलंब ७।३
झेल—समय काटे २६।१३
झेल—भीतर ही भीतर सहते रहना २८।१५
झेलत—ग्रहण करती है ३।६०
झेलम झेला—ग्रहण करने की सतत स्थिति ५।५७
झेला—छोटी नन्ही माला ८।१६
झेली—ढकेल दी, फेंक दी, डाल दी १६।१०४
झेलै—सहती है १२।२२
झोर—झोंका, आवेग (बोलने का) २६।६८
झौर—समूह २२।२१
झौरन—झुंड के झुंड २।५४
टकटोरत—खोजता है (काटने के लिए) ५।१८
टकटोरत—(अंधे की भाँति) टकटोलते हैं, टटोलते हैं १४।४६
टठिया—थाली १६।१४
टरि रही—हटकर पृथक् जा बैठी है १५।४६
टरैं नाहिं—टलते नहीं, टकटकी लगी है १५।४६
टर्रुटी—मेंढक की बोली टर्र टर्र २६।५७
टाँड़ो०—बैलों पर लादकर व्यापार करना १।३०
टिकिये—टिका जाए, डेरा डाला जाय १७।४८
टीका—माँग टीका ३०।३७
टुक—कुछ, थोड़ा १२।२०
टूट—(त्रुटि) टोटा, घाटा ३।३
टेक—आग्रह, हठ ६।१८
टेक—प्रतिज्ञा १५।१४
टेर—पुकारकर १०।२४
टेरत—पुकारता है ६।३०
टेरि लीन्ह—बुला लिया, पुकार कर बुलाया १६।८४
टेरैं—पुकारती है १२।२८

टोटा—कमी ६।९
ठँढाय—शांत २०।४५
ठई—हुई ३।३
ठगतु—आकृष्ट करता है, खींचता है १२।१५
ठट्ट—समूह २३।१०
ठठ्यो—सजाया २४।७
ठयो—किया १६।१०१
ठाँ—स्थान ९।२
ठाट—सज्जा, सजावट २१।४०
ठाने—ठानने, करने १३।२६
ठाय—मुद्रा, अंदाज १५।३२
ठीक—अर्थात् स्थित १८।८६
ठै रहे—स्थित हैं १३।१४
ठौर—ठिकाना, स्थान ३।६३
डगर—मार्ग ७।२६
डगरी—चली १८।६९
डगर्यो—चला ४।२७
डगी—हटी ११।१०
डटाइ—गाड़कर १९।१३
डभकि आयो—भर गया १९।९
डर०—भयभीत हुआ १।१३
डरी—पड़ी हुई २७।४६
डस—(दंश) डाँस, बड़े बड़े मच्छड़ २६।७८
डसे—(दंश) काटने से २०।६१
डहकायो न गयो—ठगा नहीं गया ३।५
डाटो—चपेट में पड़ा २०।६०
डीठ—कुदृष्टि, बुरी नज़र ५।६
डीठियतु—दिखती है १३।३६
डीमन में—ठसकपूर्वक १७।१०
डील—शरीर ११४२
डुगायो—हिलाया ५।४४
डेरा—वासस्थान १९।१२
डेरा—पड़ाव २०।११
डेरे—वासस्थान पर १८।५९
डोरी—रस्सी १९।१५
डोरे—नेत्रों में के लाल डोरे १८।२६
डोला—हिंडोला ७।४९
ढकेली—धक्का देकर आगे बढ़ा दिया ७।१०
ढक्क—ढक्का, डंका २०।३
ढरैं—ढुरते हैं, फेरे जाते हैं २२।२१
ढर्यो—ढल गया, मिल गया ५।१
ढलक्किन—छोटी ढाल २४।३०
ढल्लन—ढलों पर २३।२७
ढाड़—रोदन, चीख ३।८
ढाढ़ी—भाट २।५३
ढाढ़े—ढाढ़ मारकर (जोर से चिल्लाकर) रोती है १६।४८
ढारौं—(पंखा) झलूं २८।१४
ढाल—वार से रक्षा के लिए धारण किया जानेवाला शस्त्र, फरी २०।८२
ढिग—पास ५।४७
ढुरि—अनुकूल होकर २४।४५
ढोंका—सेंधा नमक २०।४७
ढोल—एक बाजा, ढोलक १३।४३
ढोलिया—ढोल बजानेवाला नट का सहायक १४।४९
ढौंका—हिचकी आना, घिग्घी बँधना १८।४२
तंकित—(टंकित) (भय से) फटे २४।१८
तंडव—तांडव नृत्य १४।११
तंडुल—चावल ८।१९
तंत—कार्य, उपाय २।४२
तंत—तंत्र (की साधना) ८।७७
तंतु—सूत्र ७।१
तंत्रिगिदव—तबले के बोल १३।४६
तंदुल—चावल, अक्षत १९।७
तंबू—चँदोवा, वितान १७।३३
तँबूरा—तानपूरा जो सुर को सहारा देता है १३।४३
त—(तत्) उस ३।७०
तजि—तजी, त्याग दी १७।३
तड़ाग—(तटाक) तालाब ५।४७
तड़ित—बिजली ८।१६
ततकार—बोल १४।११

ततखन–तत्क्षण, तुरंत १।४५
ततछिन–तत्क्षण ३।१३
तत्त–(तत्र) वहाँ ६।२०
तत्त्व–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश १।३६
तन–ओर ४।६७
तनभाई–सहोदर भ्राता २३।३६
तन में–तन में के, शरीर में रहने वाले १६।१२
तना–तनिक, थोड़ी १४।५०
तनी–खिँची हुई, विस्तृत की हुई १५।१६
तनाय–तनवाकर ७।६
तनुजा–पुत्री १२।५४
तपन–जलन ६।१६
तमचुर–(ताम्रचूड) मुर्गा ७।२३
तपैं–पकाती हैं ३०।३२
तमाम–सब २०।८१
तमारो–मूर्छा २६।२५
तमासो–खेल १५।३८
तमी–रात्रि १५।३५
तमोल–(तांबूल) पान ५।२६
तर–तले, नीचे १८।८
तरकस–फेंटा १३।४०
तरकि–तनकर, टेढ़ी होकर १५।३३
तरकिगो–तड़क गया, चिटख गया, टूट गया १३।३१
तरनी–नाव २६।५४
तरल–चंचल अर्थात् प्रवल १४।३३
तरवा–पैर के तलुए (सभो लाल) ८।५२
तरस्सत–तरसते रहते हैं, लालायित रहते हैं ५।२७
तरा–(तरह) प्रकार १४।४६
तरुनी–युवती १२।११
तरौना–कान का गहना १३।४१
तर्लताई–तरलता, चंचलता १३।४४
तल–तले, नीचे १०।२
तल–धरातल, पृथ्वी २७।२
तलधाम–तहखाना ४।४२
तलब–खोज ६।२२
तसवी–(तसबीह) माला १८।२६
तहीँ–वहीँ पर १४।३६
तलास–(तलाश) खोज १८।६०
तांडव–नृत्य का एक प्रकार, उग्र नृत्य १३।४५
ता–उस (छत्ते) की १५।२३
ताईं–लिए १२।१६
ताई–छिछली कड़ाही जिसमें जलेबी आदि पकाते हैं १२।३
ताउदो–तपता है ११।४
ताकीरा–काठ का कीड़ा १६।३५
ताड़ि–(तड़ित्) बिजली २।८
तात–पिता ३।३२
ताने–उसने ८।६२
ताबिया–दीप्त, उद्दीप्त १६।३२
तामो–तप्त हुआ, तपा २६।७२
तारन०–तरने और तार देने वाले, उद्धारक २।१६
तारी कीन्ह–ताली (थपेड़ी) बजाई २४।२६
तारे–पुतलियाँ १२।१५
तालीम–शिक्षा २६।४२
तावत–तपाते हो २१।५६
तावन–(वृक्ष मुझे) जलाने लगे १०।२६
ताल तट–तालाब के तट पर ६।३०
तालिव–(तालिब) ढूँढ़ने वाला ५।३६
तालाबेली–छटपटाहट, अति उत्कंठा ६।२१
तास–उसका १८।६०
ताहिँ–उसको १६।७१
तिक्के–तिर्यक्, तिरछे २०।४५
तिक्के बिक्के–अर्थात् (पित्तजन्य) दोष, उपद्रव २०।४५
तित पर–उसके अनंतर १६।१२
तिन०–तृण करती हैं २।२०
तिनुका–तृण २१।६६
तिन्हांके–उनके १२।२८

तियईन–स्त्रियों की ४।१८
तिल–अर्थात् थोड़ा १०।१०
तिल–ठोढ़ी पर का काला छोटा चिह्न १३।३४
तिल आध–आधे तिल के समान, कुछ भी, बहुत थोड़ा भी ११।१६
तिवरी–(त्योरी) दृष्टि के संकेत से ३।६८
तिवरी–भावनृत्य, कोमलनृत्य १६।२४
तिहरी–तीन मोड़ की नृत्य की गत १६।१३
ती–थी ११।२५
तीक्षण–तीखी (रोषयुक्त) १४।३४
तीजे–लग्न से तीसरे स्थान पर ३०।७
तीन ताप–दैहिक, दैविक, भौतिक २७।४३
तीया–स्त्रियाँ ३०।३१
तीर–तट (किनारे लगा) १७।३६
तुकारै–'तू' आदि कहकर अपमानसूचक संबोधनों से बुलाती हैं २७।३३
तुनीर–(तूणीर) तरकस २५।३२
तुम काहू–तुममें से किसी ने भी
तुरंगक–घोड़ा ८।५७
तुरक्क–तुर्क, तुरुष्क, तुर्किस्तान के शासक वंश वाले २२।३८
तुराय–तीखी गति से, शीघ्रता से १८।३०
तुरी–घोड़े २३।६
तुर्रा–कलगी ४।५१
तुलाह–तौली जाती है ३०।३५
तुला–बिना परीक्षा के ३।५७
तूतिया–(तूती) छोटी जाति का सुग्गा १२।२७
तूप–(तूफ) बाढ़ १०।३०
तूरही–तूर्य, सिंघा २०।२
तूल–रुई २।४५
तूल–तुल्य, समान १४।५४
तूलन–रूई के बने ओढ़ने, बिछौने से २७।२२
ते–इसलिए १०।३०
ते–थे २५।२३
तेक–उतने ही (गति, स्वर, बोल से सामंजस्य) १६।२४
तेग–तलवार २२।४२
ते पर–उस पर (वेश्या पर) १४।३५
तेरा–१३, तेरह १३।१०
तेल चढ़ावैं–विवाह के समय की रस्म जिसमें दूर्बा, तेल, हलदी में छुलाकर वर या वधू के अंगों में छुलाते हैं जिसके हो जाने पर प्रतिदिन उन्हें तेल लगाया जाता है ३०।३१
तेवर–भौंह ४।४८
तेह–तेहा, अर्थात् दुःख १६।४५
तेह–रोष १६।५६
तेह–(तेहि) उसे २४।७१
तेहु–जोश, रोष १६।८०
तेहू–उस (पान के बीड़े) को ७।४१
तैम–तिस प्रकार १६।३
तैलंग–दक्षिण भारत के तेलुगुभाषी प्रदेश के शासक राजा २२।३८
तो–(तु) १६।३४
तो–तव, तेरा २७।३६
तोइ–यों हो, उसी समय १८।१२
तोता–सुग्गा १७।२
तोर–वेगपूर्वक ४।२७
तोर–मारक या नाशक प्रभाव २०।५२
तोरत–उखाड़ डालती है ११।१६
तोरवा–प्रचंडता २६।२६
तोरा–तोड़ा, गहना २।१४
तोरा–बंदूक २।५५
तोरि–मित्रता तोड़कर, साथ छोड़कर १४।६५
तोहीं–तुझसे १०।२१
तोहैं–तुझसे १०।३६
तौन–वह ७०।५०

तौर–ढंग, प्रकार १५।२०
तौलग–तब तक १८।७
त्याग–दान ११।७
त्यार–तयार, प्रस्तुत २१।२०
त्यारी–तयारी २१।३६
त्यौं–तत्काल १०।४०
त्रकुटी–(त्रिकटु) सोंठ, मिरिच, पीपल २०।४७
त्रिगुन–यज्ञोपवीत ८।१७
त्रिगुनी–(त्रिगुण) माया, प्रवृत्ति २१।३६
त्रिदसाजन–देवतागण ७।१६
त्रिपुरारी–महादेव १०।३
त्रिविधा–तीन प्रकार की, इलायची (फल), दारचीनी (छाल), तेजपत्ता (पत्ता) इन्हें त्रिसुगंध कहते हैं या इलायची, केसर, जावित्री ७।६
त्रिबेनिय–त्रिवेणी संगम प्रयाग का २१।४८
त्रिसंकु–(त्रिशंकु) एक राजा जो सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे, पर स्वर्ग से पाप कर्म के कारण ढकेले गए और उनके गुरु ने उन्हें अधर में रोक दिया, वहीं लटके रह गए २६।२८
त्रीबिधि–त्रिविध, तीन प्रकार की २।५६
त्रेता–चार युगों में से दूसरा १३।२६
त्रैताप–तापत्रय (दैहिक, दैविक, भौतिक) १३।१६
त्रैरेख–तीन रेखाएँ (त्रिपुंड की और धनुष के रंग की) १५।३६
त्वरितहि–तुरंत ही २६।३
थकि–मोहित होने से, स्थिर होकर ५।५
थकित–रुक गया है ११।७
थकी–स्तब्ध ७।३५
थके–(स्थगित) स्तब्ध ७।२१
थनैत–थानेदार ६।४१
थहरचो–काँप गया १०।६
थरिया–थाली १६।१३
थलन–स्थल पर उत्पन्न (सुमन–पुष्प) २१।८
थलहल–काँपता हुआ ५।४२
थहरात–गड़गड़ाता है, जोर से बजता है १७।३३
थहरात–काँपते हैं १६।१२
थहरान–थहराने, काँपने ७।१५
थहरि–हिलते हुए कँपकर १५।३३
था था०–ताल के बोल १३।४६
थाने–(स्थान) पुलिस के रहने का स्थान ६।४१
थारा–तुम्हारा २६।४
थारो–तुम्हारा २२।६
थिरन–थिरकना, नाच का व्यापार १३।४४
थिरही–स्थिरता से, सावधानी से १८।५६
थिरात नहीं–स्थिर नहीं होता, चंचल ही चंचल होता जाता है २६।४८
थुंगा–नाच की विशेष गत १४।४
थूनी–खंभा ३०।२८
दंडवत–प्रणाम १८।३२
दंपति–जायापति, नायिका और नायक १५।३६
दई–हे दैव ६।११
दई–दैव, दयी (दयावान्) ११।११
दई१–दैव २७।५१
दई२–दी २७।५१
दगा१–धोखा ६।११
दगा२–जला दिया ६।११
दगादार–धोखेबाज (प्रिय) ६।११

दगै–दगती है, छूटती है २६।५३
दचक्कै–दचकता है, दबाता है, झटका देता है १६।३४
दछ्छिन–(दक्षिण) १५।५
दते–डटे हुए २६।५१
दत्त–(जिस राग के लिए) दिया गया १४।५७
दफेरे–साँसते‍ँ ६।७
दम–साँस २।२७
दमामो–नगाड़ा १७।३३
दरकिगो–फट गया (अनार का फल डाल में पकने पर फट जाता है) १३।३१
दरगज–बच्चों के खेल का बोल ५।४३
दरद–पीड़ा, असमंजस १३।२
दरदमई–पीड़ा युक्त, वेदना वलित १०।१४
दरद सनेही–दर्दरूपी मित्र १७।४
दरद सनेहै–पीड़ादायक प्रेम ही १६।६५
दरन–दलन, विनाशक १।३
दरबा–वृक्ष का काँटर, खोंड़रा १८।२
दरबार–सभा, कचहरी २४।२७
दरिद्र–दारिद्रय १४।६५
दरिमा–(दाड़िम) अनार १८।४९
दरियाउ–समुद्र १६।६
दरियाव–नदी १५।२
दरे–दले, रगड़े, तोड़े २४।१८
दरेबा–(दलबा ?) तीतर या बटेर १३।४३
दरोबस्त–सबको भोज ३०।३२
दर्पन–आरसी (कपोल का उपमान) १३।३१
दल१–सेना २८।३४
दल२–पत्ता २८।३४
दवागि–दावाग्नि से ११।६
दस औ चार–चौदह (रत्न) १२।४१
दस चार–चौदह १७।७
दसचारी–चौदह विद्याएँ ३।२४
दसनन–दाँतों (में) ८।६३
दसा–परदे का छोर २७।४६
दसिये–(दहियल) दहिंगल नामक चिड़िया १३।४३
दाख–(द्राक्षा) अंगूर २०।४४
दागति–जलाती है ११।६
दागेजात–(पीड़ा हटाने के लिए) दग्ध किए जाते हैं १४।४६
दाड़िम–अनार २।९
दाप–जलन ५।३६
दाम–सिक्का ८।३७
दाम–अर्थात् धन २१।३१
दामक–दाता (धन, आश्रय आदि का) १३।३
दायजो–दहेज, विवाह में वर पक्ष को दिया जाने वाला धन ३१।२६
दारा–पत्नी ८।७४
दावन–दाह, पीड़ा, दुःख २०।५७
दावन–(विरह की) प्रचंड अग्नि से ११।३२
दावनगीर–(दामनगीर) पीछे पड़ने वाले, दुःखद १०।३१
दिगदंता–दिग्गज २२।४९
दिगीस–दिग्पाल २०।५
दिग्गज–आठों दिशाओं से पृथ्वी को पकड़े हुए पौराणिक हाथी २०।१
दिन–कष्ट के दिन, बुरे दिन १०।२५
दिन वर्ष दस–वर्ष दिन या दस दिन ५।२३
दिनमान–दिन के विस्तार की सीमा, दिन का ओरछोर २६।१८
दिया–दीपक १६।३१
दियादेह–देह दीपक, देह शिखा १५।३५
दियैं–दीपक को ८।५९
दिलंदर–दिल के भीतर का १२।३३
दिल अंदर में–मन के भीतर ही भीतर ६।२२
दिलगिरी–उदासी, दुःख १८।२९
दिलजान–प्राणप्रिय १६।५३

दिलदायक–प्रेयसी १।४७
दिलदार–प्रिय ५।३३
दिलमस्त–मन से मत्त होकर १६।२२
दिलमाहिर–सहृदय १।११
दिलबर–प्रिय ५।२६
दिलहर–मन को हरने वाले प्रिय ६।२२
दिवस–दिवा, सबेरे के समय तक का समय ७।२५
दिवान–(दीवान) मंत्री २६।२६
दिवाने–दीवाने, पगले अर्थात् प्रिय ५।३१
दिवाल–दीवाल, भीत ५।४०
दिवाले–देवालय, मंदिर १८।७
दिवालै–(देवालय) देवमंदिर २६।१३
दिवैयन–(नट की कला पर रीझ कर) देने वाले (के) १४।४६
दिसिबार–प्रत्येक दिशा के द्वार (फाटक) पर २३।४
दी–थी ५।३६
दीजं छुरी–चाकू मारिए १४।४५
दीद–नेत्र ४।३५
दीद–दर्शन १२।३३
दीदार–दर्शन ५।२७
दीन–धर्म ६।२३, २२।४१
दीन–असहाय १६।२१
दीन–दिया २१।१६
दीनदयाल–(दीनदयालु) भगवान् ११।२६
दीप–अर्थात् प्रकाश, उन्मेष १७।५०
दीपत–(दीप्ति) तेज, प्रताप २२।२१
दीपमालिका–दीवाली (के दिन) १७।३३
दीह–(दीर्घ) भारी, बड़ा १७।३३
दुंद–(द्वंद्व) युद्ध २४।२६
दुकावत–छिपाते २२।५०
दुकूल–वस्त्र ३१।२३
दुखदानी–दुःख देनेवाली ६।४०
दुचिताई–चिंता २८।२७
दुज्जजुत–द्विजयुत, ब्राह्मणयुत, ब्राह्मण से ही संयुक्त होता है १६।३७
दुनी–(दुनिया) संसार ८।७४
दुरावत–छिपाता है ११।७
दुरि–छिपकर ८।७५
दुर्घट–कष्टसाध्य २।५४
दुर्जन–अर्थात् शत्रु २४।४०
दुरयो–छिप गया २०।१६
दुलदी–हिलती १२।२५
दुलीचा–गलीचा, कालीन २७।३०
दुल्हराई–(दुर्लभराज) दूल्हा राजा ३१–८
दुवौ भांति–आकार प्रकार में
दुहरी–अंगों की अधिक लचक की भंगिमा १४।६
दुहरी तिहरी–दुगुनी तिगुनी तीव्रता-शीघ्रता १४।११
दुहसासन–दुःशासन १६।२३
दून–(मुड़कर) दुहरी १२।३०
दूनर–दोहरी १५।३०
दूर कीन्ही–हटा दी (वर्षा में कोयल का वर्णन नहीं करते) २६।७६
दूस–(दोष) दोष देने (पर) ४।६६
दूसतऊ–दोष देने पर भी ४।६६
दृगन अंग–नेत्रों के भीतर, दृष्टिपथ में रखा १८।१५
दृग जोरत–नेत्र जोड़ते हैं अर्थात् आकृष्ट होते हैं १४।४६
दृगन–नेत्रों से देखने में १३।३७
दृष्टवान–दिखाई देने वाला १५।३
देत–(मूल्य) देने (का) ६।६
देव उठाय–देवोत्थानी एकादशी, कार्त्तिक शुक्ल एकादशी को देवता उठते हैं २७।१२
देवती–देती २७।१०
देसाख–देशाखी १६।५
देह–देती है ४।५४
देह–देता है १४।५१

देह०–'मेरी देह दुर्बल है' इस दोष का भी ध्यान नहीं है १२।१५
देहगति–देह की स्थिति ६।१३
देहि–(देही) मनुष्य को ११।३१
देही–देता है ११।३१
दोई–शास्त्र और प्रयोग ८।५८
दोजक–(दोजख) नरक २४।१८
दोनो–मृग और मृगी १४।५६
दोस्ती–मित्रता १६।६६
दौंहि–ऊधम करता जाता है २५।४३
द्वारचार–लड़की वाले के द्वार पर बारातियों के सत्कार की रीति ३१।२
द्विज–ब्राह्मण ३।१७
द्विजनंदनै–ब्राह्मणपुत्र को ८।१२
द्विजराज–चंद्रमा २६।७३
द्विजराजमुखी–चंद्रमुखी ४।४४
द्विदस–द्वादश, बारह २।१६
द्विरदबदन–गजमुख १।१
द्वैस–(दिवस) दिन ८।५
धजै–लपकती है, चमकती है २६।५१
धटा–वस्त्र २७।४४
धनजै–(धनंजय) अर्जुन १३।२६
धनंतर–(धन्वंतरि) देवों के वैद्य १८।२१
धन–(धन्या) नायिका, प्रेयसी ११।१६
धना–धनिया २०।५२
धनासिरी–धनाश्री १६।८
धनिप–धनी, संपत्तिशाली २१।३०
धनी–मालिक ५।४४
धमार–होली में गाने का एक प्रकार का गीत २७।२८
धरक्कत–धड़कते, काँपते हैं २०।१६
धरखत–धड़कती है २३।२६
धरत नाहीं–रुकता नहीं, रोकता नहीं ११।८
धरधर–धड़धड़ (करके) २३।२६
धरधरा–धड़कन १६।३०
धरा–पृथ्वी १०।६
धराधर–धरातल, भूमि ३।२६
धराधर–पहाड़ को २२।४७
धर्मपुत्र–युधिष्ठिर २८।२१
धसकत–धँस रही है २०।४
धाकु–दबदबा, आतंक २२।३६
धाधा०–तबले का बोल १३।४६
धार–(१) हथियारों का तेज सिरा, बाढ़; (२) पानी की धारा २४।५
धारा–जीवन का प्रवाह १८।२५
धारा गई–(रत्न को लेकर) धारा न जाने कहाँ चली गई १८।२५
धाराधर–(धराधर) पहाड़ २२।४६
धारि–धारो, रखो अर्थात् दो ६।१८
धारि–धारण करके, अनुभव करके १०।११
धारी–धारा १३।२३
धावत१–दौड़ते हुए (घोड़े पर) ४।३३
धावत२–दौड़ता, जाता, चढ़ जाता ४।३४
धावन–दूत १७।५६
धिंधि–तबले का बोल १३।४६
धिरातु नहीं–स्थिर नहीं होता, टिकता नहीं २६।४८
धिरानो–शांत हुआ १६।३०
धीवर–मल्लाह २।२२
धीस–(अधीश) राजा, स्वामी, प्रेरक २।११
धुकार–तबले का शब्द १३।४६
धुकारैं–गरजते हैं २०।१
धुरवा–बादल २६।४५
धुरिया–योद्धा का नाम २३।१०
धूम–हलचल २६।४८
धूम धाम–धूएँ का घर १६।७४
धूमर धस्सा–ऊधम, उपद्रव २७।३७
धूरिय–धूरिया (मल्लार) १६।१७
धूरिया१–(धुरिया धुरंग) वह गाना जो बिना वाद्य के ही गाया जाए २६।५
धूरिया–बोझ ढोने वाले २६।५
धृक–(धिक्) धिक्कार है १६।५१
धोई–धुली हुई १५।४६

धोती–(अधो वस्त्र) ५।२९
धोय गयो–मिट गया २४।२६
धौं–अथवा २।२४
धौं–न जाने २।४३
धौ–(धव) पति २१।८
धौरा गिरि–धवल पहाड़ (या धवलगृह, ऊँचा महल) ९।२६
ध्रुवा–ध्रुव नक्षत्र १९।६
ध्वजा–(नये पत्ते) पताका हैं १७।३२
नंद–आनंद २६।१८
न अघाई–संतुष्ट नहीं हुई (प्रत्युत) ११।१५
नउतम–नए गए २।५३
नउरा–(नूपुर) पैर के घुँघुरू ४।४६
नए–झुके हैं २।३८
नकार–'नहीं' वाले, अस्वीकृति के १६।३१
नकार–(नक्कारा) नगाड़ा २३।२
नकि जाय–लाँघ जाए १२।५४
नकीब–भाट १७।३३
नकुल–न्यौला ८।१२
नकेली–नाक से बोलती हुई ७।१०
न केली की–कामकेलि न करने केलि से विरत रहने के लिए १५।३३
नखत–(नक्षत्र) तारा १३।३४
नखतावलि–तारों की पाँत २।७१
नखतेस–(नक्षत्रश) चंद्रमा १५।२०
नखसिख–पैर के नख से शिख (सिर) तक के अंगों का क्रमपूर्वक वर्णन १३।२२
नगाड़ा देहु–युद्ध के नगाड़े बजाओ १९।८०
नग्र–नगर ७।३३
नचै–अत्यधिक छा जाए ३।११
न छूटी लाज–लज्जा को छोड़ नहीं दिया १६।३८
नजर–ध्यान ४।३४
नजर–भेंट, उपहार ६।२८
नजरानी–भेंट, उपहार २९।२२
न जाय–बिगड़ती नहीं १४।६
नटवा–सहायक (तबलची आदि) १४।११
नटसारा–नृत्यशाला २४।२७
नटा–नट ३।६०
नटी–नर्तकी, नाचनेवाली १३।११
न डिगतु–विचलित नहीं होता १२।१५
न तोरो–अशक्त मत करो १६।३०
न देह–न दे २६।६१
नध्यो–ठान रखा है, लगा हुआ है १८।७
ननकार–नहीं करने के, नकारने के ७।११
न पाक–अपवित्र
नफा–लाभ ३।३
न बदौं–मैं नहीं कहता, मैं नहीं मानता १४।४९
नबीनी–नई १३।३०
नमैं–जिसे (ब्राह्मण को) नमस्कार-प्रणाम करते हैं २१।२९
नये पल्लव–किसलय, कोंपलें १७।३२
नरसी–(नलश्री) कमलश्री, कमल की शोभा २५।३६
न रहैं–रुकते नहीं ६।३५
नरिया–नारी, मादा ११।७
नरी–नारी ७।३३
निर्बंध–बंधन रहित, संवेदना शून्य, शांतरस १९।४४
नल–माधवानल २१।७५
न लखाय–नहीं प्रतीत होती, संकेत नहीं मिलता १६।४८
नवढ़ी–(नवोढ़ा) नवयौवना, युवती ५।५१
नवन–आघात करने के लिए शरीर को समेटना, पैंतरा १३।४४
नवलाह–नवला, नायिका, नवयुवती १४।२०

नवान–नमित (आशंका से व्याकुल) २६।५६
नवेलि–नवेली, नवयुवती ७।५
नवेली–नवयौवना, नायिका ४।६९
नसात–बिगड़ता है १३।९
नसाई–नष्ट होता है १८।७८
नसानी–बिगड़ी, नष्ट हुई ८।६८
नसानो–नष्ट हो गया १४।३४
नसेठ–अनिष्ट २६।१४
नहसि–तहस-नहस करके २।१९
नहिँ बतरात–बात तक नहीँ करती १५।४१
नहिँ बाचत–बचती नहीँ, रुकती नहीँ १४।३
नहीँ गये–आकृष्ट नहीँ हुए १६।३८
नाक–स्वर्ग, आकाश २६।३०
नाके–प्रवेश द्वार, फाटक २६।३०
नाग–पातालवासी २७।१
नाटंका–नाटक १०।८
नाद–ध्वनि, गीत, संगीत १०।२८
नादउबेद–नादवेद, संगीतशास्त्र नाद भी और वेद भी व्यवहार और शास्त्र ८।५८
नादबेद–संगीत ४।१३
नादभेद–संगीत का रहस्य १६।२
नादै बिचार–संगीत का ज्ञान, संगीत शास्त्र १६।३
नाध–लगकर, चलने की ठान ठान कर १७।६१
ना पचै–छिपाए छिपती नहीँ १४।५०
ना बिहरत–हटते ही नहीँ १५।३९
नाय–डालकर, रखकर १४।१४
नायक–कलावंत, वेश्या का गुरु ३।६७
नायक–शृंगार रस का आलंबन (नेत्रोँ के लिए) ; कलावंत (मृग के लिए) १३।२८
नार–(नारि) वह बाला, नर्तकी १४।११
नारदी–वाणी, गीत २७।२८
नारसिंही–नरसिंहा, तुरही २०।३
नारि–स्त्री; नाड़ी २६।२६
नारिका१–नारी, स्त्री, नायिका १६।३८
नारिका–नाड़ी, चेतना की सूचक स्थिति १६।४८
नारिय१–नारी १६।९६
नारिय२–नाड़ी १६।९६
नारो–नारी के लिए २।५६
नारी–नाड़ी २४।३९
नाँह–नहीँ १५।२७
नाह–(नाथ) नायक १९।५३
नाहक–'हक' से रहित ५।५८
नाहक–व्यर्थ २१।१४
नाहिनमौन–बातूनी ८।५४
नाहीँ–'नहीँ नहीँ' करना १६।३७
नाहीँ–नहीँ, अस्वीकृति की वाणी १६।३२
निबुआ–निंबू २०।४४
निकंदन–नाशक १।२
निकसै–निकलता है, शब्द होता है ७।१२
निकाई–अच्छाई, भलाई १८।७८
निकारा–निष्कासन, देशनिकाला २७।१७
निकारचो–देश निकाला २८।३०
निकार–व्याध को चुगुल की जीभ से ही कस्तूरी निकालने का सुअवसर मिल जाता, हरिण के लिए वन वन न भटकना पड़ता ८।४२
निगम–वेद १७।२१
निगह–दृष्टि २९।१६
निगोड़ी–गाली, अभागी २७।५३
निचोई–रस निचोड़ ली गई सी १५।४६
निछु–निरर्थक १४।३६
निछ्छा–(न इच्छा) अर्थात् उपेक्षा १२।५४
निज–निश्चय ५।१४
निज–स्वकीय, अपनी १२।१५
निजधाम–परधाम २१।१३

निजु–निश्चय १५।१६
नितंब–नारी की कटि का पश्चात् भाग ८; ५२
नितंबिनी–सुंदर नितंब वाली १२।११
नित्त–(नित्य) प्रतिदिन ११।१६
निदाख–(निदाघ) ग्रीष्म ६।४१
निदाघ–ग्रीष्म २६।७२
निदान–अंततोगत्वा, अंत में ४।६०
निधन–मरण ५।३६
निधन–निर्धन, धनहीन १०।२७
निधान–खजाना १७।४
निधानी–अर्थात् गुणी १८।७२
निधानी–(निधान) कोश २४।३९
निधि–समुद्र ६।२९
निधि–संपत्ति ९।१३
निपात–विनाश २।४
निपुंसक–नपुंसकों, हिंजड़ों २१।८
निबरिये–निर्बल सा होकर आचरण करना ३०।२
निबाह–निर्वाह १७।२३
निबाह नाहिँ–(मृगों का) निर्वाह नहीं है (बच नहीं पाते); किसी पुरुष का (नेत्रों से) बच निकलना कठिन है १३।२८
निबुद्धि–निर्बोध, निश्चेतना १८।२६
निवृत्त–विरागयुक्त होकर १७।७
निबेरो–निपटारा, निर्णय १४।६३
निमानी–विनीत, विनम्र ११।४२
निमित्त–कारण, बहाना, नियति २१।२३
निमिस–(निमिष) पल भर १७।९
नियरानी–निकट आ गई २६।२१
निरगुंडी–(निर्गुंडी) सिंदुवार २०।५०
निरदयी–निर्दय, दयाहीन ११।११
निरबक–निराट, एकदम ८।३४
निराट–निरा, बिलकुल ३।२३
निराट–एकदम सच, विशुद्ध, ठीक ठीक १६।४९
निरास–निराश, हताश (भिक्षा न पाकर) १४।६०
निरीह–इच्छाशून्य १२।१५
निर्गुणी–गुणहीन १३।३
निर्दई–निर्दय, जिसपर कोई और दैव न हो (चमत्कारार्थ) ६।२२
निर्धूम–धुएँ से रहित २।५२
निषंग–तरकस २।४६
निवतहरी–निमंत्रण देने के लिए आए व्यक्तियों की भीड़ ३१:४
निवतो–निमंत्रण ३०।२०
निवरा–(नूपुर) घुँघरू १६।२३
निवाज–कृपालु १३।३
निवान–जलाशय (में सरलता से) १९।४१
निवारसी–निवारण करने वाला, हटाने वाला १३।३
निवारी–निवारण कर दी, हटा दी ११।३२
निसा–तृप्ति (हेतु) ६।६
निसा१–रात्रि ७।२२
निसान–नगाड़े २०।१५
निसानी–चिह्न, संकेत ५।५७
निसार–निकालना १२।१२
निसेनी–सीढ़ी २२।५४
निहचै–निश्चय १८।१२
निहसंक–निश्शंक, भयरहित ७।१५
निहारि–ध्यान से देखकर १०।११
निहारै–दिखते हैं २७।२७
नीद खुले–निद्रा के उचट जाने पर ७।२१
नी–नु, निश्चय ही ६।३९
नीक–अच्छा, भला १९।२१
नीकी–भली २०।५७
नीके–भली भाँति ११।४
नीके भले में–निर्विकार स्थिति में, शांत अवस्था में ३।१२
नीत–नीति ९।३७
नीबी–फुफुँदी ११।४
नीमाना–भोला भाला १२।३४
नीर–नील (?) राग का नाम १९।४६

नीरस—रसहीन ५।३६
नील—काला १०।२६
नीलकंठ—मयूर २।६
नूराग—अनुराग, प्रेम ७।३३
नृप—राजा विक्रम २१।४२
नेकी—भलाई ५।१६
नेग—विवाह आदि शुभ अवसरों पर देने वाले का हक ३१।७
नेजहु०—भाले से भी १।३०
नेत—घात, अवसर १।५७
नेम—(नियम) व्रत १५।१४
नेरा—(निकट) समीप २६।१
नेवर—नूपुर, घुँघुरू १३।१०
नेह—(स्नेह) प्रेम, तेल ६।१
नेहनसा—प्रेम का नशा, प्रीतिमद ८।७६
नेहबिछूर—स्नेह और वियोग ११।१०
नैन दैकै—नेत्र देकर, नेत्र लगाकर, ध्यान रखकर १५।३१
नोतं—(नूतं) नूतन, नवीन ६।३७
नोनी—(नवनीत) सुकुमार ११।१६
नौ—(नव) ६ १६।२६
नौखंडा—नौ मंजिल ऊपर; ६ खंड ऊपर (तक) २६।५
नौढ़ा—नवोढ़ा, नवयुवती ७।२८
नौतय—(नवतम) नूतन, नई १३।२५
नौ ते—(सिरे) नव से, नवीनतापूर्वक २६।१८
नौनी—(लोनी—लावण्य) सुंदर, रमणीय २७।५
नौबत—पहर पहर बजने वाला मंगल-सूचक वाद्य ३१।२
नौल—नवल २६।१८
न्यान—(निदान) अंत में, अंततोगत्वा १४।३६
न्यारो—पृथक्, अलग १६।३३
पंक—कीचड़ २६।७५
पंगत—भोजन करनेवालों की कतार ३०।३३
पंचतत्त्व—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश १५।३
पंचवीर—पाँच वीर पति पांडवों के रहते १६।२३
पंचम—बुँदेल राजपूतों की उपाधि १।२४
पंचम—पाँचवाँ स्वर, कोकिल की वाणी वाला स्वर ७।३१
पंचसर—कामदेव के पाँचों बाण २।५४
पंचानन—सिंह २—६
पंजर—शरीर का ढाँचा १०।२५
पंजरतोर—शरीर को तोड़नेवाला (कष्टदायक) १०।२५
पंडित—बुद्धिमान् १८।७८
पंती—पनाती, प्रपौत्र १।११
पंद्रहा—वह यंत्र जिसमें अंक ऐसे भरें जो कि सब ओर से जोड़ १५ ही हो २०।५३

६	१	८
७	५	३
२	६	४

पंमार—परमार २४।२६
पउढ़ाइ—लिटाकर, सुलाकर १६।२८
पख—पक्ष ४।५०
पखवारा—पक्ष, १५ दिन ११।३६
पखानो—उपाख्यान, कथा १५।३८
पखारि—धोकर २।२३
पग—(पद) पैर ७।१२
पगन—अत्यधिक अनुराग ५।१८
पगिया—पगड़ी २१।३८
पगु तौ धरचो नहिं—अर्थात् स्तब्ध रह गए १४।२६
पचत—पचता नहीं (पित्तदोष से) ११।१६
पचारि—ललकारकर २७।१२
पचिकै—परेशान होकर ५।५२
पचै रहियै—हजम किए रहना पड़ता

है (बाहर नहीं प्रकट नहीं होने देते) ६।२४
पचौरी–सरदार २२।१६
पछ–(पक्ष) पाख १६।७५
पछेला–एक प्रकार का कड़ा १३।४६
पटंबर–(पट्टांबर) रेशमी वस्त्र १५।४४
पटतर–समान, सदृश २६।७९
पटरानोय-पट्टरानी, पट्टमहिषी, महारानी १६।१५
पटा–पीढ़ा ३१।११
पटीन–पट्टियों से ऊपर ४।५१
पटु–(पट) वस्त्र ७।१६
पटुका–कमर में बाँधने का दुपट्टा ८।१८
पटो–पट्टा, अधिकार पत्र २४।३
पठिहार–प्रतिहार, पड़िहार, मध्य भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश २२।३८
पड़–पड़ रहा है, गिर रहा है २४।११
पड़वा–भैंस का बच्चा ७।५७
पड़वा की बिनती गए घुड़वा आए बार–(लोकोक्ति) जो लेने के देने पड़ गए ७।५७
पतंग–पतिंगा १।४०
पतंग–सूर्य ४।५
पति–नायक १५।२२
पताक–पताका, ध्वजा १७।३३
पती–पति, स्वामी, गृहस्थ १९।७४
पद–पंक्ति १८।५२
पदमिनी–(पद्मिनी) नारियों के चार भेदों में से एक १५।२२
पनहीं–जूती (की मार) १८।४१
पनाह–शरण २।३०
पनाह–मार्ग २।३५
पन्नग–सर्प ४।४५
पपीहा–चातक १३।४१
पप्पी–(पप्पी) पपीहा, चातक २६।६५
पब्बै–(पर्वत) पहाड़ ९।१०
पमार–१–(१) परमार (क्षत्रिय), (२) पामारी। चकवड़, बरसात में होने वाला एक पौधा, जिसका साग बनाकर खाते हैं २४।१६
पयान–प्रयाण २१।७३
पयानो–प्रयाण, प्रस्थान ९।१५
पयार–पुआल १७।१०
पयोद–बादल १०।१२
पयोनिधि–समुद्र ६।२४
परंदे–पक्षी १२।२८
पर–पंख ९।११
पर–पै, से १३।१२
पर–अन्य (अर्थात् नारी) १६।३८
परखइया–पारखो, परखनेवाला ८।३७
परखत०–प्रतोक्षा करता रहा १।१५
परचे–परिचय, जाँच २१।८३
परचो–परिचय १३।१२
परचौ–(परिचय) जानकारी, परीक्षा ८।४९
परच्यो–परिचय, परीक्षा २२।११
परत राम०–राम से काम पड़ता है, कष्टदायो अवसर आ उपस्थित होता है १।३३
परतीति–(प्रतोति) विश्वास १।३०
परदछिना–प्रदक्षिणा, परिक्रमा ११।३६
परदारा–पराई स्त्री १९।५१
परनापत–पन्ना के स्वामी १।२४
परपंच–झगड़ा-बखेड़ा २१।५३
परपीर–दूसरे की व्यथा, अन्य का कष्ट १३।३
परपीरक–पराई पीड़ा समझने वाला २६।८०
परबने–(ऐ) सुग्गे १८।८
परबीन–प्रवीण (प्रिय) ११।१६
परबीन–प्रवीण, सुग्गे का नाम १०।२४
परबीन–(प्रवीण) चतुर १८।७८
परमान–प्रमाण, गणना १९।५

परवा–पड़वा, प्रतिपदा (शुक्ल पक्ष की) ११३।२५
परवान–प्रमाण ३।२८
परस–(स्पर्श) लगाने (की) १३।३६
पराई पौर–दूसरे के द्वार पर १६।२३
पराचीन–प्राचीन, पुराना १६।३
परि–निश्चय ही २१।१५
परिथ–गँड़ासा २३।२४
परे–ऊपर १५।३६
परेखो–पछतावा ६।१२
परेवा–कबूतर २।११
परै–परम, अत्यधिक (या उपेक्षित होने पर) १२।५४
पल०–पलक भाँजने में, निमेष मात्र में ६।२६
पलकाचार–वर-वधू को एक साथ पलंग पर बैठाकर उनका सत्कार करना ३१।३०
पलास–(पलाश) टेसू २४।१९
पवनैं–वायु की सहायता से (धूल) उड़ कर प्रिय से जा मिले १।३५
पषान–(पाषाण) पत्थर २।३६
पसुपति–रुद्र, शिव २४।२९
पहँ–से १४।४७
पह–(पौ–पाद) ज्योति, किरण ७।२१
पह फाटत–सबेरे का उजाला होते ही ७।२१
पहिरंदगी–स्वच्छंद प्रेमिकाएँ ७।४२
पहिल–पहले, पूर्व जन्म में ६।२१
पहुँचा–कलाई (सुमुखी सखी की) ७।१०
पहुमी–पृथ्वी २२।५२
पाँउड़ी–जूती २०।७४
पाँति–परिवार, बिरादरी १९।३२
पाँड़े–पंडित ३।२५
पाँवड़ो–जूता २।१६
पाँवड़े–पैर रखने के लिए फैलाये गए कपड़े, पायंदाज ३०।१८
पाइ–पैर, टाँग १६।३१
पाउड़ी–जूती ४।५२
पाग–पगड़ी २।६
पाचक–पाचनशक्ति बढ़ानेवाला २४।५२
पातक–गिरानेवाला, पाप २१।२९
पातुरी–वेश्या २६।७६
पात्र–अर्थात् सत्पात्र, सुपात्र १४।६०
पान–(खान) पान २।३१
पान–श्रीकृष्ण एक बार दावाग्नि पी गए थे २।५२
पान–(पर्ण) तांबूल ५।३०
पानि–(पाणि) हाथ १७।४६
पानिप–शोभा २।८
पानुसु–(फानूस) एक प्रकार की बड़ी कंदील १३।४७
पापपंक–कीचड़ का पाप '(कष्ट) ११।७
पायँ–पाहिँ, लिए १७।५८
पायँते–पैताने, पैर की ओर (से) १५।३७
पाय१–(पाद) पैर, चरण १५।१४
पाय–पाकर १५।१४
पाय–प्राप्त, आगत , इस काम के लिए आए २२।१६
पायल–पाजेब, नूपुर १५।३९
पायल्ल–पायल, नूपुर १६।३४
पायो–अर्थात् समझा जाना १८।७०
पार–सीमा, अंत २९।९
पारन–पालन ३१।३६
पारत–पालता, निबाहता २५।२८
पारद–पारा (जो बहुत चंचल होता है) ७।१८
पारावार–समुद्र २०।१८
पारी–डाल दी २६।३५
पालकिन–कहारों से ढोई जानेवाली आरामदेह सवारियाँ १९।२२
पावको–पलँग के पावे मे बना १९।७
पावन–पाना २०।५७४
पास–(पार्श्व) ओर १८।५

पाहिँ–से १२।६
पाहीँ–से २।१
पाहै–आएगा १६।५१
पिंड–शरीर १६।६२
पिँडुरी–(पिंडली) टाँग का ऊपरी पिछला मांसल भाग १३।३८
पिंडै–शरीर में ८।७१
पिक–कोयल ८।५१
पिकबैनी–कोकिल से सुखद वचन बोलने वाली १२।११
पिछले को–पश्चात् वाले कथन का, जो नीचे कहा जा रहा है ८।३३
पित्त–त्रिदोष (वा पित्त, कफ) में से एक ११।१६
पिनाक–धनुष ८।५१
पिय–प्रिया, नायिका ७।१२
पियरी१–पीली १६।४७
पियरी२–पीतिमा, पीलापन १६।४७
पियाचाह–प्रिय की इच्छा के कारण १६।३३
पियूष–(पीयूष) अमृत ६।२६
पिल–छोटा तकिया १६।२७
पिंगलो–शेषपुत्र २१।६२
पित्तदाह–पित्त के कारण जलन २०।४४
पित्तपापरो–पितपापड़ा जो पित्त के दोष के लिए उपयोग में लाया जाता है २०।४४
पियरी–पीतिमा, पीलापन २५।३६
पिरहो–पपीहे की बोली 'पी रहो, पी रही' २६।६८
पिरात–पीड़ा होती है २०।५६
पीउ–प्रिय १६।३२
पीठ–आसन ८।७३
पीड़ि–(पिंड) लौंदा १३।३६
पीन–दृष्ट ४।४४
पीनकुचा–पुष्ट स्तन वाली (प्रेयसी) ११।१८
पीर न पावत–पीड़ा नहीं समझता १६।६०
पीर पावै–पीड़ा समझे ३।५३
पील–हाथियों का १०।२६
पीव–पी पी; प्रिय ११।८
पुजेरी–पूजा करने वाला पुजारी २१।३६
पुतहू–पतोहू, पुत्रवधू ३०।१६
पुताई–चूने या रंग से रंगी गई ३०।२६
पुत्रबधू–पुत्र की पत्नी, पतोहू १२।५४
पुन–(पुनः) तो फिर १६।७१
पुन्यजोखिता–(पुण्ययोषिता) पवित्र नारी, सबके लिए विहित स्त्री २२।५
पुरंदर–इंद्र १८।८७
पुर–पुरबासी ५।४७
पुरहूत–२२।४ २२।४
पुराचीन–प्राचीन ३।५०
पुरातन–पुराना, पहले वाला १६।६३
पुरिखा–पूर्व पुरुष १७।२७
पुरी–पूरी ३०।३६
पुहकरमूली–(पुष्करमूल) एक औषधि की जड़ जो पहले मिलती थी, अब अप्राप्य है २०।४६
पूँछ–सर्प की दुम २।१०
पूछियो–पूछा १७।४८
पूजौँ–पूरी करूँ ५।२१
पूनौ–पूर्णिमा १३।२४
पूरब–(पूर्व) पहले २१।५४
पूरबी–(पूर्वी) संध्या समय गाई जाने वाली एक रागिनी १७।८१
पूरि–पूरकर, छाकर २०।४
पूरिआ–पूरिया १६।६
पूरी०–भरपूर सुरत (लगन) लग गई ११।१०
पूरुष–पौरुष, सामर्थ्य २१।२६
पूरो–पूर्ण ५।३७
पेख्यो–देखा जाना १८।६
पेस–(पेश) आगे, सामने १५।२०
पेसवान–आगे २६।११

पैंड़े–मार्ग में ४।६४
पैं–निश्चय ३।३
पैंर–पर, में १०।३८
पैंजे–प्रतिद्वंद्विता में २०।४
पैंठा–घुसा २०।३२
पैंरवार–तैराक, तैरनेवाला १८।४२
पैसुरनी–पयस्विनी (चित्रकूट की नदी) ११।२६
पैहै–पाएगी १६।१०३
पोढ़ो–पुष्ट, दृढ़, मजबूत १६।६५
पोला–पोले कड़े, खोखले कड़े १३।१४
पौंरदार–ड्योढ़ी और दरवाजा ३०।२६
पौर–द्वार, ड्योढ़ी १६।६५
पौरिया–द्वारपाल १३।१४
पौस–(पौष) पूस महीना १६।७५
प्रउढ़ा–जिस कामिनी में लज्जा कम हो १८।६६
प्रकास–(प्रकाश) प्रकट ५।२१
प्रकृति–स्वभाव अर्थात् पद्धति १६।३४
प्रजंक–(पर्यंक) पलंग १५।२०
प्रजारति–अधिक जलाती है
प्रतिया–(प्रतिपात) लौटने वाले ३०।२५
प्रतिहार–क्षत्रियों का एक भेद, पड़िहार या परिहार २४।८
प्रतीत–विश्वास १७।५३
प्रतीति–विश्वास २१।२३
प्रथित–(प्रथिति) ख्याति, प्रसिद्धि २८।१६
प्रनपन–प्रतिज्ञा का व्रत, बाना १।३६
प्रबाल–मूँगा ८।५१
प्रवाल–नये हलके लाल पत्ते, किसलय १३।३०
प्रबीन–(वीणा बजाने में) चतुर ८।३०
प्रबीन–सुग्गे का नाम १०।६
प्रभाकर–सूर्य १।४६
प्रभाव–असर, विशेषता ८।६६
प्रमान–प्रामाण्य, मान्य, स्वीकार ८।६५
प्रमान–सबूत १०।३६
प्रमान–सदृश, समान १६।१५
प्रलाप–विरह की एक दशा (निरर्थक वचन कहना) ५।२३
प्रलै–(प्रलय) ब्राह्म प्रलय, दो सहस्र चतुर्युगी का समय २१।३६
प्रलोक–परलोक ४।६४
प्रवान–(प्रमाण) समान १३।३७
प्राग–प्रयाग १।१८
प्रान–(प्राण, मेरे प्राण ही) है ऐ प्राण, ऐ जान ७।२५
प्रानदान–प्राणदान के लिए ३०।५६
प्रानप्यारी–प्रेयसी, नायिका १३।२५
प्रापत–प्राप्ति ५।३७
प्रापति–(प्राप्ति) उपलब्धि १५।१०
प्रिनाथ–प्रिय नाथ, नायक ७।१२
प्रीत–प्रिया १६।६३
प्रीति मानी–प्रेम का उद्रेक हो गया १०।१२
प्रेतकाज–प्रेतबाधा हटाने के लिए २०।५३
प्रेतबलाय–भूत बाधा २०।४२
फँदि–फँसकर ७।४७
फँदो–फँदे में पड़ी, फँसी १७।१६
फटकार–डाँट, डपट, दुतकार ११।११
फटकारत–चलाते, मारते हैं २२।४४
फटकारै–मारे, चलाए २२।४८
फनिंद–(फणींद्र,) शेषनाग १६।३६
फनिप–(फणिपति) शेषनाग १६।३६
फफस्सा–नीरस (या फसाद–ऊधम) २७।३७
फरमायो–कहा, पूछा ८।२
फलदानो–फल का दान करने वाले, तिलक करने वाले ३०।२१
फलिच्छा–फल की इच्छा पूर्ति, आकांक्षा की तुष्टि १७।५४
फागु कैसे–होली के अवसर पर के १६।७४
फाबिया–आकृष्ट १६।३२

फिकर–फिक्र, चिंता १८।१०
फिकारिकै–उघाड़ कर, नंगे (सिर) ३।२७
फिदैं लई–फँसा ली ६.११
फिरंगी–यूरोप से आने वाले लड़ाकू जन २२।३८
फिरकै–तदनंतर १८।६१
फिरत–फिरते रहने पर, चक्कर काटने पर ६।४१
फिरन–चक्कर १३।४४
फिरवायो–निमंत्रण देने को भेजा ३०।३३
फिरादी–(फरियादी) बिनती या नालिश करने वाला २२।२५
फिरादे–(फरियाद) शिकायत ७।५६
फिरीं–पलट गईं, उलट गईं १६।६५
फिरेना–लौटे नहीं १६।७०
फिर्किनी–फिरहरी १३।४४
फिलककै–चक्कर खाकर हटने से १६।३३
फीकी–नीरस १८।३६
फुनफुनी–पुनःपुना (?) १६।१७
फुर–स्फुरण १५।२५
फुर–सचमुच (या शीघ्रता से) १६।१७
फुरमाई–कहा १५।१६
फुरमाया–(करने का) आदेश दिया गया ५।४०
फुरमावै–प्रकट करे ६।८
फुहारे–अर्थात् नारंगी के दबाने से निकलने वाले १२।२३
फुले–प्रसन्न २।५१
फूँद–बंद ७।१६
फूल१–फुल्लता, प्रसन्नता २७।६
फूल२–उमंग २७।६
फूवार–फुहार, पुष्प के रस के छींटे २७।५
फेरि–फिर, पुनः १६।७०
फेरी–चक्कर, आगमन २७।४४
फैकर–फिरवा सियार २२।५३
फैन–फेन १५।२३
फैलि–पसरकर, छितराकर ७।४७
फोर–फाड़कर, चीरकर २४।६
फोरत–(कान) फाड़ते रहने पर भी ११।१७
फोरवाय–तुड़वाकर ८।३४
फोरि–फाड़कर (क्यों नहीं मारता) ११।१७
फोरै–तोड़ती है १२।२५
फोरै–फोड़ता है, अर्थात् घटाता जाता है १३।२४
बंक–टेढ़ी १३।२४
बँकवार–टेढ़ापन २१।८
बंगावली–बंगाली १६।५
बँद–बंद १२।२६
बंदनवारे–वह झालर या माला जो उत्सव में लगाई जाती है ३०।२६
बंदने–वंदना करना, उन्मुख होना ८।८
बँदि दी–बंदी बना दिया ३।४
बंध्यो–बँध गया, छा गया २०।७
बंबुर–बबूल १८।८०
'ब–अब २६।२०
बई–बो गई, लग गई, उग गई १४।३
बकता–(वक्ता) बोलनेवाला ११४६
बकस–क्षमा कर दो १४।६६
बका–बगला २६।३१
बकायन–महानिंब २०।५०
बखरी–घर ३०।२६
बखान–बखान कर, विवेचन कर १०।३५
बखान है–कहेगा अर्थात् अनुभूत करेगा १०।३६
बखोड़िहैं–टोकेंगे २।३१
बग–(वक) बगुला ६।११
बगरायो–फैलाया है १७।३३
बघेले–बघेलखंड (रीवाँ के आसपास के प्रदेश क राजवंशी) २२।३८

बजरंगी—वज्र के समान शरीर वाला परम बली २८।३३
बजावत गाल—बढ़ बढ़ बात करते हैं ८।३१
बजिकै—डंके की चोट, भली भाँति ३।३
बज्र—कुलिश, बिजली, वज्र के समान कठिन १५।३७
बट—बरगद ११।२३
बटपार—डाकू २।४३
बटहरा—बटखरा, बाँट, तौलने का मान १४।१४
बटा—गोला ३।६०
बटा—गेंद १४।७
बट्ट—बाँटकर, छिन्न भिन्न करके २२।४३
बड़ाई०—बड़प्पन में बड़ा १।४६
बड़वारे—बड़े, लंबे, विशाल ६।३८
बड़हंसै—बड़हंस (राग) ही १६।६
बड़ी—बहुत, अधिक (झड़ी) २४।११
बढ़ि—बढ़कर, बड़े ८।५३
बढ़्यो१—बढ़ गया ५।१
बढ़्यो२—बढ़ा हुआ ५।१
बतरान—बात करने ७।२
बतरैबे को—बात करने का १०।३८
बतात—बातें करते हुए ७।७
बतान लागे—बातें करने लगे १६।२
बदन—मुख १६।६२
बदन—कथन, लोगों द्वारा कहा जाना १६।२२
बदरा—बादल १०।३६
बदो—बुराई ५।१६
बदी—बुरी २०।५७
बदो—लिखित १५।१
बधिक—व्याध ८।४२
बधिबे—मारने के लिए
बधू—बीरवधूटी, बरसाती लाल कीड़ा १०।३१
बनत—ब्योंत, ढंग १।२२
बन तजि—एक वन को त्याग कर दूसरे में ६।३४
बनाय—भली भाँति, बहुत १।२१
बनाय—रच रचकर ६।२७
बनमाल—पैर तक लंबी माला १।२
बनिक—रूप की समान १३।३४
बनिक—(वणिक्) बनिया, व्यवसायी २०।३३
बनीठनी—सुसज्जित ११।४
बपु—रूप २।५
बबूरा—बिगुल २।५५
बयन—(वचन) बातें २१।३६
बयाने—बयाने में, अगता ३।३
बयार—वायु, हवा १३।४२
बयारी—वायु २।५६
बर—पति ४।२५
बर—बड़े ११।८
बर१—बरगद, पति, प्रिय २६।१८
बर२—बरगद २६।१८
बर३—पति, प्रिय २६।१८
बरई—तमोली १२।४६
बर ती—उत्तम नारी, श्रेष्ठ रमणी १४।३०
बरा—टाँड़ १३।४१
बरैया—वरण करने वाले, जोड़ के लिए चुनने वाले १५।३६
बरकनदाज—बंदूकधारी २३।४
बरक्कत—(धूल की) अधिकता २०।१६
बरच्छिन—बरछियों २०।७
बरजाय—वर्जित करके १३।११
बरजै—मना करे ११।८
बर दै—बलपूर्वक ३।४
बरन—प्रहार ३०।३३
बरनन—प्रहारों (की) ३१।२
बरनन-कहाँ—(मरण का) वर्णन कहाँ होता है, नहीं होता ५।२३
बरबट—बरबस, जबर्दस्ती १७।३४

बर बाम–(किसी) श्रेष्ठ नारी में ५।२८
बरसात–वट सावित्री पूजन जो ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को होता है, वर्षा २६।१८
बरहि–जलता है, गिरकर प्रज्वलित होता है १०।११
बरही–(वर्ही) मयूर २।६
बरहू–बलपूर्वक, बरबस १९।१७
बरा–(वटक) बड़ा, उड़द की पीसी दाल से बना खाद्य १३।३
बरियाई–जबर्दस्ती १९।५२
बरियाने–प्रबल हो जाने (पर) १३।२६
बरु–बल्कि २।३१
बरुनी–बरौनी १८।३६
बररुचि–विक्रम के सभापंडित बररुचि जिनसे कथा बैताल कह रहा है ३।१
बरोठे–(प्रकोष्ठ) डचोढ़ी, दरवाजे और –आँगन के बीच का स्थान १६।६३
बरो१–जलूँ ४।३७
बरौ२–वरण करूँ ४।३७
बर्ज–वज्र १०।१०
बर्जे–(वर्जित) निछावर का ३०।२५
बर्न–रंग १३।२८
बलकत से–उमंगपूर्वक ७।२७
बलाय–बला, आफत ७।३६
बली–उदर की रेखाएँ १५।३७
बल्लभा–प्यारी ५।४९
बल्ली–लता १२।२२
बस–केवल ६।१९
बसन–वस्त्र ६।१८
बसीठ–(विसृष्ट) दूत या दूती ६।१
बसिकर–वशीकर, वश में कर लेने वाला २।५
बसी नहिँ–अर्थात् आई नहीं, हुई नहीं १९।७५
बस्तर–वस्त्र ८।५३
बस्ती–सारे नगर को ३०।३२
बहाइये–प्रवाहित कीजिए १५।१४
बहार–आनंद १६।७१
बहिलिया–बहेलिया, व्याधा ६।१५
बहुत–अधिक, बढ़कर १३।७
बहुताई–अधिकता २०।१९
बहुनायक–बहुपुरुष संसर्ग २०।५३
बहुर–फिर १६।६९
बहुरत–लौटते हुए १६।६९
बहुरि–बहुली १६।५
बाँक–पैर का एक गहना १३।४१
बाँक–(वंक) टेढ़ो १५।३६
बाँकी–सुंदर १३।३८
बाँझ–(वंध्या) जिसे संतान न हो ११।३३
बाँदो–बांधव (रीवा) १०।२
बाँधो–बाँधव गढ़ (रीवा) ९।४२
बाइस–संख्या २२ (थोड़ी) १७।२८
बाइ–वायु १३।३७
बाउरी–काकुल, काकपक्ष २०।
बाउरी–बावली, पगली २६।८१
बाउरो–गूँगा ११।३३
बाउली–बावली, पगली ५।४२
बाकु–बोलता है ९।४१
बाकुहानी–(इन बाजों की) वाणी की हानि, वाणी या ध्यान का रुकना १३।४३
बागहितू–उपवन में हितकारिणी १२।११
बागीच–बगीचा, उपवन १२।२२
बाचा–वचन, प्रतिज्ञा की बात १९।७९
बाज–शिकारी पक्षी १५।४०
बाजा–घोड़े ३१।७
बाजियो–घोड़े में भी १३।४४
बाजी–दावँ २१।८
बाजी–(वाजि) घोड़ा २४।२२
बाजीगर–जादूगर, सँपेरा १४।५४
बाजू–बाजी २४।३
बाजूबंद–बिजायठ १३।४१
बाट–मार्ग ४।७१
बाट हेरत–प्रतीक्षा कर रहे हैं १६।२०

बाड़क–किनारेदार ४।४६
बाड़व–बाड़वाग्नि २।५१
बाढ़ि–वृद्धि ६।२६
बात–वार्ता, वायु ११।७
बात–वायु २०।४२
बात गमन–वायु का जाना, प्राण का निकलना, मरण ५।२३
बात छोर डारिये–प्रतिज्ञा कर लीजिए २४।२
बाद–बातचीत, संवाद, कथन १०।२२
बाद–विवाद १४।६५
बाद–सिद्धांत, वसूल २१।२
बादि–व्यर्थ ४।२५
बाधौ–बाधायुक्त १८।४६
बान–आदत, संगीत बोध की वृत्ति १४।२५
बानदार–बाण चलाने वाले, बानैत १५।३६
बानसंधा–बाण का संधान (कटाक्ष-पात) ६।११
बानि–(वाणी) बात ५।२०
बानिक–(वणिक्) बनिया ८।६
बानिक–रूप की, समान १३।३४
बानी–बानवाला, बारहबानी ८।५२
बाम–नारी १।४६
बाम बाजी–स्त्री के साथ दाँव खेलना १६।७४
बाय–(वायु) वात (रोग) १२।१८
बार–घर २।६१
बार–समय ५।३०
बार–मर्तबा, दफा १६।१०५
बार–बाल, केश ५।२६
बार–(वार) जल २१।८
बार–(वार्द) बादल २६।८०
बारता–वार्ता, कथा १७।५०
बारबधू–वेश्या १८।६७
बारहद्वारिया–बारहदरी, जिसमें बारह द्वार होते हैं और जिसमें खंभों से ही निर्माण होता है २७।४६
बारा–बारह १२ २२।४४
बाराबान्य–वेश्या, सुभान १।३७
बाराह–शूकर १६।४४
बारि–बार ३।४७
बारि–जल, आँसू ४।२७
बारिनिधि–समुद्र २।५०
बारिय–उपाधि या नाम २४।१०
बारिय१–नाम से
बारिय२–वार (प्रहार) २४।१२
बारी–(वारि) जल २।३६
बारी–बार, दफा, मर्तबा १६।१०२
बारी–अवसर १८।१८
बारी–वार, समय ६।२२
बारी–रोक के लिए बना घेरा अर्थात् सीमा १३।४१
बारे–छोटे १।१८
बाल–हे बाला २।४८
बालकन–बालकों (लव कुश) ने १३।२६
बल्लभ–पति ३।४०
बाला–नायिका, प्रेयसी १।२०
बालापन–यौवन में, युवती हो जाने पर २७।५२
बालमैं–प्रिय से १।२७
बालिकाहूँ–बालिका को ४।१७
बावँ–(वाम) बाईं ओर की २५।१२
बावन–वामन (अवतार) ६०।६५
बावन बीर–(बामन बीर) योद्धा का नाम २३।१३
बाबरिन–सिर पर के बालों का चूल्हे का सा आकार ८।१४
बास–गंध, सुगंध १०।२६
बासन–वस्त्रों को ७।१२
बासर–दिन १३।२५
बाहँ बाला–बाला की भुजा ७।६
बाह–प्रवाह, धारा, एक साथ चलना, दल बाँधकर उड़ना २७।४४
बाहक–(वाहक) धारक, आधार (पहाड़) ६।६
बाहिबो–चलाना १।३४

बाहिरो–अलग कर लेने पर २८।२४
बिंदु खलित–रज स्खलित हो गया, योनि द्रवित हो गई ८।६२
बिउर–विवर, छेद २।४८
बिकल–व्याकुल १४।३४
बिकानी–(कंदला की बोली पर)
बिकगई हैँ, निछावर हैँ १३।४३
बिकाम–बेकाम, निरर्थक २६।७०
बिकार–अर्थात् चेष्टाएँ ७।४
बिक्के–विकृत २०।४५
बिक्रमवान–पराक्रमी, विक्रमी २१।४१
बिसूरत–(गान की विशेषता का) चिंतन कर रहा है १४।२७
बिखहर भखी–सर्प की कटाई हुई (विषकन्या सी) २६।७६
बिगोय–बिगाड़कर १६।८६
बिगोनो–बिगाड़ना, नष्ट करना ८।२
बिगौ–दुराव, छिपाव, रहस्य १४।५३
बिछिया–पैर की उँगलियों में पहनने का गहना १३।४१
बिछुरं–बिछुड़ना, वियोग १८।५५
बिछुरंदं–बिछुड़ने वाले को १६।७१
बिछुरन–वियोग ६।१६
बिछुरदं–बिछुड़ना होगा ६।३७
बिछोहा–वियोग, विरह १०।१०
बिजना–(व्यजन) पंखा २८।१४
बिज्जु–(विद्युत्) बिजली २।१४
बिडंब–आडंबर १३।३
बिढ़ै–प्राप्त करके ३।११
बित–(बित्त) शक्ति ८।२७
बित–वित्त, धन १६।४०
बितरे–बाँटे, दिए, फैलाए १६।५७
बितर्क–तर्क-वितर्क, निरर्थक बुद्धि विलास १४।६५
बितान–चँदोवा १६।२२
बितान है–बिताएगी, व्यतीत करेगी, दूर करेगी १०।३६
बित्त–धन, संपत्ति २१।२६
बिथुरी–बिखरी हुई, फैली हुई २५।३६
बिदग्धा–चतुरा १८।७६
बिदरत–विदीर्ण होते हैं, टूटते हैं १५।३६
बिदिसि–दो दिशाओं के बीच की दिशा ११।७
बिदुकि-बिगड़ कर, तितर बितर होकर २६।७७
बिदुवा–ब्रह्मचारी, बेदपाठ करने वाले २६।७६
विद्या०–चौदह विद्याएँ––षडंगमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकम् । मीमांसा तर्कमपि च एता विद्याश्चतुर्दश ॥ १।६
बिद्रुम–मूगा १३।३०
बिधि१–विधाता ६।११
बिधि–प्रकार, स्थिति ६।११
बिधि–बिधाता, ब्रह्मा १३।३३
बिधिकाई–प्रकारवाला ३१।६
बिधि परवान–(विधि प्रमाण) विधियुक्त, यथाविधि ७।२६
बिधैँ–विधि ने, ब्रह्मा ने १३।३३
बिनती–प्रार्थना, माँग ७।५७
बिनौला–कपास का बीज ५।३६
बिपरीतन–प्रतिकूल परिस्थिति १२।३
बिपरीत रति–उलटी कामकेलि ८।५५
बिपिन–वन ३१।३८
बिफल–निष्फल, बेकार १४।५१
बिवरा–ब्यौरा, रहस्य, मर्म की बात १६।२३
बिबस–लाचार अर्थात् कारण ११।१५
बिबि–(द्वि) दोनों १३।३५
बिबि–(द्वि) दोनो १३।३५
बिभव–संपदा १६।४५
बिमासा–बिभास १६।१
बिभौ–(विभव) संपत्ति १।४२
बिभ्रम बचन–भ्रमजनक वचन, अनर्थक वचन, प्रलाप १२।१६
बिमान–वायुयान २१।१२

बिमानो–विशेष रूप से मान लिया, अवगत कर लिया १४।३४
बिय–दोनो ४।४५
बियोग–विरह की भावना, प्रेमासक्ति जन्य पीड़ा १४।३०
बियोग निधि–वियोग के समुद्र में ११।७
बिरंचि–ब्रह्मा ८।७७
बिरछा–वृक्ष ६।६
बिरतंत–वृत्तांत, कथा १०।२१
बिरदंत–प्रशंसा, स्तुति, विरुद २३।३५
बिरवा–पौधा १८।३०
बिरसिंघ–(वीरसिंह) योद्धा का नाम २३।१६
बिरहागति–विरह की स्थिति, विरह का बोध १७।४१
बिरही गन–(वर्हीगण) मयूर समूह २६।६३
बिराज–अराजक, शासन रहित ८।३
बिरादर–जाति भाई का २६।२५
बिरानी–अन्य का, दूसरे का ११३१
बिराम–मार्ग में बिराम करता हुआ (या अविराम–निरंतर) १६।७५
बिरी–पान की गिलौरी ७।४१
बिरुझो–लगा हुआ ११४६
बिरुद्ध–बिरोध, बैर २४।३४
बिर्ही–(विरहो) वियोगी ११।३३
बिलखी–संकुचित हुई ७।१०
बिलयो–रुका ११।३६
बिल बिल–बच्चों के खेल का बोल ५।४३
बिलमो–रुको, ठहरो १२।४५
बिलसौ न–रहो मत, टिको मत १४।६२
बिषधर–(विषधर) सर्प ४।२३
बिसद–विस्तृत (बादल) १०।११
बिसहर–विषधर, सर्प १४।५४
बिसाहक–खरीदनेवाले ६।६१
बिसाहा–खरीदा ६।६
बिसुख–सुखरहित ३।४४
बिसूरत–सोचता है ११।२४
बिसेख–विशेष रूप से २०।६२
बिहंडनराय–योद्धा का नाम २३।२०
बिहरत–फटती है ६।२१
बिहरन–विहार करने (में) २५।४६
बिहाऊँ–दूर करूँ १७।५७
बिहानो–सबेरा १६।३०
बिहार–संभोग १५।३६
बिहाल–व्याकुल ५।४
बींध्यो–बिद्ध, बंधा हुआ १३।२१
बीच–अंतर, भेद, पार्थक्य ११।११
बीच–मध्य अर्थात् साथ साथ ११।७१
बीच पारि दीन्हों–पार्थक्य डाल दिया ११।११
बीज–दाने २।६
बीज–(बिजली) गले या कान का एक गहना १३।४१
बीती–घटित हुई ५।३७
बीत्यो–समाप्त हो गया ११।५
बीन–वीणा १३।४३
बीनबीन–चुन चुनकर, अच्छे से अच्छे प्रकार से १४।६
बीना–बीन बाजा २४।३
बीर–सखी ५।१३
बीर–साहसी १६।१४
बीरबहोटी–वीरबहूटी नामक बरसाती लाल कीड़ा; वीर की पत्नी २६।७४
बीरा–पान की गिलौरी ७।७
बीरा तीन–शत्रुतासूचक होता है ६।६
बीस बिसा–बीसो बिस्वा, भली भाँति, पूर्णतया २७।४६
बीह–बीस २३।२
बुंदक माल–बूँदों का समूह २६।५५
बुकरै–बकरे को ८।७२
बुद्धिसैन–बोधा कवि १।१२
बूझत–पूछते हैं २१।४४
बूझि–पूछकर १३।१८
बूझि–समझ १४।४६
बूझि लीन्हों–पूछ लिया, आदेश ले लिया २४।३

बूझी–पूछी १२।७
बूझेह न–समझता नहीं ६।४०
बूझै–समझ में आती है १३।४७
बूड़न–इंद्र बधूटी, बरसाती लाल कोड़ा २।७
बूड़ा–डूबा हुआ १५।२
बूड़ा–डुबकी लगाने वाले १६।३५
बूड़े–बूड़ने पर, डूब जाने पर १५।२
बृथा–व्यर्थ, मिथ्या १५।३
बृथाबाद–बकवाद १२।१८
बृषभ–बैल ५।३६
बृषभध्वज–महादेव ३।४४
बृषभान०–राधा २।३
बृष्टि–(लोहे के हथियारों की) वर्षा २४।२३
बृस्चिक–(वृश्चिक) आठवीं राशि ३०।७
बेंदी–(लाल) बिंदी २।७
बे–ए, रे ५।३८
बे–बिना २६।३७
बेअवकूप–बेवकूफ, मूर्खतापूर्ण बातें करनेवाला, निरर्थक कथन वाला ५।३६
बेक–(वेग) तीव्र गति ३।६०
बेकाज–व्यर्थ १६।६६
बेझो–लक्ष्य, निशाना २६।४७
बेड़िये–घेरा जाता है, बंद कर दिया जाता है ८।७
बेताल–(वैतालिक) राजवंश को प्रातः जगाने वाले एक प्रकार के भाट २४।४१
बेद–शास्त्र १६।५६
बेद–पुराणादि में १६।२३
बेदन१–वेदना, पीड़ा २०।४३
बेदन२–शास्त्रों में २०।४३
बेदन कहे–बेद ध्वनि हुई ३१।२५
बेदन भेद–पीड़ा का रहस्य ७।४८
बेदनवंत–पीड़ित ५।६
बेदरदी–निर्दय ३।४
बेदबृत्ति–वेदाध्ययन, वेदाध्यापन, ब्राह्मणवृत्ति १६।२०
बेधी नहीं–अक्षत योनि रहने दी १५।१६
बेनी–(बेंदी) सिर पर का एक गहना १३।४१
बेनी–त्रिवेणीसंगम (प्रयाग) १४।६०
बेनीपान–सिर पर का एक पान के आकार का गहना १३।४१
बेपरवान–अगणित ७।२०
बेमजंकूर–अकथनीय ७।३८
बेर–बार, दफा ६।३२
बेर–(बेल) देर १६।८४
बेर–बार (केला दूसरी बार नहीं फलता) १६।७३
बेरस–नाखुश, अप्रसन्न २२।४६
बेरा–बेड़ा, सहायक ३।४६
बेराम–बीमार १७।३
बेरामी–बीमारी १६।६७
बेरी–बार, समय ६।२६
बेरी–बेड़ी (बंधन) ८।८
बेल–बिल्व (स्तन का उपमान) १३।३१
बेला–(मल्लिका) एक फूल, मोतिया ५।४३
बेला–कटोरा या घड़ा १४।४
बेवपार–व्यापार ३।३
बेबरन–(वैवर्ण्य) रंग बदलना (सात्त्विक) १५।२५
बेवाकिफी–अनुभवहीनता ४।६८
बेस–(बेश फारसी) अधिक, उत्तम १।६
बेसक–निस्संदेह ४।५५
बेसर–नाक की छोटी नथ १३।४१
बेह–(बेध) छेद १।३०
बेहाल–व्याकुल १७।१
बैठका–बैठने का स्थान ६।४
बैठारने–बैठाना २६।१८

बैताल–भूतों में प्रधान　२१।५२
बैद–वैद्य　२४।३१
बैस–(वयस्) उम्र　४।१७
बैस–वे क्षत्रिय जो कन्नौज से अंतर्वेद तक बसे हैं। जिससे उत्तर प्रदेश के उस अंचल का 'बैसवाड़ा' नाम पड़ा है　२२।३८
बोई–बो दो, स्थित कर दी　१४।३१
बोध–(बौद्ध) बुद्ध का अवतार १९।४४
बोल–वचन　४।६५
बोहित–जहाज　२।५०
बौजनें–राजदरबार में प्रतिहार बौने और हिजड़े रखे जाते थे　८।४५
बौर–डुबान (डूबे हुए)　३।६३
ब्यभिचारी–एक स्थान पर स्थित नहीं रहते (मृग); प्रेम का कुत्सित आचार करने वाले (नेत्र)　१३।२८
ब्याउर–प्रसूता, प्रसव करनेवाली, संतान को जन्म देने वाली　११।३३
ब्याधि१–विरह की एक दशा ५।२३
ब्याधि२–शारीरिक पीड़ा　५।२३
ब्याल–सर्प　८।४०
ब्योम–आकाश　२१।१२
ब्योहार–(व्यवहार) पारस्परिक बर्ताव　२४।३६
ब्योहुरो–व्यवहार करनेवाला, लेनदेन करने वाला　१३।३
ब्रजराज–श्रीकृष्ण　१।३८
ब्रतबंध–यज्ञोपवीत, जनेऊ　४।१४
ब्रह्म–ताल के चार भेदों में से एक　१३।४५
ब्रह्म–ब्राह्मण　१९।८
ब्रित्त–(वृत्त) चरित्र　४।७१
भंग–विजया　१२।१८
भंगरंग–भाँगबूटी (का आनंद)　१२।१८
भंगसुर–स्वरभंग (वाणी का खंडित होना)　१५।२५
भइ का–क्या हुआ　१६।१००

भखिकैं–खाकर (पीकर)　१५।१
भग–योनि के सहस्र चिह्न जो अहल्या के शाप से इंद्र के शरीर पर बन गए थे　३।५
भगदर–(बगदर) छोटे मच्छड़ २६।७८
भगि जाय किन–भाग क्यों नहीं जाता　२८।१५
भजें–अर्थात् भग जाते हैं　७।३
भजौं–भाग जाऊँ　७।११
भज्यो–भजन किया　१४।६०
भटभेरा–सहसा मिलन　१२।२०
भटू–हे सखी　२।४३
भतार–भर्ता, पति　८।६
भनाके–भनभनाहट　२०।३
भनि–भनो, कहो　८।५३
भभकन–रक्तधारा वेग से निकाल रहे हैं　२३।
भभकत–फूटकर निकलता है　२३।२३
भभूकन–ज्वालाओं, लपटों　२७।४८
भम्मन–योद्धा का नाम　२३।१५
भय–हो गया　२३।२४
भय लाज मानी–भय और लज्जा से विह्वल हो गई　१६।३३
भरकिगो–'भड़' ध्वनि करके फूटता है　१३।३१
भरत–जड़ भरत, जिन्हें मृग शिशु के प्रेम के कारण मृग योनि में जन्म लेना पड़ा था　३।५
भरतार–(भर्ता) पति　७।४२
भरम–भेद　१०।३६
भरम गमावै–भेद को खोना, रहस्य को खोल दे　१०।३६
भरमावें–भ्रम में डाल देते थे १२।४०
भराव–अंकों से भराव, अंकों से पूर्ति　२०।५३
भरम–प्रतिष्ठा　१८।४६
भरियाउ–भराव, (नृत्य की गत, मुद्रा)　१९।१३

भरिलाज–लाज भरकर, मारे लज्जा के ६–३५
भरे–अश्रुपूरित १२।१५
भलि–भली (व्यंग्य से बुरी) १६।६२
भव–हुआ ४।३६
भव–संसार (या हुआ) ६।१३
भवन–(भ्रमण) घूमना १३।४४
भुष्षिहिय–भाख रहे हो, बोलते हो २२।४३
भहराय–गिरती पड़ती १३।१५
भाँवर–वरवधू का गाँठ जोड़कर अग्नि की परिक्रमा करना ३१।१०
भा–हुआ २।४७
भाउ–(भाव) समान ३।६६
भाउदौ–भावता, प्रिय ११।४
भाकसी–भाड़, भट्ठी १६।५३
भाग–अंश, अंग ६।३५
भागे–भागनेवाले के लिए ८।७३
भाजी–शाक, तरकारी २४।१७
भाट–चारण २४।६
भात–(भक्त) पका चावल ३०।३४
भान–(भानु) सूर्य ५।१८
भानमती–जादूगरनी १६।७४
भानु को सुत–यमराज १७।२२
भाभी–(भावी) भवितव्यता, होनहार २।३०
भाय–(भाव) भाँति १।४३
भायक–भावपूर्ण, प्रेमपूर्ण, सहृदय, दयालु ५।४६
भायक–(भावक) थोड़ा, किंचित् (भी) २५।२८
भार–बोझ १३।३४
भारजा–(भार्या) रागों के परिवार की पुत्रबधुएँ १६।१६
भारदी–लवा की जाति का पक्षी २६।६५
भारी–विशाल १२।१५
भारे–भाड़ २७।१४

भाल–(भल्ल) (तीर के) फल (के आकार का) २।७
भाल–मस्तक, ललाट के (नेत्र), „
माथे में (मृग) १३।२८
भावतो–प्रिय लगने वाला ६।३६
भावदा–प्रिय ६।३७
भावदी–भावती, प्रिया ६।२७
भावद्दी–भावती, प्रिया ६।४०
भावन–प्रिय १६।६७
भावामल–योद्धा का नाम २३।२३
भाषन–भाषण, व्याख्यान ३।२६
भाष्य–महाभाष्य पतंजलिकृत ३।२३
भिक्षा–भीख (राग के बदले में) १४।५६
भिखू–भिक्षुक ६।८
भिया–भैया, भाई ८।३६
भीत–(भीति) भय १६।८८
भीतरौनि–भीत (दीवाल) पर बनी रमणी (स्त्री) १६।७४
भीने–सने हुए ७।४४
भीर–समूह २।५
भीर;–आफत, संकट १६।३०
भुइँ–(भूमि) पृथ्वी पर ४।२६
भुजबंध–अंगद, बाहु पर पहनने का गहना १३।४१
भुवंगम–सर्प २०।६१
भुवमान–भूवाला, भूपति २२।२८
भुवलोग–भूलोक में ११।१५
भूँजे–भुने २०।४८
भूखै पाप–बुभुक्षितः किं न करोति पापम् १७।२६
भूत–प्राणी १८।५६
भूतिनी–प्रेतिनी १७।४४
भूधर–पहाड़ १।५
भूपसुत–राजकुमार १२।१४
भूमितल–भूतल, पृथ्वी पर १६।८
भूरही–भूरि ही, बहुत ही २०।२

भूरि–बहुत। २७।११
भूरिआँ–(भूरि) बहुत सी, अनेक १५।३८
भूस–भूषित होती है ७।५
भूसन–(भूषण) भूषित करने वाले, शोभा दायक १३।२२
भूसन–शय्या की सजावट के उपकरण १६।२७
भृंगी–बिलनी, वह जो कीड़े को अपने रूप का कर लेता है १६।३५
भृंगी–भ्रमरियों का २०।३
भृग०–भृंगी और कीड़े की भाँति १।४०
भृगु–शुक्र ३०।८
भृगुनंद–परशुराम १३।२६
भेख–(भेक) मेढक २६।५२
भेखि–मेढकी २६।३८
भेड़–'मेढ़ा' का अर्थ 'भेड़ा' करके २४।१५
भेद–रहस्य की बात २।३०
भेद–अंतर अर्थात् मनमुटाव २४।३६
भेरि–बड़ा नगाड़ा २०।२
भेव–(भेद) रहस्य १०।३३
भेस–(वेश) रूप २०।३१
भो–हुआ १५।११
भोइ–लीन १८।५७
भोई–लिप्त, युक्त, लीन १५।४६
भोग–भोजन, भोज ३०।३८
भोर–सबेरा ४।४०
भोर–विह्वल, व्याकुल २६।६
भोरी–भोली, सरल, सीधी १०।१३
भैरो–भैरव राग १८।७०
भौंरियो–भ्रमरी, भौंरी में भी १३।४४
भौंली–घुमावदार, गोल १३।३८
भौ–हुआ २४।१२
भ्यास–अभ्यास १४।६०
भ्राजै–शोभित है १३।६८
भ्रमरा–भौंरा १७।३२
भ्रमरी–भौंर, आवर्त २।१०
मँगतन–मंगन ३१।३४
मंजन–दाँत रँगनेवाला मसाला, मिस्सी आदि १३।३६
मँझार–में ५।३०
मंड–मंडित करने वाला २८।१६
मंडफ–(मंडप) विवाहस्थल ३०।२६
मंडव–(मंडन) ठाना, रचा १४।११
मंडि–लगाकर १६।५६
मंडि–मंडित समझो, इस प्रकार की जानो १६।३४
मंत–(मंत्र) सलाह २।३०
मंत–मत्त हाथी (गति का उपमान) १३।३१
मंत्रन–वेदों के मंत्र १६।६
मंदाकिन(मंदाकिनी) गंगा २६।१३
मंदाकिनि–मंदाकिनी (चित्रकूट की एक नदी जो पयस्विनी में मिली है) ११।३६
मकर–मकर संक्रांति २७।२६
मकरध्वज–मीनकेतु, कामदेव २।२३
मक्कान–(मकान) गृह, घर १२।३३
मग–(मार्ग) पथ रास्ता १८।७६
मगरूर–अभिमानी १०।३८
मगरुरी–अभिमान ७।२८
मघा–मघा नाम का नक्षत्र १।१६
मघा मास–मघा नक्षत्र वाला महीना, भादों १५।३८
मघा मेघ–मेघों से मंडित मघा की झड़ी ११।६
मचक्कै–मचकता है, दबाता है, जिससे 'मच' ऐसा शब्द होता है १६।३४
मच्छ–(मत्स्य) मछली १६।४४
मजलिस–जलसा, सभा १३।१
मजा–आनंद ५।५५
मजाजी–लौकिक प्रेम १।३८
मजाह–मजा को, सुख को ५।३५
मजेज–अभिमान, दर्प १५।१३
मजेदार–आनंददायिनी १२।४
मज्जन–स्नान ४।१५

मझियाये कैं–मध्य में से निकलकर २३।७
मड़वा–मंडप २७।२४
मड़वा को–मंडप में (बैठकर) ३०।३४
मढ़ि–मढ़कर, अधिक ८।५३
मढि–(मठी) छोटा देवस्थान ५।५५
मढ़चो–डाल दिया, छा दिया १६।६३
मतंग–मतवाला २।५४
मतंग–(सं० मतंगज) हाथी ७।२७
मतंगी–हाथी पर के सवार २०।२
मतनट्ट–(नष्टमति) नष्टबुद्धि, मतिहीन २२।४३
मतल्ल–हाथी २३।३५
मति–नहीं १।५६
मति–बुद्धि १०।७
मतिसट्ट–(शठमति) मूर्ख २२।५३
मते–मतवाले २०।१
मते–(मति) समान. सदृश २६।५१
मतो–(मंत्र) सलाह ८।७७
मतौ०–परस्पर आशय समझकर २५।४०
मत्त–मतवाला हाथी २६–२९
मथोनी–मथानी, दही मथने का डंडा १३।३६
मदन–काम ८।५५
मदन०–कामरूपी वृक्ष २।४४
मदन ज्वर–काम ज्वर, काम की प्रचंडता ७।१५
मदना–(मदन) कामदेव १०।२९
मदनद्दल–कामदेव का दल २५।३४
मदप्रेम–प्रेममद, प्रेम का नशा ८।७७
मदी–मदपान करने वाला ६।३९
मधु–मकरंद, फूल का रस १४।३८
मधुरितु–वसंत ऋतु २४।२१
मध्य महल–महल के मध्य महल १५।१९
मन की–मन की बात या उमंग ६।१३
मन को कलेवा–मन की कल्पना, मन के लड्डू १९।७४
मनभावन–प्रिय १।३२
मनमंथ–(मन्मथ) काम ५।४
मनमत्थ–(मन्मथ) कामदेव १३।३६
मनसाह–इच्छा भी १८।३५
मनायो–मान्यता दी, स्वीकार की ११।३२
मने करता–मना करता हूँ, रोकता हूँ ६।४०
मने करी–मना किया, रोक दिया १९।१७
मनोज–काम (रति) ८।५२
मनोहर–एक संकर राग २७।३२
मन्वंत्तर–इकहत्तर चतुर्युगि का समय २१।३६
मम–मेरा १९।१९
ममतामुखी–ममत्व या दया से युक्त मुख वाले २५।२३
मयंद–(मृगेंद्र) सिंह २७।६
मयगल–(मदगलित) हाथी २।१५
मयन–(मदन) काम १६।२६
मरदे–मर्दन किया, पराजित किया, दबाया ८।७१
मरहट्ट–मरहठा २३।१०
मराल–हंस ८।५१
मरिजात–मर नहीं जाया जाता, कोई मरता नहीं १६।८५
मरीची–किरणें १५।२०
मरोर–ऐंठन, उत्तेजना १६।२५
मलकंत–प्रसन्न होते हैं २३।३०
मलार–मल्लार नामक राग १६।१७
मलीन–(मलिन) विषादयुक्त १६।८५
मल्यो-मल दिया, मर्दित कर दिया ११।२८
मसकबे–दबने १६।३७
मसनद–बड़ा तकिया २९।१८
मसान–श्मशान, शवदाह का स्थान ८।४०
महताब–(महताबी) मोमबत्ती के आकार की एक आतशबाजी जो कागज में बारूद लपेट कर बनाई जाती है ३१।६

महतारी–माता २५।५०
महबूब–प्रिय ३।४
महबूबा–(अरबी महबूब) प्रिय १।१०
महरम–भेद, रहस्य ४।३५
महरि–यशोदा २।४
महाँ–महान्, बहुत ६।३४
महावतै नहिँ अंकुसै–न महावत को मानती है, न अंकुश को, न बड़ों की सुनती हैं न मर्यादा का ध्यान देती हैं ८।८
महाबर–गौड़ योद्धा का नाम २४।१०
महिरं–हृदय का रहस्य जानने वाला १२।४८
महिरम–घनिष्ठ, प्रिय १।३४
महीडोल–भूकंप १६।३४
महातल–भूतल १९।६
माँग–सीमंत, सिर पर बालों के मध्य बनाई गई रेखा १३।२३
माँगनो–मंगन ,भिखारी १४।६०
माँगिन–मंगन, भिक्षुक (वैताल स्तुति-गायन से द्रव्य पाता है) २२।५०
माँदा–रुग्ण, बीमार १२।२१
माँदो–मंद ११।१४
माँस की जीभ–अर्थात् जड़ जिह्वा ६।१२
माख–(अमर्ष) बुरा मानना ८।७९
माच्यो–मच गया, छा गया १४।४
माती–मत्त, मतवाली ७।३८
माधव नल–माधवानल १।४०
मान–मानकर ५।६
मान–सामर्थ्य ६।२३
मान–संमान, आदर १९।२२
मान रह्यो–स्वीकार करता हूँ, सहता हूँ १०।२५
मानिक–(माणिक) लाल रत्न १८।२५
मानुस–मनुष्य १६।३८
मानो–मान लिया, अंगीकार कर लिया १९।२७
मान्यो मनैं–मन में निश्चित किया १।१३
माफ–क्षमा १७।२८
मायनो–मातृकापूजन ३०।३२
मायैं–मातृकाएँ ३०।३०
मार–समस्त, समग्र, सारे ३१।८
मारग–मार्गशीर्ष, अगहन ३१।५१
मारत–भारी कष्ट में डालते हैं (नेत्र) प्रहार करते हैं (मृग) १३।२८
मारन–मारों से २।३८
मारबस–कामवश अर्थात् कामदशा ५।२३
मारु–मार, आघात २।४८
मारू–युद्ध के गान २।५३
मारै चाह–मारना चाहते हैं (मृग को) चाह मारती (नेत्र की) १३।२८
मालकोस–एक राग (स्वरूप वीररस युक्त) ८।६७
माला–मालव (?) १६।१४
माह–(मध्य) में ७।१८
माहिर–जानकार २।२
मिजमानी–मेजबानी, मेहमानदारी, आतिथ्य करने का कृत्य २५।२७
मिटाय–नष्ट करके, विचार न करके १४।४८
मितवै–(मित्र) प्रिय २६।१९
मित्त–मित्र ४।४१
मित्र–प्रिय, नायिका ९।३९
मिरदंग तें–मृदंग (में मढ़े मृग के चमड़े) से १४।५७
मिलसी–मिलेगी १६।४४
मिला भेंट–मुलाकात (आपके संपर्क में आने से) १९।१२
मिस–बहाना ७।९
मीच–(मृत्यु) मौत १७।४२
मीड़–मलमलकर २६।५
मीत१–(मित्र) सखा ५।३८
मीत२–(मित्र) प्रिय ५।३८
मीतल–मित्र, प्रेयसी १३।२३
मीन–मछली ६।११
मीनाकृति–मछली के रूप का ८।२८

मुए–मरा हुआ २१–३०
मुकाम–स्थान ५।४४
मुकुर–दर्पण २।८
मुक्ता–समुद्री मोती, गजमुक्ता ८।१५
मुखबास–मुख को सुवासित करनेवाले पदार्थ १३।३९
मुखमारि–रोकने की चिंता छोड़कर, हौसला बढ़ाकर ८।७
मुखारी–दातौन १८।८४
मुगदर–(मुद्गर) मोंगरा ११।६
मुजरा–सभा में बैठे बैठे वेश्या का गान १५।१७
मुजरा–अभिवादन २६।५७
मुतिया–मोती ७।१९
मुनैया–लाल मुनैया, लाल पक्षी की मादा १२।२७
मुये–मर जाने पर १६।१०३
मुयो–(मृत) मरा २०।५८
मुर–मुड़ जाता है, रुक जाता है ७।२०
मुरकि–मुड़कर १५।३३
मुरक्यो–मुड़ गया, लौट गया २०।२८
मुरन–मुड़ना, लचकना १३।४४
मुरार–(मुरारि) मुर के शत्रु श्रीकृष्ण ८।४६
मुवा–(मृत) मर गया १६।२१
मुवौ–मृतक, शव, मुर्दा ८।४०
मुसक्किल–मुश्किल, कठिन १।२९
मुहचंग–मुरचंग, ताल देने के लिए मुँह से बजाया जाने वाला एक बाजा १३।४३
मुहचापन–बधू की मुँह देखने की रीति ३१।३३
मुहरा–सेना की अगली पंक्ति २३।४
मुहूरत–(मुहूर्त) सायत, मांगलिक समय ३०।९
मूठ–तंत्रमंत्र का प्रभाव होना ५।६
मूठ सँजोग–तंत्रमंत्र का प्रयोग, जादू-टोना २०।४३
मूर–(मूल) जड़ी १०।३६
मूर–मूल, कारण, व्यथा का हेतु १६।९७
मूर–जड़ से १७।२१
मूरी–जड़ी २२।९
मूल तरु–वृक्ष की जड़ ११।९
मूल–मूलतः, मुख्यतः, ठीक ठीक १४।२४
मृग–पुरुषों के चार भेदों में से एक १५।२२
मृगछाला–मृगचर्म १७।५०
मृगछौन०–(मृग शावक) मृग के बच्चे के सदृश ११।६
मृगनैन–मृगनैनी (प्रेयसी) ११।१२
मृडाल–(मृणाल) कमल नाल (के तंतु) १३।३७
मृडाल तार–कमल नाल तोड़ने से निकलने वाले तंतु १३।३५
मे–मेरे ९।३७
मेचक–काली ४।४५
मेड़–सीमा २८।२३
मेड़ो–परिमित की, सीमांकन किया २८।२३
मेढामल्ल–प्रमुख योद्धा का नाम २३।६
मेताई–मित्रता ५।३४
मेल–फेंककर २१।३८
मेल डारो–बुझा दो १६।३१
मेला–मिलाप ५।५७
मेलै–फेंकता है १९।१६
मेह–(पुष्पों की) वृष्टि २३।३०
मैगल–मदगलित हाथी २६।५१
मैड़ी–तरंग, लहर २६।६८
मैढ़ा–भेड़ा २४।१९
मैन–(मदन) काम १५।१३
मैन ऐन–(मदन अयन) काम के घर १२।४२
मैनकी–मेनका अप्सरा १२।३९
मैनमय–(मदनमय) काममय, कामनाओं से युक्त ११।१२

मैर–विष का मद ४।२२
मो–मुझको १०।२४
मोई–भीगी हुई, डूबी हुई ३।६
मोदी–परचून (आटा, दाल, चावल आदि) बेचने वाला २६।२६
मोय–मिलकर, युक्त होकर ४।२२
मोर–मोड़कर, हटाकर ३।३०
मोल–सौदा, व्यापार ३।३
मोह–प्यार १८।६६
मोह छियो नहिँ–मोह (ममता) छू तक नहीं गया १४।४३
मो हित–मेरे लिए ६।१४
मोहीँ–मुझसे ५।४६
मोहों०–कर्तारने 'इसे (मुझे) निकाल दें' यह तुझसे नहीं पूछा १२।१२
मोहीं १–मुझे, मुझपर १०।२१
मोही २–मोहित हो गईं १०।२१
मौज–तरंग १।६
मौतिया–ऐ मृत्यु, मौत (ही) १६।६४
मौर–आम्रमंजरी रूपी मुकुट २।४६
म्हारी–(हमारी) मेरी ४१।४
यहि–इस काले रूप (वर्ण) में २।४६
यहै काम–इस काम के लिए, राग सुनाने पर १४।५५
या–ऐसी (मीठी, मधुर) २।४६
यार–प्रेयसी ८।७३
यारा–रसिक, प्रेयसी १।५४
यारी–मित्रता, प्रीति ६।११
याह–(यार) मित्र, प्रिय १६।७१
ये–यह (माला) १४।३५
ये–यह (वेश्या) १४।५३
ये कहिये–यह तो बताओ १४।३७
येती–इतनी १२।३४
येह–यह १।५०
येहं–इस प्रकार से १६।३१
योग–योग साधना, वैराग्य १७।५५
योरंग–इस (सभा) के आनंद को १३।२
रंग–सुख, आनंद, मजा १।४५
रंग–विशेषता ६।३६
रंग–शरीर के वर्ण (पर) १३।३६
रंग–अर्थात् रूप २०।५५
रंगीन–रँगी हुई १३।१४
रंचक–(सं० रक्तिक) थोड़ा भी ६।२२
रंजोर–रणजोर (योद्धा) २३।६
रक्तविकार–खून की खराबी २४।४२
रखियहिय–रखना या रखो २२।४३
रघुनाथ–राम १३।२६
रचनाजुत–सजावट वाले, अलंकृत, काव्यमय १२।३६
रचै–रचे हुए, धारे हुए ३।११
रच्यो–रँगा हुआ १।२
रच्यो–रचा, किया, व्यवस्था बाँधी १६।२२
रछक–(रक्षक) रक्षा करने वाले २५।२१
रजत–चाँदी २५।२५
रजनीपति–चंद्रमा (पुराणानुसार इसे राजभक्ता है) १।४६
रजा–इच्छा, स्वीकृति ७।३५
रजायसु–आज्ञा १६।६७
रटत–निरंतर बोल रहा है ११।८
रतनारे–लाल २।८
रति–कामकेलि ७।२०
रतिनाथ–कामदेव, यहाँ नायक ७।१४
रतिरंग–भोग विलास १७।४०
रतिराज–कामदेव १७।३३
रती–रति क्रीड़ा, कामक्रीड़ा १६।७४
रत्नचौक–रत्नों का चौका जिसमें लगा हो (चूड़ी) १३।४१
रतनाकर–(रत्न नाकर) समुद्र १३।३६
रद–दाँत २।६
रदछद–(रदक्षत) दाँतों से घाव २५।४०
रद्द–बेकार २८।२३
रन–(रण) युद्ध १३।४४

रनरहस–रणरास, युद्ध नृत्य, प्रचंड युद्ध २३।२३
रबिसुता–सूर्य पुत्री, यमुना नदी १२।५
रब्बेल–(रबील) एक पक्षी १२।२४
ररत–रटता है, केका ध्वनि निरंतर करता है २६।४०
रव–वाणी, गर्जन २।६
रवन बाग–रमणोपवन, भोगविलास का उपवन २०।२६
रवनी–रमणी ५।५१
रवाब–सारंगी के ढंग का एक बाजा २०।१६
रस–रस या आनंद होता है ७।७
रस–(मुझमें) रसदायक वार्ता करने की शक्ति १३।२
रस–अमृत, आनंद १३।३०
रस–रसौषध, रस नामवाली दवा २०।३४
रसन–आस्वाद, दर्शन का सुख १६।३७
रसना–जीभ (में) ८।४२
रसनौम–नवम रस, नौवाँ रस, शांत रस १०।६१
रस भीना–रससिक्त, रसमय २५।४४
रसमस्सा–आनंद की मत्तता २७।३७
रसमान–रसमय, पूर्ण आनंद दायक १२।४८
रस में–खुशी खुशी, प्रसन्नता से २२।४६
रसमै–रसमयी, आनंदयायिनी, रसिका १४।६०
रसलेज–रस रश्मि, रसरज्जु, रससूत्र, रससंबद्धता १५।१३
रसवत–रसमय १६।४३
रसाल–रसमय, रसीली १।५
रसी–जायकेदार एक सब्जी १३।१३
रसोई–भोजन ३०।३२
रहत–बचता है, ठहरता है, स्थिर रहता है ४।७१
रहस–रास, नृत्य १६।२२
रहसबधाये–विवाह में वह रीति जिसमें वधू वर के साथ जनवासे में आकर गुरुजनों से वस्त्राभूषण आदि उपहार पाती है ३१।१४
रहसि–हर्षित होकर २।१६
रहा–रह गया २।३३
रहिदा–रहता १२।३५
रही ह्वै–हो गई है, प्रतीत होती है १३।४७
रहै–था ११।२४
रह्यो–रहियो, रहना १७।२
राँध–पकाकर २४।१६
राई–हे राजा २२।४५
राउ–छोटे राजा १६।२२
राखत–रखते, बचाते १६।४१
राग–अंगराग, लेपन ११।४
रागभूप–रागों का राजा ३५।४
राचा–रचना, सृष्टि, संसार (या रंग, आनंद) १६।७६
राची–अनुरक्ति, आकर्षण १५।३४
राछ फिरी–विवाह में वर (और कहीं कहीं कन्या) को पालकी आदि पर चढ़ाकर किसी जलाशय या कुएँ पर ले जाना ३१।१०
राज–रंजनकारिता १४।२१
राज–राजा, बड़े राजा १८।४६
राजसु–राज्यश्री, राजलक्ष्मी २०।६५
राजहि–इतने बड़े राज्य में भी २८।२३
राजा–सुशोभित है ३०।३७
राजी–अनुकूल ५।५६
राठौर–(राष्ट्रकूट) एक प्रसिद्ध राजवंश २२।३८
राड़–निकम्मा, नीच १३।३
राती–लाल १७।१०
राम–हे राम, हे दैव १।३३
राम जी–अपने राम के जी (प्राण) की २७।४७
राय–राजा ७।५३
राय–छोटे राजा १८।४६

राय—राजा (विक्रम) २४।३७
रार—झगड़ा, लड़ाई २१।३६
रारि—झगड़ा, लड़ाई ३।२५
राव—भाट २०।३
राहु—चंद्र को ग्रसने वाला ग्रह (केश) १३।३०
रिँग्यो—चला, बीता १७।६
रिंदगी—मनोरंजन १६।४८
रिझवार—गुणग्राहक ११।७
रिस—रोष, रूठना ५।४५
रिसान—रोष करना १६।३७
रीझ—प्रसन्नता १४।४८३
रीझकी—मुग्ध होने वाली १२।३
रीझि—रुचि २।४६
रीझि—गुण पर प्रसन्नता प्रकट करने की वृत्ति १४।६
रीझै पचै—रीझ को पचा लेते हैँ, बाहर प्रकट नहीँ होने देते, मन मेँ रखे रहते हैँ १४।५०
रीत—(वियोग मेँ रहने की) रीयत ६।१६
रुंड—धड़ २३।२६
रुक्का—पत्री, चिट्ठी १६।६०
रुख—मुख का भाव १४।६४
रुचिकैं—रुचिपूर्वक ७।२
रुज—रोग ९।४
रुद्र—रौद्र रस १६।४४
रुध—रोध, रुकावट ४।२७
रुरकत—हिलती है २।१३
रुरकारी—चिल्लाने लगी २६।२४
रूप—सौंदर्य १।४१
रूपनिधान—रूप का कोश, अति सुंदर १०।५
रूपरास—सौंदर्य राशि १३।२३
रूपा—चाँदी २७।१६
रूसे—रूठने पर २१।२२
रेँग्यो—चला १२।४१
रेवा—नर्मदा ३।५५
रैन—(रजनी) रात १५।४६
रैहै—रहेगा, बचा रह सकेगा २७।३६
रोगहि जोग—रोग का ही इसमेँ योग हुआ करता है १०।३५
रोगिया—रोगी २०।५५
रोचन—लाल ५।४
रोचन—रोली ७।२७
रोरै—शोर करता है २४।१६
रोसो—(रोष) तेजी, तीखापन २७।४४
रौन—(रमण) रमणीय १।१६
लंक—कमर, कटि १६।३१
लंक—लंका, कमर २५।३८
लकरि—लकड़ी, काठ १६।३१
लकुट—लाठी २।१६
लक्का—एक प्रकार का कबूतर १३।४४
लख मेँ०—देखने मेँ, प्रत्यक्ष, प्रकट ५।४६
लखित—दिखाई पड़ते ११।७
लखिवी—देखूँगा २२।५०
लग—लगने वाले या लगने पर ११।१०
लगन—(कबूतरी के लिए) नाचने की वृत्ति १३।४४
लगन—लग्न स्थान, कुंडली चक्र मेँ पहला स्थान ३०।७
लगा लगैँ—लगालगी, संबंध ४।२६
लगी—लगन १०।३५
लगु—लिए ४।४२
लघु—अर्थात् संक्षिप्त १३।२२
लचि जात—झुक जाती है १३।३४
लच्छ—(लक्ष) ताल का एक प्रकार १३।४५
लच्छ इक—एक लाख १६।१७
लछिछन—लक्षण १५।५
लट—बरगद की जटा १७।५०
लटक—झुकाव १।२
लटपटी—ढीली ढाली, बेढंगी ४।२८
लटी—बुरी, खराब २१।४८
लटो—बुरा ६।१६
लड़िकै—बच्चे को ७।४५
लपि—लचकने पर, दबने पर १६।१४

लये–लिये, आघात सहे १६।३८
लरखत–(थककर, झुक जाती है) १७।४२
लरिका–लड़का, पुत्र १९।२८
ललाम–बढ़िया, उत्तम २५।३६
ललित–मनोहर १३।३८
ललिता–राधिका की प्रमुख अष्ट सखियों में से एक २।१८
लहिये–पाऊँ १३।२
लहो–प्राप्ति, लाभ १९।२२
लहुरे–छोटे, लघु १।१२
लाइ–लगाकर ८।४७
लाइ–आग २।५२
लाइबे–जलाने ९।४२
लाए–जलाते ही (बनता है) २१।५०
लाख–(लक्ष) अनेक ५।२३
लाख दसक–दस लाख मूल्य का ३०।३७
लागि–लिए १८।८०
लागि गई–प्रीति हो गई १९।३२
लाज–प्रतिष्ठा ४।६५
लाय–आग २६।३१
लाय–लगाकर अर्थात् मारकर ६।१५
लाय–लगाकर, छुलाकर १६।९२
लायक–योग्य, उचित १९।२९
लायबे–जलाने (योग्य) २६।३७
लायहौं–ले आऊँगी १६।१०५
लाला–पुत्र, कुमार १६।४
लालिय–ललाई, अरुणिमा २०।१७
लिखि०–लिख भेजा १।२०
लिख्यते–लिखा गया ९।३७
लिपाय–(गोबर आदि से) लेप कर, शुद्धकर ३०।२६
लिलाट–(ललाट) भाल १७।६
लिलार–ललाट ५।२६
लीक–लकीर, मर्यादा १९।३८
लुकमान–बहुत प्रसिद्ध और निपुण यवनानी वैद्य २०।४३
लू लू–मारे जाड़े के होने वाला शब्द, कड़ाके के जाड़े से निकलनेवाली ध्वनि २७।२५
लेखि–लेखो, समझो १३।४०
लेखैं–अर्थात् करती है १२।२२
लेस–लेश, स्पर्श १।१०
लेह–लेती है १४।६
लैनो–ली, प्राप्त की ९।३९
लोइ–लोग १७।३०
लोक–स्वर्ग, मर्त्य, पाताल २१।३६
लोच–कोमलता ५।३
लोट–लोटना, लुढ़कना १३।४४
लोट जात–लेट जाती है, गिर जाती है १५।३३
लोटन–एक प्रकार का कबूतर जो बहुत लोटता रह जाता है १३।४४
लोनी–(लावण्य) सुंदर १३।३६
लोनो–सुंदर, बढ़िया २०।७२
लोप–विनाश ३।९
लोम–रोम, रोएँ ८।५५
लोय–ज्वाला २६।७७
लौं–तक १३।२४
लौं–सदृश, समान १३।४७
लौना–(लावण्य) सुंदर (सलावण्य) १२।५१
वहै–तभी, उसी में ५।३७
वाकिफ–जाने समझे, अनुभूत ६।७
वाकिफ–जानकार २६।११
वार–बाजा बजाने की चोट (या निछावर) १३।४३
वारने–निछावर १५।१४
वारी–निछावर कर दी २।३१
वारे–निछावर हैं २।८
वारो–निछावर कर दी १४।३५
वोजन–(ओजन) भंगिमाओं १६।३७
वोहि–उसको २०।८०
श्रुति–कान १३।६
षटआगम–षड्दर्शन ३।२४
षट् व्यंजन–छहों रस (मधुर, लवण,

तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल) से युक्त खाद्य १७।४६
षडंग–(छह रागों वाला) संगीत ४।२०
षोडस–सोलह ८।५०
संक–(कलंक युक्त होने की) शंका १३।२५
संगी बट–साथ देनेवाला, सहायक (तबलची) १३।४६
संग्रहनी–पाचन दोष से होने वाला एक रोग जिसमें बहुत दस्त होते हैं २०।५२
संघाती–साथी १३।३
संचार–कार्य का संचालन ८।४३
संतुक–सौंतुख, प्रत्यक्ष, दृश्य ५।५२
संथा–पाठ, सबक ४।३१
संध–संधि स्थल ५।५२
संधि–संधि स्थल २।१२
संधि पाय–अवकाश पाकर, अवसर पाकर २१।३६
संनिपात–त्रिदोष, सरसाम १७।१८
सँभार–होश-हवाश २१।३९
सँभारे–अच्छी तरह से सजाए ३०।२९
संभू–(शंभु) शिव १८।७
सँसातै–(बाण से) भयभीत होकर १७।६२
सँसिकै–साँस को खींचकर, साँस दबाकर ७।११
संहनाति–अति रूप से सहना पड़ता है १६।७१
सँहारन–(संहार) नाश २१।३६
सकत–(शक्त) शक्तिशाली ७।२०
सकतसीव–(अपनी) शक्ति सीमा १४।२२
सकती–शक्ति, जोर जबर्दस्ती २६।६९
सकबंधी–शक को बाँधने वाला, शकारि २१।७१
सकात–शंकित होते हैं १७।१२
सकातीं–डरतीं ७।३४
सकिये–सहा जाए ७।२४
सकीन–संकीर्ण, सँकरा १।३०
सकेली–केलिपूर्वक ७।१०
सगुन–शकुन, शुभसूचक स्थिति २०।५४
सघन–घना १३।३०
सचेत–सावधान ११।२५
सजन–(स्वजन) संबंधी ?
सजना–स्वजन, प्रिय-प्रेमी २४।४२
सजि–सजकर अर्थात् बढ़कर १३।२४
सजीवन–जिलानेवाली दवा १०।३४
सज्या–(शय्या) सेज २६।३५
सटकारे–चिकने लंबे ८।५१
सटेक–प्रतिज्ञापूर्वक (हठकर) ८।७
सट्ट घट्ट–तहस नहस, नष्ट भ्रष्ट २२।४३
सत–सत्य, सचमुच १९।४७
सत–सत्य धर्म २२।५२
सत–सात, सप्त १६।२३
सत–सौ २०।३५
सतक्रतु–(शतक्रतु) सौ यज्ञ करने वाला इंद्र २२।२१
सतन–सांग, मूर्तिमान् ३।६
सतरात–बिगड़ती है १५।४१
सती–थी, हो गई थी ४।४३
सती–पतिव्रता १९।७४
सती–सत्य के लिए जलकर मरने को उद्यत २१।४१
सत्त–सत्य, प्रत्यक्ष, मूर्तिमान् १३।४०
सत्थह–साथ में २३।२५
सत्या–सच्चाई २०।१२
सत्वर–शीघ्र २०।३२
सदन–घर १३।२५
सदृस–(सदृश) समान, काम भर को, पर्याप्त २४।२०
सदेह–मूर्तिमान् २०।१९
सधर–ऊपर का ओठ २।८
सधे–सधे हुए (दृष्टि के विकास में लीन) ९।३९

सनधान—(संधान) बाण से निशाना बनाना ६।११
सनबंधी—संबंधी, रिश्तेदार १६।३८
सनाय—सानकर, युक्त करके २१।४१
सनाह—सनाथ (यहाँ आने से) १८।६०
सनेह—स्नेह, स्निग्धता युक्तता। १६।३७
सनेही—प्रेमी (विरही) १८।६५
सैन्या—सैन्य, सेना २७।४३
सपक्षी—पक्षधर, पक्ष करने वाला १३।३
सपूतीयौ—सपूती भी (कपूती कही जाती है) १६।२२
सफजंग—सैफ जंग, तलवार की लड़ाई (में) १६।३०
सफजंगी—तलवार के योद्धा २२।३८
सफरी—(शफरी) मछली १६।३५
सफरी—अमरूद २३।२६
सबरौ—सारी १८।६६
सबरे—सभी (गुण) २१।२६
सबरो—(सर्व) सारा ११।२१
सबरौ—सबस्त, समग्र २३।३५
सम—समान २।५६
सम दायक—समान रूप से परस्पर आदान प्रदान करने वाले २०।७२
समरथ्थ—समर्थ, कार्यक्षम ११।१५
समराधिकारी—स्मराधिकारी, काम को अधिकार में रखनेवाले (नेत्र), युद्ध का अधिकार रखने वाले (मृग) १३।२८
समस्त—एवमस्तु, ऐसा हो हो ४।२५
समाज—समूह ११।३८
समाती—अँटती, भीतर धँसती १६।६२
समान—समाया हुआ १३।२५
समापति—समाप्ति, अंत १६।२२
समाख्वा—समाधि ही ध्यान में लाना १८।७
समिध—(समिधा) यज्ञ की अग्नि में जलाने की लकड़ी ३१।१३
समुदाई—समूह ११।३७
समुदाई—समुद्राय, जनता, लोग २०।२५
सयान—चातुर्य १०।२६
सयानी—चातुर्य २।३१
सयानी—चतुर १८।७२
सर—(शर) बाण ६।१५
सरकि—खिसककर १५।३३
सरकिगो—खिसक गया, चला गया १३।३१
सरक्कत—खिसकती है २०।१६
सरखत—ब्यौरा १७।४२
सरग—(स्वर्ग) आकाश ८।३०
सरजहु—सिह से भी १४।४४
सरझर्री—बाणों की झड़ी २४।११
सरद—शरद् ऋतु (आश्विन और कार्त्तिक) ४।५०
सरद ससि—शरद् (पूर्णिमा) का चंद्र (मुख) २।७
सर पंच—पाँचो बाणों से (उन्मादन, तापन, शोषण, स्तंभन, संमोहन) १०।३२
सरबर—सरोवर ६।१३
सरमिंदगी—लज्जा का भाव ७।४२
सरसंत—तीव्रता से चलते हैं २३।२८
सरस—बढ़कर, अधिक १।४६
सरस—सहृदय ११।१४
सर समाज—(निर्मल) सरोवरों का समूह (इसका शरीर है) ११।१५
सरसाती—सुहाती २१।८
सरसावै—बढ़ाते हो ६।३६
सरसो—छोटा ताल २५।३६
सरसुँवा—सिर की ओर से आरंभ करके २०।४८
सराप—शाप १।५१
सराहियै—प्रशंसा कीजिए ४।६६
सरियत—शर्त, बाजी २४।२
सरीक—भागदार, हिस्सेदार १३।३
सरे—समाप्त २१।२६
सरै—पूरी होती है ६।१३

सरोख–सरोष, क्रुद्ध १४।६४
सरोगी–रोगयुक्त, रुग्ण १३।३
सरोज–कमल (मुख) २५।३६
सर्वसु–सर्वस्व, सब कुछ २१।१५
सलाह–(उचित) राय २१।१५
सवाब–(सबाव) भलाई ८।२६
सवाव–पुण्य १०।४०
सस–(शश) खरगोश ८।५७
ससकवे–साँस रोकना १६।३७
ससि–(शशि) चंद्र (मुख) १३।३०
ससेट–आतंकित कर रहा है, त्रस्त कर रहा है २५।३६
सोत–(स्रोत) रोमकूप, शरीर के छोटे छिद्रों से १४।१६
सह–साथ, से २।१
सहजह्वै–नदी से मिलकर १५।२
सहनाई–शहनाई, नफीरी, बाँसुरी के ढंग का एक बाजा ३१।२
सहबास–साथ बसना, कामकेलि करना ६।१३
सहबी–सहेंगे ३।१३
सहल–सरल १।३४
सहसक–(सहस्र एक) एक हजार २०।५५
सहाय–सहायक २।५१
सहाय–सेना २।५५
सहित–हितसहित, प्रेमपूर्वक १६।६२
सहेट–(मिलन का) संकेत स्थल २।२८
साँईं–स्वामी १२।३३
साँकर–(शृंखला) जंजीर २।१५
साँकरी–(संकीर्ण) पतली १७।१२
साँग–बरछी १।२६
साँगीतक–संगीतशास्त्रानुसार १३।२१
साँप-छछूँदर–साँप छछूँदर को खा जाय तो मर जाता है और उगल दे तो अंधा हो जाता है ४।६६
साँवरो–श्याम वर्ण का १७।१०
साईं–(स्वामी) पति, प्रिय ५।३४
साख–प्रतिष्ठा १६।२६
साखिये–साक्षी मानिए, स्वीकार कीजिए २१।३१
साग–(शाक) तरकारी २४।२०
साज–सजावट (वसंत की) २।४७
साज–संगीत की सज्जा १४।१४
साजि–(सज्जा) प्रदर्शन, प्रसार, फैलाव १६।४८
साजो–सजावट वाली अर्थात् बढ़िया २४।१७
सात–सातवें स्थान पर ३०।८
साती–(साथी) सखा ३१।३१
सातौ–सप्त धातु से बना शरीर १७।२
साध–(सं० श्रद्धा) उत्कट इच्छा २१।७
साधना–प्रबल इच्छा, उत्कंठा १८।७
साधवा–साधु १८।२६
साधो–(साधु) तपस्वी (होकर) २।३३
साधो–साधा, धारण किया १८।५६
साधौ–साधु ही, शुभ ही है २५।२
सापैहवाल–शाप का संवाद, शाप के वचन ३।३६
सामथ–सामंत भारती १६।१७
सायत–मुहूर्त १५।३
सारंग–एक राग, मेघों को हटाने वाला १०।२८
सारंग–सारंगी नाम का बाजा २७।४५
सार–सलई, कमजोर लकड़ी ८।३४
सार–तत्त्व, आधार, मूल १६।७६
सार–लोहा अर्थात् लोहे के हथियार २४।५
सारधार–लोहे के हथियारों के प्रहार से २४।२४
सारिका–एक प्रकार की मैना चिड़िया १३।४३
सारी–साड़ी १३।४०
सारो–समस्त, पूरी १५।४६
सारू–पुष्ट २।१५
सारो–(सारिका) मैना १२।२७
सार्यो–सार, तत्त्व २।३०

सुक–सुग्गा, तोता ९।३९
सुक०–(नासिका देखकर) सुग्गा रुक जाता है २।८
सुकल–शुक्ल, सुदी ४।५०
सुखहीन–सुखरहित १६।६५
सुख०–सुख रूपी ईँधन जलाने पर २।२४
सुखदान–सुखदायिनी १६।३७
सुखनिबंध–सुखोँ का ही बंध है बैरियोँ मेँ भी रहना ३।१५
सुखबाढ़ी–सुख की वृद्धि (से) ७।३८
सुखमा–(सुषमा) अति शोभा १३।४१
सुगंध त्रिविधा–तीन सुगंधित द्रव्य—चंदन, वला, नागकेसर २१।४१
सुगलय–सुंदर गला २३।२४
सुघर–चतुर १४।१४
सुचित–निश्चित, असावधान १५।१२
सुजन–अच्छे जन, संगीत के मर्मज्ञ १६।१०
सुजस–(सुयश) अर्थात् अपयश २१।३
सुजनी–(स्वजनी) आत्मीय १२।११
सुजनी–रूई परत कर बहुत जगहोँ से सिली बड़ी चादर १२।३१
सुजान–ज्ञान संपन्न, जानकार १२।१५
सुजानहु–सुजान (कामकला मेँ चतुर) भी ७।१८
सुझियै–दिखाई देता है, फैला है १।२४
सुठि–अति ३०।९
सुढार–सुडौल ८।५२
सुढारू–अच्छे गठे २।१५
सुत१–पुत्र २।३०
सुत२–(सूत्र) संबंध २।३०
सुत–पुत्र (मकरध्वज) २२।४
सुता१–कन्या ३।६६
सुता२–पुत्री, आत्मजा ३।६६
सुदि–शुक्ल ११।२०
सुदेस–बढ़िया, अच्छा १६।२७
सुधाधर–सुधा को धारण करने वाला, चंद्र १३।२५
सुधि–खबर ६।३३
सुधीरन; अच्छे धैर्यवान् २।४६
सुनार–(सोनार) सुवर्णकार १४।१४
सुन्न–(शून्य) किसी ग्रह का न होना ३४।९
सुभागि–भलीभाँति अनुरक्त होकर ४।२६
सुपासन–बहुत निकट, पासही २।१८
सुबरन१–(सुवर्ण) सुंदर रंग १५।१८
सुबरन२–(सुवर्ण) सोना १५।१८
सुबास–सुवसित, अच्छी भाँति बसा हुआ ११।१५४
सुबास–सुगंध ११।१५
सुबास–अच्छा बास, सुखद निवास १२।४०
सुबास–सुंदर वस्त्र १३।३९
सुबेस–(सुवेश) सुरूप १३।२७
सुबेस–बढ़िया १४।४२
सुबेलि–सुंदर लता (सी) ७।५
सुब्रन–(सुवर्ण) सोना २९।१२
सुभाय–अर्थात् प्रकार ८।७८
सुभाइन–भली भाँति १८।२०
सुभ्र–उज्ज्वल ८।५२
सुमंत्र–बढ़िया सलाह ४।४२
सुमार–विशेष आघात, अधिक आहत १५।४५
सुमेर–सोने का पौराणिक पर्वत ८।१७
सुम्नादि–(सुमन आदि) पुष्प आदि कोमल वस्तुओँ की २७।४७
सुरं–स्वर, ध्वनि, आवाज, वाणी १६।३१
सुरंग–लाल २।१५
सुरंग–रसमय ४।२८
सुरंग–सुडौल ४।५४
सुरंग–सुंदर ५।३३
सुरंग–लाल (नेत्र); एक प्रकार (मृग का) कुरंग-सुरंग मेँ १३।२६

सुरंग–हरिना, सुंदर मृग १३।३३
सुर–स्वर (ताल के बोल) १३।११
सुर–स्वर (सरगम०) १६।२३
सुरकी–सोलंकी २२।३८
सुरगुरु–बृहस्पति ३०।८
सुरज्ञानी–देवज्ञ, दैवज्ञ, ज्योतिषी ३०।९
सुरत–सुरति, लगन १।१०
सुरत–रतिरसज्ञ, कामकेलि निपुण ८।५३
सुरत–कामकेलि १५।४५
सुर ते–वे ही स्वर (जो राग के सुने थे) १४।५७
सुरन–स्वरों को (मृग); सु + रण (नेत्र) १३।२८
सुरन साखि–देवों को (साक्षी) करके २१।२७
सुरपति गेह–इंद्र का घर, स्वर्ग १७।३९
सुरपत्ति कमान–इंद्र धनुष २६।५४
सुरपुर–स्वर्ग १९।४९
सुरपुरवारो–देवताओं का नंदन (वन) १५।१९
सुरबधू–अप्सरा १७।३९
सुरभंग–(स्वरभंग) आवाज का बैठना १२।१६
सुरभी–गाय २६।७५
सुरमंडित–ध्वनि से युक्त १३।४६
सुरराज–इंद्र ३।५
सुरसरि–देवनदी, गंगा १३।२३
सुरसरी–गंगा (त्रिपथगा) ८।१७
सुरा–शराब ७।३८
सुरेस–विष्णु २१।५४
सुलतान–बादशाह १९।२२
सुल्फ–कोमल, लचीली (अंगुली) १३।३८
सुवा–(शुक) सुग्गा १२।७
सुवन–पुत्र १।२४
सुसकत–सिसकते हुए १५।४१
सुहारी–पूरी ३०।३४
सुहासमय–प्रसन्न, स्वच्छ, निर्मल ११।१५
सुहित–सुष्ठु प्रेम, विशेष प्रीति ८।५३
सुहृदता–मित्रता २४।३८
सूकर–वराह २०।१६
सूक्षम–पतला ८।५२
सूजवार–बिछाने की अधिक स्थानों पर सिली चादर १६।२७
सूझ न–दिखता नहीं, समझ नहीं आता ६।४०
सूझै–दिखाई देती है (कंदला) १३।४७
सूत–(सूत्र) अर्थात् संकेत ८।७६
सूत–(सूत्र) डोरा १३।३७
सूती–विवेकी, अलग करने वाला १९।३५
सूम–कंजूस १९।७४
सूर–(शूर) प्रबल वीर ७।१८
सूर–सूहा ? १६।९
सूर–सूर्य २६।७३
सूरत–रूप, स्थिति में १४।२७
सूरत–शक्ल, आकृति १५।४६
सूरमा–प्रचंड योद्धा १३।२०
सूल–पीड़ा ८।११
सृंगार–सजावट, जो सोलह हैं ७।४
सृंगार–(श्रृंगार) शोभा (नेत्र), सींगवाले (मृग) १३।२८
सृष्टिपर–अर्थात् सारी सेना पर २४।२३
सृष्टिवान–बना हुआ, रचा हुआ, उत्पन्न हुआ २१।३६
से–समान, सदृश १५।१४
सेह–सेवा की १४।५१
सेखि–'देखि' की द्विरुक्ति (या 'विशेषि' का संक्षिप्त) ९।३८
सेती–से ९।३५
सेल–साँग २०।७

सेली–रेशम आदि से बनी बद्धी या माला २०।७५
सेस–(शेष) शेष नाग जिनके हजार मुँह हैं १४।१२
सेससुत–शेषनाग के पुत्र २१।५४
सेह–सेता है, सेवा करता है १४।४१
सैं–समस्त २७।४७
सैन–संकेत ८।२८
सों–को ५।४८
सो–समान, सदृश ५।५३
सोइ–वही (सामंजस्य) १६।२४
सो कि–वह किसलिए ६।३७
सोच–चिंता ५।३
सोत–(स्रोत) रोमकूप १४।४१
सोदर–सहोदर, सगा भाई ७.५४
सोध–(शोध) खोज, छानबीन ८।४४
सोधि–खोज करके १७।८
सोनित–(शोणित) रक्त, खून १०।३१
सोमवंस–चंद्रवंश १६।१६
सोर–(शोर) ध्वनि १०।२६
सोरहो सृंगार–उबटन, स्नान, वस्त्र धारण, बाल सँवारना, काजल, सिंदूर, महावर, तिलक, चिबुक में तिल, मेंहदी, सुगंध लेप, आभूषण, पुष्पमाला, मिस्सी, पान, होंठ रँगना ये सोलह शृंगार कहलाते हैं १३।३६
बिलास–मनोहर चेष्टाएँ १३।३६
सोस–(शोष) शोषण अर्थात् प्रभाव ६।१७
सौंतुक–प्रत्यक्ष ३।१०
सौंह–शपथ, कसम २५।४१
सौंहों–संमुख, सामने २०।११
सौक–सैकड़ा २१।२६
सौतिया–(सपत्नी) सौत १६।६४
सौ भर–शत प्रतिशत, पूर्णतया २८।२३
सौहित–ठगने वाला (वानर मगर की चिकनी चुपड़ी बातों में आकर प्राण खो बैठा था) ३।१२
सौहैं–संमुख, सामने १४।३४
स्यामा–राधा २।६
स्यामा–स्यामनट नामक राग १६।१८
स्याह–काले (नेत्रों के सादृश्य मे न ठहरने से) १३।३१
स्यों–सहित १६।११
स्यौं–सहित, साथ ३।३५
स्रवन–(श्रवण) एक नक्षत्र ३०।७
स्रुति–(श्रुति) वेद १४।६०
स्रोनित–(शोणित) रक्त, खून ७।१८
स्वरग०–स्वर्ग भी नरक में जलने सा है ६।४०
स्वर्ग०–बैंताल को पकड़ना देह को स्वर्ग पहुँचाना है, मर जाना है २२।५४
स्वाद–मजा, आनंद ८।१
स्वामित–(स्वामित्व) रखवाली ८।१२
स्वेत–उजली ५।२३
स्वेद–पसीना (खून ही पसीना होकर बह रहा है) ७।१८
हँकारे–बुलाए १८।६३
हंकित–हंकारा किया, गर्जना कर २३।२४
हंसं–(हँसना) सुख, आनंद १६।७१
हँसकी–हँसती १२।२६
हउदा–हौदा (हाथी पर कसा बैठने का आसन) २४।१४
हकरंत–दर्प से बोलती हैं २७।१२
हकारं–'हाँ' युत, स्वीकृतिसूचक १६।३१
हकीकी–अलौकिक, दिव्य १।३८
हकीम–यवनानी वैद्य २०।४३
हकीम–हे हकीम, हे वैद्य २०।५७
हक्क–(हक) खुदा (दिव्य) ५।४४
हजरत–महापुरुष ५।४१
हजार रूहरा–सहस हजार, दस लाख अर्थात् बहुत अधिक ६।२४
हजूर–सामने ६।३
हटपटाय–जल्दबाजी करके, हड़बड़ाकर ८।७१